वैद्यकरत्न संग्रह

अर्थात्

देवी अनुभव प्रकाश

जिसमें

१८ वर्षों से देशी स्त्रीचिकित्सा में भारत-विख्यात

कर्नलगंज इलाहाबाद की नामी

श्रीमती यशोदादेवी ने

बाल्यावस्था से ही वैद्यकशास्त्र का मथनकर खोज निकाले हुए वैद्यक के

अमूल्य रत्नों को

लाखों रोगी स्त्री पुरुषों पर परीक्षा करके

स्त्रीजाति के उपकारार्थ इस पुस्तक में

संग्रह किया

विषय पृष्ठ

प्राचीन स्त्री चिकित्सा ।

सचित्र गुप्तरोगों का निदान और वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि ।

विषय पृष्ठ

स्वास्थ्य रक्षा।

स्त्रियों के गुप्त रोग।

विषय पृष्ठ

गर्भाशय और गुप्तरोग।

गर्भाशय व योनिरोग।

विषय पृष्ठ

गुप्त रोग परीक्षा ।

नाड़ी परीक्षा ।

विषय पृष्ठ

गुप्त रोग चिकित्सा।

वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि से स्त्रियों के गुप्त रोगों की चिकित्सा विधि।

विषय | पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

गुणों का आदर ।

विषय पृष्ठ

दूध का औषधि के लिये उपयोग।

विषय पृष्ठ

पुस्तक मिलने का पताः—

श्रीमती यशोदादेवी,

पुस्तकालय विभाग,

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज—इलाहाबाद।

आवश्यक सूचना ।

कई वर्ष व्यतीत हुए तब मैंने अपने लाखों रोगी स्त्री पुरुषों तथा बालकों पर परीक्षा किये हुए प्रयोगों की तथा नैपाल की श्रीमती सत्यभामा बाई के परीक्षा किए हुए प्रयोगों की एक पुस्तक रत्नसंग्रह नामक कई भागों में बनाई थी उसे पढ़ सुन कर स्त्रियों, बालकों और पुरुषों को बड़ा लाभ पहुंचा उसमें लिखी हुई औषधियां अपने घर पर ही अपने हाथों तैयार कर हज़ारों स्त्री पुरुषों ने बड़ा भारी फ़ायदा उठाया उस पुस्तक की इतनी अधिक मांग हुई कि कई हज़ार छपकर बात की बात में बिकगई जबसे पुस्तक नहीं रही प्रतिदिन बीसों चिट्ठियां अबतक आरही हैं प्रेस को अवकाश न होने के कारण यह अमूल्य पुस्तक फिर से नहीं छप सकी अतएव पुस्तक न पहुंचने के कारण प्रतिदिन बीसों ग्राहकों की चिट्ठियां उलहने की आया करती हैं इसलिये मैंने रत्नसंग्रह को भी इस "देवी अनुभव प्रकाश" में सम्मिलित कर दिया है ।

इस पुस्तक में विशेष कर लाखों रोगी स्त्री पुरुषों और बालकों पर अनेक रोगों के परीक्षा किये हुए प्रयोग (नुस्खे) और उनके बनाने

की विधि जोकि मैंने वैद्यकशास्त्र का मथन कर खोज निकाले हैं वे तथा कुछ प्रयोग श्रीमती सत्यभामा बाई तथा अन्य चिकित्सा के और प्राचीन ग्रन्थों के अनेक प्रयोग जो परीक्षा करने से रामबाण की समान गुणकारी जचें इस प्रकार इसमें लिखे हुए सब प्रयोग परीक्षा किये हुये लिखे गये हैं।

यह पुस्तक भारत की देवियों के लिये बड़ी ही उपयोगी है अतएव इसी कारण मैंने इसे बड़े परिश्रम तथा खर्च कर के तैयार कराया है। "देवी अनुभव प्रकाश" से हमारे देश की स्त्रियों का बड़ा भारी उपकार होगा जो सज्जन मेरे प्रकाशित किये हुए रत्नसंग्रह नामक ग्रन्थ से फ़ायदा उठा चुके हैं वे इसे देखकर इसमें लिखे प्रयोगों को अपने हाथों कम मूल्य में ही घर पर तैयार कर स्वास्थ्य सम्बन्धी बड़ा भारी फ़ायदा उठावेंगे और उस रत्नसंग्रह को भूल जावैंगे क्योंकि इस पुस्तक में बड़े ही उपयोगी प्रयोग लिखे गये हैं आशा है सब सज्जन स्त्री पुरुष इस पुस्तक को घर में रखकर हज़ारों रुपये का फ़ायदा उठावैंगे।

पुस्तक मिलने का पताः—

श्रीमती यशोदादेवी "देवी" पुस्तकालय,

पोस्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज इलाहाबाद

देसी अनुभव प्रकाश

प्रथम भाग

श्रीमती यशोदादेवी के परीक्षा किये हुए प्रयोग (नुस्खे)

सब प्रकार के ज्वरों के लिये

१—सुदर्शन चूर्ण

यह चूर्ण वैद्यकशास्त्र की प्रसिद्ध औषधि है इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर अवश्य दूर होते हैं इसी का अर्क निकालकर वैद्य डाक्टर अनेक प्रकार के नाम रखकर अधिक मूल्य में बेचा करते हैं।

सब गृहस्थो को चाहिये कि इस चूर्ण को विधिपूर्वक घर पर ही तैयार करके रक्खें जब आवश्यकता हो काम में लावें इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर अवश्य जाते रहते हैं।

सुदर्शन चूर्ण बनाने की विधि।

हर्ड	पीपल	नीम की छाल	पद्माख
बहेड़ा	पीपरामूल	पुहकर मूल	चन्दन
आंवला	मूर्वा	मुलहठी	अतीस
हल्दी	गिलोय	कुड़ा की छाल	खरेटी
दारुलहल्दी	धमासा	अजवायन	वायविडंग
छोटी कटेरी	कुटकी	इन्द्रजौ	तगर
बड़ी कटेरी	पित्तपापड़ा	भारंगी	चीते की छाल
कचूर	नागरमोथा	सहंजन के बीज	देवदारु
सोंठ	त्रायमाण	फिटकरी	चव्य
मिरच	नेत्रवाला	वच	परवल के पत्ते

लौंग	बंसलोचन	दालचीनी	पत्रज
जावित्री	तालीसपत्र	सफेद कमल	मुलहटी
विदारीकंद			

यह सब औषधियां बराबर बराबर मंगाकर साफ़ करके एक ही में मिलाकर तौल डालें यह सब मिलकर जितनी तौल में हों उससे आधा चिरायता लेवे जैसे सब औषधियां तौल में आपने एक एक छटांक मंगाईं सब मिलाकर यदि तीन सेर हुईं तो चिरायता डेढ सेर मंगाना चाहिये। सबको इकट्ठा बारीक कूटकर चूर्ण बनावें फिर चार चार मासा की पुड़िया बनाकर सेवन करें।

सेवन विधि और गुण।

इस चूर्ण को ताजे पानी से एक पुड़िया प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करें तो वात पित्त कफ और सन्निपात इन सबसे आनेवाल ज्वर, विषमज्वर, आगंतुकज्वर, धातुविकार से आनेवाला ज्वर मानसज्वर, सम्पूर्ण ज्वर, शीतज्वर, हर समय बना रहनेवाला ज्वर दूसरे तीसरे और चौथे दिन आनेवाला ज्वर, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास खांसी, पांडुरोग, हृदयरोग, कामलारोग, पीठ की रीढ़ की पीड़ा, कमर की पसवाड़े की पीड़ा, पसली का शूल इत्यादि रोग अवश्य दूर होते हैं यह सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को नाश करता है।

यह चूर्ण मेरे यहां मनों की तादाद में तैयार होता है हर समय तैयार रहता है जो बहिनें घर पर तैयार करने में कुछ दिक्कत समझें वे मेरे यहां से मंगालें। इस चूर्ण की समान गुण रखनेवाली सब प्रकार के ज्वरों की अन्य कोई औषधि नहीं है मैं कई वर्ष से इसकी परीक्षा कररही हूं बड़े बड़े वैद्यराज इस चूर्ण से ज्वरो को दूर करते हैं। इसलिये इस चूर्ण को हरएक गृहस्थ-स्त्रियो को घर पर ही तैयार करके रखना चाहिये। गरीबों को मुफ़्त बांटना चाहिये।

२-अरुचि आदि रोगों के लिये।

किसी बीमारी के कारण भोजन की इच्छा न हो, रुचि जाती रही हो, भूख न लगती हो, खाने पीने के किसी पदार्थ में रुचि न हो तो इस चूर्ण का सेवन करने से अवश्य फ़ायदा होता है।

कालीमिर्च नागकेशर सेंधा नमक
संचर नमक समुद्र नमक रेह का नमक
तालीसपत्र विड नमक

यह सब औषधियां एक एक तोला लेवे और

पीपलामूल चित्रक दालचीनी
पीपल इमली की छाल ज़ीरा

यह औषधियां दो दो तोला लेवे

धनियां अमलवेत सोंठ
बड़ी इलायची के दाने छोटे बेर अजमोद
नागरमोथा

यह सब औषधियां तीन तीन तोला लेवे और ऊपर लिखी सब औषधियां जितनी तौल में हों उनसे चौथाई अनारदाना लेवे अर्थात् यह ऊपर लिखी २१ इक्कीसों औषधियां यदि सब मिलकर एक सेर हों तो अनारदाना एक पाव लेवे सबको कूट पीसकर कपड़छान चूर्ण बनावै और सब चूर्ण जितना तौल में हो उससे आधी सफेद मिश्री लेकर कूट पीस चूर्ण में मिलावै फिर छै छै मासा की पुड़िया बनाकर दोनो समय सेवन करै।

सेवन विधि और गुण।

इस चूर्ण को शहद के साथ दोनों समय सेवन करै तो रुचि हो, भूख लगै यह चूर्ण हृदय को हितकारी, खांसी, अतिसार, हृदयरोग, कंठरोग, उदररोग, मुखरोग, अजीर्णरोग, पेट का अफरा, बवासीर, गोला, कृमिरोग, जी का मिचलाना, उलटी होना और श्वासरोग दूर हो।

यह चूर्ण भी परीक्षा किया हुआ है ऊपर लिखे रोगों को अवश्य फ़ायदा करता है सब बहिनो को चाहिये इसे बनाकर हर समय घर में रक्खैं।

३—मन्दाग्नि रोगों के लिये।

सेंधानमक एक तोला, पीपरामूल दो तोला
पीपर तीन तोला, चव्य चार तोला

चीते की छाल पांच तोला, सोंठ छै तोला
बड़ी हर्ड़ सात तोला,

इस प्रकार इन औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बना इसकी चार चार मासा की पुड़िया ताजे पानी के साथ सेवन करे तो मन्दाग्नि दूर हो पाचनशक्ति बढ़ इसे भोजन करने के आधघटे बाद खाना चाहिये।

इस चूर्ण से अवश्य फायदा होता है इसलिये इसे हरएक गृहस्थ को घर में रखना चाहिये बनाने में भी कोई कठिनाई नहीं होती।

अनेक रोग नाशक औषधि ।

८-हिंग्वादि चूर्ण शूलादि रोगों पर।

भुनीहींग	पाढ़	बड़ी हर्ड़	धनियां
अनारदाना	चीतेकी छाल	कचूर	अजमोदा
सोंठ	मिर्च	पीपल	हाऊवेर
अम्लवेत	वनतुलसी	इमली	ज़ीरा
पुष्करमूल	वच	चव्य	सज्जीखार
जवाखार	सेंधा नोन	संचर नोन	विडनोन
वांगड़ का खार	समुद्र नोन		

सब औषधियां बराबर बराबर मंगावे और हींग किसी एक की चौथाई हिस्सा लेवे इन सब औषधियों को कूट पीसकर चूर्ण बनावे इसकी मात्रा चार मासा। प्रतिदिन भोजन के पहिले या बीचमें सेवन करें।

सेवन विधि और गुण।

यदि भोजन के पहिले इसका सेवन करे तो एक तोला गाय के घी में एक पुड़िया चूर्ण मिला पहिले ग्रास में खालेवे फिर बाद को पेट भर भोजन करे। यदि भोजन के बीच में सेवन करे तो आधा भोजन करने के बाद दाल में मिलाकर एक ग्रास में एक पुड़िया खा लेवे इसके सेवन से पाचनशक्ति बढ़ती है, भूख लगती है, अरुचि दूर होती है।

यदि पेट में शूल पीड़ा होती हो और अधिक कष्ट हो तो पुरानी शराब के साथ एक पुड़िया सेवन करै खाते ही आराम होगा। साधारण पीड़ा हो तो गरम पानी के साथ सेवन करै तो पीड़ा दूर हो।

यदि दस्त आते हों बदहज़मी हो तो गाय के मट्ठे के साथ सेवन करै तो सब शिकायतें दूर हों, अनेक प्रकार पेट के बादी से उत्पन्न होने वाले रोग दूर हों।

हृदय का शूल, कोख का शूल, गुदा का शूल, योनिशूल, मूत्र-कृच्छ्र, कब्ज़ रहना, पांडुरोग, अरुचि, हिचकी, यकृद्रोग, तिल्ली रोग, श्वास खांसी, कंठरोग, संग्रहणी, बवासीर यह सम्पूर्ण रोग अवश्य दूर होते हैं।

इस चूर्ण को सातबार बिजौरे नीबू के रस में भिगो भिगोकर छाया में सुखावे इस प्रकार सातबार सुखावे फिर झरबेरी के बेर की बराबर गोली बनाकर तीन गोली प्रतिदिन सुबह दोपहर और शाम को एक एक गोली सेवन करै तो वात कफ़ से होनेवाले पेट के समस्त रोग अवश्य दूर हों इसमें कोई सन्देह नहीं।

यह चूर्ण लाखों बार परीक्षा किया गया है अवश्य फ़ायदा करता है। इसलिये इसे सब स्त्रियों को चाहिये तैयार कर घर में हर समय रक्खें। गृहस्थी में हर समय काम देनेवाला है।

स्त्री, पुरुष, बालक सबके लिये फ़ायदा करता है मेरे यहां बीसों डिब्बी प्रतिदिन बिका करती हैं सबके उपकार के लिये मैंने बनाने की विधि यहां लिखदी है। जो घर पर तैयार न करसकें वे मेरे यहां से मंगालें।

५-अरुचि रोगों के लिये।

तालीसपत्र १ तोला,	कालीमिर्च २ तोला,
सोंठ तीन तोला,	पीपर चार तोला,
बंसलोचन पांच तोला,	छोटी इलायची छै माशा,
दालचीनी छै माशा,	मिश्री ३२ तोला,

इन सबको कूट पीस कर कपड़छान चूर्ण बनावे और तीन तीन माशा की पुड़िया दोनों समय एक एक पुड़िया शहद के साथ सेवन करै तो अरुचि दूर हो। खांसी श्वास, ज्वर, उलटी होना, अतिसार, शोप, अफरा, तिल्ली, संग्रहणी और पांडुरोग ये सब

दूर हो जाता है रुचि बढ़े। जो किसी बीमारी के बाद जिनको सुस्ती रहती है भूख खुलासा नहीं लगती अरुचि रहती है, भीतरी ज्वर की सी हरारत बनी रहता है, खांसी आती है, मुंह का जायका ठीक नहीं रहता उन सब के लिये यह औषधि अद्भुत गुण करती है सब शिकायतें दूर होती हैं बालकों के लिये भी यह औषधि बड़ी उपयोगी है, बालकों को उनकी अवस्था के अनुसार थोड़ी मात्रा देनी चाहिये।

वैद्यकशास्त्र का प्रसिद्ध औषधि।

६-सितोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोला, वंशलोचन ८ तोला,
पीपर ४ तोला, छोटी इलायची के बीज दो तोला,
दालचीनी १ तोला,

इन सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावे इ
चूर्ण की तीन माशा की मात्रा की पुड़िया बना एक एक पुड़िया दोन
समय सेवन करने से श्वास, खांसी, तपेदिक (जीर्णज्वर), हाथ पै
का तथा समस्त शरीर का दाह, मंदाग्नि, जीभ की शून्यता, पसली व
शूल, अरुचि, ज्वर, ऊर्ध्वगत मुंह से नाक से आनेवाला रक्तपित्त शीघ्र
दूर होते हैं।

यदि जीर्णज्वर हो (तपेदिक के लक्षण मालूम हो) ज्वर व
हरारत रहती हो, अरुचि हो, खांसी हो, पसलियों में पीड़ा हो तो इ
चूर्ण को गाय के मक्खन और शहद से सेवन करना चाहिये (मक्ख
और शहद बराबर नहीं लेना चाहिये शहद से मक्खन दूना लेवे)।

इस औषधि की प्रशंसा करना व्यर्थ है इसकी प्रशंसा में यह
कहना है कि कोई बड़े से बड़ा वैद्य ऐसा नहीं होगा जो इसे प्रतिदि
काम में न लाता हो। यह इतनी प्रसिद्ध औषधि है कि इसका ना
प्राय: सभी स्त्री पुरुष जानते होंगे जिन्हें कभी भी देशी औषधि सेव
करने का अवसर आया होगा।

इसके बनाने की विधि कदाचित् ही कोई स्त्री जानती हो पुरु
भी नहीं जानते। क्योंकि वैद्यलोग सभी नुस्खे छिपाते हैं इसी क
दूसरा नाम बदल कर काम में लाते है और फ़ायदा उठाते हैं।

मैं सब बहिनों को सम्मति देती हूं कि इस औषधि को हरएक गृहस्थ को तैयार करके हर समय घर में रखनी चाहिये। यह अत्यन्त उपयोगी औषधि है इसके बनाने में भी कोई दिक्कत नहीं है। जिनको किसी प्रकार की बनाने में दिक्कत हो वे मेरे यहां से मंगालें।

७—सरल विधि सर्व ज्वरों पर।

आंवले ५ तोला, चीते की छाल ५ तोला, बड़ी हर्ड ५ तोला, सेंधानमक ५ तोला, पीपल ५ तोला

यह पांचों औषधियां मंगाकर कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावै प्रतिदिन चार चार मासा प्रातःकाल और रात को सोते समय ताजे पानी के साथ सेवन करै तो सब प्रकार के साधारण ज्वर दूर हों, रोगी कमज़ोर हो तो मात्रा कम करके देवे।

गुण।

यह चूर्ण दस्तावर है, रुचि उत्पन्न करता है, वात कफ़ का दूर करता है, भूख को बढ़ाता है, अन्न का पाचन करता है। बहुत सरल है सब बहिनों को तैयार करके हर समय घर में रखना चाहिये।

८-अनेक रोगों के लिये चूर्ण।

हर्ड, बहेड़ा और आंवला को त्रिफला कहते हैं इसका विस्तार से वर्णन पीछे करचुकी हूं। इस औषधि के समान औषधि तत्काल दूसरी कोई जादू कैसा असर नहीं रखती, धीरे धीरे गुण करती हैं परन्तु इनका गुण होता है अधिक दिन ठहरने वाला।

त्रिफला रसायन है; वैद्यकशास्त्र के बनानेवाले ऋषि कहते हैं कि मनुष्यों की परम हितकारिणी औषधि त्रिफला ही है जितनी औषधियां पेट के विकारों में कही गई हैं प्रायः सब में ही ऊपर लिखी तीनों वस्तुयें या इनमें से कोई अवश्य पड़ती है क्योंकि त्रिफला समस्त रोगों को नष्ट करनेवाला है, जो मनुष्य पथ्य से रहकर कुछ दिनों तक इसका सेवन करता है उसके अनेक रोग दूर हो शरीर तेजस्वी और कान्तिमय होजाता है।

त्रिफला में हर्र बहेड़ा आंवला यह तीन फल हैं इसी को त्रिफला कहते हैं त्रिफला की तोल में ऋषियों के दो मत हैं एक तो कहते हैं कि एक भाग हर्र दो भाग बहेड़ा और चार भाग आंवला लेवे, दूसरे कहते हैं कि तीनों को बराबर बराबर लेवे ।

यदि तीनों की बकली बराबर बराबर लीजावे तो दोनों का कहना ठीक होजाता है इसलिये तीनों का बकल ही बराबर बराबर ले चूर्ण बनावे यह त्रिफला अनुपान के हेरफेर से अनेक रोगों को दूर करता है कुछ का अनुपान नीचे लिखते हैं ।

त्रिफला पित्तनाशक है, कोढ के समान कठिन रोगों को भी दूर करदेता है । अग्नि को दीपन करनेवाला, नेत्रों को अत्यन्त हितकारी, घाव को भरनेवाला और शुद्ध करनेवाला है । वमन, गुल्म, ववासीर और ज्वर को दूर करनेवाला है तथा इनके सिवाय और भी अनेक रोगों को दूर करता है । केवल अनुपान का हेरफेर है ।

त्रिफला सेवन अनुपान ।

वातरोग में—घी गाय का तीन मासा, गुड़ छै मासा, त्रिफला छै मासा प्रतिदिन दोनों समय सेवन करते रहने से वात सम्बन्धी अनेक रोग दूर होते हैं ।

पित्तरोग में—शहद ८ मासा, मिश्री छै मासा और त्रिफला छै मासा प्रतिदिन दोनों समय सेवन करने से पित्त के अनेक रोग दूर होते हैं ।

कफ़रोग में—त्रिफला चार मासा, त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपल) दो मासे, दोनो को मिलाकर चूर्ण बना पानी के साथ दोनों समय छै छै मासा सेवन करने से कफ़रोग दूर होते हैं ।

प्रमेहरोग में—त्रिफला छै मासा ताजे पानी के साथ दोनों समय सेवन करने से कुछ दिनों में सब प्रकार के प्रमेह अवश्य दूर होते हैं ।

कोढ़रोग में—घी में मिलाकर छै मासा त्रिफला दोनों समय सेवन करे कुछ दिन में कोढ़ को फ़ायदा होने लगता है ।

मन्दाग्नि रोग में—छै मासा त्रिफला में अन्दाज़ से सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से मन्दाग्नि दूर होती है ।

नेत्ररोगों में—त्रिफला के काढ़े से नेत्रों को धोने से रोग दूर होते हैं। नेत्रों में जलन हो तो त्रिफला को रात में किसी मिट्टी के बर्तन में भिगोदेवे (१ तोला त्रिफला को पाव भर पानी में भिगोवै) फिर सवेरे उसे मलकर उसी पानी से आंखों में छींटा मार मार कर धोवे। इस प्रकार नेत्रों के अनेक रोग दूर होंगे।

खुजली रोग में—त्रिफला और गाय का घी मिलाकर चाटै त्रिफला तीन मासे, गाय का घी छै मासे लेना चाहिये दोनो समय।

वमन रोग में—यदि उलटी होती हो तो त्रिफला को बिजौरे नीबू के रस में मिलाकर तीन तीन मासा दोनों समय चाटै।

गुल्म और बवासीर रोग में—ज़िमींकन्द और गुड़ के साथ सेवन करै सूखा ज़िमीकन्द २ तोला, त्रिफला दो तोला, पुराना गुड़ दो तोला सबको एक साथ मिलाकर दो दो मासे की गोली बनावै ताजे पानी में एक एक गोली दोनों समय सेवन करै।

राजयक्ष्मा रोग में—गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन करै।

पाण्डुरोग में—तीन तीन माशा त्रिफला गुड़ में मिलाकर सेवन करै तो शरीर का पीलापन दूर हो।

बाल काले करने के लिये।

भांगरे का रस ६ मासा, त्रिफला ४ मासा, घी ३ मासा, मिला कर कुछ दिन सेवन करते रहने से बाल काले होजाते हैं जड़ से ही काले निकलते हैं।

विषमज्वर में।

त्रिफला २ तोला पावभर पानी में औटावे जब एक छटांक पानी रहजावै तब छानकर उसमें गाय का दूध आधपाव और गुड़ ६ मासा मिलाकर पीवै प्रतिदिन प्रातःकाल पीने से विषमज्वर दूर होता है।

दस्त आते हों तो।

गाय के मट्ठे के साथ चार मासा त्रिफला को प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल सेवन करै दस्त बन्द होंगे।

सूजन, कामलारोग, पाण्डुरोग और पेट के रोगों में छै मासा त्रिफला गोमूत्र के साथ सेवन करे तो रोग दूर हों।

दुर्बलता, जीर्णज्वर, तपेदिक इन रोगों में गाय के गरम दूध के साथ तीन तीन मासा दोनों समय सेवन करे।

अन्य रोगों में त्रिफलादि चूर्ण सेवन ।

नेत्ररोग, शिरोरोग, कोढ़, खाज, घाव की पीड़ा, सुज़ाक, मूत्राघात (पेशाब कठिनाई से होना), कामलारोग, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि इन रोगों में केवल ताजे पानी से सेवन करे।

जाड़े के दिनों में सोंठ और गुड़ मिलाकर, गर्मी में मिश्री मिला कर दूध के साथ सेवन करे। वर्षाऋतु में केवल सोंठ मिलाकर सेवन करे।

उपदंश (गर्मी) रोग में ।

त्रिफला के काढ़े से गर्मी के घाव धोने से आराम होता है। त्रिफला के चूर्ण को जलाकर उसी राख को गर्मी के घावों में गाय के मक्खन में मिलाकर मरहम बना लगाने से घाव जल्द आराम होते हैं।

पेशाब रुक रुककर होती हो तो ।

त्रिफला एक तोला, ककड़ी के बीज एक तोला सेंधानोन ६ मासे, शिलाजीत १ तोला सबको मिलाकर चूर्ण बनावे दो दो मासे प्रतिदिन पानी के साथ सेवन करे तो पेशाब की सब शिकायतें दूर हों।

नेत्ररोगों में त्रिफला का सेवन ।

नेत्ररोगों में त्रिफला ४ तोला, मिश्री १६ मासे, मुलहठी दो मासे, बंसलोचन दो मासे, पीपर छोटी दो मासे इन्हें पीसकर कपड़छान कर तीन तीन मासे की पुड़िया बना रक्खे एक एक पुड़िया प्रतिदिन दोनों समय गाय का घी तीन मासे शहद असली ६ मासा में मिलाकर सेवन करे तो नेत्रों के अनेक प्रकार के रोग अवश्य दूर हों। इस प्रकार त्रिफला के इतने गुण वैद्यकशास्त्र में बतलाये हैं परीक्षा करने से भी ठीक मालूम हुये। यह बड़ी सस्ती और सरल औषधि है।

सब प्रकार के दस्तों में।

६-गंगाधर चूर्ण।

नागरमोथा
सोंठ
धाय के फूल
लोध पठानी
नेत्रवाला
वेलगिरी
मोचरस
पाढ़
इन्द्रजौ
कुड़े की छाल
आम की गुठली
अतीस
लजालू

यह सब औषधियां बराबर बराबर मँगाकर साफ़ कर कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावे ३—३ मासे की पुड़िया सुबह, दोपहर, शाम को चावल के धोवन में शहद मिलाकर औषधि खाकर ऊपर से पीलेवे तो दस्तो का आना सम्पूर्ण अतीसार और संग्रहणी रोग दूर हो यह चूर्ण दस्तों के लिये बड़ाही उपयोगी है।

१०-संग्रहणी रोग केलिये सरल विधि

कालीमिर्च
चीते की छाल
संचर नमक

इन तीन औषधियो का चूर्ण बनाकर चार चार मासे की एक एक पुड़िया दोनों समय गाय के मट्ठे के साथ प्रतिदिन सेवन करे तो संग्रहणी, उदरप्लीहा, मन्दाग्नि, वायुगोला और बवासीर इनको दूर करे।

११-अन्य उपाय संग्रहणी रोग में।

कैथ का गूदा ८ तोला
मिश्री ६ तोला
अनार दाना तीन तोला
इमली तीन तोला
वेलगिरी तीन तोला
धाय के फूल तीन तोला
अजमोद तीन तोला
पीपल तीन तोला
काली मिर्च एक तोला
ज़ीरा एक तोला
धनियां एक तोला
पीपरामूल एक तोला
नेत्रवाला एक तोला
संचर नोन एक तोला
अजवायन एक तोला
दालचीनी एक तोला
इलायची के वीज एक तोला
तमाल पत्र एक तोला

नागकेशर एक तोला | चीते की छाल एक तोला
सोंठ एक तोला

सबको कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावै और चार चार मासे की पुड़िया बना गाय के मट्ठे के साथ एक एक पुड़िया दोनों समय सेवन करें तो संग्रहणी रोग, गले के सात प्रकार के रोग, तालू का रोग, सब प्रकार के दन्त व मुख रोग कुछ दिन सेवन करने से अवश्य दूर होते हैं।

१२-दाड़िमाष्टक चूर्ण अनेक रोगों में

अनार दाना दो छटांक	मिश्री आठ छटांक
दालचीनी डेढ़ तोला	इलायची डेढ़ तोला
तमाल पत्र दो तोला	सोंठ एक छटांक
काली मिर्च एक छटांक	पीपल एक छटांक

सबको कूट पीसकर बारीक चूर्ण बनावै। इसको चार चार माशा प्रतिदिन सेवन करने से मुख का जायका ठीक होता है, भोजनों में रुचि बढ़ती है, अग्नि प्रदीप्त होती है, कंठ को हित करती है, खांसी और ज्वर को दूर करता है, खाने में अधिक स्वादिष्ट बनाना हो तो अन्दाज़ से सेंधा नमक डालदेवे तो अधिक स्वादिष्ट होजाता है।

१३-लवंगादि चूर्ण अनेक रोगों पर

लौंग	शुद्ध कपूर	इलायची
दालचीनी	जायफल	खस
सोंठ	काला जीरा	काली अगर
वंसलोचन	जटामासी	नीला कमल
पीपल	सफेद चन्दन	तगर
नेत्रवाला	कंकोल	नागकेशर

इन औषधियों को बराबर बराबर मंगाकर कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावै यह चूर्ण जितना तौल में हो उससे आधी मिश्री मिलावै इसकी तीन तीन माशा की पुड़िया दोनों समय ताजे पानी से सेवन करै इसके सेवन से अग्नि प्रदीप्त हो, अरुचि दूर हो, शरीर पुष्ट हो, बल और वीर्य की वृद्धि हो, वात, पित्त, कफ इनके प्रकोप को दूर करै हृदय रोग,

कंठरोग, खांसी, हिचकी, पीनस रोग, क्षयरोग, तमकश्वास, अतिसार, अरुचि, प्रमेह, गोला और संग्रहणी इन सब रोगों को दूर करता है ।

इस चूर्ण में शुद्ध कपूर है इसलिये कपूर शुद्ध करने की विधि लिखती हूं ।

कपूर शुद्ध करने की विधि ।

कपूर को एक मिट्टी के सकोरे में रखकर मिट्टी के बहुत छोटे चूल्हे या ईंटों पर रखकर उसके नीचे मोटी बत्ती का दीपक जलावे उस कपूरवाले सकोरे के ऊपर एक और मिट्टी का सकोरा ढकदेवे संधि न रहने पावै ऊपरवाले सकोरे के ऊपर एक कपड़े को कई परत कर के पानी में भिगोकर डालदेवे और थोड़ा २ पानी ऊपर से डालता जावै कपड़ा सूखने न पावै । दीपक की वत्ती की आंच बराबर जिस सकोरे में कपूर है नीचे से लगती रहै ।

इस प्रकार नीचे के सकोरे से आंच की गरमी से कपूर उड़कर ऊपर के सकोरे में आकर जम जावैगा थोड़ी देर में सकोरे को खोलकर ठंढा कर कपूर निकाल कर काम में लावै इस कपूर के बहुत अधिक गुण हैं यह औषधि में अधिक काम में लाया जाता है ।

१४-खांसी के लिये मरिचादि वटी ।

कालीमिर्च १ तोला	पीपल १ तोला
जवाखार आधा तोला	अनार की छाल दो तोला

इन औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावै इसमें आठ तोला गुड़ मिलाकर दो दो मासे की गोली बना मुँह में रखकर चूसे तो सब प्रकार की खांसी दूर हो । खांसी के लिये यह औषधि अत्यन्त उपयोगी है ।

१५-पीनस रोग के लिये ।

पीनस रोग बड़ा भयंकर होता है इसमें नाक और आंख ख़राब होजाती है, इस रोग में नाक में कीड़े पड़कर नाक सड़जाती है नाक की हड्डी को कीड़े खालेते हैं तब नाक बैठजाती है नाक बैठने से आंखों को भी हानि पहुंचती है इसलिये पीनस रोग के लक्षण मालूम

होते ही इस औषधि का सेवन करना आरम्भ करदेवे । पीनस रोग सब बहिनों ने सुना होगा सब प्रकार के रोगों के लक्षण पहिचान के जानने की ज़रूरत हो तो मेरी बनाई हुई "देवी अनुभव प्रकाश" दूसरा भाग मंगाकर देखो ।

सोंठ	कालीमिर्च	पीपल
अमलवेत	चव्य	तालीसपत्र
चित्रक	जीरा	इमली की छाल

इन सब औषधियों को एक एक तोला लेवे ।

दालचीनी १॥ तोला इलायची के दाने १॥ तोला पत्रज १॥ तोला

इन सबको इकट्ठा कर कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावे इसमें बीस तोला गुड़ मिलाकर झरवेरी के बेर की बराबर गोली बनालेवे और एक एक गोली दोनों समय ताज़े पानी से सेवन करे तो इसके सेवन से पीनसरोग, श्वास, खांसी शीघ्रही दूर हो, अरुचि दूर हो, आवाज़ शुद्ध हो यह पीनसरोग के लिये बड़ी ही उपयोगी औषधि है

१६—बवासीर-नाशक वटी ।

ज़िमींकंद को सुखाकर कूट पीस चूर्ण बना ३२ तोला लेवे चीते की छाल १६ तोला लेवे । सोंठ ४ तोला, कालीमिर्च २ तोल सबको एकही में मिलाकर कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावे यह चूर्ण जितना तोल में हो उतना ही गुड़ मिलाकर झरवेरी के बेर की बरा बर गोली बनावे दो गोली प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल ताज़े पानी के साथ सेवन करे इसके सेवन करते रहने से कुछ दिनों में बवासीर दूर होती है ।

सब प्रकार के ज्वरों पर काढ़ा ।

गिलोय	धनियाँ	नीम की छाल
पद्माख	लाल चन्दन	

इन पांच औषधियों को एक एक छटांक मंगाकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर रखलेवे एक तोला औषधि को एक पाव पानी में मिट्टी की हंड़िया में धीमी धीमी आंच से पकावे जब पकते पकते एक छटांक पानी रहजावे तब उतार कर मल छान आधा तोला असली

शहद मिलाकर पीलेवे इसी प्रकार कई दिन तक पीवे इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर अवश्य दूर होजाते हैं। इससे दाह, वमन, अरुचि आदि अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं।

शुंठ्यादि काढ़ा ज्वर पर।

सोंठ देवदारु धनियां
कटेरी बड़ी कटेरी (भटकटैया)

इन सब औषधियों को डेढ़ डेढ़ मासा लेकर जौ की बराबर टुकड़े कर आध पाव पानी में धीमी धीमी आंच से पकावे जब आधी चौथाई पानी रहजावै तब उतार मल छानकर थोड़ा शहद मिलाकर सेवन करै तो ज्वर दूर हो यह काढ़ा प्रथमज्वर वाले को देवे तो ज्वर दूर हो।

अनेक ज्वरों के लिये काढ़ा।

कटेरी चिरायता कुटकी
सोंठ गिलोय अंड की जड़

इन सब औषधियों को कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर छै मासा औषधि लेवे एक पाव पानी में धीमी धीमी आंच से पकावे जब चौथाई पानी रहजावे तब उतार कर मल छान थोड़ा शहद मिलाकर पीलेवे इस प्रकार कुछ दिन तक पीते रहने से अनेक प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

स्त्रियों के प्रसूतज्वर पर काढ़ा।

देवदारु	बच	कूट
पीपल	सोंठ	कायफर
नागरमोथा	चिरायता	कुटकी
धनियां	बड़ी हर्ड	गजपीपल
लाल धमासा	गोखरू	धमासा
कटेरी	अतीस	गिलोय
काकड़ासिंगी	काला जीरा	

इन सब औषधियों को कूटकर जौ की बराबर टुकड़े करके एक तोला औषधि को एक पाव पानी में धीमी धीमी आंच से

मिट्टी की हंडिया में पकावें जब आठवां हिस्सा पानी बाकी रहे तब उतार कर मल छान शहद मिलाकर पीवे ।

इसके कुछ दिन सेवन करने से स्त्रियों का प्रसून रोग अवश्य दूर होजाता है इसमें सन्देह नहीं शरीर की पीड़ा, शूल, खांसी, ज्वर, मूर्छा, कंपवायु, शिर की पीड़ा इस प्रकार की प्रसून रोग की सब शिकायतें जाती रहती हैं ।

शीतज्वर के लिये काढ़ा ।

कटेरी — धनियां — सोंठ — गिलोय
नागरमोथा — पखान — लाल चन्दन — चिरायता
परवल के पत्ते — अडूसा — अंड की जड़ — कुटकी
इन्द्र जौ — नीम की छाल — भारंगी — पित्तपापड़ा

इन औषधियों का काढ़ा बनाकर प्रातःकाल पीने तो सब प्रकार का शीतज्वर दूर हो ।

विषमज्वर पर काढ़ा ।

नागरमोथा — कटेरी — गिलोय — सोंठ — आंवले

इन पांच औषधियों का काढ़ा सहत और पीपल का चूर्ण डाल कर पीवे तो विषमज्वर दूर होवे ।

प्रतिदिन आनेवाले ज्वर पर ।

परवल के पत्ते — त्रिफला — नीम की छाल
अमलतास का गूदा — अडूसा — मुनक्का

इन सब औषधियों को कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक तोला औषधि का विधिपूर्वक काढ़ा बनावे और शहद डालकर पीवे तो प्रतिदिन आनेवाला ज्वर दूर हो ।

सब प्रकार के ज्वरों के लिये ।

परवल के पत्ते — इन्द्रजौ — देवदारु
त्रिफला — नागरमोथा — मुनक्का
मुलहठी — गिलोय — अडूसा

इन सब औषधियों को मंगाकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक तोला औषधि को पावभर पानी में धीमी धीमी आंच से पकावे जब आठवां हिस्सा पानी बाकी रहजावे तब उतार कर मल छान शहद डालकर प्रातःकाल पीवै तो प्रतिदिन आनेवाला, दूसरे दिन आनेवाला, तीसरे दिन आनेवाला और चौथे दिन आनेवाला, हर समय बना रहनेवाला विषमज्वर, दाहपूर्वक ज्वर यह सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

२५-तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।

गिलोय	धनियां	नागरमोथा
लाल चन्दन	नेत्रवाला	सोंठ

इन सब औषधियों को कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक तोला औषधि को एक पाव पानी में धीमी धीमी आंच से पकावे जब आठवां हिस्सा पानी रहजावै तब उतार मल छान कर शहद मिलाकर पीवे इसके कुछ दिन सेवन करने से तिजारी दूर होती है।

२६-चौथिया ज्वर के लिये।

देवदारु	बड़ी हर्ड	अडूसा
सालपर्णी	सोंठ	आंवला

इन सब औषधियों का काढ़ा ऊपर लिखी विधि के अनुसार बनाकर शहद मिलाकर पीवे तो चौथिया दूर हो। श्वास और खांसी दूर हो अग्नि प्रदीप्त हो।

२७-ज्वरातिसार के लिये।

गिलोय	धनियां	खस	सोंठ
नेत्रवाला	पित्तपापड़ा	बेलगिरी	अतीस
पाढ़ इन्द्र जौ	लालचन्दन	चिरायता	नागरमोथा

इन सब औषधियों का काढ़ा ऊपर लिखी विधि से बनाकर शहद मिलाकर सेवन करै तो रक्त पित्त और ज्वरातिसार दूर हो।

२८-आमशूल पर काढ़ा।

धनिया नेत्रवाला बेलगिरी नागरमोथा सोंठ

इन औषधियों को विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करने से आंव के दस्त बन्द होकर अग्नि दीप्त हो भूख बढ़ती है।

२९-अन्य विधि दूसरा काढ़ा।

कुड़े की छाल, अतीस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला,

इन सब औषधियों को कूटकर विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करे तो आंव के दस्त, शूल सहित रक्तातिसार दूर हो।

३०-अनेक रोग नाशक काढ़ा।

नेत्रवाला	धाय के फूल	लोध
पाढ़	लजालू	कुड़े की छाल
धनिया	अतीस	नागरमोथा
गिलोय	बेलगिरी	सोंठ

इन सब औषधियों का काढ़ा ऊपर लिखी विधि से बनाकर पीवै तो बहुत दिनों के आंव के दस्त, अरुचि, आमशूल (पीड़ा होकर) आंव के दस्त आना, रुधिर-विकार और ज्वर इन सब शिकायतों को दूर करने में यह काढ़ा पाचन है।

३१-बालकों के सब प्रकार के दस्तों में

धाय के फूल, बेलगिरी, लोध, गजपीपल, नेत्रवाला,

इन सब औषधियों को मंगाकर साफ़ करके जौ की बराबर कूटकर तीन तीन मासा या छै मासा अथवा इससे कम बालक की अवस्था के अनुसार मात्रा बना काढ़ाकर शहद मिलाकर बालक को चटावै तो सब प्रकार के दस्त आराम हों बालक निरोग हो।

३२-आम संग्रहणी पर काढ़ा।

आंव सहित दस्तों की संग्रहणी में इस काढ़े का सेवन करने से रोग दूर होता है।

गिलोय	अतीस	सोंठ	नागरमोथा

इन सब औषधियों को विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करने से आम-सहित संग्रहणी के दस्त आराम होते हैं और दीपन पाचन करता है।

३३-कामला और पांडुरोग पर

हर्ड	बहेड़ा	आंवला	गिलोय
कुटकी	नीम की छाल	चिरायता	अडूसे के पत्ते

इन सब औषधियों का काढ़ा बनाकर शहद मिला विधिपूर्वक सेवन करै तो कामला जिसे कमल कहते हैं, पांडुरोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है यह सब शिकायतें दूर हों।

३४-पांडुरोग व शरीर की सूजन पर

सोंठ की जड़	हरड	नीम की छाल	दारुल हल्दी
परवल के पत्ते	कुटकी	गिलोय	सोंठ

इन सब का काढ़ा विधिपूर्वक बनाकर गोमूत्र मिलाकर पीवे तो पांडुरोग, खांसी श्वास, पेट के अनेक रोग, शूल और समस्त शरीर की सूजन दूर हो।

३५-स्त्री पुरुषों के अनेक रोग नाशक

रास्ना दो तोला	धमासा एक तोला
खिरैंटी एक तोला	अंड की जड़ एक तोला
देवदारु एक तोला	कचूर एक तोला
बच एक तोला	अडूसा का*पंचाङ्ग एक तोला
सोंठ एक तोला	हरड़ की छाल एक तोला
चव्य एक तोला	नागरमोथा एक तोला

*पंचाङ्ग में जड़ फूल फल पत्ती छाल इत्यादि कुल लेना चाहिये जिस औषधि का पंचाङ्ग लिखा हो उसको कुल काम में लाना चाहिये।

२८-आमशूल पर काढ़ा ।

धनियां नेत्रवाला वेलगिरी नागरमोथा सोंठ

इन औषधियों को विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करने से आंव के दस्त बन्द होकर अग्नि दीप्त हो भूख बढ़ती है ।

२९-अन्य विधि दूसरा काढ़ा ।

कुडे की छाल, अतीस, वेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला,

इन सब औषधियों को कूटकर विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करै तो आंव के दस्त, शूल सहित रक्तातिसार दूर हो ।

३०-अनेक रोग नाशक काढ़ा ।

नेत्रबाला	धाय के फूल	लोध
पाढ़	लजालू	कुडे की छाल
धनियां	अतीस	नागरमोथा
गिलोय	वेलगिरी	सोंठ

इन सब औषधियों का काढ़ा ऊपर लिखी विधि से बनाकर पीवै तो बहुत दिनों के आंव के दस्त, अरुचि, आमशूल (पीड़ा होकर) आंव के दस्त आना, रुधिर-विकार और ज्वर इन सब शिकायतों को दूर करने में यह काढ़ा पावन है ।

३१-बालकों के सब प्रकार के दस्तों में

धाय के फूल, वेलगिरी, लोध, गजपीपल, नेत्रबाला,

इन सब औषधियों को मंगाकर साफ़ करके जौ की बराबर कूटकर तीन तीन मासा या छै मासा अथवा इससे कम बालक की अवस्था के अनुसार मात्रा बना काढ़ाकर शहद मिलाकर बालक को चटावै तो सब प्रकार के दस्त आराम हों बालक निरोग हो ।

३२-आम संग्रहणी पर काढ़ा ।

आंव सहित दस्तों की संग्रहणी में इस काढ़े का सेवन करने से रोग दूर होता है ।

गिलोय	अतीस	सोंठ	नागरमोथा

इन सब औषधियों को विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करने से आम-सहित संग्रहणी के दस्त आराम होते हैं और दीपन पाचन करता है।

३३-कामला और पांडुरोग पर

हर्ड	बहेड़ा	आंवला	गिलोय
कुटकी	नीम की छाल	चिरायता	अडूसे के पत्ते

इन सब औषधियों का काढ़ा बनाकर शहद मिला विधिपूर्वक सेवन करै तो कामला जिसे कमल कहते हैं, पांडुरोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है यह सब शिकायतें दूर हों।

३४-पांडुरोग व शरीर की सूजन पर

सोंठ की जड़	हरड	नीम की छाल	दारुल हल्दी
परवल के पत्ते	कुटकी	गिलोय	सोंठ

इन सब का काढ़ा विधिपूर्वक बनाकर गोमूत्र मिलाकर पीवै तो पांडुरोग, खांसी श्वास, पेट के अनेक रोग, शूल और समस्त शरीर की सूजन दूर हो।

३५-स्त्री पुरुषों के अनेक रोग नाशक

रास्ना दो तोला	धमासा एक तोला
खिरैंटी एक तोला	अंड की जड़ एक तोला
देवदारु एक तोला	कचूर एक तोला
बच एक तोला	अडूसा का*पंचाङ्ग एक तोला
सोंठ एक तोला	हरड़ की छाल एक तोला
चव्य एक तोला	नागरमोथा एक तोला

*पंचाङ्ग में जड़ फूल फल पत्ती छाल इत्यादि कुल लेना चाहिये जिस औषधि का पंचाङ्ग लिखा हो उसको कुल काम में लाना चाहिये।

सोंठ की जड़ एक तोला	गिलोय एक तोला
चिरायता एक तोला	सौंफ एक तोला
गोखरू एक तोला	असगंध एक तोला
अतीस एक तोला	अमलतास का गूदा एक तोला
शतावर एक तोला	छोटी पीपल एक तोला
चियावांसा एक तोला	धनियाँ एक तोला
बड़ी कटेरी एक तोला	छोटी कटेरी एक तोला

इन सब औषधियों को कूट जौ की बराबर टुकड़े कर विधि पूर्वक काढ़ा बनावे और २ मासा सोंठ का चूर्ण अथवा पीपल का चूर्ण मिलाकर शहद डालकर मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करै या अंडी के तैल में मिलाकर सेवन करै या योगराज गूगल मिलाकर सेवन करै।

इसके सेवन से सर्वाङ्ग कंपवायु, कुबड़ापन, कमर की पीड़ा, पक्षाघात रोग, अपबाहुक गृध्रसी, आमवात श्लीपद (जिसे हाथीपाँव कहते हैं) अपतानवायु, अंडवृद्धि (पुरुषों के अंडकोष अर्थात् पोते बढ़जाना), अफरा, जंघा जानु की पीड़ा, वीर्यविकार पुरुष-इन्द्री के रोग, स्त्रियों का वंध्यादोष, योनि और गर्भाशय के अनेक रोग इन सबको दूर करता है।

३६-स्तन आदि की वायु के लिये।

अंड की जड़	बिजौरे की जड़	गोखरू	छोटी कटेरी
बड़ी कटेरी	पाषाणभेद	बेलगिरी	

इन सब औषधियों की जड़ को बराबर बराबर मंगाकर कूट कर काढ़ा बनावे उस काढ़े में अंडी का तैल, भुनी हींग, जवाखार और सेंधा निमक इनका चूर्ण मिलाकर पीवै तो स्तन, कन्धा, कमर, पुरुष की इन्द्री का और छाती का इन सब अंगों का कठिन से कठिन शूल (पीड़ा) शीघ्रही दूर हो।

३७-वातशूल पर काढ़ा।

सोंठ अंड की जड़ इन औषधियों को विधिपूर्वक काढ़ा बना कर उसमें भुनी हींग और काला नमक मिलाकर प्रातःकाल सेवन करै तो वात सम्बन्धी पीड़ा अवश्य दूर हो।

३८-त्रिफलादि काढ़ा पित्तशूल पर।

हरड, बहेड़ा, आमला और अमलतास का गूदा यह सब औषधियाँ बराबर बराबर मंगाकर विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर खाँड़ और शहद मिलाकर पीवै तो रक्तपित्त दाह और पित्तशूल दूर हो।

३९-कफ़विकार से उतपन्न हुए शूल पर

अंड की जड़ आठ तोला ले जौ की बराबर टुकड़े कर ३२ तोला पानी डालकर धीमी धीमी आंच से पकावै जब आठवां हिस्सा पानी रहजावै तब उतारकर मल छान उसमें जवाखार मिलाकर सेवन करै तो पसवाड़े और हृदय में होनेवाली कफ़शूल दूर हो।

४०-मूत्रकृच्छ्र पर काढ़ा।

छोटी हरड़	धमासा	अमलतास का गूदा
गोखरू	पाषाण भेद	

इन पांच औषधियों का काढ़ा करके उसमें शहद मिलाय के पीवै तो दाह, पेशाब का रुकना और वायु विकार दूर हो।

४१-पथरी, शर्करादि रोगों पर काढ़ा

छोटी इलायची के बीज	मुलहठी	गोखरू
रेणुका बीज	अंड की जड़	अडूसा
पीपर	पाषाण भेद	

इन आठ औषधियों का काढ़ा करके उसमें शुद्ध शिलाजीत मिला कर पीवै तो शर्करा पथरी और मूत्रकृच्छ्र रोग दूर हो।

४२-गरमी और सुज़ाक के लिये काढ़ा

जड़ सहित गोखरू के वृक्ष का काढ़ा बनाकर उसमें खांड़ और शहद मिलाकर पीवै तो सुज़ाक और गरमी रोग दूर हो।

४३-प्रमेह रोग पर काढ़ा ।

हरड़	बहेड़ा	आंवला
दारुलहल्दी	नागरमोथा	देवदारु

इन औषधियों का काढ़ा बनाकर शहद मिलाकर सेवन करै तो प्रमेह दूर हो ।

प्रमेह पर अन्य सरल उपाय ।

कुड़े की छाल	हरड़	बहेड़ा
आंवला	दारुलहल्दी	नागरमोथा

इन औषधियों का काढ़ा विधिपूर्वक बनाकर शहद मिलाकर सेवन करै तो सब प्रकार का प्रमेह रोग दूर हो ।

प्रमेह पर अन्य विधि ।

हरड	बहेड़ा	आंवला
दारुलहल्दी	नागरमोथा	इन्द्रायन की जड़

इन छै औषधियों के काढ़े में हल्दी मिलाकर पीवै तो सब प्रक के प्रमेह दूर हों ।

४४-स्त्रियों के प्रदररोग पर काढ़ा

दारुलहल्दी	रसौत	नागरमोथा	शुद्ध भिलावां
बेलगिरी	अडूसा	चिरायता	

इन सब औषधियों को बराबर बराबर ले कूटकर विधिपूर्व काढ़ा बनावे और शहद मिलाकर सेवन करे तो स्त्रियों का सब प्रका का प्रदररोग दूर हो, सब प्रकार की प्रदर सम्बन्धी शिकायत जाती रहै

४५-मेदरोग पर काढ़ा ।

मेद रोग (अर्थात् चर्बी का बढ़ जाना) जिन लोगों के शरी में चर्बी अधिक बढ़ जाती है वह मेदरोग कहलाता है मेदरोग स्त्री पुरुष सबको ही अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं परन स्त्रियों को मेदरोग अधिक हानिकारक है क्योंकि जब स्त्रियों के शरी

में चर्बी अधिक बढ़ जाती है तब गर्भाशय की नसों में भी चर्बी आकर नसों के मुंह बन्द होजाते हैं इसलिये मासिकधर्म में भी ख़राबी आजाती है खुलासा नहीं होता और गर्भ भी नहीं रहता मेदरोग वाली हज़ारों स्त्रियां सन्तानहीन देखी जाती हैं।

इसमें पाठिकायें शंका करेंगी कि बहुत मोटी स्त्रियों के सन्तान उत्पन्न होती है। जो स्त्रियां प्राकृतिक नियमानुसार मोटी हैं उनका समस्त शरीर ही उसी प्रकार का है उन्हें मोटाई का कोई रोग नहीं है उनमें असली मोटापन है उनका समस्त शरीर सुडौल होता है; जिन्हें चर्बीरोग होता है उनके शरीर का नीचे का हिस्सा और छाती अधिक भारी होजाती हैं नीचे के हिस्से में चर्बी बढ़जाने से गर्भाशय में भी चर्बी आजाती है।

जिन स्त्रियों के शरीर में प्राकृतिक मोटाई है चर्बीरोग नहीं है उनके समस्त शरीर में एकसमान चर्बी रहती है इसलिये उनकी असली मोटाई गर्भाशय को हानिकारक नहीं होती अतएव ऐसी स्त्रियों के बराबर सन्तान होती रहती है।

किसी किसी स्त्री के एक दो सन्तान होकर बाद को यदि मेदवृद्धि होगई तो आगे को सन्तान होना बन्द होजाता है यदि किसी कारण से किसी प्रकार का रोग होजाने से मेदवृद्धि वाली स्त्री दुर्बल होजावे अथवा किसी विशेष चिन्ता से निर्बल होजावै तो सन्तान होने लगती है। मेदवृद्धि रोग पर आगे विस्तार पूर्वक लिखूंगी।

४६-मेदवृद्धि की सरल चिकित्सा।

स्त्री या पुरुष किसी को भी मेदवृद्धि हो तो त्रिफला का काढ़ा करके उसमें शहद मिलाय के पीवै और औटाया हुआ पानी ठंढा करके जब प्यास लगै उसी पानी में शहद मिलाकर पीवै बिना शहद के पानी न पीवे और औटाया हुआ ही पानी पीवै तो मेदवृद्धि रोग दूर हो

४७-उदर-रोगों पर काढ़ा।

यदि पेट अधिक बढ़ गया हो चर्बीरोग होगया हो तो:—

बच, चीते की छाल, सोंठ, देवदारु

इन औषधियों का काढ़ा बनाकर उसमें निशोथ का चूर्ण तीन माशा और गोमूत्र एक छटांक मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करे तो मेदवृद्धि और अन्य सब प्रकार के उदररोग दूर हों।

मेदवृद्धि में दस्तों की औषधियां दीजाती हैं दस्तों द्वारा चर्बी निकल जाती है इसलिये मेदवृद्धि में दस्तावर औषधियां दीजाती हैं ऊपर लिखी औषधियां भी दस्तावर हैं।

४८-शोथोदर रोग पर काढ़ा।

पेट की सूजन को शोथोदर रोग कहते हैं यदि शोथोदर रोग हो तो

सोंठ की जड़, गिलोय, देवदारु, बड़ी हरड़ सोंठ

इन औषधियों का काढ़ा कर शुद्ध गूगल और गौमूत्र मिलाकर पीवै तो पेट का शोथोदर रोग शीघ्रही दूर हो।

४९-समस्त अंग की सूजन पर।

सोंठ की जड़	दारुहल्दी	हल्दी
सोंठ	बड़ी हरड़	गिलोय
चीते की छाल	भारंगी	देवदारु

इन औषधियों का काढ़ा करके शहद मिलाकर पीवै तो सम्पूर्ण अंग की सूजन दूर हो।

५०-पुरुषों के अंडकोषों की सूजन।

पुरुषों के अंडकोष (पोते) कई कारणों से सूज जाते हैं हरड, बहेड़ा, आंवला इन तीनों को एक में मिलाकर (त्रिफला) काढ़ा बनाकर गोमूत्र मिलाकर सेवन करने से पोतों की सूजन दूर होती है।

अन्य उपाय।

रास्ना	गिलोय	खरैटी	मुलहठी
गोखरू	अंड की जड़		

इन औषधियों का काढ़ा करके उसमें एक तोला अंडी का तैल मिलाकर सेवन करै तो वायु से उत्पन्न हुई पोतों की सूजन दूर हो।

५१-गंडमाला रोगपर काढ़ा।

कचनार की छाल एक तोला एक पाव पानी में काढ़ा बनाकर उसमें तीन मासा सोंठ का चूर्ण मिलाकर पीवै तो गंडमाला रोगदूर हो।

५२-भगंदर रोग पर काढ़ा ।

खैरसार हरड़ बहेड़ा आमला

इन औषधियों का काढ़ा करके उसमें भैंस का घी और वायविड़ंग का चूर्ण मिलाय के पीवै तो भगंदर रोग दूर हो ।

५३-गरमी रोग पर काढ़ा ।

परवल के पत्ते हरड़ बहेड़ा
आमला नीम की छाल चिरायता
खैरसार विजयसार

इन आठ औषधियों का विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर उसमें शुद्ध गूगल मिलाकर सेवन करै तो उपदंश (गरमी) रोग दूर हो । अधिक दिन सेवन करते रहने से गरमी रोग जड़ से जाता रहता है ।

वातरक्त ।

वातरक्त उसे कहते हैं जिसमें शरीर भर में चकत्ते पड़जाते हैं हर प्रकार के रोगों की उत्पत्ति का कारण और रोगों की पहिचान, लक्षण जानना हो तो "देवी अनुभव प्रकाश" का दूसरा भाग मंगाकर देखो ।

५४-देवी अनुभव प्रकाश दूसरा भाग

यह बहुत बड़ा ग्रन्थ होगा इसको पढ़ने से ही स्त्रियां हर प्रकार के रोगों के विषय में पूर्णज्ञान प्राप्त कर सकेंगी प्रथम भाग में ही यह सब विषय रहने चाहिये थे परन्तु प्रथम भाग में कुल विषय नहीं आसकते थे इसलिये उसमें नहीं लिखेगये ।

"देवी अनुभव प्रकाश" तैयार होरहा है लिखकर पूरा होजाने पर छपना आरम्भ होगा । अभी से ग्राहकों में नाम लिखा लेने से कम मूल्य में मिलेगा ।

५५-वातरक्त पर काढ़ा ।

गिलोय अंड की जड़ अडूसा

इन औषधियों का काढ़ा करके इसमें अंडी का तेल मिलाकर सेवन करने से सम्पूर्ण शरीर का वातरक्त दूर होता है ।

दूसरा उपाय ।

परवल के पत्ते	हरड़	बहेड़ा
आमला	कुटकी	गिलोय
शतावर		

इन औषधियों का काढ़ा बनाकर सेवन करे तो दाहयुक्त वातरक्त दूर हो ।

५६-वातरक्त और कुष्टरोगों पर

मंजीठ	हरड	बहेड़ा
आमला	कुटकी	बच
दारुल हलदी	गिलोय	नीम की छाल

इन औषधियों का काढ़ा करके सेवन करने से वातरक्त, खाज, रुधिर के विकार, कोढ़, देह में काले चकत्तों का होना यह सब रोग दूर होजाते हैं ।

५७-गोली सब प्रकार की खांसी पर

काली मिर्च और पीपल एक एक तोला, जवाखार आधा तोला, अनार की छाल दो तोला इन चार औषधियों को कूट पीस कर चूर्ण करै और आठ तोले गुड़ में मिलाकर चार चार माशे की गोली बनावे । इस गोली को मुख में रखकर चूसते रहने से सब प्रकार की खांसी दूर होती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ।

५८-गोली श्वास रोग के लिये ।

कटेरी, ज़ीरा और आंवला इन तीनों औषधियों को बराबर बराबर ले कूट पीस शहद मिलाकर चार चार मासे की गोली बना रक्खै इस गोली को मुंह में रखकर चूसते रहने से ऊर्ध्ववायु ऊपर को चलती हुई श्वास, महा श्वास और तमकश्वास यह सब रोग शीघ्रही दूर हो सुख प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं ।

५९-गोली श्वास खांसी के लिये ।

सोंठ, बड़ी हर्ड़, नागरमोथा इन तीनों औषधियों को कूट पीसकर चूर्ण बनावै फिर दूना गुड़ मिलाकर चार चार मासे की गोली बनावै ।

इस गोली को मुख में रखकर चूसते रहने से सब प्रकार की खांसी और श्वासरोग अवश्य थोड़े ही दिनों में दूर होते हैं ।

६०-गोली प्यास, मुख रोग के लिये

आमला, कमल, कूट, खील और बड़ की कोंपल इन पांच औषधियों को बराबर बराबर मंगाकर शहद में मिला चार चार मासे की गोली बना मुख में रखने से अत्यन्त प्यास का लगना और मुख के छाले शीघ्रही दूर होते हैं ।

६१-गोली आंव गिरने में ।

सोंठ के चूर्ण में गुड़ मिलाकर चार चार मासे की गोली बनावै और दिन में तीनवार एक एक गोली खावै तो आंव का गिरना आराम हो ।

गुड़ और पीपल का चूर्ण कर गोली बनावै इन गोलियों के सेवन से अजीर्ण रोग दूर होता है ।

गुड़ और ज़ीरे को पीसकर गोली बनावै इसके सेवन से मूत्र-कृच्छ्र दूर होता है ।

छोटी हरड़ के चूर्ण में गुड़ मिलाकर गोली बना सेवन करते रहने से बवासीर नष्ट होती है ।

६२-गोली सब प्रकार की बवासीर पर

ज़िमींकन्द को सुखाकर कूट पीस चूर्ण करै उसमें से ३२ तोले चूर्ण ले चीते की छाल १६ तोले सोंठ चार तोले और काली मिर्च दो तोले ले सबको कूट पीस चूर्ण करै चूर्ण की बराबर गुड़ मिलाय गोली बनावै इस गोली को नित्य खाते रहने से सब प्रकार की बवासीर अवश्य दूर होती है ।

९३-मलहम अनेक प्रकार के घावों का

चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, परवल के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मजीठ, मुलहठी, मोम, कंजा, खस, सारिवा और लीला थोथा इन सब औषधियों को छै छै मासे लेवे और कूटकर पानी में चटनी की समान पीसकर उसमें चौगुना गाय का घी लेकर भली भांति मिला देवे फिर दिन भर धूप में रक्खा रहने दे दूसरे दिन धीमी धीमी आंच से घी को पकावै जब सब पानी का अंश जलजावै केवल घी रहजावै तब उतार कर शीशी या डिबिया में रख लेवे।

इस घी को नासूर के घाव में लगाने से कैसाही नासूर हो थोड़े ही दिनों में आराम होगा गीले गंभीर हर प्रकार के घाव जिनमें पीव बहती हो अत्यन्त पीड़ा होती हो शीघ्रही आराम होते हैं।

९४-सब प्रकार की खुजली फोड़ा फुंसी में

हल्दी को पानी में डाल डालकर चटनी की भांति पीसडाले उससे चौगुना सरसों का तैल लेवे उसमें उस पीसी हुई हल्दी को मिलावे फिर तैल से चौगुना आक के पत्तों का रस डाल के तैल को धीमी धीमी आंच से पकावै जब सब जलजावै केवल तैल ही रहजावै तब उतार कर छानले फिर बोतलों में भरकर रखछोड़े।

इसके लगाने से हर प्रकार की खुजली, फोड़ा, फुंसी, बिवाई आदि रोग थोड़े ही दिनों में दूर होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं।

९५-बहिरेपन के लिये।

कोमल कोमल बेल के फलों को गौमूत्र में पीसकर चटनी की भांति बना डाले फिर जितना वह हो उससे चौगुना तिली का तैल ले मिला देवै और तैल से चौगुना बकरी का दूध और तैल से चौगुना ही पानी डाल चूल्हे पर चढ़ा धीमी धीमी आंच में पकावे जब पानी दूध आदि सब जलजावै केवल तैल ही रहजावै तब उतार कर छान ले और बोतल में भरकर रखदे इसको कान में डालने से बहिरापन (कान से कम सुनाई देना) अवश्य दूर होता है।

९६-मुंह के छालों में ।

शहद को पानी में मिलाकर कुल्ले करने से मुख के छाले तथा घाव, मुंह की जलन और प्यास ये सब रोग शीघ्रही दूर होजाते हैं और मुख निरोग होजाता है ।

९७-दांतों के हिलने में ।

तिलों का तैल और सेंधा नमक इनको मिलाकर कुल्ले करे तो थोड़े ही दिनो में हिलते हुए दाँत मज़बूत होजाते हैं दांतों की पीड़ा दूर होती है और सब प्रकार से दाँत निरोग होजाते हैं ।

९८-नेत्ररोगों पर ।

हरड़, सेंधानमक, गेरू, रसौत ये चार औषधियों को बराबर २ ले जल से पीसकर नेत्रों के पलकों पर लेप करने से सब प्रकार के नेत्ररोग दूर होते हैं ।

स्वास्थ्य-रक्षा की उपयोगी बातें ।

भोजन की अज्ञानता, ऋतु और प्रकृति के अनुसार समय पर भोजन न करने से पेट में अनेक विकार उत्पन्न होते हैं जिससे दस्त साफ़ नहीं आता और बद्धकोष्ट जिसे क़ब्ज़ कहते हैं होजाता है । इस बात को सभी लोग जानते हैं कि पाख़ाना साफ़ न होने से पेटविकार से ही मनुष्य को अनेक प्रकार के साधारण और भयंकर रोग पैदा होते हैं, डाक्टर या वैद्य के पास जाओ तो वह पहिले यही पूंछते हैं कि पाखाना साफ़ होता है या नहीं ।

यदि पाख़ाना साफ़ होता तो यह रोग ही क्यों होता पहिले दस्त साफ़ होने की ही औषध देते हैं अथवा जिस रोग की औषधि देते हैं उसी में दस्त साफ़ होने की भी औषधि मिला देते हैं दस्त साफ़ होने से रोग भी शान्त होजाता है यदि रोग अधिक बढ़ा हुआ तो उसके दूर करने में वैद्य वा डाक्टर को कठिनाई होजाती है कोई भी रोग हो पेट के विकार से ही उत्पन्न होता है ।

क़ब्ज़ रहने से आँतें अपना काम ठीक नहीं करतीं और आँतों का काम ठीक न होने से पाचनक्रिया ठीक नहीं होती जिससे रस रक्त और वीर्य ठीक नहीं बनता रक्त में अनेक ख़राबियां होकर फोड़ा फुंसी, सिर दर्द, पसली का शूल, हड्डियों में पीड़ा, हैज़ा आदि जितने रोग हैं सब पेट के ही विकार से होते हैं परन्तु मनुष्य अज्ञानता वश इस पर कुछ ध्यान नहीं देते इसे साधारण समझकर बड़े बड़े रोगों में फंसकर कष्ट उठाते हैं।

क़ब्ज़ रोग बड़ा ही भयंकर रोग है इस कारण इससे बचने का हर समय ध्यान रखना चाहिये। हमारे देश में कोई घर इस रोग से खाली नहीं है हरएक घर में किसी न किसी को इस रोग की शिकायत अवश्य है इस रोग को साधारण न समझकर इसका उपाय सबको ही करते रहना चाहिये।

मनुष्य को निरोग और दीर्घायु रहने का एक यही सरल उपाय है कि प्रतिदिन आहार विहार का विचार रखना और ऋतु तथा प्रकृति के अनुसार भोजन करना चाहिये।

इस प्रकार भोजन न करने से मनमें ग्लानि उत्पन्न होती है, अप्रसन्नता रहती है, शरीर में सुस्ती, बेचैनी, किसी काम में मन न लगना, शिर का दुखना, निर्बलता, चित्त में भांति भांति के संकल्प विकल्पों का उत्पन्न होना, बुरे व्यसनों की ओर मन का चलना आदि अनेक उपद्रव होते हैं परन्तु मनुष्य इस बात को नहीं जानते कि इसका कारण क्या है।

यकृत और प्लीहा कलेजा तथा फेफड़ों पर भी क़ब्ज़ का बुरा प्रभाव पड़ता है वीर्य में भी अनेक विकार उत्पन्न होजाते हैं प्रमेह, स्वप्न दोष, बवासीर आदि साधारण और भयंकर रोग भी इसी के कारण उत्पन्न होते हैं प्रतिदिन दस्त खुलासा न होने के कारण पेट में मल जमा रहता है उसके कारण दुर्गन्धित वायु रक्त में मिलकर समस्त शरीर में फैलकर शरीर को रोगी बना देता है इस प्रकार क़ब्ज़ से ही अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

क्या स्त्री क्या पुरुष, बालक बूढ़े सबको पेट के ही विकार से रोग उत्पन्न होते हैं परन्तु इसकी लोग अज्ञानता वश कुछ भी परवाह नहीं करते जबतक यह रोग अपना पूरा प्रभाव शरीर पर नहीं जमा

लेता तबतक लोग इसे कुछ भी नहीं समझते इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि निरोग रहने के लिये क़ब्ज़ न होने पावै भोजन प्रतिदिन ऐसे हों कि जिनका पाचन ठीक होसकै क्योंकि:—

१—भोजनों की ही अज्ञानता से क़ब्ज़ उत्पन्न होता है।

२—आवश्यकता से अधिक भोजन कदापि मत करो।

३—बहुत कम भोजन भी मत करो जिससे भूखे रहो।

४—ज़रूरत से ज्यादह वस्तुयें कभी मत खाओ।

यदि शरीर निरोग है तो उसे अधिक बलवान् बनाने की कोई आवश्यकता नहीं; कभी भूलकर भी शरीर में अधिक बल आने के लिये व्यर्थ औषधियां या बलदायक पदार्थ मत खाओ जितने बलवान् पदार्थ हैं प्राय: क़ब्ज़ करनेवाले होते हैं अधिक मसाले खाना भी हितकारी नहीं।

शरीर के पोषण के लिये शरीर को जितने भोजन की आवश्यकता होती है उसके पचाने के लिये शरीर में प्रतिदिन पांच प्रकार का रस उत्पन्न होता है और वह भोजनों को पचाकर शरीर में रक्त आदि बनाकर शरीर का पोषण करता है परन्तु जब अनेक प्रकार के मसालेदार स्वादिष्ट भोजन होने से मनुष्य अधिक खाजाता है तब उसके पचाने के लिये उस रस की कमी होने से भलीभाँति पच नहीं सकता। क्योंकि पाचक रस को उत्पन्न करनेवाले शरीर के यंत्र (अवयव) पेट अधिक भरजाने के कारण बोझ से अपना काम पूरा नहीं कर सकते अतएव पाचन रस के बनने में कमी होजाती है और पचने में देरी होने से मल सूखकर आँतों में जम जाता है फिर उसका निकलना कठिन होजाता है। इससे पाखाना साफ़ न होकर धीरे धीरे आँतें उस सूखे हुए मल के इकट्ठा होते होते कमज़ोर पड़ जाती हैं इसी प्रकार क़ब्ज़ रोग बढ़कर अन्य रोग पैदा होने लगते हैं।

समय पर भोजन न करने से अथवा जितने भोजनों की शरीर के पोषण के लिये प्रतिदिन आवश्यकता है उससे कम करने से भी शरीर के यंत्र अपना पूरा काम नहीं करते इससे भी मल सूखकर वही दशा होजाती है।

बिना ज़रूरत के बलदायक पदार्थ खाने से भी आँतें उनके पचाने में असमर्थ होती हैं इसलिये क़ब्ज़ होजाता है।

इसीलिये प्रकृति ने शरीर को निरोग रख पोषण करनेवाले पदार्थों का भली प्रकार पाचन होने के लिये उनके साथ अनावश्यक पदार्थ भी लगा दिये हैं।

जैसे गेहूं और उसके ऊपर का छिलका इस बात को सभी जानते हैं कि गेहूं का आटा जितना मोटा होगा उतनी ही जल्दी पचैगा। गेहूं के आटे से जितना अधिक चोकर निकालकर मैदा बनाई जावैगी उसके बने हुए पदार्थों के पचने में उतनी ही अधिक देरी लगैगी गेहूं का दलिया रोगियों को खिलाते हैं जिससे शीघ्रही पच सकै गेहूं के आटे के बने पदार्थों की अपेक्षा मैदा के पदार्थ अधिक देरी में पचते हैं। इसी प्रकार मूंग, उर्द, मसूर की दालें छिलका उतरी हुई देरी में और छिलका सहित जल्द पचजाती हैं। प्रकृति का कोई पदार्थ और उसका कोई हिस्सा व्यर्थ नहीं बना। इसलिये जहांतक होसके क़ब्ज़ करनेवाले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये।

यदि कहिये कि सब पदार्थ खाने के ही लिये बने हैं फिर क्यो न खाये जावैं इसके लिये प्रकृति के नियमानुसार ऋतु और प्रकृति विचार कर प्रतिदिन उनका सेवन कीजिये तो कदापि हानिकारक नहीं परन्तु यहां तो लोगो ने अज्ञानतावश जो पदार्थ अच्छा लगा उसी की धुन बांध दी; न ऋतु का ध्यान है न अपनी प्रकृति का विचार है कि यह हमें हानि पहुचावैगा। बस यही कारण अधिक रोगी रहने का है।

कुछ लोग तमाखू सिगरेट बीड़ी आदि पीते हैं और कहते हैं कि इससे पाख़ाना साफ़ होता है। तमाखू खाकर पाख़ाने जाते हैं कि पाख़ाना साफ़ होगा परन्तु वे जान बूझकर अपने हाथ अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हैं आगे को उन्हें इससे बड़ी हानि पहुंचेगी क्योंकि इन अनावश्यक वस्तुओं से भी क़ब्ज़ होता है परन्तु उन्हें इसकी अभी कुछ ख़बर नहीं।

वीर्य की कमज़ोरी से भी, अधिक विषय करने से भी पाचन शक्ति कम होजाती है उन्हें भी क़ब्ज़ व अजीर्ण रोग उत्पन्न होजाता है। इसलिये क़ब्ज़ होनेवाली बुराइयों को जो ऊपर लिखीगई हैं छोड़ देना चाहिये।

क़ब्ज़ दूर होने के सरल उपाय।

गरिष्ट (भारी) नाना प्रकार के पदार्थ अधिक भोजन करने से क़ब्ज़ हुआ हो तो मसाले और भारी पदार्थों का सेवन छोड़ देना चाहिये। जहांतक होसके बहुत सादे भोजन और फलों का सेवन करना चाहिये तरकारी में शाक अवश्य खाने चाहिये भोजन सदैव खूब चबाकर खाना चाहिये।

समय पर भोजन न करने तथा कम खाने (भूखे रहने) से क़ब्ज़ हुआ हो तो बहुत हलके भोजन जो शीघ्रही आंतों में भर जावैं जैसे खिचड़ी, दाल, पुराने चावल का भात, खीर, दूध आदि का सेवन करना चाहिये।

समय पर भोजन न मिलने के कारण आंतैं ख़ाली रहने से सिकुड़ जाती हैं और भूख से वायु कुपित हो आंतों का मल सुखा देता है उसके लिये ऐसे पदार्थों का सेवन करना लाभदायक है जो आंतों में फैलकर सूखे हुए मल को निकालदें, अधिक पौष्टिक वस्तुयें तथा औषधियां खाने से क़ब्ज़ हुआ हो तो गेहूं के दलिया के साथ मूंग की दाल, चौलाई पालक बथुवा मेथी आदि का शाक, कागज़ी नींबू और ताजे फल छिलका सहित खाने चाहिये।

अधिक पान खाने, तमाखू खाने, पीने, सिगरेट बीड़ी आदि पीनेवालों को क़ब्ज़ हो तो इनका सेवन कम कर देना चाहिये। वीर्य की कमज़ोरी से मन्दाग्नि होजाती है और भयंकर क़ब्ज़ उत्पन्न होता है अर्थात् इस क़ब्ज़ से और भी अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

इसके लिये विषय को त्याग कर वीर्यविकार को दूर करने और वीर्यवृद्धि तथा पुष्ट करनेवाले पदार्थों का सेवन करना चाहिये। परन्तु इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि एकदम बलदायक वस्तुयें जैसे लोग रस आदि औषधियों का सेवन करते हैं पहिले तो विषय में इतने लीन होजाते हैं कि आगे पीछे की कुछ खबर नहीं रहती जब वीर्य की कमी से मन्दाग्नि हो अनेक रोग उत्पन्न होने लगते हैं तब वे चाहते हैं कि कोई ऐसी औषधि हो जो आजही बलवान् बनादे।

इस लालच में आकर वे अज्ञानी शरीर में हाथी और शेर से लड़नेवाला बल पैदा करने के लिये इस प्रकार की विज्ञापनी औषधियों का सेवन कर उससे और भी अधिक हानि उठाते हैं।

एकदम रस आदि का सेवन करने लगते हैं जिनसे उनकी दशा और भी अधिक ख़राब होजाती है। याद रखिये बलदायक औषधियों को पचाने के लिये भी बल की ज़रूरत है इसलिये पहिले उन बलदायक औषधियों को पचाने के लिये शरीर में बल पैदा कीजिये तब उनका सेवन उपयोगी होगा ।

इसके लिये प्राकृतिक पदार्थ (भोजन) ही काफ़ी है, वीर्य को उत्पन्न करनेवाले, वीर्य को पुष्ट करने और बढ़ानेवाले भोजन कीजिये और वीर्यरक्षा का ध्यान रखिये ।

आवश्यक सूचना ।

क़ब्ज़ होने पर लोग आठवें दशवें, और महीने, दो महीने में जुल्लाब लिया करते हैं बाज़ बाज़ तो आठवें दिन जुल्लाब लिया करते हैं यह उनकी बड़ी भारी भूल है बार बार जुल्लाब लेने से क़ब्ज़ रोग और भी अधिक बढ़ता है कम नहीं होता और आंतें दिन दिन कमज़ोर होती जाती हैं । कोई कोई तो प्रतिदिन कुछ न कुछ दस्त साफ़ लाने वाली औषधि का सेवन अवश्य करते हैं ऐसा न करें तो उन्हें पाख़ाना ही न हो ।

ऐसी आदत डालना स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है कैसे दुःख का विषय है कि वैद्यकशास्त्र का कुछ भी ज्ञान न होने से मनुष्य अपने हाथों से ही रोग उत्पन्न करते हैं। जुल्लाब की सभी औषधियां तेज़ होती हैं पहिले तो वे अपनी गर्मी से मल को निकाल देती हैं परन्तु पीछे स्वास्थ्य को बड़ी हानि पहुंचती है।

बार बार जुल्लाब लेने से शरीर के भीतरी यंत्र (अवयव) निर्बल पड़ जाते हैं जिसके कारण आगे को अनेक रोग आकर शरीर में घर बना लेते हैं और फिर वे जीवन के साथ ही जाते हैं ।

अनेक रोग नाशक सरल उपाय ।

पीपल वृक्ष की लकड़ी का प्याला बनवाकर उस प्याले में रात को पानी भरदे और प्रातःकाल पीवे। अथवा थोड़ी देर दूध भरकर पीवे इससे मस्तिष्क में तरावट आती है और वीर्य दृढ़ होता है, चर्म-रोग दूर होते हैं। पहिले समय में देवता भी सोमरस को पीपल के पात्र में भरकर पीते थे ।

पीपल का गोंद, पीपल का फल इसमें पुत्रोत्पादनी शक्ति रहती है पक्षी इसे बहुत खाते हैं पक्षियों को भी इसके खाने से कामशक्ति जाग उठती है। पीपल के गोंद को छाया में सुखाकर पीसकर आटा बनाले, इस आटे का हलुआ बनाकर खाने से शरीर में बड़ी ताकत बढ़ती है। प्रदररोग में बड़ा लाभदायक है, कमर का दर्द, मुंह के छाले भी इससे दूर होते हैं, पीपल के फल के चूर्ण में बराबर की मिश्री मिला दूध के साथ फांकने से या शहद के साथ चाटने से भी हलुए के समान गुण होते हैं। छोटे २ बालकों और गर्भवती स्त्रियों को यह अधिक लाभ पहुंचाता है।

पीपल के कोमल पत्तों की फुनगियों को औटाकर उसके क्वाथ में मिश्री की चाशनी करे और उस चाशनी में सीजी हुई फुनगियां डालकर उनका मुरब्बा बनावे, इस मुरब्बे से वीर्य पुष्ट होता है; यह मुरब्बा वंग, लोहभस्म, स्वर्णभस्म से भी अधिक बल देता है।

पलाश—ढाक इसकी जड़ के लम्बे २ पतले टुकड़े करके एक हांड़ी में भरदे, हांडी का मुंह किसी सकोरे से बन्द करदे और हांडी की पेंदी में एक छिद्र करे उस छिद्र के नीचे कोई दूसरा बर्तन (भूमि खोद कर रक्खे और चारों ओर पानी भरदे) लगाकर हांड़ी के चारों तरफ़ उपलो की आंच देवे, इससे उस हांड़ी से ढाक की जड़ का पतला २ रस छिद्र से टपक कर नीचे के बर्तन में आजावैगा इसे मन्द मन्द अग्नि से गाढ़ाकर अजन बनाले, इस अंजन का सुर्मा की सलाई से आंखों में लगावे, इसके लगाने से आंख की फूली, माड़ा, धुन्ध, लालिमा आदि दूर होते हैं। चश्मा लगाना भी छूट जाता है, आंख की ज्योति बढ़ती है, आंख के रोगो के लिये बड़ी अनुभूत और अक्सीर दवा है पाठकों को इसके गुणों की परीक्षा करनी चाहिये।

तुलसी—तुलसी के पत्तों की दूध में चाय बनाकर पीने से शीतज्वर में बहुत लाभ होता है, काली तुलसी का रस शरीर पर लगाने से मच्छर नहीं काटते डाक्टर लोग भी निष्पक्ष होकर कहते हैं कि तुलसी में मलेरिया ज्वर के नाश करने की अद्भुत शक्ति है इसके पत्तों में सर्पविष दूर करने की शक्ति है। पीनस रोग में वन-तुलसी के बीजों का इलास सूंघने से नासिका से कीड़े निकल पड़ते हैं रोग नष्ट होजाता है।

भांगरा—काले भृंगराज के आधसेर रस में २ तोला कालीमिर्च डालकर पत्थर के खरल में घोटे जब गोली बनने लगे तब दो दो मासे की गोलियां बना छाया में सुखावे। एक एक गोली जल के साथ या भांगरे ही के स्वरस के साथ प्रातः सायं खाने से फिरंग और गरमी रोग दूर होता है। फिरंग रोग के चट्टे और फुन्सियां भी दूर होती हैं।

अपामार्ग (ओंदाझारा)—इसका क्षार चाररत्ती शहद में मिला कर चाटने से खांसी श्वास में बड़ा लाभ होता है। चाटते ही रुका हुआ कफ़ निकलने लगता है इसकी जड़ को पीस लेप करने से अथवा पानी में मिलाकर पीने से या सूंघने से बिच्छू का विष उतरता है, इसके बीजों को दूध में उबालकर पीने से क्षुधा नष्ट होजाती है भस्मक रोग में बड़ा फ़ायदा पहुंचता है।

नेत्रबाला—इसके स्वरस में अफ़ीम के विष दूर करने की प्रबल शक्ति है जिसने अफ़ीम खाई हो उसे आधपाव स्वरस पिलाना चाहिये तथा थोड़ी २ देर पीछे पिलाते रहना चाहिये। अफ़ीम की डली के ऊपर इस स्वरस के डालने से वह निर्वीर्य्य होकर गोबर के समान होजाती है।

आक—जिसे मन्दार कहते हैं। इसके दुग्ध को अरने कंडों की भस्म में डालकर खूब घोटे, दुग्ध इतना डाले जिससे भस्म तर हो जावे। पीछे शीशी में भर रक्खे पाव रत्ती रोगी को सुंघावे। सूंघने से ५-७ मिनट पीछे इससे १५-२० छींकें आवेंगी जिससे शिरोविरेचन होगा। जब मस्तक भारी हो उसमें कफ़ भरा मालूम पड़ता हो तब इसे सूंघना चाहिये। आक के कोमल पत्तों के स्वरस को आधाशीशी में सूंघने से शिरदर्द दूर होजाता है।

ज़रूरी बात।

इस विषय को विस्तार-पूर्वक "देवी अनुभव प्रकाश" दूसरा भाग मंगाकर देखिये। इस विषय को यहीं समाप्त कर अब स्त्रियों के गुप्तरोगों के विषय में लिखती हूं।

गुप्त-रोग की

वैद्यक तथा वैज्ञानिक चिकित्सा-विधि।

हमारे देश की सैकड़ा पीछे निन्नानबे स्त्रियाँ अनेक प्रकार के गुप्त रोगों में ग्रसित हो दुःखमय जीवन व्यतीत क्यों कररही हैं इसका कारण आजतक कोई नहीं समझ सका क्योंकि हमारे चिकित्सकों ने आजतक इस बात की खोज नहीं की।

हमारे देश के वैद्य, बड़े बड़े राजवैद्य, वैद्यराज, चिकित्सक चूड़ामणि, वैद्यरत्न, वैद्यभूषण इत्यादि बड़ी बड़ी उपाधियां अपने नाम के आगे और पीछे लगानेवालों को भी इसका अभीतक कुछ विचार नहीं हुआ कि हमारी देशी चिकित्सा विधि में ऐसी विधि मौजूद है जिससे विना आपरेशन के ही स्त्रियों के गुप्तरोग दूर होसकते हैं।

मेरे अनुभव की बात है।

मुझे आज लगभग १८ वर्ष स्त्रियों की चिकित्सा करते व्यतीत हुए इस बीच में मेरे पास लाखों ही स्त्रियां अपना इलाज कराने आईं उनमें लगभग आधी संख्या ऐसी स्त्रियों की देखी गई कि जिनके गुप्तरोगों के कारण बच्चेदानी में खराबी आजाने से डाक्टरों का इलाज हुआ डाक्टरी इलाज में आपरेशन करने के सिवाय दूसरा कोई उपाय स्त्रियों की गुप्तरोग चिकित्सा का नहीं है।

आपरेशन होने से बच्चेदानी में और भी अधिक खराबी आते देखी गई है। आपरेशन से बहुत सी स्त्रियां वन्ध्या होते देखी गई हैं फिर उनका इलाज सन्तान होने का किसी प्रकार हो ही नहीं सकता। कैसे दुःख की बात है यदि हमारे देश की प्राचीन चिकित्सा विधि काम में लाई जाती तो वे स्त्रियां वन्ध्या न होने पातीं।

हमारे देश के वैद्यों ने स्त्री-चिकित्सा विषय में कुछ भी खोज नहीं की, बुद्धि से काम ही नहीं लिया। यद्यपि हमारे देश की लज्जावती स्त्रियां पुरुषों से अपने गुप्तरोगों का हाल कहने में भी संकोच करती हैं दिखलाना तो असम्भव है चाहे प्राण भलेही चले जावें परन्तु

पर-पुरुष को अपना गुप्तरोग लज्जा छोड़कर दिखला नहीं सकतीं इस लिये हमारे यहां के वैद्यों ने स्त्रियों के रोगों की चिकित्सा में किसी प्रका की खोज ही नहीं की इसी कारण हमारे देश के किसी वैद्य को स्त्रिय के इलाज में कुछ भी अनुभव नहीं है।

स्त्री-चिकित्सा में वैद्यों का दोष।

इसमें हमारे देश के वैद्यों का इतना दोष अवश्य है यदि बुद्धि से काम लेते तो स्त्री-चिकित्सा विषय को खोजकर अपने घर क स्त्रियों को स्त्री-चिकित्सा में ज्ञान प्राप्त कराकर अपनी सहायता स देश की स्त्रियों का बहुत कुछ उपकार कर सकते थे परन्तु इतनी सूझ नहीं आई इसलिये उन्होंने कुछ भी विचार नहीं किया अतएव देश वैद्यों की इस भूल के कारण हमारे देश की असंख्य स्त्रियां गुप्तरोग औ बन्ध्या रोग के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत कर रही हैं।

दुःख इस बात का है कि हमारे देश के वैद्यों ने इसबात का भ कुछ विचार नहीं किया कि वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि योनिरोग वाल स्त्रियों से प्रसंग करने से पुरुष भी रोगी होजाता है जब हमारे देश क सैकड़ा पीछे निन्नानबे स्त्रियां योनिरोग से ग्रसित हैं तो पुरुष भी रोगी होने ही चाहिये अतएव यही कारण है कि सैकड़ा पीछे निन्नानबे पुरुष भी वीर्य सम्बन्धी गुप्तरोगों से ग्रसित हैं जिस प्रकार वैद्यों की भूल से अथवा अपस्वार्थ से सैकड़ा पीछे साठ स्त्रियां बन्ध्या पाई जाती हैं उसी प्रकार नपुंसक पुरुषों की भी संख्या कम नहीं है।

नपुंसक कई प्रकार के होते हैं यह सब वैद्य लोग जानते ही हैं यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है वैद्यों की ही भूल से पुरुष भी अनेक प्रकार के गुप्तरोगों से ग्रसित हैं क्योंकि गुप्तरोग वाली स्त्री के पति होने से ही पुरुष भी रोगी हैं।

जो पुरुष वेश्यागामी होने के कारण गरमी सुज़ाक इत्यादि भयंकर रोगों से नपुंसक होजाते हैं इसमें भी दोष हमारे यहां के वैद्यों का ही है क्योंकि:—

ऐसे रोगों से बचाना वैद्यों का ही कर्त्तव्य है ऐसे भयंकर रोगों से बचाने के लिये ऐसी पुस्तकों का अधिक प्रचार करना चाहिये जिसे पढ़ सुनकर लोग उन रोगों से बचे रहें परन्तु कोई स्वतंत्र पुस्तक

इस विषय की आजतक नहीं बनी कि जिससे पुरुषों के चित्त पर उसकी शिक्षाओं का प्रभाव पड़कर वे ऐसे रोगों से बचे रहें।

वैद्यों की स्वार्थता से हानि।

बहुत कम ऐसे वैद्य देखने में आवेंगे जो पुरुषों को रोगों के उत्पन्न होने के कारणों को समझाकर उन्हें रोगों से बचावें जिनकी मूर्खता से इस प्रकार के रोग उत्पन्न होगये हैं उनका इलाज कर उन भयंकर रोगों को जड़ से आराम करदें।

पुरुष-रोगों का अनुभव।

मेरे पास पुरुषों के भी प्रतिदिन पचासों पत्र रोगों के विषय में आया करते हैं इनमें अधिक संख्या ऐसे पुरुष-रोगियों के पत्रों की होती है जो हस्तक्रिया दोष, गर्मी, सुजाक आदि रोगों के कारण जीवन से दु:खी हैं। उनके पत्रों से यह ज्ञात हुआ है कि किसी चिकित्सक ने ऐसा इलाज नहीं किया कि रोग जड़ से जाता रहता वल्कि पारा संखिया इत्यादि रस खिलाकर रोग को उस समय कुछ फ़ायदा दिखला दिया परन्तु थोड़े समय में ही रोगी के शरीर में औषधि के दोष से और भी अधिक भयंकर रोग उत्पन्न होगये।

बहुत कम ऐसे रोगी सुनने में आये हैं कि जिनका रोग जड़ से जाता रहा हो कदाचित् कोई सैकड़ा पीछे दो चार रोगी विद्वान् वैद्यों द्वारा ऐसे रोगों से छुटकारा पाये हों वरन् अनाड़ी वैद्यों की संख्या अधिक है इसी कारण रोगियों की भी संख्या अधिक है।

विद्वान् वैद्यों का कर्त्तव्य है कि ऐसे रोगों से वचाने के लिये और अनाड़ी वैद्यों से वचाने के लिये ऐसी पुस्तकों का प्रचार करें। कि जिससे पुरुष उन भयंकर रोगों से बचें और जो अज्ञानतावश ऐसे रोगों में फंस जावें तो अनाड़ी वैद्यों की रसादिक औषधियों से बचकर बचें।

रोगी पुरुषों की चिट्ठियों से अनुभव हुआ कि जितनी हानि रोगों से नहीं पहुंची उससे अधिक अनाड़ी वैद्यों की औषधियों से हानि पहुंच रही है।

ऐसे रोगी पुरुषों से भी स्त्रियों की रोगी-संख्या अधिक है पुरुष रोगियों के पत्रों से पता चलता है कि दस दस बारह बारह वर्ष और इससे भी अधिक दिनों के पुरुष रोगी हैं इलाज़ बराबर होरहा। परन्तु फ़ायदा कुछ भी नहीं है इसका कारण विचार करने से यह भी मालूम होता है कि वैद्य या डाक्टर कोई भी चिकित्सक हो रोगी के रोग का ठीक पता नहीं लगाता, रोगी के रोगों के उत्पन्न होने का असली कारण जानने का उद्योग ही नहीं करता।

गर्मी, सुज़ाक, प्रमेह, नपुंसकता यह सब रोग अनेक कारणों से उत्पन्न होते हैं सब कारणों का इलाज प्रथक् प्रथक् विधि से वैद्यकशास्त्र में ऋषियों ने बतलाया है यदि चिकित्सक उस कारण को समझकर इलाज करै तो निःसन्देह रोग दूर होसकता है। परन्तु इसकी खोज न करने से औषधि फ़ायदा नहीं करती।

अनाड़ी वैद्यों को तो इस बात का ज्ञान ही नहीं है विद्वान वैद्यों को अथवा अन्य चिकित्सकों को इतना अवकाश ही नहीं जो एक एक रोगी के रोगों का कारण समझने में समय व्यतीत करैं।

मुझे पूरा अनुभव है-

कि पति के गर्मी, सुज़ाक और नपुंसकता के ही कारण स्त्रियों की रोगी-संख्या अधिक है जितनी रोगी-स्त्रियां मेरे पास अपना इलाज कराने अबतक आईं और आरही हैं सबके रोगों की परीक्षा से और उनकी ज़बानी मालूम हुआ है कि ऐसे रोगी-पुरुषों की ही संख्या अधिक है अतएव रोगी-पुरुषों से स्त्रियां और रोगी-स्त्रियों से पुरुष, इस प्रकार स्त्री पुरुष दोनों सैकड़ा पीछे निन्नानबे रोगी पाये जाते हैं।

स्त्रियों में वैद्यक-विद्या की आवश्यकता।

इसीलिये स्त्रियों में वैद्यक शिक्षा के प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है यदि स्त्रियों को वैद्यकशास्त्र का कुछ भी ज्ञान हो तो वे अपने शरीर में उत्पन्न होनेवाले रोगों से पुरुषों को बचावैं और पुरुषों के रोगों से स्वयं बचती रहैं जो रोगी हैं वे अपने और अपने पति के रोगों को अपने हाथों आराम भी करलें।

जो रोग अनाड़ी चिकित्सकों की चिकित्सा से उत्पन्न होते हैं उनसे भी स्त्री पुरुष बचते रहैं।

कोढ़ में खाज की कहावत-

प्रसिद्ध है वह आजकल देखी जारही है अभीतक तो अनाड़ी वैद्यों की ही संख्या अधिक होने के कारण स्त्री पुरुषों में रोगों की संख्या अधिक थी अब जबसे मैंने स्त्री-औषधालय खोला है तबसे हमारे औषधालय की सब बातों की नकल करके कुछ अनाड़ी स्त्रियां वैद्या और राजवैद्या बनकर स्त्रियों की रोगी-संख्या बढ़ाने लगी हैं इसलिये सब स्त्री पुरुषों को सावधान होजाना चाहिये:—

नकली स्त्री-वैद्याओं, राजवैद्याओं से सावधान।

यदि आप अपने घर की स्त्रियो, बहुओं और पुत्रियों को अधिक रोगी बनने से बचाना चाहते हैं तो बिना जांच किये किसी स्त्री-वैद्या का इलाज न करावें न कोई औषधि मंगाकर सेवन करावैं। बिना जांच किये अनाड़ी स्त्रियों की चिकित्सा से स्त्रियों को बड़ी भारी हानि पहुंच रही है।

क्योंकि अभी हाल में अनेक नगरों में तथा इलाहाबाद में भी स्त्री-चिकित्सा में अज्ञान कुछ पुरुषों ने स्त्रियों के नाम से औपधालय खोले हैं, स्त्रियों के नाम से विज्ञापन, सूचीपत्र आदि छपाकर बिना अनुभव के ही वैद्या और राजवैद्या आदि उपाधि लिखकर लोगों को धोखे में डाल रहे हैं।

यदि आप पता लगावेंगे तो मालूम होगा कि जिन स्त्रियों को वैद्यक का कुछ भी ज्ञान नहीं है परन्तु उनके नाम के आगे पीछे वैद्या, राजवैद्या लगाकर लोगों को भ्रम में डालदिया है और हमारे यहां के रोगीफार्म, औपधियों के नाम में उलट फेर करके तथा लेबिल, विधानपत्र सबकी नकल इस प्रकार की है कि लोग भ्रम में पड़ जाते हैं और भूल से उनके यहां से औषधियां मंगाकर हानि उठाते हैं।

स्त्रियों के नाम से खुलनेवाले नवीन औपधालय वालों के दलाल प्रायः स्टेशन, धर्मशाला, मुसाफिरखाना आदि स्थानों में घूमा करते हैं हमारे यहां आनेवाले रोगियों को बहकाकर उन नये औपधालयों में लेजाते हैं वहां से वे कमीशन पाते हैं इस प्रकार से हानि उठाई हुई प्रायः अनेक स्त्रियां हमारे पास आईं तब हमको यह बात मालूम हुई। इसलिये आप लोगों को सूचना देनी आवश्यक समझी।

सावधान रहिये धोखा न खाइये।

स्त्रियों की चिकित्सा बड़ी ही कठिन है कठिनाई के कारण आजतक बड़े बड़े वैद्यराजों के भी विचार में नहीं आई क्योंकि स्त्रियों के इलाज में बड़े भारी अनुभव और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है इसलिये स्त्रीचिकित्सा की प्राचीन विधि की खोज के लिये वैद्यक के समस्त ग्रन्थो की आदि से अन्त तक खोज करनी पड़ती है और वर्षो परिश्रम करने से अनुभव प्राप्त होसकता है इसी कठिनाई के कारण हमारे देश में अभीतक कोई भी देशी स्त्री-औषधालय नहीं था।

स्त्री-चिकित्सा में मेरा उद्योग और परिश्रम।

मैंने बाल्यावस्था से ही अपने वैद्य-पिता से वैद्यकशास्त्र की शिक्षा पाई और लगभग १८ वर्ष तक स्वयं लाखों स्त्रियों का इलाज करके अनुभव प्राप्त किया है इस प्रकार बीस वर्ष से भी अधिक मुझे वैद्यकशास्त्र की खोज करते व्यतीत हुए हैं। मेरे पास बड़े बड़े भयंकर कठिन गुप्तरोगों वाली हजारों स्त्रियां इलाज कराने आई जिनको बड़े बड़े नामी चिकित्सक जवाब देचुके थे। जिनका हजारों रुपया इलाज में खर्च होचुका था। अनेक भयंकर पुराने रोगोंवाली रोगी बहिनो को देखकर मेरा भी एकाएक साहस चिकित्सा करने को नहीं होता था परन्तु मैंने उनका इलाज परमात्मा की सहायता से धमार्थ करना आरम्भ किया धीरे धीरे रोगी को आराम होने लगा परमात्मा की कृपा से कुछ दिनों में रोगी स्त्री की सब शिकायतें जाती रहीं।

इन अठारह वर्षों में इस प्रकार के कठिन रोगोंवाली सैकड़ों स्त्रियां मेरे पास आईं मैंने उनका इलाज तन मन से मुफ्त किया परमात्मा की कृपा से सबको आराम हुआ। इस प्रकार मेरा साहस स्त्रियों के कठिन से कठिन असाध्य रोगों की भी चिकित्सा करने को हुआ अनेक ऐसे असाध्य रोगवाली स्त्रियां भी आईं जिनको अनेक चिकित्सक जवाब देचुके थे मैंने भी जवाब देदिया परन्तु उन रोगी स्त्रियों के घरवालों ने बहुत आग्रह किया तब मैंने उनका मुफ्त इलाज किया परमात्मा की कृपा से उनमें से अनेकों को आराम हुआ।

इस प्रकार मुझे स्त्रियों की चिकित्सा में लगभग १८ वर्ष व्यतीत हुईं अब भी मुझे रातदिन स्त्री-चिकित्सा में अधिक अनुभव प्राप्त करने की चिंता लगी ही रहती है अब भी वैद्यक ग्रन्थों में स्त्री-चिकित्सा की अधिक खोज में ही रहती हूं।

विचार करने की बात है।

स्त्री-चिकित्सा में अज्ञान जिन पुरुषों ने मेरी सब बातों की नकल करके स्त्रियों के नाम से औषधालय खोले हैं उन्होंने आज औषधालय खोला, कल ही से स्त्री के नाम के आगे या पीछे वैद्या, राजवैद्या की उपाधि लगादी और बीसों वर्ष का अनुभव प्राप्त लिखने लगे।

किसी किसी ने तो यहांतक नकल की है कि वे भी अपने पिता से वैद्यकशास्त्र की शिक्षा पाना लिखने लगी हैं विचार कीजिये उनसे रोगी-स्त्रियों को हानि के सिवाय लाभ पहुंचना कहांतक सम्भव है।

इस विषय में मुझे कुछ लिखने की आवश्यकता न थी क्योंकि कोई कैसा ही हो अपनी जीविका के लिये वह इस प्रकार के उपाय करता है उसकी बुराई करना मूर्खता है सज्जन पुरुष स्वयं जांच करके इलाज कराते हैं परन्तु भोलेभाले अनाड़ी लोग उनकी बातों में आकर तथा मेरे यहां की समान सूचीपत्र, औषधियों के नाम, रोगीफ़ार्म आदि देखकर भ्रम में पड़जाते हैं और मेरा ही औषधालय समझकर वहां से औषधियां मँगाते हैं तथा भूल से वहाँ पहुंच जाते हैं इस प्रकार हानि उठाकर तब उन्हें होश होता है कि हमने धोखा खाया उन सबके सावधान करने के लिये इस विषय में मुझे लिखना पड़ा। पाठक इस पर अवश्य विचार करें और सावधान रहें।

असली नकली की परीक्षा करें।

जिस सूचीपत्र में रोगीफ़ार्म आदि मेरे यहां की अनेक बातों की नकल हो जिस सूचीपत्र अथवा किसी विज्ञापन में कुछ भी भ्रम मालूम हो मुझसे पूंछलें मेरा औषधालय समझकर धोखा न खावें क्योंकि नकलचियों ने मेरे औषधालय की अनेक बातों की नकल इस प्रकार की है कि लोगों को भ्रम अवश्य होजाता है।

किसी किसी ने अन्य बातों की नकल के साथ ही साथ "स्त्री-औषधालय" ही नाम भी रखलिया है और इस बात की चिंता में हैं कि कोई "यशोदादेवी" नाम की स्त्री मिलजावे तो उसे औषधालय में नौकर रखकर उसी के नाम से नोटिसबाज़ी करें, कोई इस विचार में हैं कि यदि उनके कन्या उत्पन्न हो तो यशोदादेवी नाम रखकर उस के नाम से औषधालय का काम चलावें इस प्रकार का उद्योग नकलची लोग कर रहे हैं। ऐसे नकली स्त्री-औषधालयों से सबका सावधान रहना चाहिये।

मेरा शुभ संकल्प।

मैं चाहती हूं कि हमारे देश में घर घर स्त्रियां वैद्यकविद्या में इतना ज्ञान अवश्य प्राप्त करें कि अपने तथा अपने घर के पुरुषों और बालकों के रोगों के कारणों को समझकर रोगों से बचती बचाती रहें और मूर्ख चिकित्सकों से ठगी न जावें अपने रोगों को समझकर अपना इलाज आपही करलें। इसी शुभ-संकल्प को पूरा करने के लिये मैंने यह वैद्यक की पुस्तक स्त्रियों के उपकार के लिये तैयार की है।

ऊपर जो मैंने नकलची औषधालयों के विषय में लिखा है यह किसी द्वेषभाव से नहीं लिखा है सर्व साधारण सज्जनों को सावधान करने के लिये लिखा है। यों तो मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरे औषधालय खोलने से लोगों की बुद्धि ठिकाने आने लगी है लोग समझने लगे हैं कि स्त्री-औषधालयों की भी बड़ी आवश्यकता है परन्तु उनकी भूल इतनी ही है कि वे चाहते हैं कि "यशोदादेवी" की नकल कर के इनको हानि पहुंचाकर उनका औषधालय बन्द होजावे तो हमारा चलैगा यदि वे अपने घरकी स्त्रियों को स्त्री-चिकित्सा में योग्य बनाकर औषधालय चलाते तो स्त्री-जाति का बड़ा भारी उपकार होता।

मैं चाहती हूं कि मेरे समान देशकी सभी स्त्रियां स्त्री-चिकित्सा में अनुभव प्राप्त कर अपना तथा अन्य बहिनों का उपकार करें। देशभर में, नगर नगर में अनेक स्त्री-औषधालय होने की बड़ी भारी आवश्यकता है जो लोग यह चाहते हैं कि हमारा ही काम चले दूसरों का हमारे सामने न चलने पावै वे बड़ी भारी भूल में हैं उन्हें यह याद रखना चाहिये कि जो दूसरों का बुरा चाहते हैं दूसरों को हानि पहुंचाना चाहते हैं उनका कभी भला नहीं होता।

दूसरी बात यह है।

मैं यदि चाहूं कि समस्त देश की स्त्रियों का इलाज मैं ही करलूं, समस्त देश में मेरी ही औषधियां, बिकी हों तो यह असम्भव बात है इसलिये ऐसा विचार करना बड़ी भारी मूर्खता है। किसी को हानि पहुंचाकर किसी काम में सफलता नहीं होसकती। इसलिये जो पुरुष अपनी स्त्रियों को वैद्यक-विषय में कुछ सिखलाना चाहैं वे कुछ दिन इस पुस्तक को स्त्रियों को पढ़ाकर कार्य आरम्भ करावैं और उचित समझैं तो जो बात मुझसे पूंछना चाहैं पूंछ सकते हैं।

अब मैं स्त्रियों के उपकारार्थ स्त्री-चिकित्सा की उन्नति के लिये और स्त्रियों की सुविधा के लिये स्त्रियों की चिकित्सा की वह विधि लिखती हूं जो वैद्यक की प्राचीन स्त्री-चिकित्सा विधि की सहायता से अपने निजी अनुभव से तैयार की है।

वैद्यक-शिक्षा।

स्त्रियों को वैद्यक विषय जानने के लिये जो वैद्यक ग्रन्थ पुरुषों के लिये हैं वे ही स्त्रियों के लिये भी उपयोगी हैं क्योंकि अन्य सब रोग जो पुरुषों को होते हैं वे ही स्त्रियों को भी होते हैं जिस रोग में जो औषधियां पुरुषों को हितकारी हैं वे ही औषधियां स्त्रियों को भी गुण-कारी हैं अन्य सब रोगो में स्त्री पुरुष दोनों की चिकित्सा-विधि एक ही है अनुपान और पथ्य भी एकही है। परन्तु स्त्रियों के गुप्तरोगों की चिकित्सा विधि अन्य प्रकार की है इस विषय में मैंने लगभग १८ वर्ष तक वैद्यकशास्त्र की कठिन खोजकर कुछ विधि खोज निकाली है और उसी को अपने अनुभव से और भी अधिक करदिया है।

वैद्यकशास्त्र में अनेक विषय ऐसे हैं जिनका अपनी बुद्धि से ही काम में लाना चाहिये। ऐसे बहुत से विषय स्त्री-चिकित्सा में अनुभव से प्राप्त किये हैं उन सब विषयों को "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में प्रकाशित करूंगी। इस प्रथम भाग में गुप्तरोगों की कुछ चिकित्सा विधि लिखती हूं।

स्त्री पुरुषों की चिकित्सा में अन्तर।

स्त्रियों के गुप्तरोगों की चिकित्सा और पुरुष-चिकित्सा में इतना अन्तर है कि स्त्रियों के गर्भाशय और योनिमार्ग में जो रोग होते हैं यह

पुरुषों के नहीं होसकते स्त्रियों के मासिकधर्म में खराबी होजाने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार पुरुषों के वीर्यदोष से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं सुज़ाक और गरमी जिस प्रकार पुरुष के होते हैं उसी प्रकार स्त्री के भी होते हैं प्रमेह पुरुषों को होता है और प्रदर स्त्रियों को होता है अतएव इसी प्रकार अन्य सब रोग भी पुरुष स्त्रियो दोनों को होते हैं परन्तु गर्भाशय सम्बन्धी रोग स्त्रियों को ही होते हैं। इसलिये ऐसे रोगों की चिकित्सा-विधि और औषधियां पृथक् हैं।

जिस प्रकार रज दूषित होकर अथवा गर्भाशय में ख़राबी आजाने से स्त्री वन्ध्या होजाती हैं उसी प्रकार पुरुष का वीर्य दूषित होकर अथवा इन्द्री की ख़राबी से पुरुष नपुंसक होकर सन्तान उत्पन्न करने के योग्य नहीं रहता।

नपुंसक पुरुषों और वीर्यदोष वालों की चिकित्सा इसी पुस्तक में पीछे लिख चुकी हूं यहाँ केवल रजदोष तथा गर्भाशय-दोष वाली स्त्रियों की चिकित्सा लिखती हूं। सबसे प्रथम गर्भाशय का वर्णन करती हूं सब बहिनें इस विषय को भलीभांति समझें।

गर्भाशय व गुप्त रोग ।

गर्भाशय और योनि केवल सन्तान उत्पन्न के ही लिये प्रकृति ने स्त्रियों में बनाया है इन्हीं दो बातों में पुरुष स्त्री में अन्तर है गर्भाशय और योनि यह दोनों बड़े कोमल स्थान हैं यदि इनसे नियम के विरुद्ध परिश्रम लिया जावे तो यह शीघ्रही रोगग्रसित होकर अपने कर्त्तव्य के योग्य नहीं रहते ।

जो पुरुष नियम के विरुद्ध अज्ञानतावश विषय करते हैं उनकी स्त्रियों के गर्भाशय और योनि में अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं उन रोगों के कष्टों को कोई स्त्री पुरुष नहीं जानते इस कारण वे इस अज्ञानता से बाज़ भी नहीं आते यदि उन दुष्ट भयंकर रोगों का कारण समझा दिया जावे तो बहुत कम ऐसे मूर्ख स्त्री पुरुष होंगे जो उनसे बचने का ध्यान न रक्खें ।

मैंने सैकड़ों रोगी स्त्रियों को बिना इलाज के ही केवल उपाय बताकर ही आराम किया है बहुत सी गर्भस्राव व गर्भपात के कारण सन्तान से दुःखी स्त्रियां मेरे बताए हुए उपायों से ही सन्तानवती होगई हैं । इस कारण मेरा अनुभव है कि यदि स्त्री पुरुषों को रोगों के उत्पन्न करनेवाली उनकी मूर्खता अज्ञानता उन्हें समझा दी जावे तो वास्तव में स्त्री पुरुषों की रोगी संख्या बहुत कम होजावे ।

हिन्दी संसार में खोज करने पर मालूम हुआ है कि किसी चिकित्सक ने अभीतक कोई स्वतन्त्र सरल और सस्ती पुस्तक या मासिकपत्र हिन्दी ही नहीं किसी भाषा में भी ऐसा नहीं प्रकाशित किया कि जिसे देख सुनकर स्त्रियों के भीतरी रोगों का पता लगे जिस से स्त्री पुरुष दोनों उन रोगों के उत्पन्न होने के कारणों को जानकर उनसे बचे रहकर उत्तम हृष्ट पुष्ट और सुन्दर सन्तान उत्पन्न करें ।

स्त्री-चिकित्सा विषय में सब स्त्रियों और पुरुषों को इतना ज्ञान अवश्य होना चाहिये कि किन किन कारणों से स्त्री के गर्भाशय और योनि में कौन कौन से रोग उत्पन्न होते हैं और उनसे स्त्री को क्या क्या हानि पहुँचती है ।

गर्भाशय पिंजर, गर्भाशय और उसके आगे पीछे का हिस्सा
गर्भाशय पिंजर, सामने का हिस्सा
इस नं० २ में-
गर्भाशय, और उसके बन्धन
फैले हुवे दिखलाये गये हैं।
गर्भाशय के समीप वाले अन्य अवयव
गर्भाशय
योनिमार्ग
मलाशय
गुदाद्वार
मूत्राशय
मूत्रमार्ग
योनिमुख
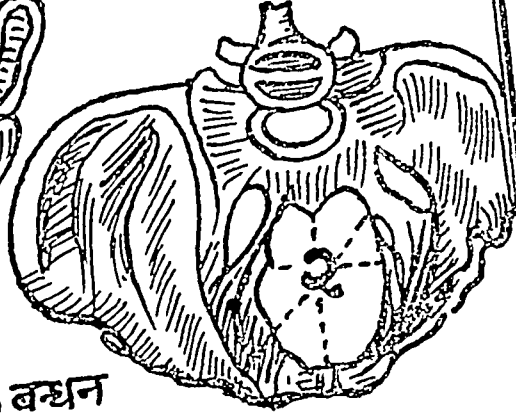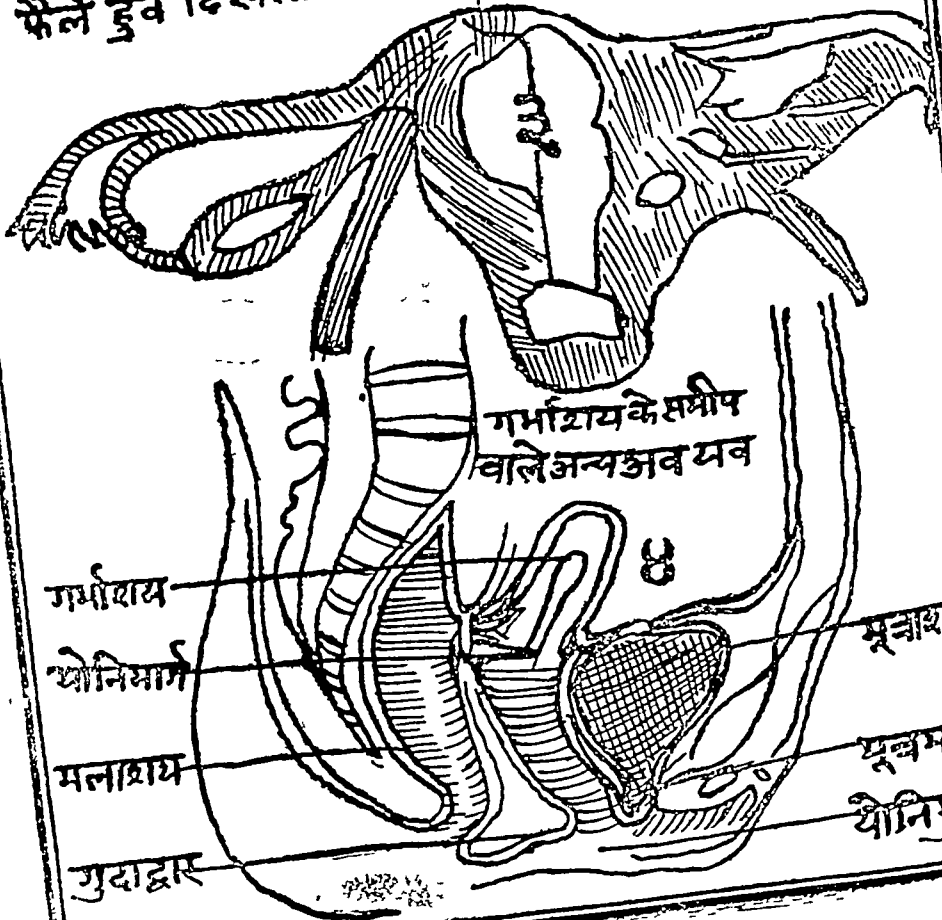
गर्भाशय चित्र नं० १ जिस स्थान में देख रही हो यही गर्भाशय का स्थान है गर्भाशय बहुत कोमल है इसी कारण प्रकृति ने दोनों जांघों के ऊपर नाभि के नीचे पेंडू में सुरक्षित स्थान में बनाया है। गर्भाशय सुन्न है इसका कारण यह है कि बालक के बोझ से और खिंचाव से गर्भ गिर न जावे और बालक को कष्ट न होवे।

गर्भाशय में दो पर्त होते हैं भीतरवाले पर्त में बहुत सी रगें और चुन्नटें होती हैं इसलिये कि गर्भ गिरने न पावे। अधिक प्रसंग से इन रगों में झटके लगकर चुन्नटें ढीली पड़जाती हैं क्योंकि चुन्नटें रगों से ही बनी हैं चुन्नटें ढीली होजाने से गर्भस्राव व गर्भपात होने लगता है। जो विषयी अज्ञानी पुरुष अधिक प्रसंग करते हैं उनकी स्त्रियों के गर्भाशय की नसें व चुन्नटें ढीली होकर गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है प्रथम तो अधिक प्रसंग से गर्भाशय की नसें इतनी ढीली पड़जाती हैं कि गर्भ ठहरना ही कठिन होता है यदि ठहर भी गया तो गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है।

अन्य कारणों से भी गर्भस्राव व गर्भपात होजाता है वे कारण फिर कभी समझाये जावेंगे। गर्भाशय की बनावट इस प्रकार की होती है कि जिसमें गर्भ के साथ ही साथ गर्भाशय भी बढ़ता जावे। बालक उत्पन्न होजाने पर फिर उसकी चुन्नटें पहिले जैसी होजाती हैं अर्थात् फिर वैसाही होजाता है।

गर्भाशय का प्रकृति नियम के अनुसार स्वाभाविक धर्म है कि वह पुरुष का वीर्य गर्भाशय के मुंह में पड़ते ही खिंचकर भीतर चला जाता है। इसीलिये गर्भाशय की गर्दन गर्भाधान क्रिया के समय पुरुष का वीर्य ग्रहण करने के लिये योनिमार्ग में लटक आती है अर्थात् स्त्री के उत्तेजना होकर गर्भाशय की गर्दन सीधी होजाती है।

यदि गर्भाशय की नसों में कुछ खराबी हुई गर्भाशय की नसें (बन्धन) ढीले होगये तो गर्भाशय की गर्दन सीधी नहीं होती देखो चित्र नं० ३ गर्भाशय और उसके बन्धन। चित्र नं० २ अक्षर २ जहां है वहीं गर्भाशय है नं० ४ के चित्र में गर्भाशय योनिमार्ग और योनि मुख को देखकर समझो यदि गर्भाशय की गर्दन में अथवा मुंहपर कुछ खराबी हो तो वह पुरुष-वीर्य को ग्रहण नहीं करता, रोग के कारण वह सीधा नहीं होसकता इस कारण पुरुष का वीर्य गर्भाशय में जा नहीं सकता इसलिये गर्भ भी नहीं रहता।
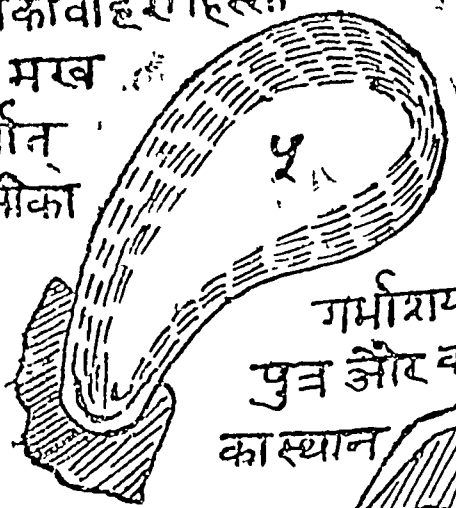
C.D.PANT
गर्भाशय का बाहरी हिस्सा
सर्वोरा मरख
अर्थात्
बच्चेदानी का
बन्द
मुख
५
गर्भाशय की दो थैलियां
पुत्र और कन्या के गर्भस्थिति
का स्थान
पृथक२
६
गर्भाशय की गर्भ न रहने
की स्थिति
गर्भाशय तथा योनि मार्ग का
बाहर निकल आना
गर्भाशय का मुख आगे की-
ओर को टेढ़ा पड़-
जाना
८
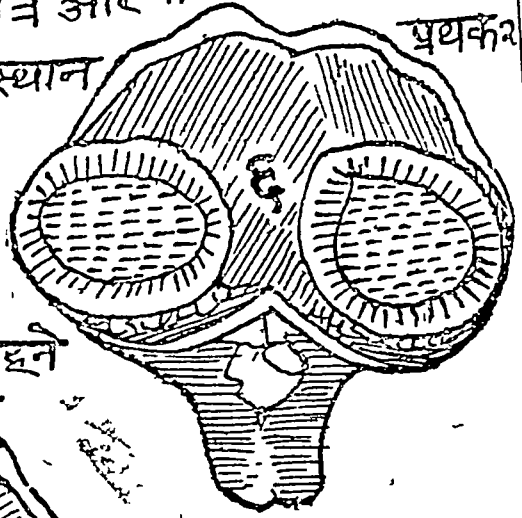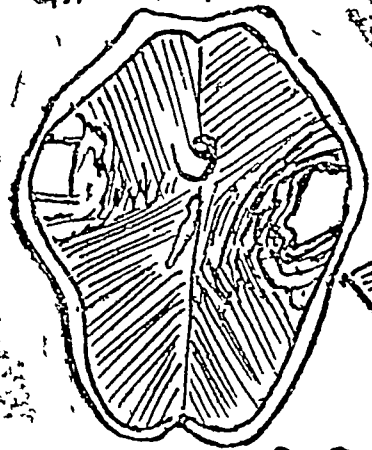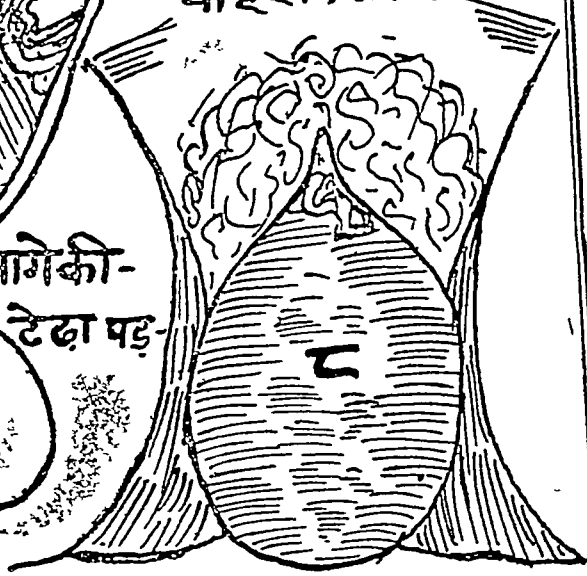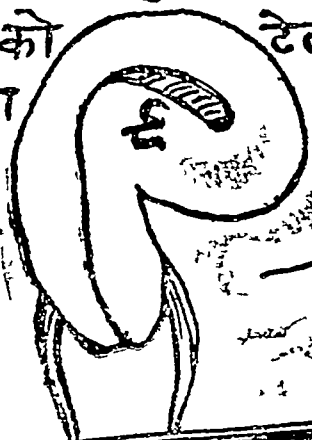
नं० ५ गर्भाशय की थैली, किसी कारण से भी गर्भाशय के किसी हिस्से में कुछ ख़राबी होजावे तो गर्भ नहीं रहता। नं० ६ और ७ गर्भ न रहने की दशा में गर्भाशय का चित्र है।

हमारी देशी चिकित्सा विधि में विना आपरेशन के ही औषधियों से वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि से ठीक करदी जाती है। इस प्रकार के रोगवाली हज़ारों स्त्रियां आराम होचुकी हैं जिनके सन्तान नहीं थी वे सन्तानवती होगई हैं।

नम्बर ८ गर्भाशय का बाहर निकल आना जब अधिक प्रसंग के कारण गर्भाशय के बन्धन अधिक निर्बल पड़जाते हैं तब प्रायः किसी किसी स्त्री के गर्भाशय का कुछ हिस्सा बाहर निकल आता है।

चित्र नम्बर ९ जब गर्भाशय की गर्दन किसी कारण से टेढ़ी हो जाती है तब पुरुष-वीर्य गर्भाशय में नहीं जासकता। डाकृरी इलाज में आपरेशन करके गर्भाशय की गर्दन को सीधा करते हैं परन्तु वह फिर गर्भधारण के योग्य नहीं रहती ऐसा बहुधा देखा गया है।

चित्र नं० १० गर्भाशय के मुख पर गर्मी, सुज़ाक आदि के कारण तथा अधिक प्रसंग के कारण वात कफ़ के दूषित होने से गर्भाशय की गर्दन पर गांठ उत्पन्न होती है इससे स्त्री को बड़ा कष्ट होता है इसके कारण भी पुरुष-वीर्य गर्भाशय में नहीं जासकता, डाकृरी इलाज में इसका आपरेशन किया जाता है परन्तु हमारी देशी चिकित्सा में वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि से दूर करदी जाती है।

नं० ११ गर्भाशय की गर्दन के पास योनि में बड़हर के फल की समान गांठ उत्पन्न होती है जिसके कारण स्त्री को बड़ा कष्ट होता है। इसका भी डाकृरी इलाज में आपरेशन ही होता है परन्तु हमारी देशी चिकित्सा में औषधियों से ही दूर होजाती है।

नं० १२-१३ गर्भाशय के भीतर व गर्भाशय के मुख पर मस्सा निकलता है इसका भी यही कारण है जो ऊपर लिखा गया है इसका इलाज भी हमारे यहां वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि से किया जाता है इन रोगों के अतिरिक्त और भी इसी प्रकार की कोई शिकायत हो तब तब हमारे यहां ऊपर लिखी विधि से दूर करदी जाती है।

नं० १४-१५ चित्र देखो गर्भाशय की गर्दन टेढ़ी होजाना इस प्रकार की शिकायत वाली रोगी स्त्रियों में सैकड़ा पीछे [illegible] स्त्रियां
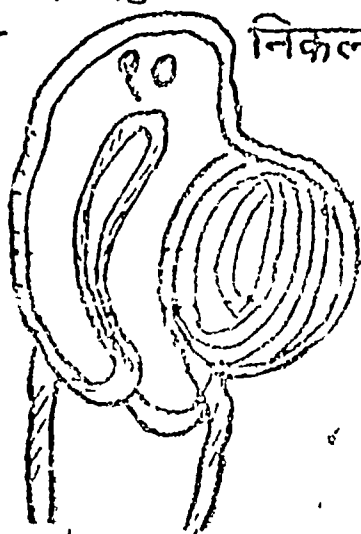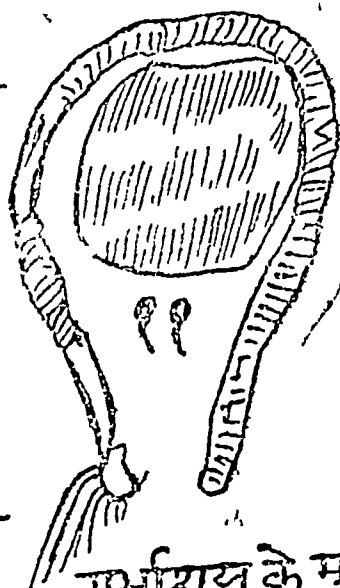
गर्भाशय के मुखपर गांठ निकलना
१०
योनिकन्द रोग
११
गर्भाशय के भीतर उत्पन्न हुवा मस्सा
१२
गर्भाशय के मुख पर उत्पन्न हुवा मस्सा
१३
गर्भाशय के मुख का टेढ़ा होजाना
१४
गर्भाशय की गरदन का टेढ़ा होजाना
१५
S.D PANT
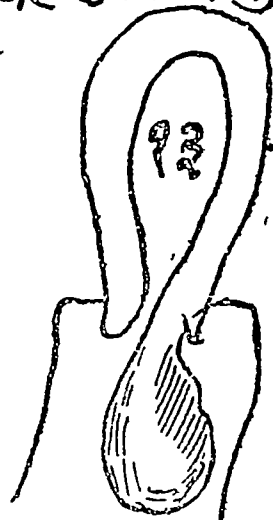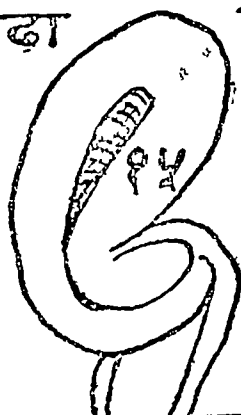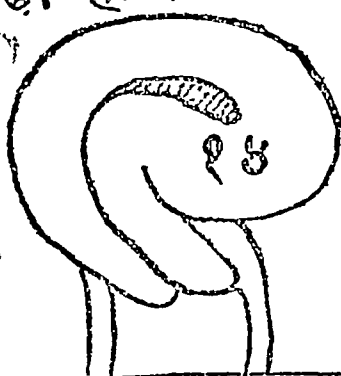
पाई जाती हैं। स्त्रियों में प्राय: यह शिकायत थोड़ी ही असावधानी से होजाती है।

जैसे मासिकधर्म होने पर यदि मासिकधर्म भलीभांति बंद नहीं हुआ है उस समय मूर्ख विषयी पुरुष विषय करते हैं मासिकधर्म के दिनों में बच्चेदानी का मुह बहुत निर्बल दशा में रहता है इस कारण ज़ोर पड़ने से नसें और भी कमज़ोर होकर टेढ़ी पड़ने से बच्चेदानी की गर्दन टेढ़ी पड़जाती है।

जो विषयी पुरुष अज्ञानतावश सन्तान की इच्छा से नियम-पूर्वक प्रसंग न करके उलटे सीधे अनेक प्रकार से नियम-विरुद्ध विषय कर अपनी बहादुरी बेचारी निरपराध पत्नी को दिखलाते हुए अपने महा-पराक्रम का परिचय देते हैं उनकी स्त्री की बच्चेदानी टेढ़ी होजाती है तथा और भी अनेक प्रकार के गुप्तरोग उत्पन्न होजाते हैं।

गर्भ गिरने तथा सन्तान होने के समय शीघ्रही यदि स्त्री के गुप्तस्थान का संभाल न हुई ठंढ लगजाने से बच्चेदानी में सूजन होजाना तथा मुह टेढ़ा पड़जाना इत्यादि शिकायतें होजाती हैं।

इन शिकायतों के कारण स्त्री को अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं मासिकधर्म के समय पीड़ा होना, मासिकधर्म कम होना, मासिक का रक्त बच्चेदानी की गर्दन टेढ़ी होने से रुक रुक कर होता है, सीधा मार्ग न पाने से कुछ कुछ रक्त भीतर जमा होता रहता है थोड़े दिनों के बाद उसी रक्त का गाठ पड़जाती है जिसे गुल्मरोग कहते हैं इसमें भी डाक्टरी इलाज में आपरेशन करते हैं हमारे यहां औषधियों से ही दूर करदिया जाता है।

गर्भाशय की गर्दन टेढ़ी होजाने से और भी अनेक प्रकार के भयंकर रोग उत्पन्न होजाते हैं जिनका वर्णन निदान और चिकित्सा इस पुस्तक के दूसरे भाग में देखिये।

देखो चित्र नम्बर ४

योनिमुख से लेकर जो गर्भाशय तक पुरुष की इन्द्री का मार्ग (रास्ता) है इसी का योनिमार्ग कहते हैं इसकी लम्बाई ४ से ६ इंच तक होती है किसी किसी स्त्री की इससे कम ज्यादह भी होती है। इसकी [illegible] है इसके नीचे के द्वार पर एक सिकुड़नेवाली नाड़ी है

इसका भीतरी सिरा गर्भाशय की गर्दन से लगा हुआ है गर्भाशय के गर्दन का कुछ हिस्सा इसके भीतर है।

योनि का पूर्वी और पश्चिमी हिस्सा एक में एक मिला हुआ है इन दोनों हिस्सों में सिकुड़ने और फैलने का गुण है आवश्यकता के अनुसार फैलते और सिकुड़ते रहते हैं इसके पूर्वी और पश्चिमी हिस्से में एक खड़ी सीमन है इसके दोनों ओर सलवटें पड़ी हुई हैं जिससे बालक उत्पन्न होने के समय आवश्यकतानुसार योनि फैल सके। भीतरी पर्त पर एक प्रकार का अस्तर लगा हुआ है और योनि के पूर्वी हिस्से में मलाशय आया है तथा गुदा का मुख है।

गर्भाशय ठीक बीचोबीच में है। इसकी बनावट लम्बे अमरूद की समान है।

चित्र नं० १६ गर्भाशय की आकृति ।
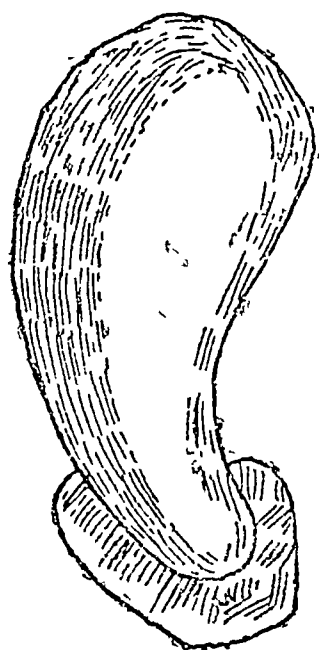
गर्भाशय की लम्बाई तीन ३ इंच, चौड़ाई १॥ डेढ़ इंच और मुटाई एक इंच के लगभग है जब गर्भ रहजाता है तब यह धीरे धीरे क्रमशः गर्भ बढ़ने के साथ ही साथ बढ़ता रहता है।

गर्भाशय के नीचे का सिरा योनि में लगा हुआ है इसी सिरे को गर्भाशय की गर्दन या कमल कहते हैं गर्भाधान के समय योनिमार्ग से जाकर पुरुष की इन्द्री उसमें मिल जाती है और वीर्य गर्भाशय में चला जाता है। जो पुरुष बाल्यावस्था में हस्त-क्रिया करते हैं उनकी इन्द्री टेढ़ी पड जाती है और जड़ में नीचे की ओर पतली तथा ऊपर मोटी होजाती है नीचे की नसें कमजोर होकर सिकुड़ जाती हैं जिसके कारण पुरुष की इन्द्री में इतनी उत्तेजना नहीं होती जो वह प्रसंग के समय गर्भाशय के मुख तक पहुंच सके और वीर्यपात के समय गर्भाशय के मुख से मिलकर वीर्य को गर्भाशय में पहुचा सके। दूसरे-इन्द्री

बायें ओर झुक जाती है इसलिये वह गर्भाशय के मुख की सीध में नहीं पहुंचती इन्द्री का मुख गर्भाशय की बगल में रहता है क्योंकि इन्द्री टेढ़ी है इसलिये गर्भाशय के मुख से इन्द्री का मुख नहीं मिल सकता अतएव वीर्यपात होकर गर्भाशय के इधर उधर गिरजाता है। इसलिये गर्भ नहीं रहता। ऐसे पुरुषों के सन्तान नहीं होती।

अधिक प्रसंग करने से, गुदा-मैथुन, हस्तक्रिया, या विपरीत विषय करने से पुरुष की इन्द्री की नसें कमज़ोर पड़जाती हैं जिससे छोटी और पतली होजाती है अतएव छोटी होने से गर्भाशय के मुख तक नहीं पहुंच सकती और पतली होने से गर्भाशय के इधर उधर रहती है इन्द्री का मुख गर्भाशय के बगल में रहता है इसलिये गर्भाशय के मुख तक वीर्य नहीं पहुंच सकता।

तीसरे—बाल्यावस्था के कुटेव तथा अधिक विषय करने से पुरुष के वीर्य में भी गर्भाधान करने की शक्ति नहीं रहती।

यदि हस्तक्रिया आदि दुष्कर्म न भी किये हों और पुरुष की इन्द्री टेढ़ी, पतली, छोटी न भी हुई हो केवल अधिक विषय करने से वीर्य में निर्बलता, इन्द्री में सुस्ती आगई हो तो भी गर्भ नहीं रहता यदि इन्द्री में पूर्ण उत्तेजना भी हो और प्रसंग के समय उत्तेजित रहै तो भी वीर्य की निर्बलता से शीघ्रपात होजाने से गर्भ नहीं रहता।

ऐसे स्त्री पुरुषों की मेरे पास सैकड़ों चिट्ठियां प्रतिदिन आया करती हैं कि उत्तेजना ठीक होती है परन्तु प्रसंग के समय शीघ्रही वीर्यपात होजाता है और सुस्ती आजाती है।

फिर भला बतलाइये गर्भाधान हो कैसे बिना पति पत्नी दोनों की पूरी आरोग्यता हुए गर्भाधान हो ही नहीं सकता। गर्भाधान के समय जब गर्भाशय से वीर्यपात के समय पुरुष की इन्द्री मिलजाती है तब वीर्य गर्भाशय में आता है जिस प्रकार पुरुष का वीर्य है उसी प्रकार स्त्री का रज है अतएव गर्भाशय में जाकर स्त्री के रज से पुरुष का वीर्य मिलता है तब गर्भ रहता है पुरुष के शीघ्रपात होने से स्त्री को बड़ा दुःख होता है तथा अनेक रोग उत्पन्न होते हैं और स्त्री की उत्तेजना होकर रह जाती है इसलिये रज और वीर्य आपस में नहीं मिलते अतएव गर्भ नहीं रहता।

जो स्त्री पुरुष अपनी मूर्खता से विवाह होते ही विषय में अधिक बरबाद होजाते हैं उन्हें फिर पीछे बहुत रोना पड़ता है।

पुरुष के शीघ्रपात से भी स्त्री को अनेक प्रकार के गुप्तरोग उत्पन्न होते हैं। दिल की धड़कन, मूर्छा रोग, पागलपन, प्रदररोग, रजविकार, आंखों से कम दिखाई देना, कानों से कम सुनाई देना, शिर की पीड़ा इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। गर्भाशय को भी बहुत हानि पहुंचती है इसलिये सन्तान की इच्छावाले और स्वास्थ्य की रक्षावाले जिस स्त्री पुरुष को निरोग रहना हो अधिक आयुवाले बनना हो सन्तान-सुख देखना हो और सांसारिक आनन्द भोगना हो वे वैद्यकशास्त्र के नियमानुसार गर्भाधान करें और व्यर्थ के क्षणिक आनन्द के लिये अपने शरीर का सत्यानाश न मारें। गर्भाशय का भीतर का हिस्सा तीन कोने वाला है इसके ऊपरी हिस्से में फलवाहिनी नाड़ियां लगी हुई हैं। यह नाड़ियां माता के हृदय से गर्भाशय में मिली हैं जिससे गर्भ का पोषण होता है इस विषय को नं० १७ के चित्र से समझो।

नम्बर १ के पास जिस स्थान से एक लकीर गई है वह सब दूसरे चित्र के इस छोर से उस छोर तक गर्भाशय की दीवार (हद) समझनी चाहिये।

नम्बर २ के पास जिस स्थान से लकीर गई है वह गर्भाशय का एक वह हिस्सा है जो कि गर्भ के साथ ही साथ बढ़ता जाता है वह बालक की सबसे बाहरी झिल्ली है यह गर्भाशय और बालक के बीच में रहती है इसका काम है बालक को गर्भाशय से मिलाकर माता के हृदय के रक्त को लेजाना और लानेवाली नलियों को मिलाना।

नम्बर ३ के पास जिस स्थान से एक लकीर गई है वह गर्भाशय में गर्भवती के शरीर से गर्भ को पोषण करने के लिये शुद्ध रक्त लानेवाली नली है।

नम्बर ४ गर्भाशय से बच्चे को पोषण कर बचा हुआ अशुद्ध रक्त माता के शरीर में लौटादेने वाली। जिसके द्वारा बालक से अशुद्ध रक्त माता में आकर शुद्ध हो फिर दूसरी शुद्ध रक्त लानेवाली नली द्वारा गर्भ को पोषण करने के लिये लौट आता है।

नम्बर ५-६-११ के पास जिन स्थानों से लकीर चली है वह एक प्रकार की छोटी छोटी नलियों के छत्ते हैं जो रक्त में तैरते रहते हैं यह जो काला जिसमें छत्ते दिखला रहे हैं यह सब रक्त भरा हुआ है जो १० नम्बर के पास वाली लकीर बतलाती है इन छत्तों का काम है

चित्र नं० १७ गर्भ-विज्ञान

पुरुष के शीघ्रपात से भी स्त्री को अनेक प्रकार के गुप्तरोग उत्पन्न होते हैं। दिल की धड़कन, मूर्छा रोग, पागलपन, प्रदररोग, रजविकार, आंखों से कम दिखलाई देना, कानों से कम सुनाई देना, शिर की पीड़ा इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। गर्भाशय को भी बहुत हानि पहुंचती है इसलिये सन्तान की इच्छावाले और स्वास्थ्य की रक्षावाले जिस स्त्री पुरुष को निरोग रहना हो अधिक आयुवाले बनना हो सन्तान-सुख देखना हो और सांसारिक आनन्द भोगना हो वे वैद्यकशास्त्र के नियमानुसार गर्भाधान करें और व्यर्थ के क्षणिक आनन्द के लिये अपने शरीर का सत्यानाश न मारें। गर्भाशय का भीतर का हिस्सा तीन कोने वाला है इसके ऊपरी हिस्से में फलवाहिनी नाड़ियां लगी हुई हैं। यह नाड़ियां माता के हृदय से गर्भाशय में मिली हैं जिससे गर्भ का पोषण होता है इस विषय को नं० १७ के चित्र से समझो।

नम्बर १ के पास जिस स्थान से एक लकीर गई है वह सब दूसरे चित्र के इस छोर से उस छोर तक गर्भाशय की दीवार (हद) समझनी चाहिये।

नम्बर २ के पास जिस स्थान से लकीर गई है वह गर्भाशय का एक वह हिस्सा है जो कि गर्भ के साथ ही साथ बढ़ता जाता है वह बालक की सबसे बाहरी झिल्ली है यह गर्भाशय और बालक के बीच में रहती है इसका काम है बालक को गर्भाशय से मिलाकर माता के हृदय के रक्त को लेजाना और लानेवाली नलियों को मिलाना।

नम्बर ३ के पास जिस स्थान से एक लकीर गई है वह गर्भाशय में गर्भवती के शरीर से गर्भ को पोषण करने के लिये शुद्ध रक्त लानेवाली नली है।

नम्बर ४ गर्भाशय से बच्चे को पोषण कर बचा हुआ अशुद्ध रक्त माता के शरीर में लौटादेने वाली। जिसके द्वारा बालक से अशुद्ध रक्त माता में आकर शुद्ध हो फिर दूसरी शुद्ध रक्त लानेवाली नली द्वारा गर्भ को पोषण करने के लिये लौट आता है।

नम्बर ५-६-११ के पास जिन स्थानो से लकीर चली है वह एक प्रकार की छोटी छोटी नलियों के छत्ते हैं जो रक्त में तैरते रहते हैं यह जो काला जिसमें छत्ते दिखला रहे हैं यह सब रक्त भरा हुआ है जो १० नम्बर के पास वाली लकीर बतलाती है इन छत्तों का काम है

चित्र नं० १७ गर्भ-विज्ञान

कि रक्त में रहते हैं और माता के शुद्ध रक्त को खींचकर उस नली में लेजाते हैं जिससे गर्भ का पालन होता है और बालक से अशुद्ध रक्त माता में लेजानेवाली नली से अशुद्ध रक्त लाकर अशुद्ध रक्त वाली नली को देते हैं।

चित्र नं० १८
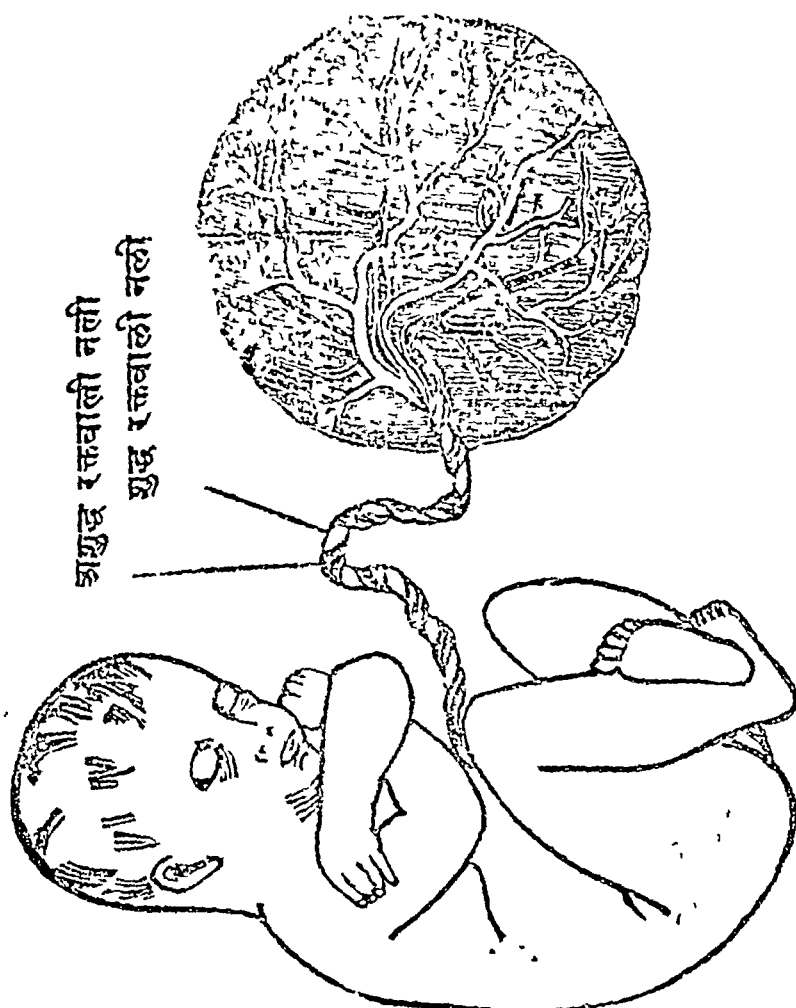
चित्र नम्बर १७ में नम्बर ६–७ यह दो नलियां हैं जिनके द्वार अशुद्ध रक्त बच्चा से खेड़ी में और शुद्ध रक्त माता से बच्चा में जाता है। नम्बर ६ और ७ यह दो नलियां मिलकर नाल बनता है।

नम्बर ८ यह वह सबसे भीतरी झिल्ली है जोकि नाल की तीनों नलियों को लपेटती हुई बच्चे के चारों ओर थैलीरूप में रहती

है अर्थात् इसी थैली में बच्चा रहता है बच्चे की रक्षा और गर्भाशय को हरवक्त कोमल तर बनाये रखने के लिये इस थैली में पानी भरा रहता है जिसमें बच्चा तैरता रहता है और उत्पन्न होने के समय यह थैली फटजाती है तब पानी सब निकल जाता है।

वह नाल जो बच्चा की नाभि में लगा रहता है जिसके द्वारा बच्चे का पोषण होता है इस चित्र से भलीभांति समझ में आजावेगा।

अब हमारी सब बहिनें समझ गई होंगी कि माता जोकुछ खाती पीती है उसका रक्त बनकर गर्भ का पोषण होता है इसी कारण गर्भवती के खानपान का प्रभाव बालक पर वैसा ही पड़ता है वह प्रभाव गर्भकाल में ही नहीं बल्कि बच्चे के लिये जीवन पर्यन्त के लिये होजाता है गर्भवती की जैसी प्रकृति होती है वह बच्चे के लिये आयु पर्यन्त होजाती है।

चित्र नम्बर १८ को ध्यान से देखिये तब यह बात समझ में भलीभाँति आजावेगी।

गर्भाशय से लगी हुई नाड़ियां।

गर्भाशय से जो नाड़िया लगी हुई हैं वे स्त्री-अंडकोष से स्त्री-वीर्य को लेजाकर गर्भाशय में पहुंचाती हैं यही इनका काम है।

पति की निर्बलता, सुस्ती और शीघ्रपतन के कारण प्रसंग ठीक न होने से स्त्री-अंडकोष से चला हुआ स्त्री-वीर्य अर्थात् रज गर्भाशय तक नहीं पहुंच सकता नाड़ियों में ही रुक जाता है। क्योंकि जिस प्रकार पुरुष का वीर्य यदि किसी कारण से गिरते गिरते रुक जावे तो सुज़ाक, पथरी, चिनग, बार बार पेशाब होना, जलन के साथ होना, रुक रुक कर होना और वीर्य में अनेक दोष तथा इन्द्री में अनेक रोग होजाते हैं इसी प्रकार रोगी पुरुष अर्थात् जो प्रमेह आदि के कारण या निर्बलता, इन्द्री की कमज़ोरी के कारण भलीभाँति गर्भाधान नहीं कर सकता; प्रसंग आरम्भ किया कि स्त्री की इन्द्रियों में भी उत्तेजना हुई

और पति का वीर्य शीघ्रपात होगया स्त्री की इच्छा पूरी न हुई अर्थात् वह जो दोनों नाड़ियां स्त्री-अंडकोष से रज को लेजाकर गर्भाशय में पहुंचाती हैं वह प्रसंग आरम्भ होने से स्त्री-रज अंडकोष से चला और पुरुष की सुस्ती से प्रसंग बन्द होगया बस स्त्री का रज गर्भाशय तक न पहुंच सका बीच में ही रहगया इसी से स्त्रियों को अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं स्त्री-रज को अंडकोषों से लेजानेवाली नाड़ियों में भी ख़राबी आजाती है जिसके कारण स्त्रियों को मासिक-धर्म सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं और गर्भ भी नहीं ठहरता ऐसे कारणों से हज़ारों रोगी हुई बहिनों की चिकित्सा कर अनुभव से मालूम हुआ है कि इस प्रकार से असंख्य स्त्रियां अनेक रोगों में फंसी रो रो कर जीवन व्यतीत कर रही हैं लाखों बहिनें इसी कारण बन्ध्या कहला रही हैं सन्तान हुई भी तो रोगी दुर्बल और निर्बल होती है तथा कम आयु में ही काल का कलेवा बन जाती हैं।

इसमें दोष तो पतियों का है परन्तु पत्नी दोषी ठहराई जाती हैं बन्ध्या और निर्वंशिनी कही जाती हैं तथा जीवन रो रो कर व्यतीत करती हैं। पति का दोष कोई नहीं जानता जो बाल्यावस्था से ही कुटेव में पड़ रोगी निर्बल और पुरुषत्वहीन हो बैठते हैं जो इन दोषों से बचे भी रहे वे विवाह होने पर अनियमित प्रसंग कर अपने तथा अपनी स्त्री के शरीर का सत्यानाश मार बैठते हैं।

गर्भाशय के दोनों ओर दाहिने बायें बादाम की सूरत में दो स्त्री-अंड हैं इनके भीतर असंख्य स्त्री-बीज रहते हैं वह बीज क्रमशः परिपक्व हो होकर उन अंडकोषों में से बाहर की बाजूपर आजाते हैं और हर महीने में एक एक बीज फूलकर फूट निकलते हैं उस समय गर्भाशय और योनि के भीतरी कुल अवयव रक्त से भर जाते हैं और रक्त निकलने लगता है इसी को मासिकधर्म, ऋतु धर्म, रजोधर्म आदि कहते हैं स्त्री-अंडकोषों से लगी हुई गर्भाशय की नाड़ियों द्वारा बीज गर्भाशय में जाता है। रक्तप्रवाह के साथ वह स्त्री-बीज बाहर भी निकल जाते हैं फिर रजोधर्म बन्द होने पर जो बीज गर्भाशय में रह जाते हैं उन्हीं के साथ पुरुष का वीर्य मिलने से गर्भ रहता है। ऋतुधर्म होने के दिन से पन्द्रह दिन तक स्त्री-बीज में गर्भधारण की शक्ति रहती है पन्द्रह दिन के बाद वह शक्ति नष्ट होजाती है इसलिये ऋतुधर्म के दिन चौथे दिन से पन्द्रह दिन तक गर्भाधान का समय कहा गया है बाद को गर्भ नहीं ठहरता जो स्त्रियाँ किसी बीमारी के कारण अधिक

दिनतक या कम दिनों में ही ऋतुवती होती हैं उनके भी गर्भ नहीं ठहरता यदि रहा भी तो रोगी निर्बल दुर्बल सन्तान होती है। यदि मासिकधर्म तीन दिन से अधिक हो या एकही दो दिन में बन्द होजावे या ऋतु का रक्त अधिक गिरे अथवा बहुत कम गिरे तो ऋतु में ख़राबी समझनी चाहिये। शुद्ध ऋतु के लक्षण पीछे लिखचुकी हूं।

निरोग गर्भाशय।

जिस गर्भाशय में किसी प्रकार की ख़राबी नहीं होती उस गर्भाशय के मुख ओष्ट बड़े कोमल और पतले होते हैं। यदि गर्भाशय में कुछ खराबी हो तो उसका मुख बहुत कड़ा होजाता है मुख के ओष्ट मोटे होजाते हैं और गर्भाशय की गर्दन नीचे की ओर अथवा दाहिने बायें किसी ओर को झुकजाती है, गर्भाशय का मुख टेढ़ा होजाता है। देखो चित्र नम्बर १६–२०

चित्र नं० १९ चित्र नं० २०

गर्भाशय की गर्दन का टेढ़ा होजाना।
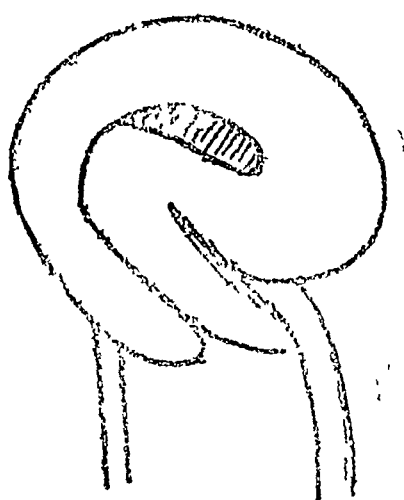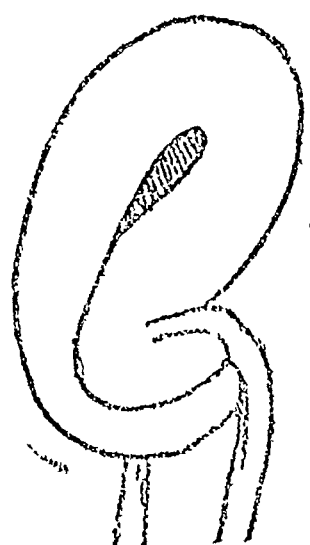
चित्र नं० २१ चित्र नं० २२

गर्भाशय की गर्दन का टेढ़ा होजाना।
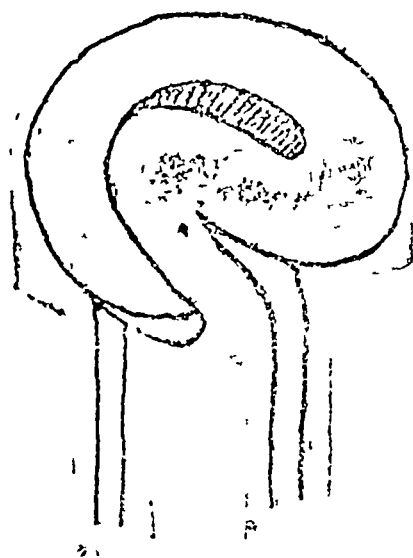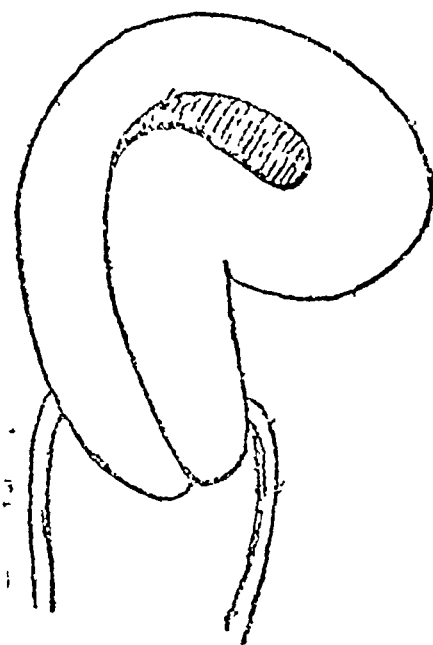
गर्भाशय के मुख पर विशेष ख़राबी सूजन, टेढ़ापन, कठोरता कुछ भी हो तो मासिकधर्म बड़े कष्ट से थोड़ा २ होता है कभी कभी एक ही दो दाग कपड़े पर पड़कर रहजाते हैं और बिलकुल बन्द भी होसकता और होजाता है दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष तक की ऐसी रोगी स्त्रियां मेरे पास आईं जिन्हें पन्द्रह वर्ष से मासिकधर्म हुआ ही नहीं था गर्भ रहने की तो बात ही नहीं। उनको देखकर या रोग का पूरा हाल मालूम होनेपर इलाज किया गया तब उनके गर्भ रहा और सन्तान पैदा हुई।

इस विषय को भलीभांति न जाननेवाले वैद्य तथा नोटिसबाज जो रजदोष की औषधियां देते हैं और रजविकार वाली स्त्रियो के घर वाले उसे मंगाकर सेवन कराते हैं परन्तु उन औषधियों से फ़ायदा नहीं होता दाम व्यर्थ ही जाते हैं इसका कारण यही है कि रजोधर्म आने के मार्ग (गर्भाशय) में ख़राबी है जिसके कारण रजोधर्म का रक्त निकल नहीं सकता और औषधि होरही है रजविकार की, फ़ायदा कैसे हो।

यदि स्त्री का मासिकधर्म ठीक हो उसमें कोई ख़राबी न हो और गर्भाशय का मुख टेढ़ा हो या कठोर होगया हो संकुचित सिकुड़

गया हो तो मासिक का रक्त निकलने नहीं पाता यदि निकला भी तो बहुत कम क्योंकि रास्ता तो बंद है निकले कैसे। अतएव जबतक गर्भाशय का मुख अर्थात् मासिक का रक्त आने का रास्ता साफ़ न हो कैसे आसकता है नहीं आसकता।

विशेष कारण और भी हैं।

यदि माता पिता के रज वीर्य की ख़राबी से कन्या का गर्भाशय उसकी अवस्था के साथ ही साथ क्रमशः बढ़ता न गया अथवा पूरी तरह पर न बढ़ा कम रहगया तो भी मासिकधर्म नहीं होता स्त्री-अंडकोष भी नहीं बढ़ते इसलिये उस स्त्री का गर्भाशय भी नहीं बढ़ता और उसे प्रसंग की इच्छा नहीं होती पुरुष से घृणा रहती है।

किसी कन्या के ऐसा भी होता है कि बाल्यावस्था से गर्भाशय-क्रम क्रमशः बढ़ता रहता है और जवानी आने के पहिले ही किसी कारण से बढ़ना बन्द होगया या बढ़ते बढ़ते संकुचित होगया इसलिये उसके भी मासिकधर्म ठीक नहीं होता और गर्भ नहीं रहता।

इसका कारण यह है कि क्षार पदार्थों का सेवन अधिक करने से या योनि में घाव आदि होने से गर्भाशय में ऐसी ख़राबी आजाती है कि वह बढ़ने से रुकजाता है। इसलिये उसका मुंह सिकुड़ा या छोटा होने से पुरुष का वीर्य गर्भाशय में नहीं जासकता।

गर्भाशय का मुख जितना चाहिये उतना चौड़ा होने से गर्भ सरलता से ही रह जाता है और सन्तान उत्पत्ति के समय स्त्री को कुछ भी कष्ट नहीं होता।

गर्भाशय का मुख संकुचित हो तो मासिकधर्म के समय किसी किसी स्त्री को इतना अधिक कष्ट होता है कि पेट की शूल, पेड़ू की पीड़ा, कमर में पीड़ा, शिर में पीड़ा, चक्करों का आना, योनि में पीड़ा इत्यादि किसी के तमाम शरीर में पीड़ा किसी के कहीं कहीं पीड़ा होती है कभी कभी यह पीड़ा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि स्त्री के प्राण संकट में पड़ जाते हैं मौत का सामना करना पड़ता है।

किसी किसी कामलाङ्गी स्त्री को तो इस कष्ट से इतना अधिक दुःख होता है कि वमन (उलटी) होने लगती है और वह अचेत पड़ी रहती है तथा बड़ी निर्बल और दुर्बल होजाती है। स्तनों में पीड़ा, पेट

का फूल जाना, शिर में पीड़ा होने से स्त्री अचेत होजाती है, भोजनों की ओर से रुचि हट जाती है ।

इस प्रकार के कष्ट उस स्त्री को हर महीने मासिकधर्म के समय हुआ करते हैं ।

मासिकधर्म ठीक है परन्तु गर्भाशय का मुख टेढ़ा या बन्द है इसलिये वह निकल नहीं सकता भीतर इकट्ठा होकर जम जाता है, सड़ जाता है और सूखजाता है इसलिये गर्भाशय में सूजन आदि अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है ।

धीरे धीरे हर महीने का रक्त इकट्ठा होकर गर्भाशय की नसों में भरा रहता है बाहर निकलने की जगह न पाकर पेट को बड़ा कर देता है गुल्मरोग उत्पन्न होजाता है अर्थात् पेट में रक्त की गांठ पड़ जाती है और इसके कारण पेट, पेंडू तथा योनि में या और कहीं फोड़ा होजाना, शरीर में चकत्ते पड़ जाना, तमाम शरीर और योनि में खुजली होना, स्तनों से दूध की भांति पानी निकलना, आंखों से कम दिखलाई देना, गर्मी, पागलपन, कानों से कम सुनाई देना, शिर के बाल गिरने लगना, हर समय ज्वर की सी हरारत रहना, आंखों में जलन, हाथ पैरों में जलन आदि किसी स्त्री को सब उपद्रव और किसी को कम होते हैं ।

गर्भाशय व योनि के विशेष रोग ।

गर्भाशय या योनि में चर्बी बढ़जाने से या किसी प्रकार की गांठ तथा मस्सा होजाने से भी गर्भ नहीं रहता और स्त्री को बड़ा दुःख रहता है ।

स्त्रियों की असावधानी और अनियमों से गर्भाशय तथा योनि में मस्सा, गाँठ तथा चर्बी बढ़जाने का रोग होजाता है ।

इन चित्रों से भलीभाँति मालूम होजावेगा गर्भाशय के भीतर गांठ पड़ने से गर्भाशय भी उसी गांठ के साथ ही साथ बढ़ता जाता है और बाहरी गाँठ होने से गर्भाशय गांठ के बोझ से सिकुड़ जाता है गाँठें बेर की बराबर छोटी और बड़हर के फल की बराबर तक बड़ी होती हैं ।

चित्र नं० २३
गर्भाशय की सूजन

चित्र नं० २४
गर्भाशय का मस्सा
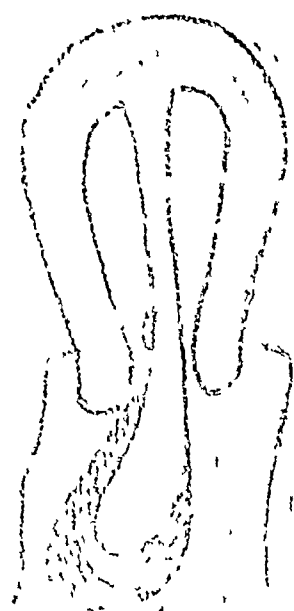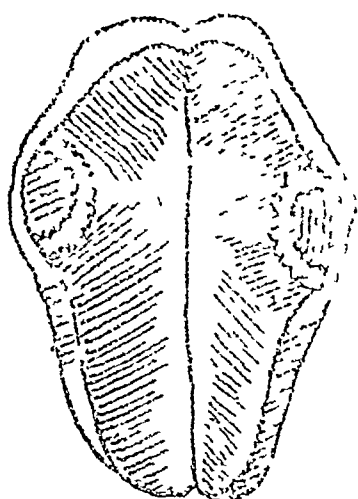
गर्भाशय में भी बवासीर की भांति मस्सा होता है गर्भाशय के भीतर और गर्भाशय के मुख पर बाहर अर्थात् योनि में होता है यह मस्सा भी चने की बराबर छोटा और अमरूद की बराबर बड़ा होता है।

गर्भाशय के भीतर का मस्सा जब बहुत बढ़ जाता है तब योनि-मार्ग में लटक आता है इसी प्रकार के और भी रोग गर्भाशय के भीतर और बाहर योनि में होजाते हैं।

जो स्त्रियां दिन भर आलसिन बनी बैठी तथा पड़ी रहती हैं घर के काम काज में कुछ भी परिश्रम नहीं करतीं उनके गर्भाशय और योनि में इस प्रकार के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

दूसरा कारण यह है कि जिनका गर्भ बार बार गिरता है उन स्त्रियों के भी यह रोग होता है जो सीलन में बैठी रहती हैं मासिकधर्म के समय नियम से नहीं रहतीं उन्हें भी यह रोग होजाया करता है।

चित्र नं० २५

गर्भाशय के मुख पर मस्सा उत्पन्न होना
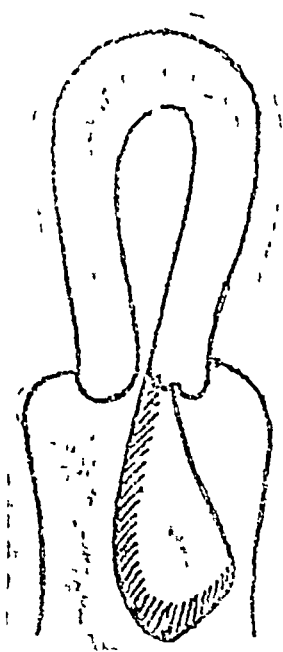
चित्र नं० २६

गर्भाशय (बच्चेदानी) के मुंह के नीचे गांठ
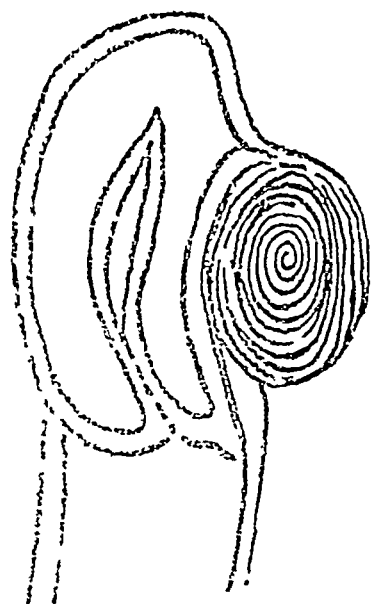
यह रोग प्रायः अधिक आयु में होते हैं कारण यह है कि कम आयु अर्थात् युवावस्था में उत्पन्न होकर धीरे धीरे बढ़ते रहते हैं उनकी कुछ परवाह की नहीं जाती क्योंकि प्रत्यक्ष में तो कोई बड़ा रोग दिखलाई पड़ता नहीं परन्तु वह भीतर ही भीतर बढ़ता जाता है गर्भाशय में जो गांठ पड़ जाती है बड़ी होने पर उसमें रक्त और पतला या गाढ़ा पीब भी बहने लगता है जिसे उस स्त्री के घर के लोग तथा वह स्त्री प्रदर या ऋतु का रक्त समझ कर अधिक परवाह नहीं करतीं प्रदर आदि के धोखे में रहती हैं रक्त बहने से लाल प्रदर और पीब बहने से सफेद प्रदर समझते हैं जिस प्रकार बवासीर के मस्से से। रक्त प्रवाह होता है उसी प्रकार गर्भाशय के मस्से से भी होता है उसे लोग मासिकधर्म का रक्त समझते हैं। गर्भाशय में मस्सों के अतिरिक्त रसौली भी होती है जिससे प्रदर की भांति सफेद लाल मिला हुआ पानी बहता रहता है।

चित्र नं० २७

गर्भाशय के भीतर रक्त की गांठ पड़जाना जिसे रक्तगुल्म कहते हैं यह कई प्रकार का होता है
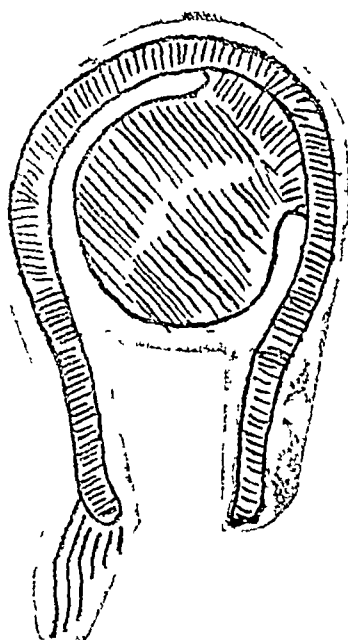
गर्भाशय की गांठ बढ़जाने से मासिकधर्म भी रुक जाता है और उस गांठ के दबाव से पेट में भी हर समय पीड़ा हुआ करती है और जाँघों में भी चसक होती है गर्भाशय पर अधिक दबाव पड़ने से गर्भाशय में सूजन भी आजाती है यदि यह गांठ अधिक बढ़गई और पेट की आँतों पर अधिक दबाव पड़ा तो उस स्त्री को दस्त अधिक लगते हैं तथा सोमरोग-पेशाब का अधिक होना आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। गर्भाशय की गांठ के कारण वह स्त्री बन्ध्या रहती है जब तक गांठ दूर न हो। कभी कभी गांठ के बढ़ने से आँतों पर दबाव के कारण स्त्री को उलटी भी होने लगती हैं मासिकधर्म भी बन्द होजाता है इसलिये लोग समझते हैं कि गर्भ रहगया इस रोगवाली को पुरुष से अलग रहना चाहिये अर्थात प्रसंग नहीं करना चाहिये प्रसंग होने से उस गाँठ या रसौली से रक्त निकलने लगता है और उसकी दशा दिन दिन खराब होती जाती है।

गर्भाशय का अर्बुद रोग ।

यह रोग गर्भाशय के मुख के नीचे उत्पन्न होता है इसके होने से योनि से अत्यन्त दुर्गन्धि आने लगती है और गाढ़ा गाढ़ा मवाद निकलता है कभी कभी थोड़ी ही दुर्गन्धि मालूम होती है। कभी कभी योनि से अधिक रक्त वहने लगता है और पीड़ा उत्पन्न होती है यहां तक कि स्त्री वेचैन रहती है नींद नहीं आती, भूख नहीं लगती, चक्कर आते हैं जी मिचलाया करता है और स्त्री वहुत दुर्वल होजाती है स्त्री की योनि में गर्भाशय के मुख के नीचे घाव होजाता है इस रोग के होने से गर्भाशय का मुख कठोर (कड़ा) होजाता है अंगुली से देखने से घाव मालूम होता है और गर्भाशय का मुख भी कड़ा मालूम होता है इधर उधर हिलता नहीं। अर्बुद रोग का घाव जिस प्रकार बढ़ता जाता है उसी प्रकार रोगी स्त्री का कष्ट बढ़ता जाता है और घाव बढ़कर तमाम योनि में फैल जाता है और मूत्रमार्ग तथा गुदामार्ग (पाखाना पेशाब की जगह) को घेर लेता है फिर सब जगह सड़कर रोगी की कुछ दिनों में मृत्यु होजाती है।

योनिकन्द रोग की उत्पत्ति ।

जो स्त्रियां दिन में अधिक सोती हैं, अधिक क्रोध करती हैं और जो रातदिन चिन्ता, परिश्रम और हाय हाय में रहती हैं और जो मूर्खा अधिक पुरुष-समागम में लवलीन रहती हैं तथा किसी कारण से योनि में नाखून लगने से इस प्रकार के ऊपर लिखे किसी एक या सब कारणों से योनिकन्द रोग उत्पन्न होता है इस रोग में पीव की समान अथवा रक्त की समान लाल बड़हर के फल की तरह गांठ उत्पन्न होजाती है उसे योनिकन्द रोग कहते हैं। यह रूखा, लाल, फटा हुआ सा खुरखुरा वात के दोष से उत्पन्न होता है और जो लाल हो जिसमें जलन होती हो और रोगी को ज्वर रहता हो उसे पित्त के दोष से जानना चाहिये। जो नीले फूल की भांति हो और उसमें खुजली पड़ती हो उसे कफ के दोष से समझना चाहिये। जिस में तीनों तरह के लक्षण मिलते हों उसे तीनों दोषों से उत्पन्न हुआ समझना चाहिये।

गर्भाशय का निकल आना।

गर्भाशय के निकलने के कई कारण हैं, स्त्री किसी ऊँचे स्थान से नितम्ब (चूतड़ों) के बल गिर पड़े या मरा हुआ बालक उत्पन्न हो और उसके कारण झिल्ली खिंच जाय अथवा स्त्री अपनी सामर्थ्य से अधिक भारी बोझा उठावे या किसी भारी वस्तु को खींचे अथवा ऊँचे पर से कूदे इन कारणों से गर्भाशय के बन्धन जिन नसों से गर्भाशय बंधा हुआ है वे नसें ढीली होजाय या अपनी जगह से हट जांय, अधिक खिंचाव से कमज़ोर होजाय या आहार विहार के अनियम तथा अधिक विषय से वायु कुपित होकर गर्भाशय के बन्धनों में आकर भर जावे और बन्धनों को सुस्त करदेवे इन कारणों से गर्भाशय के बन्धन ढीले होने से हट जाता है और वह योनि में तथा योनि के बाहर लटक आता है यह रोग प्रायः कुछ अधिक अवस्था वाली स्त्रियों को ही होता है।

गर्भाशय निकलने के लक्षण।

जब गर्भाशय निकलने के कारण उपस्थित हों और पेंडू तथा नितम्बों के बीच में तथा पीठ में पीड़ा आरम्भ हो पेंडू में गर्भाशय की जगह खिंचाव सा मलूम हो और कुछ देरी बाद योनिमार्ग में कोई चीज़ उतरती हुई मालूम हो और प्रदर की भांति सफेद लिबलिबा मांड की समान बहने लगे। यह गर्भाशय निकलने के चिन्ह हैं।

गर्भाशय तीन तरह से निकलता है एक तो अपनी जगह से हटजावे दूसरे हटकर कुछ हिस्सा योनि में आजावे और तीसरे अधिक हिस्सा योनि के बाहर लटक आवे।

इसी को लोग जो जानते नहीं योनि का बाहर निकलना कहते हैं स्त्रियां शरीर का बाहर निकलना कहती हैं परन्तु है यह गर्भाशय। गर्भाशय का मुख तो योनि के भीतर ही रहता है वह तो योनि में लगा हुआ है वह अपनी जगह से हटता नहीं है गर्भाशय उलटकर योनि में आजाता है तथा योनि के बाहर लटक आता है। वह अंडे की समान होता है उसका मुंह योनि के भीतर ही रहता है। इसलिये गर्भाशय निकलने के कारण उपस्थित होते ही जब लक्षण मालूम हों तब शीघ्रही इसका उपाय करना चाहिये जिससे गर्भाशय अधिक न

निकलने पावे, गर्भाशय थोड़ा भी निकला हो और सावधानी न व
जाय शीघ्र ही उपाय न किया तो फिर गर्भाशय का भीतर जाना बड़
कठिन होजाता है चित्र नम्बर ३२ गर्भाशय निकलने की आकृति देख
यह रोग जब अधिक बढ़ जाता है तब गर्भाशय के साथ योनिमा
और मूत्रमार्ग भी अपने अपने स्थान से हट जाते हैं गर्भाशय
साथ ही साथ लटक जाते हैं जिससे स्त्री को बड़ा कष्ट होता
वह किसी काम की नहीं रहती। गर्भाशय और योनिमार्ग नीचे
चित्र में देखो।

चित्र नम्बर २८

गर्भाशय और अन्य अंग।
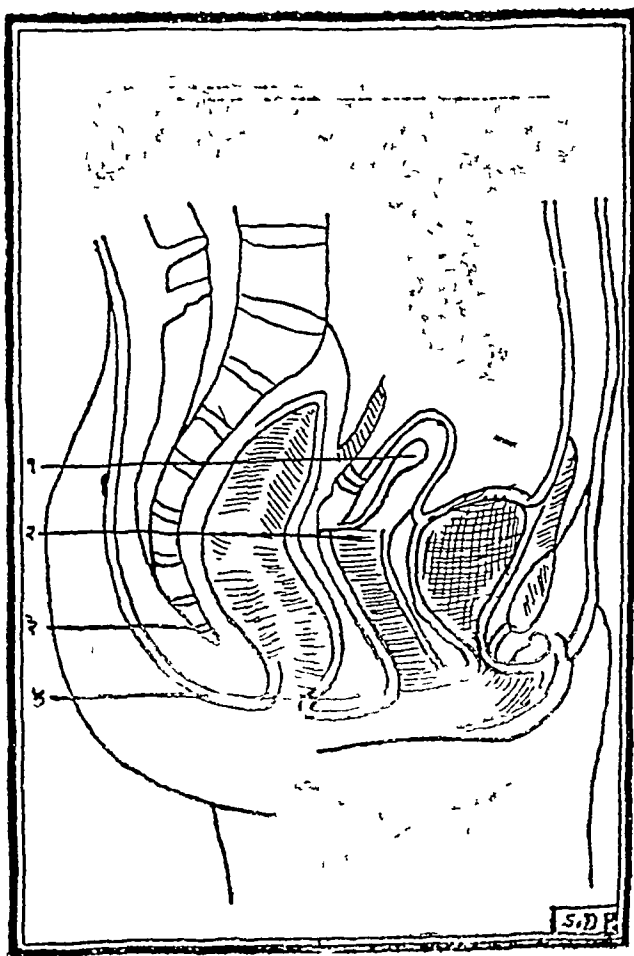
चित्र नम्बर २९

गर्भाशय का पीछे का हिस्सा
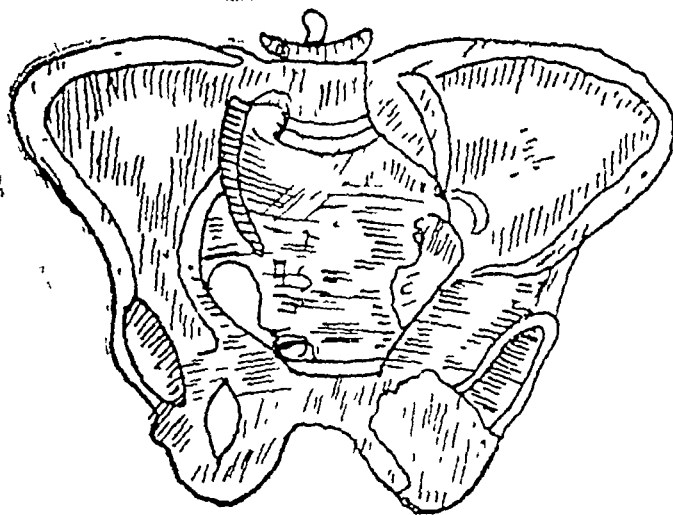
चित्र नम्बर ३०

गर्भाशय का आगे का हिस्सा
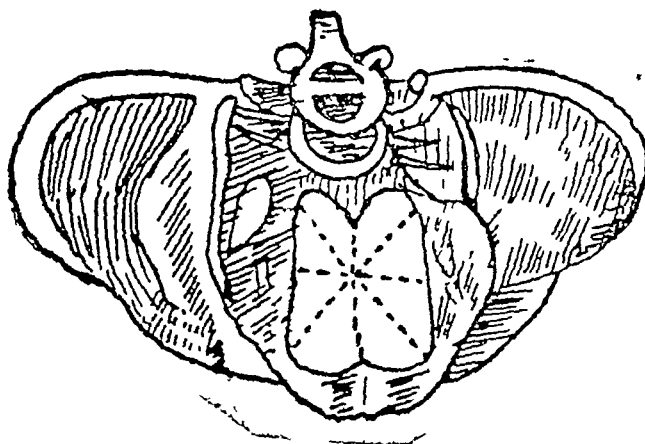
योनि का बाहर निकलना।

जिस प्रकार गर्भाशय बाहर निकल आता है उसी प्रकार आहार विहार के अनियम से योनि भी बाहर निकल आती है किसी

समय तो आमले की बराबर निकलता है और कभी कभी आगे या पीछे का हिस्सा बाहर निकलता है जिस समय योनि का आगे का हिस्सा बाहर निकलता है उस समय उसके बराबर का मूत्राशय का हिस्सा भी (जहां से मूत्र निकलता है) वह भी लटक पड़ता है उसके भीतर मूत्र भरा रहता है इस कारण दुर्गन्धि आया करती है और प्रदर की समान हर समय बहता रहता है तथा मूत्र के साथ में निकला करता है।
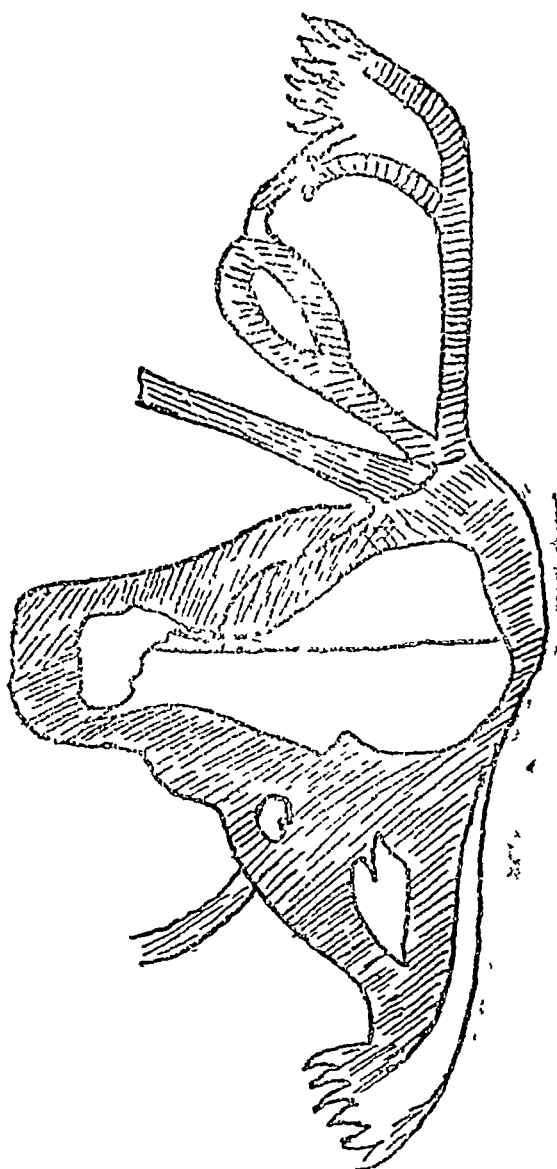
गर्भाशय और उसके बन्धन
चित्र नम्बर १९

इसी प्रकार जब योनि का पीछे का हिस्सा बाहर निकलता है तब उसके साथ दिशा का स्थान अर्थात् गुदा के साथवाली आँतों

का हिस्सा भी उतर आता है उसके भीतर मैला भरा रहता है इस-लिये बड़ी दुर्गन्धि आया करती है। यदि इस रोग का उपाय शीघ्र ही किया जाय तो योनि का यह कठिन रोग दूर होजाता है इस रोग के लक्षण यह हैं कि जिस समय यह रोग आरम्भ होता है उस समय पेट में पीड़ा मरोड़ के साथ उत्पन्न होती है और योनि में बोझा सा मालूम होता है प्रदर अधिक बहने लग जाता है और योनि में उंगली डालकर देखने से आमले के समान निकली हुई मालूम होती है। यही नहीं स्त्रियों के गर्भाशय और योनि में और भी कई भीतरी रोग ऐसे उत्पन्न होते हैं कि जिनका समझ में आना कठिन होता है जैसे स्त्री गर्भ अंड अर्थात् स्त्रियों के अंडकोषों का रोग जोकि भीतर हैं दिखलाई नहीं देते।

चित्र नम्बर ३२

गर्भाशय का बाहर निकलना
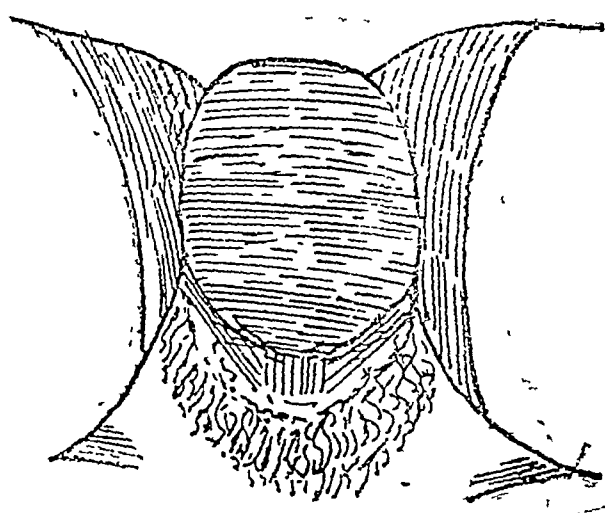
अंडकोषों से लगी हुई गर्भाशय की नाड़ियां जो स्त्री-अंडकोषों से रज को गर्भाशय में लेजाया करती हैं उनमें भी अनेक सूजन, फुड़िया, मस्सा, नाड़ियों का सूख जाना आदि रोग

है जिसके कारण स्त्री वन्ध्या होजाती है क्योंकि स्त्री गर्भअंड, गर्भाशय और ऊपर कही हुई नाड़ियां इन तीनों का ऐसा सम्बन्ध है कि किसी में भी कुछ खराबी आगई तो गर्भ नहीं रहता यदि मासिकधर्म ठीक भी हो तो क्या कर सकता है, गर्भ रहने के लिये तो इन तीनों में आरोग्यता हो तभी गर्भ रहता है इस प्रकार के रोगों का अधिक विस्तार पूर्वक हाल इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखा जावैगा।

मासिकधर्म का रुकजाना।

यह रोग प्रायः अधिक स्त्रियों को होता है सैकड़ा पीछे पंचानवे स्त्रियां इस रोग से ग्रसित हैं सैकड़ों चिट्ठियां प्रतिदिन मेरे पास इसी रोगवाली रोगी बहिनों की आया करती हैं जितनी स्त्रियां मेरे पास अबतक इलाज कराने आईं सबको मुख्य यही रोग पाया गया इस रोग से फिर अनेक रोग होजाते हैं इस रोग के उत्पन्न होने का कारण तो केवल आहार विहार की अनियमता और बहुमैथुन है परन्तु यह रोग कई भेद का है। एक तो यह कि बहुमैथुन से स्त्री निर्बल होजाय, शरीर में रज न रहने से दुर्बलता अधिक होजाय, भूख कम होजाय जिसके कारण शरीर में नया खून पैदा न हो इस कारण रज सूख जावै। दूसरा यह कि–अधिक चिन्ता, अधिक परिश्रम, उपवास करने अथवा भूखी रहने का कारण आगया हो या किसी कारण से शरीर से अधिक रक्त निकल गया हो इन कारणों से भी मासिकधर्म बन्द होजाता है।

तीसरा कारण यह है कि—मासिकधर्म के समय में या और कभी ठंढी, बादी वस्तुओं को अधिक सेवन किया हो जिसके कारण ठंढक से मासिकधर्म का रक्त जम गया हो अथवा अधिक रूक्ष पदार्थों का सेवन किया हो जिससे मासिकधर्म का रक्त सूख गया हो इन्हीं सब कारणों से मासिकधर्म होना बन्द होजाता है, अधिक प्रसंग की खराबियां तो पहिले ही बतला चुकी हूं। अब रजदोष की ही विशेष

बातें बतलानी हैं जिनके न जानने से प्रायः सभी स्त्रियां एक न एक दिन रोगी होजाती हैं। क्योंकि मासिकधर्म हर महीने होता ही रहता है यदि इन दिनों कुछ भी असावधानी कीगई तो रोग उत्पन्न होजाते हैं इसलिये बड़ी सावधानी करनी चाहिये जिसका वर्णन आगे किया जावेगा। यह तो सभी बहिनें जानती हैं कि किसी स्त्री को मासिकधर्म अधिक देरी से होता है, किसी को महीने में दोबार होता है, किसी को अधिक और किसी को बहुत थोड़ा केवल एकही दिन होकर रहजाता है अथवा दो चार दाग कपड़े पर दिखलाई देकर बन्द होजाता है इन सब का कारण पहिले ही बतला दिया गया है। यह कोई भी कारण हो तो स्त्री को निरोग मत समझो स्त्रियों का मासिकधर्म ठीक समय पर महीने के महीने होते रहना ही उनकी आरोग्यता का चिन्ह है।

बहुत सी स्त्रियों को मासिकधर्म के समय बड़ा कष्ट होता है, किसी किसी को कुछ कष्ट नहीं होता परन्तु कष्ट न होनेपर यह मत समझो कि मासिकधर्म में कुछ ख़राबी नहीं है यदि ठीक समय पर हो और नियत दिनों तक रहै तो निरोग समझो।

ऋतुदोष से स्त्रियों को अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं अतएव कोई भी रोग हो हमारे आगे लिखे हुए स्त्रीरोग प्रश्नावली के प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर लिख भेजने से हम रोग उत्पन्न होने का कारण अर्थात् रोग की जड़ क्या है समझ लेंगी और रोगों को जड़ से दूर कर रोगी स्त्री को निरोग, हृष्ट पुष्ट बनादेने वाली औषधियां भेजदेंगी जिससे हज़ारों रोगी बहिनें आराम होचुकी हैं।

ज़रूरी बात।

स्त्रियों का घर बैठे शर्तिया इलाज

जिन स्त्रियों को किसी प्रकार का कोई रोग हो वे इसी सूचीपत्र में छपे हुये ६६४ पृष्ठवाले स्त्रीरोगों के ५० पचासों प्रश्नों का उत्तर ठीक ठीक लिख भेजें उनके रोग घर बैठे ही दूर करदिये जावेंगे।

स्त्री-गुप्तरोग परीक्षा।

स्त्रियों के गुप्तरोगों की परीक्षा दो प्रकार से कीजाती है एक तो नाड़ी देखकर रोगी के लक्षण मिलाकर, दूसरे योनिमार्ग देखने से होती है केवल नाड़ी ही देखने से स्त्रियों के गुप्तरोगों की परीक्षा कदापि नहीं होसकती इसी कारण वैद्य, डाक्टर स्त्रियों के गुप्तरोगों की चिकित्सा ठीक नहीं कर सकते।

किसी स्त्री के गर्भाशय में सूजन है अथवा गर्भाशय का मुख टेढ़ा होगया है, सूख गया है अथवा अन्य प्रकार की गर्भाशय में ख़राबी है तो नाड़ी से पता नहीं चलैगा। रोगी स्त्री को भी इसकी कुछ ख़बर नहीं है इसलिये वह बतला नहीं सकती फिर चिकित्सा करनेवाला कैसे समझ सकता है।

न तो नाड़ी ही बतलाती है और न नारी ही बतलाती है और चिकित्सक की बुद्धि तथा दृष्टि कोई भी वहांतक पहुंच नहीं सकती फिर बतलाइये इलाज कैसे हो बड़े से बड़े धुरन्धर चिकित्सक भी स्त्री के इस प्रकार के रोगों के विषय में घोर अन्धकार में हैं इसीलिये सैकड़ा पीछे निन्नानबे स्त्रियां रोगी हैं।

नाड़ी-परीक्षा।

नाड़ी देखने से ज्वर की हरारत मालूम होती है, नाड़ी की चाल से वात, पित्त, कफ़ से हुआ रोग मालूम होता है परन्तु नाड़ी यह नहीं बतलाती कि गर्भाशय किधर को टेढ़ा है, गर्भाशय में सूजन या गांठ या मस्सा, योनि में छाला, घाव, फुंसियां कहां पर हैं।

स्त्रियों के गुप्तरोग भी वात, पित्त, कफ़ इन्हीं तीनों दोषों से उत्पन्न होते हैं और ऊपरी रोग जो स्त्री पुरुष दोनों को होते हैं वे भी वात, पित्त, कफ़ से ही उत्पन्न होते हैं। किसी स्त्री को वात पित्त के दोष से योनिमार्ग या बच्चेदानी में कोई रोग उत्पन्न हुआ है उससे ज्वर आगया तो नाड़ी वात पित्त का दोष बतलावेगी, वैद्य को वात पित्त से उत्पन्न हुआ ज्वर मालूम होगा; वात, पित्त, कफ़ से उत्पन्न होनेवाले ज्वर के जितने लक्षण होंगे वे सब उसमें मौजूद होंगे एक

पुरुष भी वात पित्त के दोष से उत्पन्न हुये ज्वर का रोगी है उसमें भी वही वात, पित्त ज्वर के लक्षण मौजूद हैं फिर भला बतलाइये वैद्य दोनों रोगियों के रोग को एकसा न समझै तो क्या करै।

किसी स्त्री को योनिकन्द रोग वात कफ़ के दोष से उत्पन्न हुआ है और उसी के कारण ज्वर उत्पन्न हुआ है तो नाड़ी वात कफ़ से उत्पन्न हुआ ज्वर ही बतलावैगी। किसी चिकित्सक को मेरे इस प्रकार लिखने से अनुचित नहीं मानना चाहिये। मैंने इस पुस्तक में स्त्री पुरुषों के अधिक रोगी होने का दोष अपने देश के चिकित्सकों पर ही बतलाया है यह बहुत अंशों में ठीक ही है क्योंकि विद्वान् चिकित्सक बहुत कम हैं अनाड़ी, स्वार्थी बहुत हैं विद्वान् वैद्यों को छोड़कर साधारण वैद्यों में ऐसे बहुत कम हैं कि जिन्हें नाड़ी देखने का कुछ ज्ञान हो।

ऐसे चिकित्सकों की ही संख्या बहुत अधिक है जो वैद्यक की चार छै आने या एक दो रुपये की एक पुस्तक ख़रीद कर वैद्यराज, राजवैद्य बनते हैं और नोटिसबाजी से एक सप्ताह में ही जगत्-विख्यात धुरन्धर वैद्य बनकर अपूर्व ताक़त का चूर्ण, बलवर्द्धक गोलियां और नामर्द को मर्द बनानेवाला रामबाण तिला बेचने लगते हैं। पुरुषों की रोगी संख्या बहुत अधिक है विषय वासना लोगों में इतनी अधिक बढ़ी हुई है कि हमारा देश रोगी और निर्बल पुरुषों से ही भरा है सैकड़ा पीछे निन्नानबे पुरुष वीर्यक्षीणता से अनेक रोगों में ग्रसित हैं परन्तु विषय वासना में फिर भी लिप्त हैं रातदिन धातुपुष्ट और स्तम्भन बटी तथा सुस्ती को दूर करनेवाला तिला इन्हीं की खोज में रहते हैं जहां कोई चटकीला भड़कीला नया नोटिस देखा कि प्रसन्न होगये मानो खोया हुआ धन पागये, गया हुआ जीवन-रत्न मिलगया; दो पैसे के कार्ड में घर बैठे मंगालिया।

मारे खुशी के लिखदिया कि "मूल्य चाहे जितना हो शीघ्रही फ़ायदा करनेवाली औषधि भेजिये" पाठको! विचार करने की बात है किसी वस्तु को बिगाड़ देना बहुत सरल है परन्तु बनाना उतना सरल नहीं; बाल्यावस्था से लेकर इस अवस्था तक विषय में लिप्त रहकर वीर्य तथा इन्द्री को हानि पहुंचाकर ख़राबियां उत्पन्न करदीं उन बीसों वर्ष की ख़राबियों को दूर करना चाहते हैं दो ही चार दिन में, फिर भी अज्ञानतावश चाहते हैं कि इसी प्रकार

पुनः विषय करने की शक्ति आजावे और विषय में लिप्त होजावें, कितनी बड़ी अज्ञानता और मूर्खता है। असंख्य पुरुष-रोगियों की यह दशा देख धूर्त नोटिसबाज़ भी दिन दिन बढ़ते जाते हैं। जिनको कोई रोज़गार नहीं सूझ पड़ता वे इस प्रकार की नोटिसबाज़ी से बाज़ी मार लेजाते हैं।

मेरी आंखों देखी बात है।

सम्वत् १९६६ में जब मैं इलाहाबाद आई और मासिकप स्त्रीधर्म-शिक्षक निकालकर स्त्रियों में वैद्यकशिक्षा का प्रचार करने ल साथ ही औषधालय का भी कार्य आरम्भ किया। तेरह चौद वर्ष तक कोई देशी स्त्री-औषधालय स्त्रियों के लिये सुनने में न आया जब मेरी औषधियों के अपूर्व गुणों ने समस्त भारतवर्ष लाखों स्त्रियों को निरोग बनाकर प्रसिद्धि प्राप्त की और मे उन्नति होने लगी:—

दूर दूर नगरों से इलाज कराने बड़ी बड़ी धन मानी रानी महारानी और सर्वसाधारण प्रतिदि सैकड़ों स्त्रियां आनेलगीं और मेरे यहां ठहरक इलाज कराकर आराम होकर जाने लगीं,

देश भर में मेरी औषधियों की प्रशंसा होने लगी और मे औषधालय की उन्नति हो कीर्ति दिन दिन बढ़ने लगी यह देखक कुछ लोगों को बड़ी भारी ईर्षा और डाह उत्पन्न हुआ उनकी बुद्धि में यही आया कि स्त्री के नाम से औषधियां बेची जावें तो हम भी शीघ्रही धनवान् बनजावेंगे यह विचार कर मेरे यहां तो केवल काष्ठादिक औषधियां ही रहती हैं उन्होंने देश भर की रसादिक, काष्ठादिक औषधियों का नोटिस स्त्रियों के नाम से निकालना आरम्भ किया और इस प्रकार से उद्योग करने लगे कि हमारी स्त्री आज ही धुरन्धर राजवैद्या समझी जाने लगै "यशोदादेवी" तो अपने नाम के आगे वैद्या तक नहीं लिखतीं यदि हम अपनी स्त्री के नाम के साथ राजवैद्या लिखने लगें तो यशोदादेवी का औषधालय बन्द होजावैगा हमारी स्त्री को राजवैद्या समझकर दुनियां भर की रोगी स्त्रियां हमारे यहां ही इलाज कराने आवेंगी यह विचार कर

दो चार बार औषधियो का नोटिस निकाल इधर उधर से औषधियां मंगाकर रखने लगे परन्तु लोगों को उन औषधियों के मंगाने की रुचि नहीं हुई तब दूसरा नोटिस निकालकर स्त्री को झट राजवैद्या बनादिया और बीसों वर्ष की अनुभव प्राप्त लिखना आरम्भ करदिया। लोग समझ गये कि अभी तो एक ही दो मास औषधियों की दूकान खोले हुए, दूसरों की औषधियां रखकर बेचते थे आज बीसों वर्ष की अनुभव प्राप्त राजवैद्या होगई, यह समझकर लोगों ने राजवैद्या बनने पर भी कुछ कद्र नहीं की तब लाचार होकर हमारे औषधालय की सब बातों की नकल करनी आरम्भ की, रोगीफार्म, विधानपत्र, लेबिल, डिब्बी, शीशी, विज्ञापन, सूचीपत्र तथा इसी प्रकार की अन्य सब बातों की नकल की कि लोग मेरे (यशोदादेवी के भ्रम में) पड़कर उन्हीं नकली औषधालयों में रोगी स्त्रियो को लेकर पहुंचने लगे और हमारी औषधियों के नामों से मिलते जुलते नाम रखने से लोग धोखे में औषधियां भी मंगाने लगे, जब उन नकली औषधियों ने रोगी स्त्रियों को हानि पहुंचाई तब उनके घर के लोग स्त्रियों को साथ लेकर शिकायत करने इलाहाबाद आये, यहां आकर उन्हें असली नकली का भेद मालूम हुआ तब वे मेरे पास आये।

इसी प्रकार के अन्य कई नकली औषधालय प्रयाग तथा अन्य नगरो में स्त्रियों के नाम से खुले हैं बुद्धिवान् स्त्री पुरुष तो इस बात को भलीभांति समझते हैं कि आजतक इस नाम की वैद्या तथा राजवैद्या कभी सुनने में भी नहीं आई आज यह एकदम कैसे बनगई यह नकलो है इस प्रकार बुद्धिवान् स्त्री पुरुष तो नकलची राजवैद्या या वैद्याओं के नोटिस से ठगे नहीं जाते परन्तु मूर्ख लोग जिनको असली नकली समझने की बुद्धि ही नहीं है वे बेचारे नकलचियों की बातों में आकर ठगे जाते हैं परन्तु जब उनकी रोगी स्त्रियों को नकली औषधियों से हानि पहुंचती है तब वे सावधान होकर असली नकली की खोज करते हैं।

और सुनिये।

अब कुछ दिनों से कुछ नकलची स्त्री-वैद्याओं ने हमारे यहां की गुप्तरोग चिकित्सा विधि की भी नकल करनी आरम्भ की है। स्त्रियों के गुप्तरोगों के इलाज की विधि, औषधियों की भाफ़ से गुप्तरोगों का इलाज करना मैंने वैद्यक की सहायता से इसमें विशेष उन्नति की

है और उस विधि का कुछ जिक्र कभी कभी स्त्रीचिकित्सक में भी लिखा जाता है उसी को देखकर बिना कुछ जाने समझे ही कोई कोई नकलची वैद्याओं ने जो रोगी स्त्रियां हमारे औषधालय के भ्रम में भूल से दूसरे नये औषधालयो में पहुंच गईं उनका इलाज किया, उनकी अज्ञानता से उन स्त्रियों को बड़ी हानि पहुंची। तब वे समझीं और मेरे पास आईं।

इस प्रकार नकली स्त्री-औषधालयों से इस समय स्त्रियों को विशेष हानि पहुंचने की सम्भावना है इसलिये सबको सावधान करने के लिये इस पुस्तक में इस सूचना को प्रकाशित करना उचित समझा।

पाठिकाओ! विचार कीजिये जब दस दस बीस बीस, तीस और चालीस पचास वर्ष से चिकित्सा करनेवाले अनुभव-प्राप्त वैद्य तक स्त्रियों की चिकित्सा में अनेक प्रकार की कठिनाइयां समझकर अपने घर की स्त्रियों को नहीं सिखला सके और न स्त्री-चिकित्सा की प्राचीन विधि को ही काम में लासके तो आजकल के नकलची स्त्री-चिकित्सक क्या वरन् वैद्यक विषय में अज्ञान लोग क्योंकर जान सकते हैं नोटिस में चाहैं स्त्रियों को पचासों वर्ष की अनुभव-प्राप्त राजवैद्या लिखदें; लिखने के लिये तो कोई रोक नहीं सकता परन्तु नोटिस पढ़नेवालों को इस बात पर विचार करना और बुद्धि से काम लेना चाहिये कि आजतक तो इन राजवैद्या का नाम तक नहीं सुना अब यह बड़ी भारी अनुभव-प्राप्त बनगईं।

राजवैद्य और राजवैद्या।

विद्वान् वैद्यों के नाम के आगे पीछे राजवैद्य, वैद्यराज लगा देखकर कुछ लोग धातुपुष्ट का तालमखाना, सफेद मूसली कूटकर चूर्ण का नाम रखकर अपने नाम के साथ राजवैद्य लिखने लगजाते हैं, सिर में लगाने का तैल—विलायती तैल में लाल पीली हरी रंगत मिलाकर बढ़िया नाम रख नोटिस देकर राजवैद्य बनजाते हैं यदि किसी साधारण राजा के यहां से भी एक शीशी तैल की मांग आगई तो फिर क्या पूंछना है फिर राजवैद्य लिखना सफल होगया, फिर तो वे अपने को सच्चे अनुभवी राजवैद्य समझने लगते हैं और उसका चर्चा अपने नोटिस में भी करते हैं।

इसी प्रकार अब स्त्रियां भी राजवैद्या की उपाधि अपने नाम के आगे पीछे लगाने लगी हैं यदि आप पता लगावेंगे तो मेरा लिखना बिलकुल सत्य पावेंगे।

कभी कभी लोग मुझसे पत्र द्वारा पूंछा करते हैं कि आपने वैद्यक में कौनसी परीक्षा पास की है, आपके नाम के साथ कोई उपाधि क्यों नहीं है उनको मैं यही लिखती हूं कि "मैं उपाधि के योग्य नहीं हूं क्योंकि मैं उन राजवैद्याओं में नहीं जो मनमानी उपाधि लिखकर लोगों को धोखे में डालकर जीविका उपार्जन करना चाहती हैं" मुझे उपाधि की आवश्यकता नहीं है न धन इकट्ठा कर अधिक धनवती ही बनने की इच्छा है जितना परमात्मा ने दिया है उतने में ही सन्तोष है।

क्याही अच्छा होता, स्त्री-जाति का बहुत उपकार होता यदि कुछ विद्वान् स्त्रियां दस पांच वर्ष वैद्यक विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त कर स्त्री-चिकित्सा में स्त्री-जाति की भलाई करतीं।

पढ़ी लिखी स्त्रियों का कर्त्तव्य है।

वे वैद्यक विषय में तन मन से स्त्री-चिकित्सा में अभ्यास करें, अनुभव प्राप्त कर स्त्री-जाति का उपकार करें। बाल्यावस्था में मेरे पिता मुझे हिन्दी पढ़ाया करते थे, जब मैं साधारण हिन्दी पढ़ने लिखने लगी मेरी अवस्था १०-११ वर्ष की थी, जब मैं भलीभाँति हरप्रकार की पुस्तकें पढ़ने लगी तब मैं अपने पिता के वैद्यक-ग्रन्थों को आदि से अन्ततक पढ़ा करती थी इस प्रकार पुस्तकें पढ़ते पढ़ते उनको भलीभाँति समझने लगी, पिता जी ने मुझे स्त्रियों के रोगों के विषय में पढ़ने और समझने का आग्रह किया, जब मैं और बड़ी हुई स्त्रियों के रोगों को समझने योग्य होगई तब मैं घर पर आई हुई रोगी-स्त्रियों को देखने लगी और औषधियों का नुस्खा लिखकर पिता जी को दिखलाकर उसमें हेर फेर जो उचित समझते थे करदेते थे उस नुसखे की औषधियां यदि तैयार न हो तो मैं स्वयं कूट पीस कर तैयार करती और रोगी स्त्री को देती इस प्रकार मेरी दीहुई औषधियों से रोगी-स्त्रियां आराम होने लगीं। जो लोग पिता के पास आते मेरी बड़ी प्रशंसा करते थे कि आप अपनी इस पुत्री को वैद्यक भलीभांति सिखला दीजिये इसका हाथ बड़ा यशी है पिता जी मुझे आज्ञा देते थे कि बेटी तुम और कुछ

घर का काम मत करो केवल वैद्यक-ग्रन्थों का ही अवलोकन किया करो और स्त्री-चिकित्सा में अभ्यास बढ़ाओ, स्त्री-रोगों का निदान समझो।

मैं पिता जी की आज्ञानुसार वैद्यक-ग्रन्थों को ही अधिक देखा करती थी, घर के कामकाज में माता को भी सहायता देती थी और जो मेरे साथ की मुहल्ले की लड़कियां मेरे पास आतीं उन्हें पढ़ना, मोज़ा, गुलूबन्द इत्यादि काढ़ना, बुनना सिखाना इससे जो समय बचता था उसमें वैद्यक-ग्रन्थों का अवलोकन करती थी।

इस प्रकार जब मैं बड़ी हुई और अपने घर आई तो गृहस्थी के अनेक झंझटों के कारण कुछ दिनों के लिये वैद्यक का कार्य बन्द कर देना पड़ा केवल स्त्रीधर्म-शिक्षक निकाल कर उसके द्वारा स्त्रियों में वैद्यक का प्रचार करना आरम्भ किया। जिसको लगभग १८ वर्ष हुईं अबतक बराबर चलरहा है स्त्रीधर्म-शिक्षक का अधिक प्रचार होने पर जब औषधालय का कार्य अधिक बढ़गया तब स्त्री-चिकित्सक औशिक्षा का वैद्यक का पत्र निकालना पड़ा इस समय स्त्री-चिकित्सक से लाखों स्त्रियां फ़ायदा उठा रही हैं। परमात्मा की कृपा से मुझे किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं है मैंने बाल्यावस्था से ही क्रमशः इस कार्य को चलाकर अनुभव प्राप्त किया है।

मैं सब बहिनों को सम्मति देती हूं कि जिन्हें वैद्यक का कार्य कर स्त्री-जाति का उपकार करना है वे इस विषय में क्रमशः अभ्यास बढ़ावें, मेरी इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़कर समझें और सच्चे हृदय से परमात्मा की कृपा का सहारा लेकर इसको मनन करें, स्त्रियों को ठगने के लिये शीघ्रही इस पुस्तक को पढ़ते ही राजवैद्या न बन बैठ परमात्मा उनकी सहायता करैगा वे अवश्य इसमें कामयाब होंगी।

रोगों के निदान।

कुछ रोगों के निदान पीछे लिख चुकी हूं उन रोगों के दूर करने का उपाय यहां लिखती हूं शेष "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में लिखूंगी।

प्रदररोग चिकित्सा।

प्रदररोग सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियों में पाया जाता है और स्त्रियों के अन्य रोगों के साथ ही साथ प्रदर रोग अवश्य होता है इस कारण प्रदर-चिकित्सा से ही चिकित्सा-विधि आरम्भ करती हूं।

प्रदररोग की अनेक प्रकार की औषधियां पीछे लिख चुकी हूं जो साधारण प्रदर रोग में निःसन्देह फ़ायदा पहुंचाती हैं यहां कठिन से कठिन प्रदर के लिये भी दूर करनेवाली वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि लिखती हूं जिनसे मैं बीसो रोगियों को प्रतिदिन आराम कर रही हूं। प्रदररोग के लक्षण पीछे लिखे गये हैं पढ़कर समझलें।

प्रदर की औषधि।

पीछे लिखी औषधियों से यदि प्रदररोग दूर न हो तो नीचे लिखी औषधि और उपाय करें।

पठानी लोध दस तोला	ढाक का गोंद दस तोला
बबूल का गोंद पांच तोला	चिकनी सुपारी दस तोला
बड़ी इलायची के दाने दस तोला	बंसलोचन पांच तोला
नीलोफर दस तोला	मरोरफली दस तोला
माजू कटीला दस तोला	रूमी मस्तंगी पांच तोला
समुन्द्रसोख दस माशे	नागरमोथा दस तोला
रसवत पांच तोला	बेल का गूदा दस तोला

यह सब औषधियां मंगाकर साफ़ करके कूट पीस कपड़छान कर जितनी तोल में कुल औषधियां हों उनसे दूनी मिश्री मिलाकर आठ आठ मासा औषधि की पुड़िया बना प्रतिदिन दोनों समय एक एक पुड़िया गाय के दूध के साथ सेवन करै।

दूसरा उपाय।

ऊपर लिखी औषधि का सेवन करै और नीचे लिखा उपाय करै।

फिटकरी छै मासा	बबूर की छाल एक तोला
नीम की छाल दो तोला	असोक की पत्ती दो तोला
नीम की पत्ती दो तोला	त्रिफला दो तोला

इन सब औषधियों को कूट कर जौ की बराबर टुकड़े करके एकसेर पानी में धीमी धीमी आंच में औटावे जब एकपाव पानी रहजावे तब उतार लेवे फिर स्त्री को नीचे दिये हुए चित्र के अनुसार लिटाकर उस गरम गरम पानी की पिचकारी योनि में लगावै और योनिमुख को पिचकारी लगानेवाली स्त्री हाथ से दबाये रहै जिससे औषधि का

पानी निकल न जावै जब समझै औषधि का पानी योनि में भर गया तब योनिमुख को हाथ से दबाये रहै, थोड़ी देरी में वह पानी शीतल होजावैगा तब हाथ हटाकर निकल जाने दें इस प्रकार कईबार पिचकारी लगावैं, एक सप्ताह करने से प्रदर धीरे धीरे बन्द होजावैगा।

यदि बन्द न हो तो और अधिक दिनतक पिचकारी लगाना चाहिये। अवश्य दूर होगा।

चित्र नं० ३३
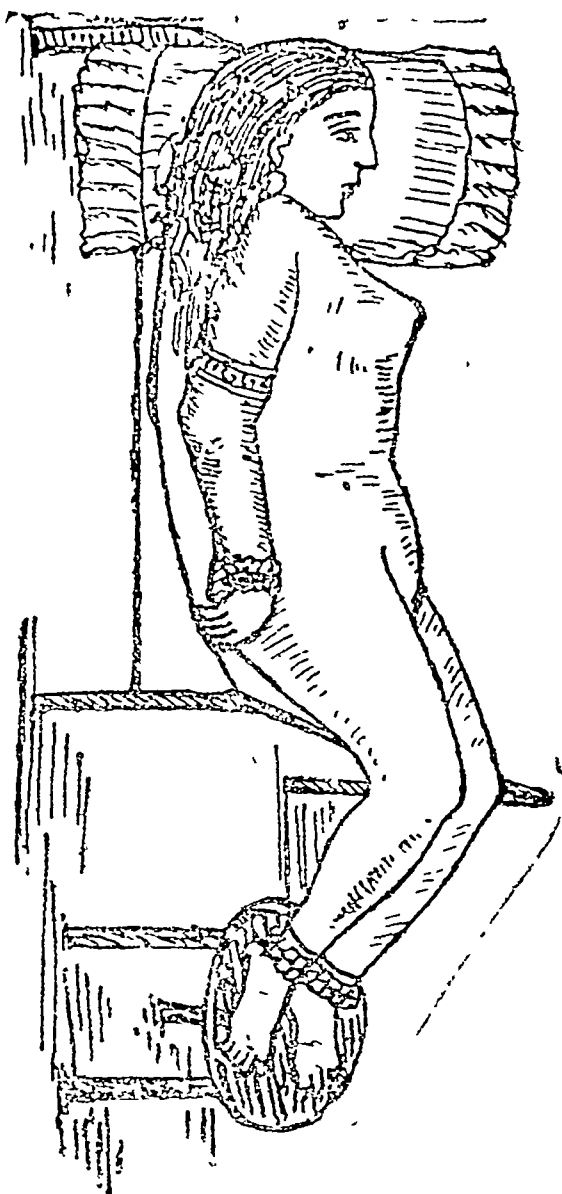
आवश्यक सूचना।

जब प्रदर बहुत दिनों का होजाता है और बहुत अधिक जाने लगता है तब स्त्री की बच्चेदानी की नसों में घाव होजाने से जबतक यह उपाय न किया जावै तबतक प्रदर को खाने की औषधियों से फ़ायदा नहीं होता। इसलिये ऐसी दशा में दोनों उपाय करैं।

तीसरा उपाय।

पिचकारी लगाने के बाद शतावरी तैल जिसकी इस पुस्तक में बनाने की विधि लिखी है उस तैल को रुई में डुबोकर योनि के भीतर रखदेवे और सुबह शाम दोनों समय फाहा बदल दिया करै।

पथ्यापथ्य।

उस स्त्री को प्रतिदिन गरम पानी को शीतल कर उससे स्नान करावे, गर्मी के दिनों में ताजे पानी से स्नान करावे, प्रातःकाल और सायंकाल वायुसेवन करावे। मूंग की दाल, गेहूं की रोटी, गूलर की तरकारी, लौकी, परवल, चौलाई, बथुआ, कच्चे केला की तरकारी, सिंघाड़ा, मुनक्का, मक्खन मिश्री, गाय का दूध, कभी कभी अरहर की दाल, पुराने चावल का भात, पुराने चावल की मूंग की खिचड़ी खाने को देवे।

पका केला, कसेरू, भिंडी, पुराने साँठी के चावल, कोदों का भात, समा, पसाई, जौ इत्यादि का सेवन और गाय का दूध, बकरी का दूध, भैंस का घी, कटहर, चिरौंजी, पेठा का मुरब्बा, आमले की चटनी, आमले का मुरब्बा, अनार, छुहारा, आमला, सौंफ, नरियल, कैथा, भसींड़ा, फालसे, जौ के सत्तू आदि का सेवन करना चाहिये, शीतल जल, तिली के तैल की मालिश करना, चन्दन लगाना यह सब पदार्थ प्रदरवाली स्त्री को हितकारी हैं।

प्रदररोग में वर्जित पदार्थ।

अधिक परिश्रम करना, मार्ग चलना, धूप में बैठना, मल मूत्र आदि वेगों को रोकना, पसीना निकलना, धुयें में बैठना, प्रसंग करना,

क्रोध करना, गुड़, तैल, खटाई, मिर्चा, बैंगन, तिल, उड़द, सरसों, दही, क्षार पदार्थों का सेवन करना, पान तम्बाकू खाना, दारू पीना, लहसन, प्याज, सेम यह सब पदार्थ प्रदर और रक्तप्रदर में हानिकारक हैं।

प्रदररोग के विशेष कारण।

प्रदर रोग के कारण पीछे लिखे गये हैं कुछ विशेष कारण यहाँ भी लिखे जाते हैं। श्वेत और लाल प्रदर स्त्रियों की थोड़ी ही असावधानी और आहार विहार के अनियम से उत्पन्न होजाता है यही कारण है कि सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियों में पाया जाता है प्रदर उत्पन्न होते ही अथवा कोई भी रोग हो सरल या कठिन उसका उपाय शीघ्रही करदिया जावै तो शीघ्रही दूर होजाता है और सरल औषधियों से, सरलता से ही दूर होसकता है जब रोग जड़ पकड़ लेता है अर्थात अधिक दिनों का होजाता है तब दूर होना कठिन होजाता है और अधिक दिनतक औषधियों के सेवन तथा अधिक झंझटों से दूर होता है प्रदर पुराना होजाने से स्त्रियों के गर्भाशय की नसों में खराबी उत्पन्न होकर गर्भाशय में भी दोष उत्पन्न होजाते हैं बच्चेदानी के मुंह में सूजन, घाव, छाले इत्यादि शिकायतें बढ़ जाती हैं इसलिये प्रदर उत्पन्न होते ही आगे लिखी हुई सरल और सस्ती औषधियों का सेवन करके प्रदर को दूर करदेना चाहिये और नीचे लिखे कारणों से सावधान रहना चाहिये। जो जो विशेष कारण प्रतिदिन स्त्रियों की असावधानी से होते रहते हैं जिनसे सरलता से ही प्रदररोग उत्पन्न होजाता है इन कारणों का ध्यान रक्खे।

विरुद्ध-भोजन करने से अर्थात् कभी ठंढा कभी गरम कभी दोबार कभी चारबार कभी बहुत कभी थोड़ा बासी पदार्थ, अधिक गरम अधिक गरिष्ट पदार्थों का सेवन करने से, दूध के साथ खटाई, खांड़ के साथ नमक आदि संयोगी विरुद्ध-पदार्थों का सेवन करने से अथवा स्वभाव के विरुद्ध पदार्थों का सेवन करने से, अपनी प्रकृति के विरुद्ध पदार्थों का सेवन करने से जैसे चाय, काफी, तमाखू, अचार, सिरका, शराब आदि तीक्ष्ण उत्तेजक और नशीले पदार्थों का सेवन करने से और नियम के विरुद्ध कुसमय और अधिक प्रसंग करने से, प्रमेहरोग वाले तथा गरमी, सुज़ाक वाले रोगी पति से प्रसंग होने से स्त्रियों को प्रदररोग अवश्य उत्पन्न होजाता है।

प्रसंग के पश्चात् शीघ्रही योनिमार्ग को न धोने से भी प्रदररोग उत्पन्न होता है। जिन स्त्रियों के पति अज्ञानतावश विषय में अधिक लवलीन रहते हैं और स्तम्भन के लिये स्तम्भन वटी तथा नशीली औषधियों का सेवन करते हैं नशे की गर्मी से खुश्की के कारण नशे में वे अज्ञानी पुरुष समझते हैं कि अधिक देरी तक मूर्खता करते रहे परन्तु वह कुछ भी नहीं है ऐसे मूर्ख पति स्वयं अनेक प्रकार के रोगों में फँसजाते हैं और अपनी निरपराध पत्नी को भी प्रदर आदि भयंकर रोगों में फंसा देते हैं।

उनकी स्त्रियों को निःसन्देह प्रदर, घोरप्रदर उत्पन्न होता है और वे भी मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों में फंसजाते हैं। धिक्कार है ऐसे अज्ञानी विषयी पुरुषों को, अनेक बार धिक्कार है उस क्षणिक आनन्द और आनन्द पानेवाले को तथा ऐसी घृणित औषधियों के बेचनेवाले वैद्यराजों को जिन वैद्यराजों को इस बात का पता नहीं है कि इस स्तम्भन वटी से विषयी पुरुषो और उनकी स्त्रियों को कितनी हानि पहुंचैगी, वे अपने स्वार्थ के लिये यह कुछ नहीं विचारते।

स्तम्भन वटी और इसी प्रकार की औषधियो के बेचनेवालों की ही स्वार्थता से, अज्ञानता से देश का सत्यानाश हुआ जारहा है, असंख्य स्त्रियां बन्ध्या होगई हैं और होती जारही हैं, असंख्य पुरुष ऐसी ही औषधियों के बल पर अपने शरीर को अपने ही हाथों नष्ट कर रहे हैं। बहुतेरे बुड्ढे से जवान बनने के लिये मूर्ख नोटिसबाजों की रसादिक औषधियों का सेवन कर शरीर का अधिक सत्यानाश मार रहे हैं।

एक तो वे बाल्यावस्था ही से हस्तक्रिया और विपरीत विषय तथा अन्य कारणों से वीर्य का सत्यानाश मार बैठे हैं दूसरे विवाह होते ही स्त्री के आते ही अधिक विषय, नियम-विरुद्ध विषय करके वीर्यहीन और शक्तिहीन होगये हैं यदि वैद्यलोग अपना स्वार्थ छोड़कर उन्हें इन कारणों को सुझावैं, अधिक विषय से बचाकर ब्रह्मचर्य से रख कर वीर्यवर्द्धक पदार्थों का सेवन तथा वीर्य-सुधारक औषधियों का सेवन करावैं तो देश का बड़ा ही कल्याण हो स्त्री पुरुष इस प्रकार प्रदर, प्रमेह से शक्तिहीन और सन्तानहीन न पाये जावैं।

एक तो उनकी अज्ञानता से, अधिक विषय से वीर्य इतना बनने ही नहीं पाता यदि कुछ बना भी तो स्तम्भन वटी इत्यादि

औषधियाँ खा खा कर और भी विषय में लवलीन होकर जोकुछ बना उसे भी गमा बैठे।

एक तो वैसे ही बाल्यावस्था से ही वीर्य का सत्यानाश लगने से मन्दाग्नि और क़ब्ज़ घेरे रहता है, स्तम्भन वटी आदि से जिनमें अफ़ीम आदि मादक पदार्थ पड़ते हैं उनसे और भी मन्दाग्नि तथा क़ब्ज़ घेरलेता है।

इस प्रकार पति की अज्ञानता और ऊपर लिखे आहार विहार का नियम ठीक न रखने तथा ऋतु के दिनों में नियम पूर्वक न रहने से अर्थात् रजोदर्शन (मासिकधर्म्म) के दिनो में अत्यन्त शीतल जल और शीतल वातकारक तथा गरिष्ट पदार्थों का सेवन करने से स्त्रियों को श्वेतप्रदर अवश्य होजाता है।

हमारे पूर्वज ऋषियों ने ऋतुधर्म के दिनों में स्त्री को बहुत नियम से, पथ्य से रहने की आज्ञा दी है वह इसी कारण है कि नियम-पूर्वक न रहने से स्त्री को अनेक रोग उत्पन्न होकर गर्भाशय में ख़राबी उत्पन्न होगी तब गर्भ रहने में भी बाधा होगी स्त्रियां रोगी रहैंगी तब सन्तान भी रोगी और निर्बल तथा दुर्बल होगी।

ऋषियों के बनाए हुए उन नियमों पर स्त्रियां नहीं चलतीं इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानबे स्त्रियां और स्त्रियों की अज्ञानता से पुरुष तथा पुरुषों की अज्ञानता से स्त्रियां इस प्रकार दोनों रोगी रहते हैं।

ऋतुधर्म में नियम के विरुद्ध रहने से हानि।

प्रसंग की अधिकता से स्त्रियों को प्रदर रोग अवश्य होता है और प्रसंग बन्द न करने से रोग दिन दिन बढ़ता ही जाता है प्रदर बढ़जाने से स्त्री के गर्भाशय और योनि में भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं, गर्भस्थली में एक प्रकार की सूजन उत्पन्न होती है उस सूजन से गर्भाशय के भीतर की कोमल त्वचा में एक प्रकार के घाव होजाते हैं और गर्भाशय के मुंह पर भी सूजन तथा घाव होजाते हैं।

प्रदर अधिक दिनों का होजाने से बच्चेदानी में सूजन अवश्य आजाती है यह बात अनुभव से देखी गई है १८ वर्षों में लाखों स्त्रियां प्रदररोग वाली मेरे पास अपना इलाज कराने आईं, सैकड़ा पीछे दो ही चार ऐसी निकलीं जिनकी बच्चेदानी में सूजन न पाई गई हो।

जिनके सूजन नहीं थी उनका प्रदर थोड़े ही दिनों का था वह दस ही बीस दिन में सरल औषधियों के सेवन कराने से ही दूर होगया जिनको अधिक दिनों का था वह खाने की औषधियों से अधिक दिनों में दूर हुआ और बच्चेदानी की सूजन दूर करने के लिये वैज्ञानिक विधि (औषधियों की भाफ) काम में लाई गई तब प्रदर रोग जड़ से दूर होगया।

बच्चेदानी की सूजन का डाक्टरी इलाज।

१८ वर्षों में जितनी स्त्रियां मेरे पास प्रदर रोग वाली आईं उन सबकी बच्चेदानी में सूजन पाई गई जिनका वर्षों डाक्टरी इलाज होचुका था बच्चेदानी की सूजनवाली सब रोगी स्त्रियों को आपरेशन कराने की सलाह दी गई उनमें से बहुत सी ऐसी देखीगईं कि जिनका आपरेशन होचुका था परन्तु फिर भी रोग को फायदा नहीं हुआ आपरेशन होनेपर दोचार महीने सूजन दूर रही परन्तु प्रदर बन्द नहीं हुआ आपरेशन होने से विशेष खराबी होते देखी गई है।

जितनी ऐसी स्त्रियां मेरे पास आईं जो प्रदर रोग की चिकित्सा के लिये बड़ी बड़ी प्रसिद्ध लेडी डाक्टरों के पास गईं उन्होंने प्रदर का कुछ भी इलाज नहीं किया केवल आपरेशन करने की ही सलाह दी जिसने आपरेशन कराया उसका प्रदर तो नहीं गया किसी किसी को और भी अधिक खराबी होते देखी गई है।

आपरेशन की खराबी।

अनेक स्त्रियां आपरेशन की खराबी से आयु पर्यन्त के लिये वन्ध्या होते देखी गई हैं और प्रदर भी दूर नहीं हुआ। प्रदर के कारण ही अधिक दिनों में गर्भाशय में सूजन होती है इसलिये जब तक प्रदर वन्द करने का इलाज न हो केवल बच्चेदानी की सूजन का ही इलाज करने से प्रदर को फायदा कदापि नहीं होसकता।

स्त्रियों के रोग दूर क्यों नहीं होते।

इसका कारण यह है कि चिकित्सा करने वाले स्त्रियों को उनके रोगों का कारण नहीं वतलाते वे इलाज भी करती जाती हैं और साथ ही साथ पति की इच्छाओं की भी पूर्ति करती जाती हैं यदि रोगी स्त्रियां

और उनके पतियों को रोगों का कारण समझा दिया जावे तो इलाज से अवश्य दूर होजावे और आगे को फिर न होवे। इस विषय में:—

मेरे अनुभव की बात यह है कि

जबसे मैंने स्त्रियों को सावधान करने के लिये "स्त्रीचिकित्सक" मासिक पत्र निकाला है उसके द्वारा स्त्री पुरुषों के रोगों के उत्पन्न होने के कारणों को समझाया है तबसे स्त्रियां सावधान होगई हैं जितनी रोगी स्त्रियों ने मेरा इलाज किया और मेरे कहने के अनुसार पथ्य से रहीं वे फिर कभी उस रोग से पीड़ित आजतक नहीं हुईं। जिन्होंने अपनी और अपने पति की अधिक विषय की इच्छाओं को काबू में नहीं रक्खा वे फिर फिर से उसी रोग में ग्रसित होकर मेरे पास आईं और सपथ पूर्वक पथ्य से रहने की प्रतिज्ञा की तब मैंने फिर इलाज किया अतएव उन्हें आज तक फिर से वह रोग नहीं हुआ।

हज़ारों सन्तानहीन स्त्रियां सन्तानवती हुईं

अधिक विषय के कारण तथा पति के गरमी, सुज़ाक, प्रमेह, सुस्ती और नपुंसकता के कारण जिन स्त्रियों के कभी गर्भ रहा ही नहीं जिनकी अवस्था ३०—३५—और ४० वर्ष तक की होचुकी थी मासिकधर्म बन्द होने का समय निकट आरहा था वे जब मेरे पास आईं मैंने पति पत्नी जिनमें ख़राबी हुई अथवा दोनों में ख़राबी हुई उसका इलाज करके ख़राबी दूर करदी सन्तान होने लगी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है जिन स्त्रियों का आपरेशन होचुका था उनके सन्तान नहीं हुई। क्योंकि जिस स्त्री की बच्चेदानी में आपरेशन ठीक न होने से अधिक ख़राबी आजाती है उसके गर्भ नहीं रहता।

प्रदररोग की विशेषता।

प्रदररोग की विशेषता यह है कि जब प्रदररोग अधिक दिनों का होजाता है तब गर्भाशय में घाव होने से उसमें से पहिले सफेद कफ़ की समान चिकना और पतला मांड़ की भांति स्राव होने लगता है फिर जिस प्रकार यह रोग पुराना होता जाता है वैसे ही उस स्राव की भी दशा बदलती जाती है कभी पीला, कभी हरा और कभी पानी की समान अत्यन्त पतला होकर निकलता है।

जब यह बहुत दिनों का पुराना होजाता है तब इस स्राव में दुर्गन्धि आनेलगती है और दिन रात हर समय निकलता रहता है। और भी अधिक दिनों का होजाने पर असाध्य होजाता है तब रोगी स्त्री का मृत्युकाल भी निकट ही समझिये। जिन स्त्रियों ने इस रोग की परवाह शुरू में नहीं की उन्होंने मानों बड़ी भारी भूलकी क्योंकि आरम्भ में तो इस रोग से कुछ अधिक हानि मालुम नहीं पड़ती अगर गर्भाशय में कुछ खराबी न आवे तो सन्तान तो बराबर होती जाती है परन्तु निर्बल और दुर्बल होती है। सदैव रोगी रहती है। जब यह रोग अपना पूरा प्रभाव शरीर पर जमा लेता है तब रोगी स्त्री के शरीर की सम्पूर्ण शक्तियां निर्बल होजाती हैं और मानसिक निर्बलता भी बहुत बढ़ जाती है तथा मन्दाग्नि, शिर की पीड़ा, मूर्छा, कमर की पीड़ा, हाथ पाँव और नेत्रों में जलन आदि अनेक प्रकार के उपद्रव आनकर मौजूद होजाते हैं इस देशकी स्त्रियां पहिले इस रोग की कुछ भी परवाह न कर पीछे नाना प्रकार के क्लेशों को भोगती हैं। यह सत्य बात है।

मैं प्रतिदिन देखती हूं।

मेरे पास रोगी पचासों स्त्रियां प्रतिदिन आया करती हैं सब में अन्य रोगों के साथ ही प्रदररोग अवश्य होता है प्रदर के कारण उन्हें नाना प्रकार के कष्ट होते हैं उन कष्टों के कारण वे हर समय परमात्मा से अपना मरना ही चाहती हैं किसी किसी को प्रदर के ही कारण इतनी अधिक तकलीफें होजाती हैं कि उनकी तकलीफों को देखकर कौन पत्थर का हृदयवाला मनुष्य होगा जिसके नेत्रों में आँसु न आजाते हों।

अनेक रोगी स्त्रियों को प्रतिदिन ऐसे दुःखों में देखकर मेरे विचार में यही सरल उपाय आया है कि स्त्रियों को ऐसे रोगों से बचने के लिये इस पुस्तक द्वारा सावधान करदूं। सब स्त्रियों को चाहिये इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़कर समझें और इसमें लिखे सब रोगों के उत्पन्न होनेवाले सब कारणों को छोड़देवें अपने अपने पतियों को भी यह पुस्तक अवश्य पढ़कर समझावें जिससे वे भी अपनी अज्ञानता को छोड़देवें।

सन्तान के ही लिये गर्भाधान क्रिया नियम पूर्वक करके उत्तम निरोग सन्तान उत्पन्न करें । अनियम प्रसंग को स्त्री पुरुष दोनों त्याग करैं नियम पूर्वक पथ्य से रहैं ।

प्रदर दूर होने के सरल उपाय ।

प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान करना स्वच्छ वायु का सेवन करना अपने स्वभाव के अनकूल सहज में ही पचनेवाले भोजन और थोड़ा परिश्रम करना इस रोग में आवश्यक है जहां तक होसकै हितकारक आहार और विहार का ही सेवन करै जिससे रोग शीघ्रही दूर होजावै जबतक रोग जड़ से न जाता रहै तब तक ब्रह्मचर्य से रहैं और नीचे लिखी सरल औषधियों का सेवन करैं । नीचे लिखे सरल उपाय थोड़े दिनों के उत्पन्न हुए प्रदर के लिये शीघ्रही गुण करते हैं ।

श्वेत (सफेद) प्रदर के लिये ।

(१)

एक तोला असली शहद में छै मासा आमले का चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल चालीस दिनों तक सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(२)

हरे आंवले मंगाकर कूट कर रस निकाले उस दो तोला रसको एक तोला शहद मिलाकर सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(३)

हर्ड एक तोला बहेड़ा दो तोला आंवला चार तोला मंगाकर कूटकर गुठली सबमें से निकाल डाले ऊपर के छिलके को कूटकर तीनों का चूर्ण बना कपड़ छान करके छै छै मासा की पुड़िया शहद से सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(४)

एक तोला त्रिफला का चूर्ण और छै मासा गोखरू का चूर्ण दोनो को पानी में भिगोकर शहद डालकर प्रति दिन प्रातःकाल सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(५)

विधारा चार मासे असगन्ध चार मासा दोनों को इकट्ठा पीसकर गायके दूध में सेवन करै दिन में दो बार इसके सेवन से चूने की समान प्रदर का गिरना बन्द होता है ।

(६)

सेमल की मूसली, भिंडी की जड़ और सफेद मूसली इन तीनों औषधियों को बराबर बराबर ले चूर्ण बना कपड़छान करके जितना यह चूर्ण तौल में हो उससे दूनी मिश्री मिलाकर चार चार मासे की मात्रा गाय के दूध के साथ दिन में तीन बार सेवन करै इससे सफेद प्रदर दूर होता है ।

(७)

मैदा लकड़ी, मोचरस तज और माजूफल इन सब औषधियों को बराबर बराबर लेकर सबका चूर्ण बना कपड़छान कर चूर्ण से दुगनी मिश्री मिलाकर चार चार मासे की पुड़िया दिन में तीन बार गाय के दूध के साथ या पानी के साथ सेवन करै तो पानी की समान पतला हर समय बहने वाला सफेद प्रदर शीघ्रही दूर होता है ।

(८)

दालचीनी, लोध, रसौत और नागकेशर सबको बराबर बराबर ले सबका चूर्ण बनाकर चार चार मासे की पुड़िया दिन में दो बार गायके मट्ठे के साथ सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(९)

लाल चौलाई की जड़, रसौत इन दोनों औषधियों को बराबर बराबर ले बारीक पीस चार चार मासा की पुड़िया प्रातःकाल और सायंकाल दोनों समय चावलो के पानी के साथ शहद डालकर सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो ।

(१०)

आमले गोखरू और गिलोय इन तीनों औषधियों को बराबर बराबर मंगाकर कूट डाले और एक तोला औषधि को एक छटांक पानी में रात को भिगोदेवे प्रातःकाल मलछान कर एक तोला शहद मिलाकर सेवन करै इसके सेवन से सफेद प्रदर और हाथ पैरों के तलवों की दाह दूर हो ।

(११)

पकी केले की फली दो तोला हरे आमलों का रस एक तोला मिश्री एक तोला और शहद आधा तोला यह सब औषधियां एक में मिलाकर सेवन करै तो पानी की समान पतला बहनेवाला सफेद प्रदर दूर हो।

(१२)

विदारीकंद, सफेद मुसली, सफेद पेठा के बीजों की मींग और छुहारे इन सबको बराबर बराबर ले बारीक पीसकर चार चार मासा की मात्रा शहद और मिश्री आधा आधा तोला मिलाकर सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर होता है।

(१३)

अडूसा की हरी पत्ती मंगाकर कूटकर रस निकाले और हरी गिलोय मंगाकर कूटकर रस निकाले इन दोनों को एक एक तोला लेवे इसमें शहद एक तोला मिलाकर सेवन करै तो सफेद पानी की समान बहनेवाला प्रदर अवश्य दूर होता है।

(१४)

दारुलहल्दी, लोध, सुपारी के फूल, धाय के फूल बेलगिरी और त्रिफला इन सबको बराबर बराबर ले कूटकर एक एक तोला की पुड़िया बनाकर एक पाव पानी में धीमी धीमी आंच से पकावै जब एक छटांक पानी रहजावै तब उतार कर मलछान शहद मिलाकर सेवन करने से दुर्गंधिवाला सफेद प्रदर अवश्य दूर होता है।

(१५)

अशोक की छाल, आमकी छाल, बड़के अंकुर यह सब बराबर बराबर मंगाकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक एक तोला की पुड़िया बना एक पाव पानी में काढ़ा करै जब एक छटांक पानी रह जावै तब उतार मलछान कर एक तोला शहद और आधा तोला मिश्री मिलाकर प्रातःकाल सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो।

(१६)

प्रदर नाशक अवलेह।

मुनक्का पांच तोला पीपल की लाख दो तोला बोल दो तोला और नागकेशर दो तोला इन सब औषधियों को इकट्ठा पीसकर यह

सब जितनी तौल में हों चौगुने पानी में धीमी धीमी आंच में पकावै और करछुल से चलाती जावै जब पानी जलजावै हलुवा की भांति होजावै तब आधपाव मिश्री पीसकर मिलादेवे फिर धीमी धीमी आंच से पकावै जब मिश्री भली भांति गलकर मिलजावै तब उतार कर ठंढा करके एक छटांक शहद मिलादेवे और बड़े मुंह की शीशी में भर कर रखदेवे इसे प्रतिदिन एक एक तोला दोनों समय सेवन करै ऊपर से गाय का दूध पीवै तो सफेद प्रदर अवश्य दूर हो।

(१७)

प्रदर नाशक मोदक।

सूखे गूलर का चूर्ण एक पाव, सिंघाड़े का आटा डेढ़ पाव, मुलैठी दो तोला छुहारा गुठली निकाल कर आधा पाव उड़द का आटा एक छटांक भुने हुए इमली के बीजों की गिरी दो तोला सबको बारीक पीस गाय के घी में भूनकर मिश्री की चासनी में मिलाकर दो दो तोला के लड्डू बनाकर एक लड्डू प्रातःकाल सेवन करै ऊपर से बकरी का दूध एक पाव पीवै तो सफेद प्रदर शीघ्रही दूर होगा।

(१८)

शुद्ध शिलाजीत दो रत्ती प्रतिदिन गाय के गरम दूध से मिश्री मिलाकर सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो।

(१९)

शिलाजीत एक तोला विधारा पांच तोला शतावर पांच तोला सफेद मुसली पांच तोला इन सबको इकत्र पीसकर एकत्र मिलाकर त्रिफला के काढ़े में मिलाकर बेर की बराबर गोली बनावै एक एक गोली प्रतिदिन गाय के दूध से सेवन करै तो सफेद प्रदर दूर हो।

(२०)

गुलाब के अर्क में मूंगा की भस्म को खरल करके प्रतिदिन दो रत्ती प्रातःकाल आंवले के मुरब्बे के साथ सेवन करते रहने से सफेद प्रदर कुछ दिनों में अवश्य बन्द होजाता है।

मूंगा की भस्म बनाना आगे बतलाऊंगी।

यह जो औषधियां मैंने प्रदर रोग की सरल विधि की समझाई हैं यह सब परीक्षा की हुई हैं परन्तु यह बात अवश्य है कि किसी रोगी को कोई औषधि फ़ायदा करती है किसी को कोई हर एक को सब औषधियां एक समान फ़ायदा करैं यह बात नहीं है इसलिये यदि इनमें से कोई औषधि किसी को फ़ायदा न करै तो दूसरी तैयार कर सेवन करे इस प्रकार अवश्य फ़ायदा होगा।

यह बात सभी स्त्री पुरुष जानते हैं कि हर एक डाक्टर वैद्य रोगी को जो औषधि देते हैं वह फ़ायदा न करै तो दूसरी तीसरी अदल बदल कर देते हैं जो फ़ायदा करती हैं उसी को अधिक दिनों तक सेवन कराते रहते हैं इसी प्रकार इस पुस्तक में लिखी औषधियों का अदल बदल कर सेवन करना चाहिये।

प्रदररोग से वन्ध्यादोष।

प्रदररोग के कारण बहुतसी स्त्रियां बन्ध्या होते देखी जाती हैं मेरे पास महीने में पचासों स्त्रियां ऐसी आया करती हैं कि आरम्भ में दो एक बालक हुए फिर किसी कारण से प्रदर रोग उत्पन्न होने से गर्भ रहना ही बन्द होगया दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष तक गर्भ रहाही नहीं जब मेरे पास आईं मैंने उनके रोग की परीक्षा की तो पुराना प्रदररोग पाया गया जब उनका इलाज किया गया सन्तान होने लगी सभी प्रदररोग वाली स्त्रियां बन्ध्या नहीं होतीं बहुतों के प्रदररोग होने पर भी बराबर सन्तान होती रहती है परन्तु निर्बल और दुर्बल होती है तथा सदैव रोगी रहती है कम आयु में ही बालक मरजाते हैं बालकों की अधिक मृत्यु संख्या का यही कारण है।

प्रदररोग में जो स्राव होता है अधिक दिनों का होजाने से उसमें ऐसे दोष उत्पन्न होजाते हैं कि गर्भाधान क्रिया के समय पुरुष के वीर्य में जब वह स्राव मिल जाता है तब पुरुष के वीर्य के जन्तु (कीड़े) जिनसे गर्भ रहता है वे जन्तु नष्ट होजाते हैं (मरजाते हैं) इस कारण गर्भ नहीं रहता जिस स्त्री के प्रदर के स्राव में ऐसी ख़राबी उत्पन्न होजाती है तब फिर आयुपर्यन्त उसके गर्भ नहीं रहता इस बात को कोई स्त्री पुरुष अथवा साधारण चिकित्सक भी नहीं समझ सकते।

मैंने ऐसी हजारों स्त्रियों की चिकित्सा की है जिनके पन्द्रह पन्द्रह बीस बीस वर्ष के बाद सन्तान उत्पन्न हुई है जिस समय वे मेरे पास आईं मैंने उनका प्रदररोग दूर करदिया, सन्तान होने लगी।

चित्र नं० ३४
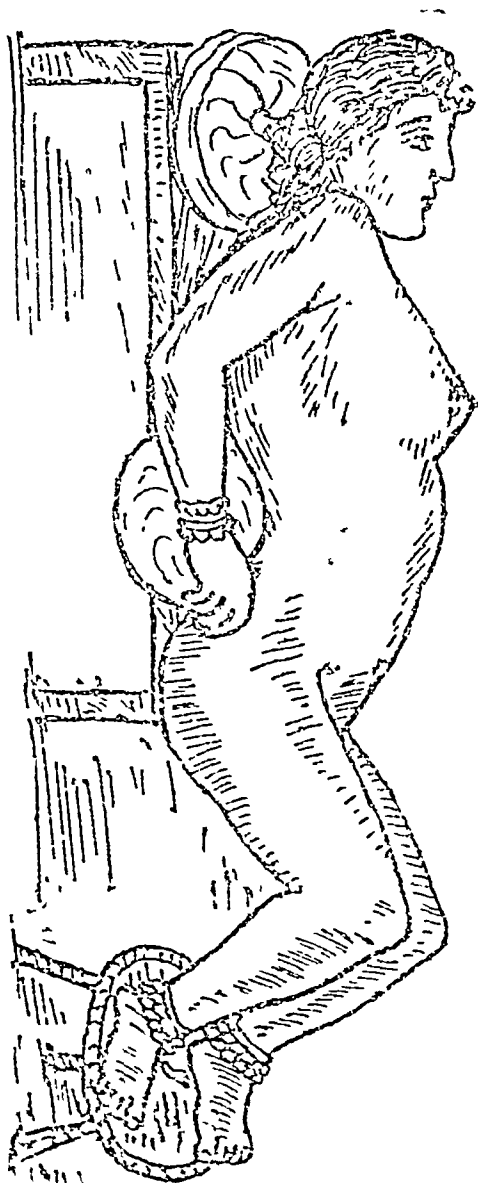
पुराने प्रदर स्राव में औषधियों की पिचकारी लगाने की विधि रोगी स्त्री को इस प्रकार रहना चाहिये।

जिन स्त्रियों को प्रकृतिदोष से प्रदर रोग के स्राव में एक प्रकार का अम्ल (खटास) उत्पन्न होजाता है उनके गर्भ नहीं रहता, खटास के कारण पुरुष के वीर्य के कीड़े उस खटास से मरजाते हैं।

उस खटास को दूर करने के लिये प्रदररोग में खाने की औषधियों के साथ ही साथ नीचे लिखा उपाय भी करना चाहिये।

प्रदर के स्राव की खटास दूर करने के लिये उपाय

आधा तोला फिटकरी का फूला करके उसे आधा सेर ठंढे पानी में मिलावै और ऊपर लिखे चित्र की भांति स्त्री को लिटाकर पिचकारी से योनिमार्ग को धोवै। स्त्री को इस प्रकार लेटना चाहिये कि पिचकारी का पानी योनि से बराबर निकलता जावै। इस प्रकार एक सप्ताह पिचकारी से योनिमार्ग को धोते रहने से प्रदर के स्राव में कमी होजावैगी और वह दोष दूर होजावैगा जिससे गर्भ नहीं रहता।

जिस दिन गर्भाधान क्रिया करनी हो उस दिन पीपल की भीतरी छाल एक तोला, नीम की भीतरी छाल एक तोला, मौलसिरी की छाल दो तोला, बरगद की छाल २ तोला, गूलर की भीतरी छाल दो तोला इन सबको कूटकर रात को आधसेर पानी में भिगोदेवे प्रातःकाल उसका काढ़ा करके उस पानी को छानकर उसमें २ तोला सेंधानमक और छै मासा फिटकरी पीसकर मिलादेवे प्रातःकाल उसी गरम गरम पानी की पिचकारी से योनि को धोवै फिर रात को गर्भाधान क्रिया करै इससे प्रदरदोष के कारण यदि गर्भ न रहता होगा तो वे दोष दूर होकर गर्भ रहैगा।

ज़रूरी बात।

पीछे लिख आई हूं कि प्रदररोग वाली स्त्री को ब्रह्मचर्य से रह कर औषधियों का सेवन करना चाहिये और यहां गर्भाधान क्रिया लिखरही हूं इस पर बहुतों को सन्देह होगा इसलिये यहां खुलासा लिखकर सन्देह को दूर करना उचित है।

जिनके पति परदेश में रहते हैं वर्ष छै मास में घर आते हैं अथवा जिनको प्रदररोग बहुत पुराना है औषधि करते करते अधिक समय व्यतीत होरहा है वे मानेंगी तो हैं नहीं उनका ब्रह्मचर्य रहना यदि न होसकै तो औषधियां सेवन करते करते भी मासिकधर्म होते

के चौथे छटे या आठवें, दशवें, बारहवें और चौदहवें, सोलहवें जिस दिन पति का संयोग हो ऊपर लिखी क्रिया को प्रातःकाल करलेवें इसके करने से उनके प्रदर में जो पुरुषवीर्य के जंतुओं को नष्ट करदेने वाली ख़राबी उत्पन्न होगई है वह इस उपाय को करते ही उसी दिन दूर होजावैगी यदि उनके पति के वीर्य में अथवा अन्य किसी प्रकार की ख़राबी न हुई तो गर्भाधान अवश्य होजावैगा। फिटकरी वाली पिचकारी एक सप्ताह पहिले ही लगानी चाहिये।

ऊपर लिखी विधि से गर्भाधान क्रिया एकही बार करनी चाहिये अधिक बार होने से गर्भ नहीं रहता इस औषधि से जो पिचकारी की विधि लिखी गई है स्त्री के अनेक रोग दूर होते हैं उनका वर्णन विस्तार से "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में किया जावेगा।

प्रदरदोष के कारण यदि ख़राबी होगी वह थोड़े समय के लिये दूर होकर गर्भ रह सकता है परन्तु मासिकधर्म में ख़राबी होगी तो इस उपाय से गर्भ नहीं रह सकता क्योंकि:—

गर्भ धारण होने के लिये शुद्ध ऋतु की आवश्यकता है।

मासिकधर्म ठीक समय पर शुद्ध होने से ही गर्भ रहता है इस लिये मासिकधर्म में किसी प्रकार की ख़रावी न होने पावै इस वात का स्त्रियों को ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि रजदोष से स्त्रियों के शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और ऋतुदोष जिन जिन कारणों से उत्पन्न होता है वह पीछे लिख आई हूं देखो रतिशास्त्र पृष्ठ १६० से २०८ तक जो कारण ऋतुदोष उत्पन्न करनेवाले हैं उन्हें छोड़ देना चाहिये।

१८ वर्षों तक लाखों स्त्रियों की चिकित्सा कर अनुभव से जाना गया है कि स्त्रियों की असावधानी से तथा पति की अज्ञानता से, मासिकधर्म में ख़रावी उत्पन्न होने से स्त्रियों को एक दो नहीं वरन् बीसों रोग उत्पन्न होते हैं जो इस पुस्तक में पीछे लिखे गये हैं।

मासिकधर्म की ख़रावी से गर्भाशय में भी ख़रावी उत्पन्न होजाती है, गर्भाशय टेढ़ा होजाता है, सूजन आजाती है, सूख जाता है,

सिकुड़ जाता है इत्यादि अनेक प्रकार की ख़राबी उत्पन्न होजाती हैं जिसका वर्णन पीछे चित्रों के साथ करचुकी हूं अब चिकित्सा और उपाय लिखती हूं ।

मासिकधर्म किस कारण से बिगड़ा है इसकी परीक्षा करके नीचे लिखी औषधियों का सेवन कराना चाहिये । पीछे लिखी विधि से रोगी स्त्री के मासिकधर्म की परीक्षा करे यदि वायुदोष से मासिकधर्म बिगड़ा हो तो उसकी परीक्षा यह है:—

वायुविकार से दूषित रज के लक्षण ।

जिस स्त्री का मासिकधर्म वायुदोष से बिगड़ा होता है उसे मासिकधर्म के समय बहुत कम रक्त ऋतु के समय निकलता है और रक्त का रंग कुसुम के रंग की समान होता है और ऋतु के समय कमर में पीड़ा होती है और योनि में भी पीड़ा होती है ऋतु के दिनों में ज्वर की सी हरारत मालूम होती है यदि ऐसा हो तो:—

जामुन की जड़ की छाल एक तोला
छोटी कटेली की जड़ की छाल एक तोला
बड़ी कटेली की जड़ की छाल एक तोला

इन सबको मंगाकर कूट पीसकर छै छै मासे की पुड़िया बनालेवे, ऋतु के समय गाय के दूध के साथ पीसकर जै दिन तक ऋतु का रक्त जारी रहै तब तक प्रतिदिन प्रातःकाल पीवै ।

दूसरा उपाय ।

जब ऋतु का रक्त बन्द होजावै तब शुद्ध होने पर नीचे लिखी औषधि का सेवन करै ।

पठानी लोध दो तोला
कचूर डेढ़ तोला
पोहकरमूल एक तोला
पत्रज एक तोला
चिकनी सुपारी पांच तोला
सफेद मूसली तीन तोला
कालीमिर्च एक तोला
पाढ़ डेढ़ तोला
वायविड़ंग दो तोला
केसर आधा तोला
तगर एक तोला
मिश्री २० तोला

इन सब औषधियों को मंगाकर साफ़ करके कूट पीस कपड़छान चूर्ण बनावे और चार चार माशे की पुड़िया बनाकर प्रतिदिन प्रातःकाल गाय के दूध के साथ सेवन करै इस प्रकार दोनों उपाय करते रहने से मासिकधर्म ठीक होजावैगा।

कफ़ विकार से दूषित रज के लक्षण

जिस स्त्री का रज कफ़ के दोष से दूषित होता है उसका ऋतु का रक्त चिकना और अधिक आता है उसका रंग प्याज के रंग की समान होता है। अर्थात् अधिक लाल नहीं होता नाभि में अधिक पीड़ा ऋतु के समय होती है।

औषधि यह है।

नागकेशर	आक की जड़	लौंग
मेहंदी	खरैंटी की जड़	गंगेरन की छाल

यह सब औषधियां बराबर बराबर ले तीन तीन मासे की पुड़िया बनाकर रखले प्रतिदिन एक एक पुड़िया जै दिन तक ऋतु का रक्त जारी रहै तै दिनतक बकरी के दूध के साथ पीस कपड़े से छान कर पीवै तो कफ़ से दूषित रज की सब शिकायतें दूर हों।

दूसरा उपाय।

पीपल एक तोला	केशर छै मासा
सोंठ एक तोला	काली मिर्च एक तोला
जटामासी आधा तोला	असगन्ध डेढ़ तोला

इन सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर तीन तीन मासे की पुड़िया प्रतिदिन गाय के गरम दूध मिश्री से सेवन करै तो कफ़ से उत्पन्न होनेवाला ऋतुदोष दूर हो और सब शिकायतें दूर हो। दोनों उपायों को करना चाहिये।

पित्तविकार से दूषित रज परीक्षा।

जिस स्त्री का रज पित्त के दोष से विगड़ा हुआ होगा उसके लक्षण यह हैं उस स्त्री को मासिकधर्म का रक्त काला जैसा पका

हुआ जामुन का फल होता है उस रंग का निकले, मासिकधर्म के दिनों में कमर में पीड़ा होती है, पेट में जलन, हाथ पैरों के तलवों, हथेलियों में जलन गर्मी मालूम हो । ऋतु का रक्त गरम गरम जलन के साथ निकले यह लक्षण पित्त के दोष से ऋतुदोष के हैं ।

औषधि इसकी यह है ।

कमलगट्टा	कूट	सफेद चन्दन
तगर	मुलहठी	मिश्री सबसे दूनी

यह सब औषधियां मंगाकर साफ़ करके बराबर बराबर ले कूट पीस कपड़छान कर चार चार मासे की पुड़िया बना मासिकधर्म के दिनों में बकरी के दूध में पीसकर कपड़े से छान प्रतिदिन प्रातःकाल पीवै जितने दिनों तक ऋतु का रक्त जारी रहै पीती रहै इससे पित्त से दूषित ऋतु की सब शिकायतें दूर होंगी ।

दूसरा उपाय ।

शुद्ध प्रवाल (मूंगा) तीन मासे	गुलाब के फूल छै मासे
धनियां छै मासे	बंसलोचन छै मासे
सौंफ छै मासे	छोटी इलायची छै मासे

यह सब औषधियां कूट पीस कपड़छान करके इन सबसे दूनी मिश्री लेकर गुलाबजल में चाशनी बना उसी चाशनी में डालकर मिलादेवे चाशनी इस प्रकार रक्खे कि कड़ी न होने पावे, चटनी की समान अवलेह बन जावे । इस औषधि को प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल चार चार मासे खाकर ऊपर से गाय का दूध पीवै इस प्रकार इस औषधि के सेवन करने से पित्त के दोष से उत्पन्न हुआ ऋतुदोष दूर होगा ।

इसके सेवन से दिल की धड़कन, अन्तर्दाह (शरीर के भीतर की गर्मी), हिस्ट्रिया-रोग, शिर का चक्कर, आंखों की जलन, हाथ पैरों का दाह, आंव के दस्त, रक्त पित्त इत्यादि शिकायतें दूर होंगी । यह औषधि ऋतु के बाद चालीस दिन बराबर सेवन करना चाहिये ।

त्रिदोष (सन्निपात) से दूषित रज।

वात पित्त कफ़ तीनों के दूषित होने से जिस स्त्री का रज ख़राब होता है उसके लक्षण यह हैं ऋतु के समय उस स्त्री को बड़ा तेज़ ज्वर हो और ऋतु का रक्त काला आवे, बहुत गरम जलन के साथ निकले और चिकना, लिबलिबा, कुछ फेनदार सा हो।

उस स्त्री के कमर, योनि और कोख में पीड़ा हो और सब शरीर में हड़फूटन हो, सुस्ती अधिक रहै। ऐसे लक्षण जिस स्त्री के ऋतु के समय मालूम हों उसका ऋतु सन्निपात से दूषित समझना चाहिये।

इसकी औषधि यह है।

सफेद चन्दन	अरंड की जड़ की छाल	निसोत
तगर	आम की छाल	कूट
मुलहठी	कमलगट्टा	

यह सब औषधियां बराबर बराबर मंगाकर कूट पीस कपड़छान कर चार चार मासे की पुड़िया बनाकर रखले ऋतु के समय प्रतिदिन एक पुड़िया प्रातःकाल बकरी के दूध में पीस कपड़े से छानकर सात दिन तक सेवन करना चाहिये या जबतक ऋतु का रक्त जारी रहै तब तक सेवन करे। यदि ऋतु का रक्त तीन ही दिन में बन्द होजावे तो औषधि को पांच दिन तक पीवे यदि अधिक दिन जितने दिनों तक जारी रहै तबतक पीती रहै।

ज़रूरी बात।

यह जो औषधियां ऋतुदोष की लिखी गई हैं इनसे ऋतुदोष की सब शिकायतें तो अवश्य दूर हो ही जाती हैं इसके अतिरिक्त जिस स्त्री के इन रोगो के कारण मासिकधर्म में ख़राबी होने से गर्भ नहीं रहता वे अवश्य सन्तानवती होजाती हैं इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि ऊपर लिखे अनुसार रोग के लक्षण ठीक मिलाकर भलीभांति परीक्षा करके औषधि दीजावैगी तो यह औषधियां मेरी हज़ारों बार की परीक्षा की हैं अवश्य फ़ायदा करेंगी।

यदि बिना ठीक परीक्षा किये औषधि दीजावैगी तो नुकसान करैगी। जैसे किसी स्त्री का मासिकधर्म कफ़ के दूषित होने से बिगड़ा

है और उसे औषधि दीगई वायु से बिगड़े रज की तो और भी अधिक ख़राबी उसके रज में आजानी सम्भव है और फ़ायदा कुछ भी न होगा इसी प्रकार मासिकधर्म में पित्तदोष से ख़राबी है और परीक्षा ठीक न करके औषधि दीगई कफ़ से दूषित रज की तो नुक्सान पहुंचावैगी, फ़ायदा कुछ भी न होगा। इसलिये जो बहिनें स्त्रीचिकित्सा में कुछ यश प्राप्त करना चाहैं वे रोगों की परीक्षा भलीभांति करके ठीक समझ में आवे तो औषधि दें वरन् पत्रद्वारा मुझसे उस रोगी स्त्री के कुल लक्षण और पूरा हाल लिखकर पूंछलें, मैं बतलादूंगी।

मैंने स्त्रियो के सुविधा के लिये इस पुस्तक को इतना सरल बनाया हैं कि कम पढ़ी लिखी स्त्रियां भी समझ सकती हैं परन्तु फिर भी जो कोई बात समझ में न आवे वह मुझसे पत्र द्वारा पूंछलें।

स्त्री में किसी दोष के कारण मासिकधर्म में ख़राबी होने से गर्भ न रहता होगा तो सब शिकायतें दूर होकर इन औषधियों से अवश्य गर्भ रहैगा परन्तु उस स्त्री के पति में किसी प्रकार की ख़राबी होगी अथवा वीर्य में कुछ ख़राबी होगी तो वह पति का दोष समझो सन्तान न होगी। जबतक पति पत्नी दोनों का रज वीर्य और इन्द्रियां ठीक न हो गर्भ नहीं रह सकता।

इसके अतिरिक्त जिस स्त्री की अवस्था व्यतीत होचुकी है ऋतु बन्द होने का समय आगया है अथवा स्त्री युवा है पति की अवस्था सन्तान उत्पन्न करने योग्य नहीं है उनके भी गर्भ न रहैगा।

मेरे पास प्रतिदिन अनेक स्त्रियां ऐसी आया करती हैं कि जिनकी अवस्था अधिक है मासिकधर्म बन्द होने का समय निकट आगया है परन्तु वे मेरे पास सन्तान होने का इलाज कराने आती हैं अथवा मासिकधर्म की औषधियां लेने आती हैं जब मासिकधर्म बन्द होने का समय आजाता है अवस्था अधिक होने से बन्द होने लगता है तब किसी औषाध से ठीक नहीं होसकता यदि बहुत उपाय किये जावें तब सुधर भी जावै परन्तु थोड़े दिन में फिर वही दशा होजाती है इसलिये इस विषय को जानने के लिये यहां लिखती हूं। इसका जानना बहुत ज़रूरी है क्योंकि इसके बिना जाने चिकित्सा करनेवाली स्त्री यश की जगह अपयश पावैगी क्योंकि जब उसको इस बात की ख़बर तक नहीं है कि किस अवस्था में मासिकधर्म बन्द होता है यह न जानने से ऐसी अवस्थावाली स्त्रियों का भी वह इलाज आरम्भ कर- [illegible] अथवा जो स्त्रियां इस पुस्तक को पढ़कर अपना इलाज आपही

करेंगी तो अवस्था अधिक होने के कारण मासिकधर्म की ख़राबी दूर तो होगी नहीं वे मेरी पुस्तक को तथा औषधियों को दोष देंगी इसलिये सब स्त्रियां नीचे लिखे विषय को सदैव याद रक्खें।

ऋतुधर्म का समय।

स्त्रियों को मासिकधर्म होने का समय १२ वर्ष की अवस्था से आरम्भ होकर लगभग ५० वर्ष की अवस्था तक रहता है किसी किसी को इससे अधिक १३-१४ वर्ष की अवस्था में होता है यों तो वैद्यकशास्त्र के नियमानुसार ४५ वर्ष की स्त्री और सतत्तर वर्ष के पुरुष सन्तान उत्पन्न कर सकते है परन्तु यह नियम उन स्त्री पुरुषों के लिये है जो नियमपूर्वक केवल ऋतु से शुद्ध हुई स्त्री से सन्तान की इच्छा से महीने में एक ही धार प्रसंग करते हैं, वीर्यरक्षा का सदैव ध्यान रखते हैं। आजकल तो बहुत कम ऐसे स्त्री पुरुष मिलेंगे सत्तर वर्ष की अवस्था वाले बहुत कम ऐसे होंगे जो प्रसंग करने की शक्ति रखते हों, जवानी में ही शीघ्र-पात वीर्य क्षीणता, गर्मी सुजाक सुस्ती इत्यादि रोग घेर लेते हैं यही दशा स्त्रियों की भी है मेरे पास तो पचासों रोगी स्त्रियां प्रतिदिन आया करती हैं उनकी ज़बानी उनके पतियों का भी हाल मालूम होता है।

जो लड़कियां उपन्यास और गन्दे किस्सा कहानी पढ़ा करती हैं और जो कुसंग वश इसी चर्चा और ध्यान में रहती हैं उन्हें इससे भी कम अवस्था में मासिकधर्म होने लगता है अच्छे विचार वाली लड़-कियों को प्राय: १३-१४ वर्ष की अवस्था में मासिक होता है कभी कभी इससे भी अधिक १५-१६ वर्ष की अवस्था में होता है। यदि १९-२० वर्ष की अवस्था तक मासिकधर्म न हो तो उसकी परीक्षा करानी चाहिये।

क्योंकि जो आदि-वन्ध्या हैं जिनके गर्भाशय नहीं है वे आदि वन्ध्या हैं उनको मासिकधर्म नहीं होता न सन्तान ही होती है। इस लिये उनकी जांच करानी बहुत ज़रूरी है।

मासिकधर्म आरम्भ होने से ३५—३६—तथा चालिस वर्ष की अवस्था से वन्द होने का समय आजाता है किसी को ३५—३६ वर्ष की अवस्था से ही कम होना आरम्भ होजाता है क्रमश: धीरे धीरे कम होता जाता है इस प्रकार ४० चालीस वर्ष की अवस्था में वन्द होजाता है, किसी किसी को ४० वर्ष की अवस्था से वन्द होना

आरम्भ होकर ४५-४६ वर्षतक बिलकुल बन्द होजाता है यह सब ब्रह्मचर्य के ऊपर निर्भर है यदि स्त्री नियमानुसार केवल सन्तान के लिये ही प्रसंग की इच्छा करें अनियम न करे तो ५५ पचपन वर्ष की अवस्था तक मासिकधर्म से होकर सन्तान उत्पन्न करसकती है।

आजकल तो अनुभव से जाना गया है कि ३५—३६ वर्ष की अवस्था से ही मासिकधर्म बन्द होने लगता है ऐसी ही स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक है ऐसी कम हैं जो ४०—४५ वर्ष तक बराबर ठीक ठीक मासिकधर्म से होती रहैं। ५५ वर्ष की अवस्था तक सन्तान उत्पन्न कर सकें ऐसी तो सैकड़ा पीछे कदाचित् ही दो एक हों। आज कल तो विषयी पतियों के कारण जवानी में ही बुढ़िया होजाती हैं पति की भी यही दशा होता है फिर भला ५५ वर्ष तक स्त्री और सतत्तर वर्ष तक पुरुष सन्तान उत्पन्न क्योंकर कर सकैं। ३५—३६ वर्ष से कम होना आरम्भ होता है किसी किसी को ४३—और पचास वर्ष की अवस्था में बन्द होजाता है। ३५—३६ वर्ष की अवस्थावाली बहुत अधिक स्त्रियां मेरे पास ऐसी आती हैं जिनका मासिकधर्म बन्द होने का समय निकट आगया है।

जिनको किसी रोग के कारण कमी होजाती है वह औषधि से ठीक होजाती हैं, जिनका समय ही बन्द होने का आगया उनको औषधि कुछ भी फ़ायदा न करैगी। इसका सारांश यह है कि जिनका रज अधिक विषय के कारण क्षीण होगया है शरीर में रज की कमी है तो होगा कैसे इसलिये ३५-३६ वर्ष की अवस्था से ही कम होने लगता है।

औषधि गुण क्यों नहीं करती।

इसका कारण यह है कि ३५ वर्ष की अवस्था में उतना रक्त नहीं बनता जितना जवानी में बनता है। इसलिये ऐसी दशा में मासिकधर्म ठीक होने की आशा नहीं करनी चाहिये। जब मासिकधर्म बन्द होने का समय निकट आने लगता है तब ३५-३६ वर्ष की अवस्था से ही (चार पांच वर्ष पहिले ही से) मासिकधर्म में गड़बड़ी होने लगती है किसी महीने में बहुत कम, किसी में बहुत अधिक होता है, किसी किसी को दो दो महीने नहीं होता जब होता है महीनों तक जारी रहता है। यदि ३५ वर्ष की अवस्था के नीचे ऐसा हो तो रोग समझना चाहिये।

मासिकधर्म का महत्व।

इसलिये सब स्त्रियो और उनके पतियों को चाहिये कि मासिक-धर्म ठीक रहै ऐसे नियमों पर चलना चाहिये जिससे ५५ वर्ष की स्त्री और सतत्तर वर्ष के पुरुष में सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति रहना वैद्यकशास्त्र बतलाता है वैसा ही होना चाहिये। नियम-पूर्वक प्रसंग करने से सन्तान ही होना यही नहीं स्त्रियों और पुरुषों की आरोग्यता के लिये भी उचित है अभीतक कोई स्त्री पुरुष मासिकधर्म का महत्व नहीं जानते इसलिये समझाना आवश्यक है।

मासिकधर्म का कितना बड़ा महत्व है इसे बिना जाने स्त्री पुरुष बड़ी अज्ञानता से इसे दूषित करके स्त्रियों की जिन्दगी बरबाद करदेते हैं जिससे सन्तान भी रोगी निर्बल और दुर्बल होती है।

प्यारी पाठिकाओ और प्यारे पाठको! स्त्रियों की आरोग्यता का सुख मासिकधर्म पर ही निर्भर है मासिकधर्म का कितना बड़ा महत्व है यह सब स्त्री पुरुषों को याद रखना चाहिये स्त्री पुरुष मासिकधर्म का महत्व नहीं समझते इसी कारण उसकी कुछ भी कदर नहीं करते। जो स्त्री युवावस्था पाकर मासिकधर्म से नहीं होती उसे घरवाले वन्ध्या समझकर उसका निरादर करने लगते हैं और उसकी बड़ी वेकदरी होने लगती है उस सुन्दर प्यारी पुत्रबधू को घरवाले बुरी निगाह से देखने लगते हैं और छोड़ देने को तैयार होते हैं दूसरा विवाह करलेते हैं फिर पहिली स्त्री की कितनी वेकदरी होती है यह सभी स्त्रियां जानती हैं।

मेरे पास महीने में सैकड़ों चिट्ठियां ऐसी स्त्रियों की आया करती हैं जिन्हें मासिकधर्म की खराबी से सन्तान नहीं होती, उनके घरवाले दूसरा विवाह करने को तैयार हैं वे स्त्रियां मुझे लिखती हैं कि हमारा इलाज करके हमारा मासिकधर्म ठीक कीजिये नहीं तो हमारे पति का दूसरा विवाह होजावैगा तो हम विना मौत के ही चिन्ता और दुःख से मरजावेंगी अब भी हम रो रो कर मरी जाती हैं जिन्दगी भारू होरही है।

एक दिन मेरे पास एक स्त्री अपनी २२ वर्ष की लड़की को लेकर आई वह आकर मेरे पैरों पर गिरी और कहने लगी मेरे यही एक लड़की है इसी को देखकर मैं जीवित हूं, मेरे और कोई सन्तान

नहीं है, यह अभीतक मासिकधर्म से नहीं हुई इसके घरवालों ने निकाल दिया है और वे दूसरा विवाह करने का निश्चय कर रहे हैं घरवालों ने मारकर मेरे पास भेजदिया है अगर आप इसका इलाज करदें तो आपकी बड़ी दया हो अभी उस लड़के की दूसरी शादी होने में छै सात महीने की देरी है इस बीच में यह मासिकधर्म से होने लगेगी तो सन्तान होने की भी आशा होगी।

मैंने उस लड़की के गर्भाशय की परीक्षा की तो मालूम हुआ कि उसके गर्भाशय में बहुत सूजन है अधिक सूजन के कारण गर्भाशय का मुह बिलकुल बन्द होगया है मैं उसकी अधिक सूजन देखकर बड़े विचार में पड़गई क्योंकि मासिकधर्म के समय अनियम आहार विहार से तथा मासिकधर्म के समय अथवा बाद को अधिक विषय से गर्भाशय के मुंहपर चोट लगने से इस प्रकार की सूजन आजाया करती है क्योंकि बहुत से अज्ञानी मूर्ख पुरुष मासिकधर्म के दिनों में भी प्रसंग करते हैं। मासिकधर्म के दिनों में गर्भाशय बहुत कोमल रहता है और कुछ निर्बल होजाता है और गर्भाशय के मुह की नसों के मुंह खुले रहते हैं उस समय प्रसंग होने से तनिक भी ज़ोर पड़ने से मुहपर छाले और सूजन होजाती है परन्तु उसे मासिकधर्म हुआ ही नहीं था इसलिये मुझे सन्देह हुआ और अधिक विचार करना पड़ा मैंने उसकी माता से पूंछा कि इसका विवाह किस अवस्था में हुआ था और गौना कब हुआ तब उसने बतलाया कि ११ वर्ष की अवस्था में विवाह हुआ गौना भी साथ ही होगया था फिर दो वर्ष बराबर पति के ही यहां रही, बाद को दो चार दिन को मेरे पास आगई। इसके इस बात के कहने से मेरी समझ में आया कि बाल्यावस्था में ही प्रसंग होजाने से इसके गर्भाशय में चोट लगने से अर्थात् ज़ोर पड़ने से गर्भाशय में इतनी अधिक सूजन आगई कि मुंह बिलकुल बन्द होगया। इसलिये मासिकधर्म नहीं हुआ यही कारण निश्चय कर मैंने इलाज शुरू किया और उस लड़की की सास को बुलाकर मैंने वायदा किया कि छै महीने में मैं इस लड़की को आराम करदूंगी, यह मासिक धर्म से होने लगैगी यदि आपके लड़के में कुछ ख़राबी न हुई तो अवश्य सन्तान होगी। इस प्रकार मैंने उसे समझाया, दूसरा विवाह करने से रोक दिया और उस लड़की का इलाज किया, दो महीने में वह लड़की आरोग्य होगई मासिकधर्म होने लगा तब वह अपने पति के यहां गई और कुछ दिन बाद गर्भ रहा, समय पर पुत्र उत्पन्न हुआ।

पाठको अब आप समझ गये होंगे कि मासिकधर्म ने ही उसकी ज़िन्दगी सुधार दी वरन् जब उसका पति दूसरा विवाह कर लेता तब उसे कितना कष्ट और दु:ख भोगना पड़ता।

मासिकधर्म और सौन्दर्य।

मासिकधर्म ठीक समय पर होने और उसके नियमों का पालन करने से स्त्रियों की आरोग्यता में कोई ख़राबी नहीं आती, आयु भी अधिक होती है, बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। शरीर की सुन्दरता बढ़ती है, चेहरे की कान्ति और तेज कभी नहीं घटता। चेहरा सुन्दर शरीर सुडौल रहता है, शरीर में फुर्ती बनी रहती है। युवावस्था बीत जाने पर भी वह स्त्री युवा ही बनी रहती है रूप और यौवन अधिक समय तक स्थिर रहता है, मासिकधर्म होने से ही स्त्री समझी जाती है, मासिकधर्म होने से ही उसकी बुद्धि और शरीर की उन्नति होती है, मासिकधर्म होने पर ही स्त्रियां सन्तानवाली होने योग्य समझी जाती हैं।

इसलिये सब स्त्री पुरुषों को इसका ध्यान रखना चाहिये कि मासिक धर्म ठीक समय पर नियम-पूर्वक हो; स्त्रियों की चिकित्सा बड़ी कठिन है, पुरुष चिकित्सक उसे समझ ही नहीं सकते इसलिये किसी अनुभवी स्त्री ही से स्त्रीरोगों की परीक्षा करानी उचित है परन्तु हमारे देश में स्त्री-वैद्याओं का अभाव है इसी कारण स्त्रियों की रोगी संख्या भी बहुत अधिक है। इस पुस्तक से आशा होती है कि इसे पढ़ सुनकर हमारे देश की अनेक स्त्रियां इस विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगी।

मासिकधर्म के विषय में विवाह योग्य बड़ी लड़कियों को भी सावधान रहना चाहिये क्योंकि प्रथमवार के मासिकधर्म से ही साव-धानी करने से आरोग्यता रहती है। यदि प्रथमवार के मासिकधर्म में पथ्य होगया तो आगे को बड़ी ख़राबियां उत्पन्न होजाती हैं और कठिनाई से दूर होती हैं।

रजोदर्शन का प्रथम समय।

बहुत सी स्त्रियों का मासिकधर्म आरम्भ से ही बिगड़ जाता है और अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं, मूर्ख चिकित्सक जब उनका इलाज करते हैं बिना समझे इलाज करने से कुछ फ़ायदा नहीं होता तब वे

कहदेते हैं कि इसकी माता के कुछ दोष से इसे यह रोग हुआ है इसलिये आराम न होगा। मेरे पास प्रतिदिन अनेक स्त्रियां ऐसी आया करती हैं कि जिनका मासिकधर्म आरम्भ से ही खराब है प्रथम मासिकधर्म के समय कुछ सावधानी नहीं कीगई क्योंकि लडकियां जब प्रथमवार मासिकधर्म से होती हैं तब वे लज्जावश किसी घर की स्त्री से कहतीं नहीं और परहेज भी नहीं करतीं।

बहुतों को यह बात मालूम ही नहीं है कि मासिकधर्म क्या है इसलिये लज्जावश छिपा लेती हैं इसी कारण आगे चलकर मासिक धर्म्म बिगड़ जाता है। आजकल की नई रोशनी की स्त्रियां तो मासिकधर्म्म में किसी प्रकार का परहेज़ नहीं करतीं। मैं देखती हूं मेरे यहां जो नई रोशनीवाली अंग्रेजी ढंग की स्त्रियां आती हैं वे जब मासिकधर्म से होती हैं तब भी वे उसी प्रकार खान पान और बैठने उठने तथा घूमने का कुछ भी परहेज़ नहीं रखतीं, जब मैं उनसे कुछ कहती हूं तब वे उलटा मुझे ही उपदेश देती हैं कि परहेज किस बात का, क्या मासिकधर्म होना कोई बडी बीमारी है जिसके लिये परहेज़ किया जावै, हवा खाने न जावैं। आजकल स्त्रियों की यह दशा है तभी तो रोगों से दुर्दशा है। सब स्त्रियों को प्रथमवार के मासिकधर्म होने से ही मासिकधर्म के दिनों में पथ्य से रहना चाहिये।

प्रथमबार रजोदर्शन का कष्ट।

जब स्त्रियों का प्रथमवार मासिकधर्म होता है तब ज्वर की सी हरारत मालूम होती है, कमर में पीड़ा, पेंडू में शूल होना, गुप्तस्थान में कुछ सूजन उत्पन्न होती है, गुप्तस्थान में कुछ भारीपन भी मालूम होता है और बच्चेदानी में कुछ कुछ पीडा होने लगती है, स्तनों में भारीपन मालूम होता है और स्तनों का अग्रभाग कुछ सूजा सा प्रतीत होता है। शिर में भी कुछ कुछ पीड़ा मालूम होने लगती है। किसी किसी स्त्री के मासिकधर्म के प्रथम समय में तीव्र ज्वर और बेहोशी तक होजाया करती है, किसी किसी को इससे भी अधिक कष्ट होता है।

इस प्रकार इन लक्षणों के प्रकट होने के दूसरे तीसरे अथवा प्रथम दिन से ही योनि से मास के धोवन की समान लाली लिये पानी सा निकलने लगता है फिर धीरे धीरे शुद्ध रज आने लगता है।

प्रथमबार मासिकधर्म प्रायः ८—६ दिन तक रहता है, किसी किसी को ३ या ६ दिन तक रहता है, किसी किसी को महीने तक धीरे धीरे ऋतु सफेद रंग का निकलता रहता है उसके बाद लाल रंग का मासिकधर्म आरम्भ होता है। पहिले पहिल मासिकधर्म अनियमित समय पर भी होता है कभी दो महीने कभी ढाई तीन महीने में होता है। कभी अधिक कभी कम, कभी पीड़ा देकर कभी अधिक पीड़ा कभी कुछ भी पीड़ा नहीं होती। जब प्रथम बार मासिक-धर्म होने को होता है तब स्त्री के शरीर में उत्साह सा मालूम होता है, शरीर में जोश सा आजाता है, बच्चेदानी का मुंह लाल होजाता है, किसी किसी स्त्री को उबकाई भी आने लगती है।

ऋतु के आरम्भ के समय शरीर में सुस्ती आजाती है, प्रथमबार के मासिकधर्म में बहुत सावधानी की ज़रूरत है, शीतल, ठंढे, बादी पदार्थ खाने से, अधिक परिश्रम करने से, आहार विहार का नियम ठीक न रखने से गर्भाशय दूषित होजाता है, ऋतु का रक्त सूख कर नसों में जम जाता है बच्चेदानी में सूजन आजाती है, टेढ़ी होजाती है, सूखजाती है तथा और भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं और गर्भ रहने में भी बाधा होजाती है।

विवाह योग्य बड़ी लड़कियो और नवीन विवाहिता बहुओं को सूचना।

मासिकधर्म होने की अवस्था होजाने पर जब किसी लड़की या बहुओं को ऊपर लिखे लक्षण मालूम हों तो उन्हें समझ लेना चाहिये कि अब मासिकधर्म आरम्भ होगा, लक्षण मालूम होते ही सावधानी से रहना चाहिये।

ठंढक से हर समय बची रहना चाहिये, मासिकधर्म के दिनों में ठंढक लगजाने से बच्चेदानी में अनेक रोग होजाते हैं मासिकधर्म के दिनों में ठंढक लगना बड़ा ही हानिकारक है स्त्रियों के स्वास्थ्य का विशेषकर मासिकधर्म के दिनों में कुछ भी विचार न करने से जितनी हानि पहुंच रही है वह अन्य प्रकार के किसी कारण से नहीं पहुंचती।

ऋतु के दिनों में चित्त को हर प्रकार के शान्त रखना चाहिये और प्रसन्नचित्त रहना चाहिये, क्रोध करना, लड़ाई झगड़ा, ईर्षा द्वेष,

चित्त में किसी प्रकार का भय रखना, शोक करना, अधिक परिश्रम करना, बासी अन्न खाना, कुसमय खाना, अधिक जागना, अधिक खाना शीत में रहना यह सब मासिकधर्म का रक्त बन्द होजाने के विशेष कारण हैं इन कारणों को ऋतु के दिनों में छोड़ देना चाहिये।

सब बहिनें और पुत्रियां तथा बहुयें विचार करें कि उन्होंने मासिकधर्म के दिनों में इस बात का विचार किया है कभी नहीं, उनको यह बात मालूम ही नहीं है न उनके घरवाली बड़ी बूढ़ी स्त्रियों को ही मालूम है, यही कारण है कि आरम्भ से ही मासिकधर्म बिगड़ने लगता है और कुछ दिनों में उसमें अनेक प्रकार की शिकायतें उत्पन्न होजाती हैं, सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां रोगी पाई जाती हैं।

प्रथमबार अधिक कष्ट होने के कारण किसी लड़की व बहुओं को घबड़ाना नहीं चाहिये, ऊपर लिखे नियमों पर चलना चाहिये।

प्रथमबार मासिकधर्म होने के दिनों में यदि किसी प्रकार दूसरा रोग होजावे तो वह बड़ी कठिनाई से दूर होता है इसलिये इस बात का भी विचार रखना चाहिये कि कोई दूसरा रोग न होने पावे इसीलिये अधिक परहेज़ से रहने की ज़रूरत है। प्रथमबार ही नहीं वरन् जीवन-पर्यन्त जबतक मासिकधर्म होता रहै पथ्य से रहने की ज़रूरत है।

स्वच्छता (सफ़ाई) का विशेष ध्यान रखना चाहिये, ऋतु का वस्त्र कईबार दिन में और रात में बदलना चाहिये, शान्तचित्त रहना चाहिये गन्दे उपन्यास किस्सा कहानी कदापि नहीं पढ़ने चाहिये।

ऋतु का कपड़ा देरी तक रहने से उसमें दुर्गन्धि आने लगती है वह दुर्गन्धि गर्भाशय को विशेष हानिकारक है तथा और भी अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करती है। इसका विचार प्रथमबार और सदैव ऋतु के दिनों में रहना चाहिये ठंढा पानी, ठंढी हवा, ठंढी जगह में बैठना, लेटना, ठंढे पदार्थों का सेवन करना यह सब ऋतुवती स्त्री को विशेष हानिकारक हैं। इससे गर्भाशय में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

रजस्वला स्त्री के लिये ऋषियों की आज्ञा।

ऋतुवती स्त्री के लिये धर्मशास्त्र और वैद्यकशास्त्र में ऋषियों ने नियम बनादिये हैं उन नियमों पर चलने से स्त्री को कभी मासिक-धर्म सम्बन्धी रोग नहीं उत्पन्न होते। ऋतुवती स्त्री को शास्त्रकारों

(हमारे पूर्वजों) ने बहुत अपवित्र माना है इसलिये उसे एकान्त में रहना और ब्रह्मचर्य से रहकर गृहस्थी के समस्त कार्यों से अलग रहने की आज्ञा दी है, ओढ़ने बिछाने के कपड़े और खाने पीने के वर्तन सब घर के पदार्थों से अलग रखने चाहिये।

धर्मशास्त्र में ऋषियों ने रजस्वला स्त्री को बहुत अपवित्र माना है इसीलिये कि वह घर के सब कामकाजों से अलग रहै यदि अपवित्र न कहते तो वह पथ्य से न रहतीं इस कारण अनेक प्रकार के रोग गर्भाशय में उत्पन्न होकर सन्तानहीन होजातीं, इसमें प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं इतना ऋषियों के लिखने पर भी लोग कुछ विचार नहीं करते स्त्रियों को पथ्य से नहीं रखते तभी तो नाना प्रकार के रोग घेरे रहते हैं स्त्री पुरुष और सन्तान सभी रोगी रहते हैं।

यदि ऋषियों के बतलाए हुए नियमों पर स्त्रियां चलने लगें तो उन्हें मासिकधर्म तथा गर्भाशय सम्बन्धी कभी कोई रोग न हो इसका मुझे पूरा अनुभव है क्योंकि जो स्त्रियां मासिकधर्म और गर्भाशय सम्बन्धी अनेक रोगों में वर्षों से ग्रसित थीं जब वे मेरे पास इलाज के लिये आईं मैंने उनकी चिकित्सा करके सब शिकायतें दूर करदीं और उन्हें नियम तथा पथ्य से रहने के लिये समझा दिया, वे पथ्य तथा नियम से रहने लगी हैं तबसे उन्हें कोई शिकायत नहीं हुई, पन्द्रह सोलह वर्ष का समय जिनकी चिकित्सा किये व्यतीत होचुका अभीतक उन्हें कोई शिकायत इस प्रकार की नहीं हुई; प्राय: वर्ष दो वर्ष में उनको मुझसे मिलने का अवसर आता रहता है।

जिनके मासिकधर्म की खराबी व गर्भाशय दोष के कारण सन्तान नहीं होती थी उनके बराबर सन्तान भी होरही है इसलिये मैं सब स्त्रियों तथा बड़ी लड़कियों और बहुओं को सलाह देती हूं कि वे मासिकधर्म के दिनों में सदैव नियमपूर्वक रहैं और जिन्हें किसी प्रकार की कोई खराबी हो वे मेरे पास आकर अपनी शिकायतों को दूर कराकर नियमपूर्वक रहैं फिर उन्हें कभी कोई इस प्रकार का रोग न होगा।

वैद्यकशास्त्र के नियम।

१—ऋतुवती स्त्री को स्वच्छ रहना और पवित्र विचार रखना उसकी और उसकी सन्तान तथा पति की आरोग्यता के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

२—रंगीन वस्त्र और आभूषण नहीं पहिनना चाहिये, शृंगार नहीं करना चाहिये।

३—चटाई बिछाकर पृथ्वी पर सोना चाहिये।

४—हलके और पुष्टकारक पदार्थों का सेवन करना चाहिये।

५—मिट्टी के वर्तनों में अथवा पत्तलों में भोजन करना चाहिये।

६—दिन में कदापि नहीं सोना चाहिये।

७—जितने दिन ऋतु का रक्त जारी रहे पति के पास नहीं जाना चाहिये।

८—आंख में अंजन लगाना, पान खाना, शिर में तैल डालना हानिकारक है।

९—हंसना, रोना, चिल्लाना, दौड़ कर चलना, सवारी पर चढ़ना, स्नान करना हानिकारक है।

१०—उबटन लगाना, चन्दन लगाना, शरीर में तैल की मालिश करना मना है।

११—नाखून नहीं काटना, गृहस्थी का कोई भी कार्य नहीं करना, दौड़कर नहीं चलना, भारी बोझा नहीं उठाना चाहिये।

१२—भय के स्थान में नहीं रहना, जहां बहुत हल्ला कोलाहल (शोर गुल) होता हो ऐसे स्थान में नहीं रहना चाहिये।

१३—शिर में तैल नहीं डालना, शिर नहीं बंधाना, जहां अधिक हवा चलती हो वहां नहीं बैठना चाहिये।

१४—किस्सा कहानी गन्दे उपन्यास पढ़ना अथवा स्त्रियों या पुरुषों के साथ वार्तालाप, हंसी दिल्लगी करना बड़ा हानिकारक है।

१५—ब्रह्मचर्य से रहकर ऋतु के दिनों को बहुत सादगी और अच्छे विचार से व्यतीत करें। फिर चौथे दिन स्नान कर सब प्रकार से पवित्र होकर स्वच्छ वस्त्र धारणकर शरीर में सुगन्धि लगाकर पान खाकर शृंगार करके पति के पास गर्भाधानक्रिया के लिये सन्तान की इच्छा से जावे।

ऋतु समय में इन आरोग्यता के नियमों को पालन न करने से स्त्रियां नाना प्रकार के रोगों में ग्रसित देखी जाती हैं और उनकी

सन्तान भी अनेक प्रकार के दोषों से रोगी होती है क्योंकि ऋतु के दिनों का प्रभाव गर्भाशय पर पड़ता है इसी कारण गर्भ के बालक पर भी वही प्रभाव पड़ता है ।

ऋतुमती स्त्री के स्वभाव और खान पान का गर्भ पर प्रभाव ।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि ऊपर लिखे नियमों पर न चलने से ऋतुमती स्त्री के गर्भाशय पर नीचे लिखे दोष उत्पन्न होकर सन्तान को हानि पहुंचती है ।

१—जो ऋतुमती स्त्री दिन में सोती है उसके गर्भ से आलसी बहुत सोनेवाला बालक उत्पन्न होता है वह आयु पर्यन्त आलसी रहता है ।

२—ऋतुमती स्त्री के रोने से सन्तान की आंखों पर उसका प्रभाव पड़ता है उसके गर्भ में जो बालक हो वह आंखों के रोगवाला होता है ।

३—ऋतुमती स्त्री के काजल लगाने पर बालक अन्धा धुन्धा इत्यादि आंखों के रोगवाला होता है ।

४—स्नान करने से शरीर में तैल की मालिश अथवा उबटन लगाने से बालक रोगी चर्मरोग (दाद, खाज, कोढ़ इत्यादि रोग) वाला होता है और सदैव दुःखी चित्त वाला होता है ।

५—वायु का अधिक सेवन (हवा में घूमता रहना), सोना इत्यादि अनियमों से बालक निर्बल दुर्बल होता है ।

६—नाखून काटने से खराब नख वाला बालक होता है ।

७—शिर के बाल बंधाने से, शिर में तैल लगाने से बालक गंजा तथा अन्य प्रकार के बालों के रोगोंवाला होता है ।

८—अधिक कोलाहल हल्ला (शोर गुल) सुनने से बालक बहिरा, गूंगा इत्यादि रोगोंवाला होता है ।

९—बहुत बकवाद, हंसी ठट्ठा करनेवाली स्त्री की सन्तान मूर्ख, अधिक बकवाद करनेवाली होती है ।

१०—बहुत हंसी दिल्लगी करनेवाली स्त्री की सन्तान दांत, होंठ, तलुवा और जिह्वा के रोगोंवाली होती है ।

११ – दौड़कर चलनेवाली की सन्तान बड़ी चंचल होती है।

इसलिये इन बातों का सब स्त्रियों को ध्यान रखना चाहिये एक तो स्त्री ऋतु के दिनों में नियम से नहीं रहतीं दूसरी बात यह कि पुरुषों में गर्मी, सुज़ाक, प्रमेह, शिथिलता, शीघ्रपात, स्वप्नदोष इत्यादि वीर्य सम्बन्धी अनेक प्रकार के रोग मौजूद हैं फिर भला सन्तान रोगी क्यों न हो।

ज़रूरी बात।

यह विषय बड़ा ही ज़रूरी है क्योंकि आदिबन्ध्या स्त्री को छोड़ कर शेष सब स्त्रियां ऋतुमती होती हैं और होंगी इसलिये इस विषय का जानना सबसे ज़रूरी है। सब बड़ी लड़कियों को ऊपर लिखी बातें सदैव ध्यान में रखना चाहिये क्योंकि जो अभीतक ऋतुमती नहीं हुई हैं वे शीघ्रही ऋतुधर्म से होंगी।

जो स्त्रियां और बड़ी लड़कियां ऊपर लिखे नियमों का पालन करेंगी उनको कभी कोई गुप्तरोग न होगा और वे कभी सन्तान के रोगों से दुःखी न होंगी। जो बड़ी लड़कियां इसका ध्यान रक्खेंगी वे हृष्ट पुष्ट और निरोग सुन्दर सन्तान उत्पन्न करेंगी और उनके पति भी निरोग रहेंगे।

ऋतु के दिनों का पति पर प्रभाव

जो स्त्री ऋतु के दिनों में पति के पास जाती है मूर्खतावश यदि गर्भाधान क्रिया करै तो प्रथम दिन करने से पति की आयु कम होती है आयु कम होने का तात्पर्य यह है कि पति को अनेक प्रकार के रोग होजाते हैं वीर्य दूषित होजाता है वीर्य ही पुरुष के शरीर में मुख्य पदार्थ है यदि वीर्य ठीक न हुआ तो उस पुरुष को एक न एक रोग घेरे ही रहता है रोगी पुरुष की आयु कम होती ही है।

यदि प्रथम दिन के प्रसंग से गर्भ रहजावै तो कुछ दिनों में गर्भ गिर जाता है अथवा बालक उत्पन्न होते ही मरजाता है। दूसरे तीसरे दिन प्रसंग करने से यदि गर्भ रहा तो अंग भंग होता है और यदि बालक ठीक हुआ भी तो दस ही बीस दिन में मरजाता है। और पति भी रोगी होजाता है उस समय मूर्खतावश मालूम नहीं होता परन्तु कुछ दिनो में उस पुरुप को कुछ न कुछ रोग अवश्य आघेरते हैं।

धर्मशास्त्र व वैद्यकशास्त्र का तात्पर्य

वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्र दोनों का यही तात्पर्य है कि ऋतु के दिनों में स्त्री एकान्त में रहै, पति से न बोलै, घर के कामकाज न करे यदि इस प्रकार न रहैगी तो पति के पास बैठने, वर्तालाप करने से कदाचित् विषय की इच्छा हो पति पत्नी के एक पास रहने बैठने से हंसी दिल्लगी की बातैं अवश्य होगी और इन्द्रियां चंचल होंगी तो पति पत्नी और सन्तान सबको हानि पहुंचैगी इस कारण अलग रहना चाहिये।

आजकल स्त्रियों ने इस नियम को छोड़ दिया है कोई भी इस पर ध्यान नहीं देतीं इसी कारण पुरुषों की आयु कम होती है सदैव रोगी रहते हैं और सन्तान भी रोगी निर्बल और दुर्बल रहती है तथा कम आयु में ही बालक मर जाते हैं।

इसीलिये शास्त्रों में ऋषियों ने आज्ञा दी है कि:—

चतुर्थादि दिवसेऽपि रजोनिवृत्तौ स्त्री पत्या।
सगच्छेत् न तु रजोऽनुवृत्तौ॥

इसका अर्थ यह है कि चौथे दिन अथवा जितने दिन में रज का रक्त बन्द हो तब स्त्री पति के पास सन्तान की इच्छा से जावै और गर्भाधान क्रिया करे। जबतक रज का रक्त जारी रहै तबतक ब्रह्मचर्य से रहै।

ऋतु के दिनों में प्रसंग करने से पति को अन्य प्रकार के वीर्य-विकार होने के अतिरिक्त नपुंसकता का रोग भी होजाता है और स्त्री का गर्भाशय खराब होजाता है। यह दोनों बातैं प्रत्यक्ष देखने में आरही हैं।

जितने पुरुष-रोगियों के पत्र प्रतिदिन आया करते हैं उन सभी पत्रों में अनियमित आहार विहार से उत्पन्न हुए अनेक रोग और शीघ्र-पात, सुस्ती का रोग सब पुरुषों के पत्रों में, रहता है इसी प्रकार स्त्रियों के गर्भाशय दोष भी अधिक स्त्रियों में पाये जाते हैं।

विवाहयोग्य बड़ी लड़कियो सावधान

जिन लड़कियों का विवाह शीघ्रही होनेवाला है उन्हें तथा जिनका विवाह होचुका है उन सब को इन ऊपर लिखी वैद्यकशास्त्र तथा धर्मशास्त्र की शिक्षाओं पर चलना चाहिये क्योंकि उनकी जीवन, लीला सुखपूर्वक हृष्ट पुष्ट रहकर व्यतीत होने का यह एक प्रधान उपाय है और पति तथा सन्तान की आरोग्यता और दीर्घजीवन का मुख्य साधन है।

हमारे देश की स्त्रियों ने जबसे मासिकधर्म को एक साधारण बात मानकर अनियम से चलने लगीं, इन अमूल्य दिनों का निरादर करने लगीं, मासिकधर्म के महत्व का निरादर करने लगीं तबसे उनका भी निरादर होने लगा, अधिक स्त्रियां सन्तानहीन होने लगीं और इसी कारण सन्तान निर्बल दुर्बल और कम आयुवाली, रोगी होने लगी। मासिकधर्म के महत्व को भूलकर अपनी, अपने पति की तथा सन्तान की आरोग्यता खोकर रोगों का घर बनगईं।

पुरुषों के रोगों के विषय में इस पुस्तक "रतिशास्त्र" में पहिले ही विस्तार पूर्वक लिखचुकी हूं, पुरुषों के रोगों के उत्पन्न होने के कारण, रोगों की पहिचान और रोग दूर करने की अनेक औषधियां बतला चुकी हूं अब यहां स्त्रियों के रोगों की औषधियां लिखती हूं।

इसबात को तो सब बहिनें समझ ही गई होंगी कि स्त्रियों के जितने रोग हैं वे अनियम आहार विहार से तथा अधिक विषय वासना में लिप्त रहने से वात पित कफ के दूषित होजाने से उत्पन्न होते हैं।

स्त्रियों के अनेक गुप्तरोगों की चिकित्सा

पीछे बतला चुकी हूं कि वात, पित, कफ दूषित होने से ही स्त्रियों के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं उन रोगों से और भी अनेक रोग होजाते हैं। मासिकधर्म की खराबी से किसी किसी स्त्री को मासिकधर्म इतनी अधिकता से जारी होता है कि अधिक रक्तप्रवाह के कारण स्त्री शीघ्रही निर्बल होजाती है यदि उपाय शीघ्र न किया गया तो जीवन कठिन होजाता है ऐसी कितनी ही स्त्रियां मेरे पास आयां

करती हैं कि मासिकधर्म का रक्त अधिक आते रहने से उनके जीवन की आशा छोड़कर लोग इस विचार से मेरे पास रोगी-स्त्रियों को लाया करते हैं कि यदि आराम न हुआ तो प्रयागराज तीर्थस्थान, गंगा तो मरते समय मिलजावैंगी।

खेद है कोई चिकित्सक स्त्रियों के किसी प्रकार के गुप्तरोग की व्यवस्था नहीं करता न रोगों के कारणों को समझता ही है इसी कारण रोग दूर नहीं होते, स्त्रियां रोगों के कष्ट भोगते भोगते कुसमय में ही काल का कलेवा बनजाती हैं।

जितनी स्त्रियां मेरे पास ऐसी आईं कि जिनको मासिकधर्म वर्षों से जारी था, वर्षों से इलाज होरहा था, कभी कम होजाता था कभी बहुत अधिक हो जाता था, उनके जीवन की आशा छोड़कर रोगी स्त्रियों को उनके घरवाले मेरे पास लाये मासिकधर्म की अधिकता का कारण रोगी की परीक्षा करने से मालूम हुआ।

जबतक चिकित्सा करनेवाला यह न समझे कि रक्त कहां से आता है, क्यों आता है तबतक वह इलाज ठीक नहीं कर सकता।

मासिकधर्म का रक्त अधिक जाना

यह कोई पृथक रोग नहीं है यह मासिकधर्म्म की ख़राबी का ही उपद्रव है एक तो रोगी को राग होता है और रोग के उपद्रव अनेक होते हैं इस कारण मुख्य रोग की औषधि करने से ही उपद्रव शान्त होजाते हैं।

मासिकधर्म का रक्त अधिक जाता है तो लोग रक्त बन्द करने की औषधियां अधिक ठंढी दे देकर उसे बन्द करदेते हैं वे रक्त बन्द करने की औषधि देते हैं मासिकधर्म ठीक होने की नहीं, स्त्रियों के गुप्तस्थान से रक्त अधिक आना यह मासिकधर्म की ही ख़राबी से होता है। यदि बहुत शीतल औषधियां देकर रक्त को रोक दिया बस घबड़ाहट जाती रही फिर कुछ परवाह घरवालों को नहीं रहती यदि मासिकधर्म की शिकायतें दूर करदी जावें तो रक्त का अधिक जाना सदैव के लिये दूर होजावै।

इस बात को न तो इलाज करनेवाले ही समझते हैं न रोगी के घरवाले ही समझते हैं रक्त को रोकनेवाली अत्यन्त शीतल

औषधियों से रक्त जमकर और भी अधिक हानि पहुंचती है। अनेक स्त्रियां मेरे पास ऐसी आईं कि जिनको मासिकधर्म का रक्त अधिक जाने के कारण मूर्ख चिकित्सकों ने केला का पानी पिलवा दिया, कतीरा खिलवा दिया इसी प्रकार की अन्य शीतल औषधियों से उन स्त्रियों का रक्त एकदम जमकर रक्त की गांठ पड़गई, घरवालों ने समझा रक्त बन्द होगया वैद्य तथा राजवैद्या जी ने बड़ी अच्छी औषधि दी परन्तु उसका प्रभाव यह हुआ कि मासिकधर्म होना बिलकुल बन्द होकर सन्तान होना ही बन्द होगया। तब सन्तान होने का इलाज होने लगा।

मेरे पास दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष से गर्भ न होनेवाली हज़ारों स्त्रियां आईं। उस रक्त की गांठ के सबब से मासिकधर्म नाम मात्र को होता है परन्तु अज्ञानी स्त्री पुरुष समझते हैं कि मासिकधर्म होता तो है परन्तु सन्तान नहीं होती, अनेकों चिकित्सक और लेडी डाक्टर उसी रक्त की गांठ को गर्भ बतला देते हैं तब तो घरवाले और रोगी स्त्री बड़े प्रसन्न होते हैं कि गर्भ है, चिकित्सक यह भी शंका समाधान करदेते हैं कि कभी कभी ऐसा भी होता है कि मासिकधर्म कुछ कुछ होता भी रहता है और गर्भ भी रहता है इसके लिये कोई हानि नहीं जब वे रोगी स्त्रियां मेरे पास गर्भ की परीक्षा कराने आती हैं तब मालूम होता है, फिर भी जब उनके घरवाले हठ करते हैं कि बीसों दाइयों को दिखलाया, लेडी डाक्टरों को दिखलाया, वैद्य की भी सलाह ली, सब गर्भ बतलाते हैं आप कैसे रक्त की गांठ तशखीस करती हैं जब वे नहीं मानते तब मैं उनसे कहदेती हूं कि आपको गर्भ का ख़्याल है तो नौ दस अथवा ग्यारह बारह महीने देखो गर्भ होगा तो बालक उत्पन्न ही होगा, तब वे चले जाते हैं इस प्रकार से सैकड़ों रोगी स्त्रियां पुनः बारह बारह तेरह तेरह महीने बाद मेरे पास आईं गर्भ नहीं था बालक नहीं हुआ, वह रक्त की गांठ और कुछ बड़ी होगई, जब मैंने इलाज किया दो तीन महीने में वह गांठ जाती रही मासिकधर्म ठीक होकर सन्तान उत्पन्न होने लगी तब लोगों को विश्वास हुआ। अब आप समझ गई होंगी कि स्त्री-चिकित्सा में अज्ञान वैद्य और राजवैद्याओं से स्त्रियों को कितनी हानि और कष्ट भोगना पड़रहा है।

इसीलिये कहना पड़ता है कि स्त्रियों की चिकित्सा करना बड़ा ही कठिन है बिना अनुभव के स्त्रियों की चिकित्सा करना बड़ी भारी

अधर्म की बात है क्योंकि स्त्रीचिकित्सा विषयको हमारे देशके वैद्य जानते ही नहीं बिना जाने इलाज करते हैं, उनकी भूल से लाखों स्त्रियां बन्ध्या होगई हैं और होती जाती हैं अब जबसे स्त्रियों के नाम से कुछ पुरुषों ने नये औषधालय खोले हैं न तो आपही स्त्री-चिकित्सा विषय को कुछ समझते हैं स्त्री भला समझें क्या उनका तो केवल नाम नोटिस व सूचीपत्र में छापदिया है ।

ऐसे स्त्री-औषधालयों से कुछ वर्षों से स्त्रियों को विशेष हानि पहुंच रही है क्योंकि उनके नोटिस में राजवैद्या आदि उपाधि नोटिस व सूचीपत्रों में देखकर लोग धोखे में आजाते हैं और ठगे जाते हैं मेरे पास प्रतिदिन बीसों स्त्रियां ऐसे नोटिसबाज़ों की औषधियों से हानि उठाई हुई आती हैं ।

इसीलिये मुझको इस पुस्तक के बनाने की आवश्यकता हुई कि हमारी सभी बहिनें पुत्रियां व बहुएं अपने अपने रोगों को समझें और धूर्त नोटिसबाज़ों की बातों में आकर ठगी न जावें तथा स्त्री-चिकित्सा में अनजान लोगों की औषधियों से हानि न उठावें ।

अधिक ऋतुस्राव की चिकित्सा विधि

यदि मासिकधर्म का रक्त अधिक दिनों तक जारी रहै तो उसे घबड़ा कर एकदम बन्द करनेवाली मूर्खों की औषधियां सेवन नहीं करनी चाहिये मासिकधर्म ठीक होने का उपाय करना चाहिये ।

कौंच के बीज की गिरी	छोटा गोखरू
सेमल वृक्ष की जड़ (मूसली)	गिलोय का सत
सूखा आंवला	पीपल की लाख
सूखा सिंघाड़ा	सूखा कसेरू

ये सब औषधियां बराबर बराबर मंगाकर कूट पीस कपड़छान कर जितनी सब औषधियां हों उतनी ही मिश्री मिलाकर गाय के दूध के साथ चार चार मासे की पुड़िया सेवन करावें । यदि रक्त अधिक जाता हो, रोगी स्त्री कमज़ोर हो तो दो दो मासे की पुड़िया दिन में तीनबार खिलावे और चावल के धोवन के साथ खिलावे । यदि रोगी स्त्री को बुखार आता हो तो चावल के धोवन के साथ नहीं देनी चाहिये । गाय के दूध के साथ देवे । यह औषधि कुछ क़ब्ज़

उसके लिये घबड़ावै नहीं क्योंकि इस रोग में क़ब्ज़ करनेवाली औषधि फ़ायदा करती है दस्तावर औषधि देने से रक्त अधिक जाने लगैगा।

जिस रोगी स्त्री को ज्वर हो उसको ऊपर लिखी औषधि देनी चाहिये जिसे ज्वर न हो उसके ऋतु के रक्त अधिक जाने की औषधि नीचे लिखी देवे ।

अन्य उपाय ।

रक्तप्रदर और मासिकधर्म का रक्त अधिक आना तथा बवासीर का रक्त अथवा मुंह से रक्त आना, सब प्रकार के रक्त प्रवाह को रोकने वाली औषधि ।

सफेद चन्दन	जटामासी	लोध
खस	कमल की केशर	बेल का गूदा
नागरमोथा	मिश्री	हाऊबेर
पाढ़	कुरैया की छाल	इन्द्रजव
अतीस	धाय के फूल	रसवत
आम की गुठली की गिरी	जामुन की गुठली की गिरी	मोचरस
कमलगट्टा की गिरी	मजीठ	छोटी इलायची
अनार का फूल		

इन सब औषधियों को बराबर बराबर मंगाकर कूट पीस कर तीन तीन मासा की पुड़िया दिन में तीनबार चावल के धोवन के साथ पिलावै तो मासिकधर्म का अधिक रक्त आना बन्द हो ।

आवश्यक सूचना ।

यदि रोगी स्त्री को मासिकधर्म का रक्त अधिक आने के साथ ही ज्वर भी आता हो तो ऊपर वाली पहिली औषधि गाय के दूध के संगवाली देवे और ज्वर न हो तो यह नं० २ वाली देवे यदि जाड़ों के दिन हों तो इस औषधि में शहद डालकर पिलावै मिश्री न डालै यदि गरमी की ऋतु हो तो मिश्री डालकर पिलावे ।

चावल के धोवन की विधि।

रात को एक पाव पानी में एक छटांक पुराना चावल भिगोदेवे प्रात:काल उस चावल को थोड़ा धीरे धीरे मलकर चावल टूटने न पावें इस प्रकार चावल निकाल कर फेंक देवे और उसी पानी को तीनबार करके काम में लावे अर्थात् उसी पानी के तीसरे हिस्से पानी में एक पुड़िया औषधि सिल पर ठंढाई की तरह पीस छानकर आधा तोला मिश्री या शहद ऋतु के अनुसार मिलाकर रोगी को पिलावे। यदि रक्त अधिक जाता हो तो दिन में तीन चार बार दो दो घंटे पर पिलावे और साधारण जाता हो तो दिन में दोबार जिस प्रकार रक्त बन्द होता जावे वैसे ही औषधि की तादाद कम करते जाना चाहिये इसके सेवन से मासिकधर्म की खराबी से अधिक ऋतु का रक्त जाना अवश्य ही बन्द होगा; जल्दी नहीं करनी चाहिये इससे धीरे धीरे बन्द होगा और मासिकधर्म की शिकायतों में भी फायदा होगा।

बवासीर या मुंह से खून आना।

इसी औषधि से बवासीर का खून तथा मुंह से खून आना यह सब बन्द होता है। इसलिये इस औषध को काम में लाना चाहिये अवश्य फायदा होगा यह औषधि मेरी हज़ारों बार परीक्षा की हुई है। अनेक उपाय करके बड़े बड़े डाक्टर और वैद्य हैरान होगये हों तो इसे सेवन कराने से शर्तिया फायदा होता है।

अन्य सरल उपाय।

जिस स्त्री को रक्त अधिक जाता हो उसे कच्चा गूलर उबाल कर उसमें मिश्री मिलाकर दिन में कईबार खिलाना तथा गूलर की तरकारी, गूलर उबालकर थोड़ा सेंधा नमक डालकर रोटी के साथ अथवा केवल तरकारी खिलाना। पका केला और कच्चे केले की तरकारी खिलाना चाहिये।

अन्य विधि।

अनार की कली १ तोला	छोटी इलायची १ तोला
वंसलोचन १ तोला	सूखे गूलर २॥ तोला

शीतलचीनी १ तोला लोध १॥ तोला
ढाक का गोंद १॥ तोला शिलाजीत १ तोला
· गिलोय का सत २ तोला

इन सब औषधियों को कूट कपड़छान कर चावल के धावन के साथ तीन मासा की पुड़िया सेवन करे तो रक्तप्रदर सफेद प्रदर अवश्य दूर हों ।

अन्य उपाय विस्तार-पूर्वक इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखे जावेंगे । इस पुस्तक में आरम्भ में ही पुरुषरोगों के विषय में विस्तार-पूर्वक बहुत अधिक लिखा गया है इस कारण पुस्तक बहुत बड़ी होगई है "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में केवल स्त्रियों के रोगों के विषय में चिकित्सा सहित विस्तार से लिखा जावेगा ।

स्त्रियों को खुशख़बरी ।

इस पुस्तक के देखने और सुनने से ही सब बहिनों को इस बात का पता लगेगा कि "देवी अनुभव प्रकाश" का दूसरा भाग कितना अधिक उपयोगी होगा । दूसरा भाग भी इतना ही बड़ा होगा इसका मूल्य भी ७॥≡) सात रुपया ग्यारह आना ही होगा परन्तु जो प्रथम भाग के ५॥≡) में ग्राहक बनेंगे उनको दूसरा भाग भी ५॥≡) पांच रुपया ग्यारह आने में ही दिया जावेगा ।

इसलिये जिन स्त्रियों को वैद्यकशास्त्र की अनेक उपयोगी बातें और देशी स्त्रीचिकित्सा विधि में निपुण बनना हो, धन और यश की प्राप्ति की इच्छा हो वे इस पुस्तक के दोनों भाग मंगाकर स्त्रियों की चिकित्सा में ज्ञान प्राप्त कर यश और धन की प्राप्ति करें व स्त्रीजाति का उपकार कर यश की भागी बनें ।

वैद्यकशास्त्र की महिमा ।

प्यारी बहिनो ! आप कोई वैद्यकशास्त्र की महिमा को नहीं जानतीं आपको इसका महत्व मालूम नहीं है यह धन, यश और पुण्य तीनों का अच्छा साधन है ।

जबसे मैंने इस कार्य को आरम्भ किया है तबसे परमात्मा की कृपा से किसी बात की कमी नहीं है । बीसों रुपये रोज़ाना की औषधियां मुफ़्त बांटने पर भी कमी नहीं रहती ।

बड़ी बड़ी धनी मानी रानी महारानी और सर्व साधारण प्रतिदिन पचासों स्त्रियां प्रातःकाल छै बजे से दस बजे रात तक मिलती रहती हैं जिनसे मिलने की कभी आशा न थी।

दूर दूर नगरों से अनेक सज्जन-स्त्रियां सैकड़ों रुपया ख़र्च करके मिलने आती हैं। मैं सबको अपनी आत्मीय बहिन पुत्री व माता समझकर उचित व्यवहार करती हूं किसी प्रकार की दूकानदारी का व्यवहार नहीं रखती इस कारण जो बहिनें एकबार मुझसे मिलचुकी हैं वे मुझे कभी नहीं भूलतीं।

बड़ी बड़ी विदुषी धनी मानी स्त्रियां और रानियां मेरे यहां प्रतिदिन आया करती हैं, मेरे व्यवहार से वे भी मुझे अपनी बहिन पुत्री और माता की समान स्नेह रखती हैं, जब मैं कभी किसी उत्सव पर उन्हें पत्र लिखकर आने की प्रार्थना करके कष्ट देती हूं तब वे मुझपर अवश्य कृपा करती हैं और मेरे यहां पधार कर मुझे उत्साहित करती हैं।

प्यारी बहिनो व पुत्रियो! यह सब वैद्यकशास्त्र की महिमा है यदि मैं इस विषय को न जानती होती तो रानी महारानियां क्या आप कोई भी मुझे न जानतीं, न मैं आपका कुछ उपकार ही कर सकती थी इसलिये:—

मैं सब बहिनों से प्रार्थना करती हूं

स्त्रीमात्र को वैद्यक विषय जानना चाहिये सब बहिनें मेरी समान बनजावें यही ईश्वर से मेरी विनय है जबतक घर घर स्त्रियां स्त्री-चिकित्सा विषय को न जानेंगी तबतक स्त्रीजाति का कल्याण नहीं होगा। रोगों से छुटकारा नहीं होगा, जीवन का सुख नहीं क्योंकि तबतक उनके पति और बालक भी आरोग्य नहीं रह सकते।

इस पुस्तक में कई जगह मैंने अपने विषय में कुछ लिखा है इससे कुछ लोग यह अवश्य कहेंगे कि यह कैसी मूर्ख है अपनी प्रशंसा अपनी लेखनी से कर रही है उन सज्जनों से मेरी प्रार्थना यह है कि हमारे देश की स्त्रियों में इतनी बुद्धि अभी नहीं है कि वे सरलता से ही किसी कार्य को समझें और सीखें, उनका उत्साह स्त्री-चिकित्सा विषय में बढ़ाने के लिये अपना परिचय और अपनी देशी औषधियों के गुणों का परिचय बिना दिये उनकी समझ में नहीं आवेगा। इसी अभिप्राय से कहीं कहीं मैंने उनका उत्साह बढ़ाने के लिये कुछ लिखा है आशा है पाठक क्षमा करेंगे।

सब बहिनों को चाहिये कि इस पुस्तक के दोनों भाग मंगाकर आदि से अन्ततक पढ़कर समझें और अपने घर की तथा मुहल्ले की पढ़ी अनपढ़ सब स्त्रियो, बहुओं और माताओं को पढ़ावें तथा सुनावें जो बात समझ में न आवे मुझसे पूछलें पत्र द्वारा या यहां आकर समझलें।

दूसरे भाग से कठिन विषय भी सरलता से ही समझ में आजावेगा जो बहिनें स्त्री-चिकित्सा में मुझसे कुछ सीखना चाहें वे यहां आकर सीख सकती हैं अब मैं वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि से स्त्रियों के गुप्तरोगों की चिकित्सा लिखती हूं।

ज़रूरी बात।

जिन बहिनों को "देवी अनुभव प्रकाश" दूसरे भाग की ग्राहिका बनना हो वे अभी से पत्र लिखकर ग्राहिका बनजावें क्योंकि दूसरा भाग भी शीघ्रही प्रकाशित होगा। इस प्रथम भाग में पुरुषों के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है इस कारण स्त्रियों की चिकित्सा के विषय में बहुत कम लिखा जासका। दूसरा भाग केवल स्त्रियों के ही लिये तैयार होगा, दूसरे भाग में स्त्रियोपयोगी सभी विषय रहैंगे, दूसरे भाग को पढ़ सुनकर स्त्रियां स्त्रीचिकित्सा में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करैंगी।

गुप्तरोग चिकित्सा।

वैद्यक तथा वैज्ञानिक विधि चित्र नं० ३५

यह जो ऊपर चित्र दिया गया है यह देशी औषधियों की भाफ से उन रोगों का दूर करने का है जिनको डाक्टर आपरेशन करके दूर

करना चाहते हैं परन्तु कभी कभी बच्चेदानी में आपरेशन से अधिक खराबी आते देखी गई है।

महीने में पचासों स्त्रियां मेरे पास ऐसी आया करती हैं कि जो आपरेशन होने से सदैव के लिये बन्ध्या होगई हैं उनका इलाज सन्तान होने का हो ही नहीं सकता क्योंकि आपरेशन होने से बच्चेदानी के मुंह में कभी कभी ऐसी खराबी आजाती है कि फिर वह ठीक हो ही नहीं सकता। जिनकी बच्चेदानी का आपरेशन होचुका है फिर भी उनकी शिकायतें दूर नहीं हुईं वे भी एकबार मुझे दिखलावें यदि आपरेशन से ऐसी कोई शिकायत नहीं हुई है कि आराम न होसके तो ठीक होसकती है।

इसलिये जिनकी बच्चेदानी में किसी प्रकार की शिकायत कोई दाई अथवा लेडी डाक्टर बतलावें उन स्त्रियों को एकबार मेरे पास आना चाहिये मैं उनकी वह शिकायतें अवश्य दूर करदूंगी। इस चिकित्सा के विषय में इस पुस्तक में कुछ थोड़ा सा लिखती हूं इसके दूसरे भाग में विस्तार पूर्वक लिखूंगी क्योंकि पुस्तक बहुत बड़ी होगई है।

गर्भाशय की सूजन।
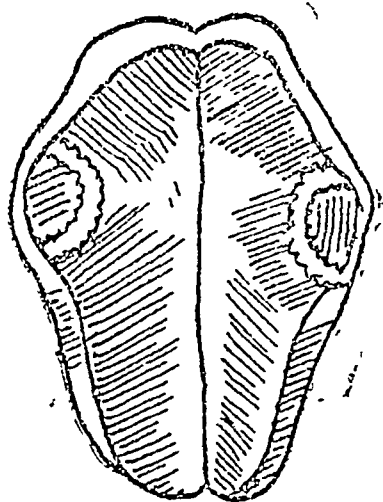
गर्भाशय की सूजन की परीक्षा दो प्रकार से होती है एक तो हाथ की उँगलियों से, हमारे देश की प्राचीन प्रथा तो हाथ से ही देखने की है परन्तु आजकल यन्त्रोंद्वारा भी कीजाती है योनि-विस्तारक यन्त्र योनिमें लगाकर देखने से योनि के भीतरी सब प्रकार के रोग स्पष्ट देखे जाते हैं, हाथ से देखने से भी ठीक समझ में आजाता है, गर्भाशय की गर्दन मोटी और सूजी हुई मालूम होती है, हाथ की उँगली से बच्चेदानी का मुंह बन्द मालूम होता है क्योंकि सूजन के कारण बन्द होजाता है यदि सूजन न हो तो आरोग्य स्त्री के गर्भाशय के मुंह में उँगली देने से मुंह खुला हुआ सा मालूम होता है।
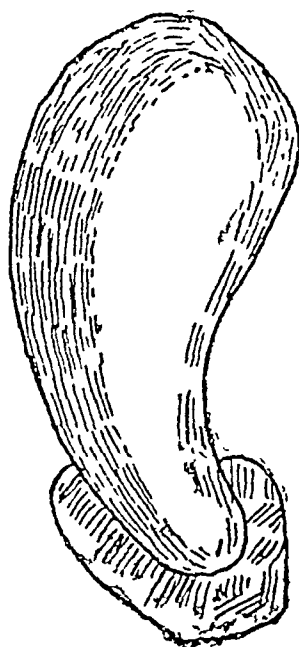
यदि कोई रोग न हो तो मासिकधर्म के बाद पन्द्रह दिन तक जबतक गर्भाधान का समय होता है तबतक स्त्रियों के हाथ की सबसे छोटी उँगली गर्भाशय के मुंह में जासकती है यदि सूजन हुई तो गर्भाशय के मुंह के ओष्ट सूजकर आपस में मिलजाते हैं, गर्भाशय का मुंह रोहू मछली के मुंह की समान होता है । गर्भाशय के दिनों के बाद भी उँगली मुंह में डालने से वह सरलता से निरोग मालूम होजाता है क्योंकि सूजन से ऊपर के चित्र के अनुसार रहता है और सूजन न होने से इस चित्र की समान पतला मालूम होता है ।

गर्भाशय की सूजन के लक्षण ।

जिस स्त्री के गर्भाशय (बच्चेदानी) के मुख पर सूजन होती है उस स्त्री को मासिकधर्म कम होता है और मासिकधर्म के समय कुछ पीड़ा होती है, मासिकधर्म खुलासा नहीं होता । प्रसंग के समय पीड़ा होती है क्योंकि पुरुष की इन्द्री जब गर्भाशय के मुख से भिड़ती है तब दवाव पाकर पीड़ा होती है ।

निरोग गर्भाशय ।

निरोग गर्भाशय में प्रसंग के समय किसी प्रकार का कुछ भी कष्ट नहीं होता । न उसपर दवाव ही पड़ सकता है क्योंकि प्रकृति ने गर्भाशय का मुख इस प्रकार बनाया है कि प्रसंग के समय पुरुप की इन्द्री गर्भाशय के ठीक मुंह में लगजाती है गर्भाशय की गर्दन प्रसंग के समय उतनी ही उठती है कि पुरुप का वीर्य ग्रहण करने के लिये पुरुप की इन्द्री के मुंह से भिड़कर वीर्य को मुंह में लेकर गर्भाशय में पहुंचा देवे इससे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता यदि गर्भाशय में सूजन हुई तो सूजन के कारण गर्भाशय की गर्दन योनि में आगे को बढ़ आती है इसलिये प्रसंग के समय उसपर दवाव पड़ने से पीड़ा

होती है और उंगली को गर्भाशय की गर्दन के चारों ओर फिराने से सूजन मालूम होती है ।

गर्भाशय में सूजनवाली स्त्री के सन्तान नहीं होती यह सूजन दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष तक रहती है कभी कभी यह अपने आपही ठीक भी होजाती है क्योंकि इसके कई कारण हैं यदि अधिक प्रसंग से गर्भाशय के मुखपर सूजन आगई हो और वर्ष छै महीने को किसी कारण से प्रसंग बन्द होजावे और स्त्री के खाने में ऐसे पदार्थ आजावें जो सूजन को दूर करनेवाले हैं तो आपही सूजन कम होजाती है प्रायः देखा जाता है कि किसी किसी स्त्री के दस दस बारह बारह वर्ष तक सन्तान नहीं होती बाद को होने लगती है ।

मेरे पास महीने में सैकड़ों स्त्रियां गर्भाशय की सूजनवाली आया करती हैं । वे वर्षों से दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष से मासिकधर्म ठीक न होने का इलाज कर रही हैं डाक्टर और वैद्यों ने हज़ारों रुपया खालिया है परन्तु फ़ायदा नाममात्र को नहीं होता इसका कारण यह है कि इलाज तो होरहा है मासिकधर्म ठीक होने का और है गर्भाशय की नसों में तथा मुंह पर सूजन; जब दर्वाज़ा ही बन्द है तो मासिकधर्म खुलासा होने की गरम और तीक्ष्ण औषधियां चिकित्सा करनेवाले देते हैं जिससे मासिकधर्म भी साफ़ होता नहीं और औषधियों की गर्मी से रोगी स्त्री के शरीर में और भी अधिक रोग उत्पन्न होजाते हैं ।

तीक्ष्ण औषधियों से मासिकधर्म यदि हो भी तो दर्वाज़ा बन्द है निकले किधर से; गरम औषधियों की भरमार होने से अधिक गर्मी के कारण मासिकधर्म का रक्त सूखजाता है और उस रक्त की गांठ पड़जाती है जिसकेकारण स्त्री को ज्वर, खांसी, पेंडू में पीड़ा, योनि में पीड़ा, भूख का कम होजाना, शिर की पीड़ा इत्यादि अनेक रोग घेर लेते हैं तब उन रोगों का इलाज होने लगता है रक्त की गांठ पड़जाने से किसी किसी को ज्वर हर समय बना रहता है, डाक्टर और वैद्य लोग उसे अधिक दिन का ज्वर समझकर तपेदिक का इलाज करते हैं परन्तु फ़ायदा कुछ न देख घरवाले निराश होजाते हैं ऐसे रोगवाली अनेक स्त्रियां प्रतिदिन मेरे पास आया करती हैं ।

उनके गर्भाशय की परीक्षा करने से पता चलता है तब सूजन का इलाज किया जाता है, सूजन दूर होजाने से मासिकधर्म होने लगता है ।

सूजन की परीक्षा ।

बच्चेदानी के मुंह पर सूजन कई कारणों से उत्पन्न होती है किस कारण से है इसकी परीक्षा करनी बिना अनुभव के नहीं हो सकती । बिना ठीक परीक्षा किये सूजन दूर नहीं होती यही कारण है कि असंख्य स्त्रियां दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष तक की गर्भाशय की सूजनवाली देखी जाती हैं, मेरे पास इलाज केलिये आनेवालियों का तो मुझे देखने से पता चलता है न जाने कितनी स्त्रियां गर्भाशय की सूजन से आयु पर्यन्त दु.खी रहकर जीवनलीला समाप्त कर जाती होंगी । इसको परमात्मा जाने ।

दुःख है स्त्रियों के ऐसे रोगों को दूर करने के लिये हमारे देश के किसी चिकित्सक ने आजतक कोई उपाय नहीं सोचा, सिवाय आपरेशन कराने के और कोई विधि नहीं है। मेरे पास बड़े बड़े वैद्यराज भी अपनी स्त्रियों के गर्भाशय दोष का आपरेशन होनेवाली स्त्रियों को लाये जब मैंने उनको जवाब देदिया कि आप पहिले मेरे पास नहीं लाए आपरेशन होजाने पर इस विधि से फ़ायदा होना कठिन होता है उन्होने कहा कि हमको मालूम नहीं था कि बिना आपरेशन के भी स्त्रियों के इस प्रकार के रोग दूर होसकते हैं।

पाठको ! विचार तो कीजिये कैसी लज्जा की बात है कि हमारे देशी वैद्यो को इस बात का पता तक नहीं है कि किस विधि से स्त्रियों के गुप्तरोग दूर किये जासकते हैं हमारे देशी वैद्यों ने इसपर कुछ विचार ही नहीं किया ।

देशी वैद्यों को खुशख़बरी

सब देशी वैद्यों को मेरे लिखने पर अनुचित न मानना चाहिये वरन् उन्हें प्रसन्न होना चाहिये और इस बात का अभिमान करना चाहिये कि स्त्रियों के गुप्तरोगो को दूर करने का कोई औषधालय अभीतक नहीं था न विद्वान् वैद्यों ने इसका उद्योग ही किया ।

मैंने बाल्यावस्था से ही अपने वैद्य-पिता से वैद्यकशास्त्र की शिक्षा पाई और लगभग १८ वर्ष तक स्वयं लाखों स्त्रियों का इलाज करके अनुभव प्राप्त किया है मैं अबतक भी स्त्रियों के गुप्तरोगो के दूर करने के अनेक उपायों की खोज में रहती हूं इतने दिनों में मैंने जितनी खोज

की और अनुभव प्राप्त किया है वह भी स्त्रियों के रोगों को दूर करने के लिये बहुत है ।

इस बात को सभी विद्वान् वैद्य जानते होंगे कि हमारे वैद्यक ग्रन्थों में अनेक रोगों में स्वेदन विधि का प्रयोग करना ऋषियों ने बतलाया है यह विधि चार प्रकार की है १–ताप २–ऊष्म ३–उपनाह ४–द्रव यह चारों प्रकार से पसीने निकालना वायुरोगों को दूर करने वाले हैं ।

ताप और ऊष्म नामवाली जो विधि हैं वे दोनों कफ के रोगों में काम में लानी चाहिये ।

उपनाह नामक जो विधि है वह वायुरोगों को दूर करने के लिये ऋषियों ने बतलाई है और द्रव नामक जो विधि है वह पित्त, वायु रोगों को दूर करनेवाली है ।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि–

जिस मनुष्य के बादी का रोग है उसके देह से शीतकाल में बहुत पसीने निकालने चाहिये । थोड़ा रोग होय तो देह से थोड़े पसीने निकालने चाहिये मध्यम रोग हो तो मध्यम पसीने निकालने चाहिये ।

परन्तु वैद्य को देशकाल और रोगी के बलाबल का विचार करके इस कार्य को करना चाहिये । मैं देखती हूं कि इस विधि को कोई भी वैद्यराज काम में नहीं लाते। देश भर में कहीं भी यह विधियां काम में नहीं लाई जातीं इसी कारण इस विषय में हमारी देशी चिकित्सा की उन्नति नहीं होती ।

१—बालू आदि रूक्ष पदार्थों की पोटली गरम करके शरीर को गर्मी पहुंचाकर पसीना निकालना इसे ताप कहते हैं ।

२—काढ़े आदि का बफ़ारा देकर पसीना निकालना इसे ऊष्म कहते हैं ।

३—रोगों के स्थान पर औषधियों की पिंडी बाँधकर पसीना निकालने को उपनाह कहते हैं ।

४—पतले द्रव्य के योग करके पसीना निकालने को द्रव्य कहते हैं । इस प्रकार वैद्यकशास्त्र में चार प्रकार की विधियां बतलाई हैं ।

ऋषियों ने बतलाया है कि-

कफ़ का रोग होने से रूक्ष पदार्थ जैसे वालुकादिक इनसे अंग का पसीना निकाले। कफ़ वायु के रोगों में स्निग्ध तथा रूक्ष दोनों पदार्थों करके पसीना निकाले इसी प्रकार पसीना निकालने की विधि अनेक रोगों में बतलाई है।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि:—

जिस स्त्री के पेट में गर्भ गिरने की पीड़ा हो उसका गर्भ पतन होजाने के पश्चात् अथवा मूढ़गर्भ पतन होजाने के पश्चात् अथवा नौ महीने के पश्चात् उस स्त्री के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया करै क्योंकि गर्भ गिरजाने तथा मूढ़गर्भ प्रसव अथवा पतन होने के पश्चात् प्रसूता स्त्री को वायुरोग, प्रसूतरोग अवश्य होजाता है इसी कारण इस विधि को काम में लाने के लिये वैद्यकशास्त्र में ऋषियों ने बतलाया है।

इस विधि का काम में न लाने से ही आजकल हमारे देश की असंख्य स्त्रियां प्रसूत रोग से ग्रसित पाई जाती हैं, मूढ़गर्भ वाली ही नहीं, गर्भ गिरनेवाली ही नहीं वैसे भी बालक होने में किसी प्रकार की असावधानी होजाने से स्त्रियों को प्रसूत रोग होजाता है मेरे पास प्रसूत रोग से ग्रसित प्रतिदिन बीसों स्त्रियां आया करती हैं जिनको पांच पांच दस दस वर्ष से प्रसूतरोग कष्ट देरहा है, बड़े बड़े धुरन्धर वैद्य अनेको उपाधिधारियों ने वर्षों चिकित्सा करके रोग का निश्चय ही नहीं कर पाया, जीर्णज्वर आदि रोग समझ जीर्णज्वर की चिकित्सा कीजाती है जब वे स्त्रियां मेरे पास आती हैं तब मैं वही ऊपर लिखी वैद्यकशास्त्र की प्राचीन विधि से चिकित्सा करती हूं रोग शीघ्रही दूर होजाता है यदि असाध्य न हुआ हो। ऋषियों ने बतलाया है कि:—

स्वेदाद्धातुस्थितादोषाः स्वेदस्निग्धस्यदेहिनः।
द्रवत्वं प्राप्यकोष्ठान्तर्गतायांति विरेकताम्॥

इसका अर्थ यह है कि औषधियों से मनुष्य के शरीर से पसीना निकालने से तथा किसी बड़े वर्तन में तेल भरके उसमें रोगी मनुष्य

को बैठाने से उसके रसादिक धातुओं में रहनेवाला वातादिक दोष कोष्ट में जाकर पतला हो गुदा के द्वारा गिरता है।

वैद्यकशास्त्र की विधि के आधार पर नवीन युक्ति से स्त्रीरोगों का इलाज

ऊपर लिखी स्वेदन विधि के आधार पर मैंने स्त्रियों के गुप्तरोगों की चिकित्सा विधि अपने अनुभव से ही आरम्भ की और लगभग १८ वर्ष से मैं इस विधि द्वारा लाखो स्त्रियों का इलाज करके उनके अनेक प्रकार के गुप्तरोगों को दूर करने में समर्थ हुई।

गुप्तरोग।

१—बच्चेदानी के मुंह पर सूजन आजानी।

२—बच्चेदानी के मुंह पर फुंसियां होजाना।

३—बच्चेदानी की गर्दन टेढ़ी होजाना।

४—बच्चेदानी की गर्दन पर गांठ निकल आना।

५—बच्चेदानी के मुंह पर मस्सा निकल आना।

६—बच्चेदानी के मुंह पर घाव होजाना।

७—बच्चेदानी का मुंह छोटा होजाना।

८—बच्चेदानी का मुंह अधिक फैलजाना।

९—बच्चेदानी का मुंह आगे को लटक पड़ना।

१०—बच्चेदानी के मुंह पर बहुत सी गुमड़ियाँ निकल आनी।

इसी प्रकार के और भी अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं उन सब रोगों का इलाज चित्र नं० ३५ के अनुसार औषधियों की भाफ़ से किया जाता है रोग दूर होजाता है।

हमारी देशी चिकित्सा विधि और देशी औषधियों से यह रोग सरलता से ही दूर होजाते हैं इन सब रोगों में स्त्री के गुप्तस्थान में (गर्भाशय में) औषधियों की भाफ़ (वफ़ारा) देना पड़ता है जिसकी विधि और औषधियां "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग

में लिखूंगी क्योंकि जबतक यह विषय विस्तार से न समझाया जावैगा तवतक समझ में आना कठिन है तथा जबतक इन रोगों की परीक्षा विस्तारपूर्वक न समझाई जावैगी तबतक समझ में न आवैगी और विना समझे इस विधि को काम में लाने से स्त्रियों को और भी अनेक प्रकार के भयानक रोग उत्पन्न होजाते हैं।

देखिये पढ़कर समझिये ।

गतवर्ष कुछ पुरुषों ने अपनी कई रिश्तेदार स्त्रियों को इसलिये मेरे पास भेजा कि औषधियों की भाफ़ से किस प्रकार बिना आपरेशन के ही अनेक रोग दूर होजाते हैं "जबसे मैंने इस विधि को निकाला है और वड़े वड़े कठिन गुप्तरोग बिना आपरेशन के ही दूर किये हैं तवसे लोग वड़ा आश्चर्य मानने लगे हैं, अनेक वैद्य मुझे लिखते हैं कि यह विधि वैद्यकशास्त्र के किस ग्रन्थ में है क्योंकि यह विधि तो किसी ग्रन्थ में है नहीं, केवल अनेक रोगों में वायुनाशक औषधियों से पसीना निकालना लिखा है जिसे स्वेदन क्रिया कहते हैं। इसी आधार पर मैंने यह विधि अपनी बुद्धि से निकाली है। इसी से वैद्यलोग आश्चर्य करते हैं प्रयाग की कुछ स्त्रियां इस विधि को देख गई और उन्होंने उन लोगों से वतलाई जिन्होंने उन्हें इसीलिये भेजा था, उन्होने हमारी कुल वातों की नकल करके अपनी स्त्रियों के नाम से औषधालय खोले और इस विधि की भी नकल की परन्तु उन्हें न तो औषधियां मालूम थीं न रोगों की परीक्षा ही उनकी स्त्रियां जानती थीं जो मेरे यहां के भ्रम से वहां कुछ रोगी स्त्रियां भूल से पहुंच गईं उनका इलाज भाफ़ का उन नकलची स्त्रियों ने शुरू किया उससे रोगी स्त्रियों को वड़ा नुक्सान पहुंचा जव उनके मुहल्ले की अन्य स्त्रियों को यह वात मालूम हुई जो मेरे यहां कभी इलाज करागई थीं उन्होंने उससे पूंछा कि तुम और कहीं नकली दवाखाने में तो नहीं पहुंच गईं, प्रयाग में कई नकली दवाख़ाने स्त्रियों के नाम से खुले हैं जो यशोदादेवी के स्त्री-औपधालय की हरएक वात की नकल कररहे हैं उन नकलची दवाख़ानों के दलाल स्टेशन के धर्मशाला, मुसाफिरखाना और पंडों के यहां घूमा करते हैं, यशोदादेवी से इलाज कराने प्रतिदिन दूर दूर नगरों से स्त्रियां आया करती हैं उन्हें मालूम हुआ तो वे यशोदादेवी के औपधालय के विरुद्ध बातें बनाकर अथवा यह कहकर कि हम यशोदादेवी

के नौकर हैं उन्हीं ने भेजा है चलिये हम आपको यशोदादेवी के पास लिये चलते हैं इस प्रकार से वे अनेक प्रकार से छल कपट की बातें बना कर किसी नये नकली औषधालय में लेजाया करते हैं वहां से उनका कमीशन बंधा है, मालूम होता है कि तुम इसी तरह से किसी के कहने से, भूल से और जगह पहुंच गईं इस प्रकार कहकर जब उन्होंने हमारे यहाँ का सब ठीक ठीक पता उस रोगी स्त्री को बतलाया तब उसकी समझ में आया कि यही बात हुई, अवश्य मैं भूल से दूसरी जगह पहुंच गई। इसी प्रकार पचासों स्त्रियाँ नकली स्त्री-औषधालय से नुकसान उठाकर मेरे पास आईं तब मुझे मालूम हुआ, मुझे उन अनाड़ी नकलची दवाखानों से नुकसान उठाई हुई रोगी स्त्रियों के उन रोगो को दूर करने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी, तभी से मैंने नकली औषधालयों के विषय में सब बहिनों को सावधान करने की सूचना प्रकाशित करनी आरम्भ की है।

इधर देखिये।

उन नकली औषधालयवालों की बड़ी भूल है और अज्ञानता है यदि वे अपनी स्त्रियों को मेरे पास सीखने को भेजदें तो उन्हें सिखलादूं क्योंकि मुझे किसी प्रकार से इनकार न होगा। मैं तो चाहती हूं कि देश भर में इस प्राचीन विधि की सहायता से निकाली हुई मेरी नवीन विधि का प्रचार हो, स्त्रियां इससे फ़ायदा उठावें और देश का हित हो, मैं अकेली देश भर की स्त्रियों का इलाज कदापि नहीं कर सकती। रातदिन काम करते करते मेरा स्वास्थ्य दिन दिन ख़राब होता जारहा है।

इसलिये मैं चाहती हूं कि जिस स्त्री की इच्छा हो मेरे पास आकर अथवा इस पुस्तक "देवी अनुभव प्रकाश" पहिले दूसरे भाग से स्त्री-चिकित्सा विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें इसीलिये इस विषय को मैं "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में विस्तार पूर्वक प्रकाशित करूंगी।

यह विषय दूसरे भाग में इस प्रकार सरलता से समझाया जावेगा, बड़ी ही सरल विधियां बतलाई जावेंगी जिससे स्त्रियां इस पुस्तक को पढ़कर स्त्रियों के गुप्तरोगों का इलाज बड़ी सरलता से कर सकेंगी, कभी हानि नहीं पहुंच सकती।

एक दो नहीं अनेक विधियां मैंने इस प्रकार के इलाज की वैद्यकशास्त्र की सहायता से तथा अपने अनुभव से निकाली हैं जिससे स्त्रियों के गुप्तरोग शर्तिया दूर होजाते हैं। जिसे देख सुनकर बड़े बड़े चिकित्सक आश्चर्य करते हैं।

ज़रूरी बात।

इस विषय के जानने के लिये स्त्रियों को घबड़ाना नहीं चाहिये दूसरा भाग शीघ्र ही तैयार होगा इस भाग में यदि मैं और विषय न लिखकर उसी विषय को पूरा करती तो भी विषय अधूरा रहजाता अधूरा रहजाने से यदि कोई स्त्री विना पूरा समझे इस विधि को काम में लाती तो रोगी स्त्री को नुक्सान पहुंचता इसीलिये मैंने अधूरा लिखना उचित नहीं समझा।

सब बहिनों से प्रार्थना है कि वे सन्तोष रक्खें दूसरा भा शीघ्रही छपाकर तैयार करूंगी और प्रथम भाग के सब ग्राहकों का तैयार होते ही वी० पी० द्वारा भेज दूंगी। जो प्रथम भाग की ग्राहिका होंगी उन्हीं को दूसरा भाग भेजा जावेगा।

जिनको दूसरा भाग लेना हो वे प्रथम भाग अवश्य मंगालेवें, जो प्रथम भाग के ग्राहक नहीं हैं उनको दूसरा भाग किसी मूल्य में भी न दिया जावेगा।

स्त्रियों का प्रसूत रोग ।

प्रसूत रोग वाली स्त्रियों की संख्या अन्य प्रकार के रोगोंवाली स्त्रियों से किसी प्रकार कम नहीं है, प्रदर, प्रसून और रजदोष यह तीन बीमारियां अधिक स्त्रियों में पाई जाती हैं, प्रदर और रजदोष के बाद प्रसूतवालियो का ही नम्बर है, प्रदर और मासिकधर्म की ख़राबी से स्त्री को इतना कष्ट नहीं होता जितना प्रसूत रोग से होता है। इस रोग से स्त्री शीघ्रही बहुत निर्बल और दुर्बल होजाती है समस्त शरीर में पीड़ा होना, ज्वर की सी हरारत रहना, हर समय शिरमें पीड़ा आदि के कारण बड़ा कष्ट होता है ।

प्रसूत रोग की उत्पत्ति और लक्षण।

जिस स्त्री के बालक उत्पन्न होचुका है अथवा गर्भ गिरचुका है वह स्त्री यदि मिथ्या आहार विहार करे तो दोष कुपित होकर प्रसूत रोग को उत्पन्न करते हैं, अत्यन्त क्रोध करने से, शीत में रहने से, नियम के विरुद्ध प्रसंग करने से प्रसूता स्त्री के जो रोग उत्पन्न होते हैं वे बड़े दारुण दुःखदाई कष्ट देनेवाले होते हैं ।

उन रोगों के लक्षण इस प्रकार हैं

शरीर में पीड़ा होना, अंगों का टूटना, ज्वर आने लगना, श्वास, प्यास, शरीर का भारी होना, सूजन, शूल, अतीसार ये सूतिका रोग के लक्षण हैं । ज्वर, अतीसार (दस्तों का आना), सूजन, शूल, अफरा, बल की क्षीणता, तन्द्रा, अरुचि, मुख से लार (थूक बहना) इत्यादि वात, कफ़ के विकार तथा मांस और बल का क्षीण होजाना। यदि चिकित्सा ठीक न हुई तो रोगी का जीवन समाप्त होजाता है ।

प्रसूत रोग की चिकित्सा ।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि प्रसूत रोग को दूर करने के लिये वातनाशक क्रिया करनी चाहिये वही ऊपर लिखी विधि स्वेदन-क्रिया, परन्तु उस क्रिया को कोई वैद्य काम में नहीं लाते न किसी की समझ में प्रसूतरोग निश्चय करके आता ही है । मेरे पास प्रतिदिन

अनेक स्त्रियां प्रसूतरोग वाली आया करती हैं डाक्टर और वैद्य जीर्ण-ज्वर (तपेदिक) समझकर इलाज करते हैं इसलिये फ़ायदा नहीं होता।

मेरे पास जो स्त्रियां प्रसूतरोग वाली आती हैं मैं उनका इलाज वैद्यक की स्वेदन क्रिया की सहायता से अपनी निकाली हुई अनुभव कीहुई विधि के अनुसार चिकित्सा करती हूं रोग अवश्य दूर होजाता है यदि असाध्य न हुआ हो। इस प्रकार से अबतक प्रसूतरोग वाली हजारों स्त्रियां आराम होचुकी हैं।

प्रसूतरोग नाशक उपाय।

देवदारु	वच	कूट
पीपल	सोंठ	चिरायता
कायफल	नागरमोथा	कुटकी
धनियॉ	हरड़	गजपीपल
कटेली	गोखरू	धमासा
काकड़ासिंगी	अतीस	गिलोय
काला ज़ीरा		

यह सब औषधियां बराबर बराबर लेकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक एक तोला की पुड़िया पाव भर पानी में मिट्टी की हँड़िया में धीमी धीमी आंच से पकावै जब आठवां हिस्सा पानी बाकी रहै तब उतार मलकर छानलेवै उसमें थोड़ीसी भुनी हींग और सेंधा नमक डालकर गरम गरम प्रतिदिन पीवै (हींग और सेंधानमक अन्दाज़ से मिलावे) इसके सेवन से प्रसूत रोग, पसलियों का शूल, खांसी, ज्वर, श्वास, मूर्छा, कम्प तथा वमन आदि प्रसूत रोग की सब शिकायतें और वात, पित्त, कफ़ के रोगों को यह काढ़ा अवश्य दूर करता है।

इस काढ़े का प्रतिदिन सेवन करावै और भोजन के समय नीचे लिखा वायुनाशक चूर्ण का सेवन करावै।

दूसरा उपाय।

वच	विडनोन	सोंठ
पीपल	कूट	हरड़

चीते की छाल जवाखार संचर नमक
पुहकरमूल भुनी हींग (किसी एक औषधि से आधी लेवे)

यह सब औषधियां बराबर बराबर लेवे, हींग किसी एक औषधि की आधी भुनी लेवे। सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर तीन तीन माशे की पुड़िया बनाकर प्रतिदिन एक पुड़िया भोजन के समय पहिले ग्रास में दाल में मिलाकर खावे तो रुचि बढ़े, पाचन-शक्ति बढ़े।

तीसरा उपाय।

समुद्रनमक आठ तोला संचरनोन पांच तोला
विडनोन दो तोला सेंधानमक दो तोला
धनियां दो तोला पीपल दो तोला
पीपरामूल दो तोला कालाज़ीरा दो तोला
पत्रज दो तोला नागकेशर दो तोला
तालीसपत्र दो तोला अमलवेत दो तोला
कालीमिर्च एक तोला ज़ीरा एक तोला
सोंठ एक तोला अनारदाना चार तोला
दालचीनी छै मासा इलायची के दाने छै मासा

इन सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावे और चार चार मासे की पुड़िया प्रतिदिन दोनों समय प्रसूतरोग वाली को सौंफ के अर्क के साथ सेवन करावें तो अग्नि प्रदीप्त हो, पाचनशक्ति ठीक हो, अरुचि और मन्दाग्नि को लाभ हो। यह लवणभास्कर चूर्ण कहलाता है यह वैद्यक का बड़ा प्रसिद्ध चूर्ण है प्राय: सभी वैद्य इसे काम में लाते हैं मेरे यहां प्रतिदिन पंचासों रोगियों को यह फ़ायदा पहुंचाता है इसकी प्रशंसा करना ही व्यर्थ है मेरा तो यह लाखोंबार का परीक्षा किया हुआ है और भी सभी वैद्य इसे जानते हैं।

प्रसूत रोग पर ही नहीं यह चूर्ण रोगी निरोगी सबके ही लिये बड़ा हितकारी है हरएक स्त्री को इसको घर पर ही तैयार करके हर समय रखना चाहिये। क्योंकि इसके सेवन से अकस्मात् होनेवाले अनेक प्रकार के वायुरोग शर्तिया दूर होते हैं।

लवणभास्कर के गुण अनेक रोगों पर।

वायुगोला रोग में:—दही के पानी के साथ सेवन करने से अथवा गाय के मट्ठे से सेवन करने से अथवा मद्य (शराब) के साथ देने से वात कफ़ से उत्पन्न होनेवाला गोला, प्लीहा, उदररक्षय, बवासीर, संग्रहणी, कोढ़, कब्ज़, मन्दाग्नि, भगंदर, सूजन, शूल, श्वास, खांसी, आमवात, हृद्रोग ये सब रोग अवश्य दूर होते हैं अग्नि प्रदीप्त होती है तथा भोजन का परिपाक होता है।

पेट की पीड़ा में।

किसी के पेट में अचानक पीड़ा हो तो चार मासा लवणभास्कर चूर्ण गरम पानी के साथ खालेवे तुरन्त फ़ायदा मालूम होगा इसी प्रकार तीन तीन घंटे पर दो दो मासे की पुड़िया का सेवन करै पहिली ही पुड़िया में फ़ायदा होगा।

पेट में अफरा हो।

वायुकारक पदार्थ खाने में आगये हों, पेट में आलस हो, भोजन करने के बाद पेट अफर गया हो (अफरा रोग हो) तो चार मासा लवणभास्कर सौंफ के अर्क से खालेने से तुरन्त फ़ायदा पहुंचता है।

संग्रहणी रोग में।

लवणभास्कर की चार चार मासे की पुड़िया गाय के मट्ठे के साथ प्रतिदिन दिन में तीनवार सेवन करै पानी पीना जहांतक होसके बन्द करदेवे मट्ठे का ही सेवन करै तो संग्रहणी रोग अवश्य दूर हो इस प्रकार से यह परीक्षा किया हुआ है।

शराब के साथ वायुगोला रोग में एक एक पुड़िया दिन में तीनवार सेवन करावै, पहिली ही पुड़िया में वायुगोला का शूल बन्द होजाता है, तीन पुड़िया से बिलकुल जाता रहता है जो शराब नहीं पीसकते वे गरम पानी के साथ सेवन करैं अथवा पुराने सिरके के साथ सेवन करैं।

बदहज़मी के कारण पेट में सदैव कुछ कुछ पीड़ा रहती हो तो कागज़ी नींबू के अर्क में लवणभास्कर को सातवार भिगो भिगो कर

चीते की छाल जवाखार संचर नमक
पुहकरमूल भुनी हींग (किसी एक औषधि से आधी लेवे)

यह सब औषधियां बराबर बराबर लेवे, हींग किसी एक औषधि की आधी भुनी लेवे। सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर तीन तीन माशे की पुड़िया बनाकर प्रतिदिन एक पुड़िया भोजन के समय पहिले ग्रास में दाल में मिलाकर खावै तो रुचि बढ़े, पाचन-शक्ति बढ़े।

तीसरा उपाय।

समुद्रनमक आठ तोला	संचरनोन पांच तोला
विडनोन दो तोला	सेंधानमक दो तोला
धनियां दो तोला	पीपल दो तोला
पीपरामूल दो तोला	कालाज़ीरा दो तोला
पत्रज दो तोला	नागकेशर दो तोला
तालीसपत्र दो तोला	अमलवेत दो तोला
कालीमिर्च एक तोला	ज़ीरा एक तोला
सोंठ एक तोला	अनारदाना चार तोला
दालचीनी छै मासा	इलायची के दाने छै मासा

इन सब औषधियों को कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावे और चार चार मासे की पुड़िया प्रतिदिन दोनों समय प्रसूतरोग वाली को सौंफ के अर्क के साथ सेवन करावै तो अग्नि प्रदीप्त हो, पाचनशक्ति ठीक हो, अरुचि और मन्दाग्नि को लाभ हो। यह लवणभास्कर चूर्ण कहलाता है यह वैद्यक का बड़ा प्रसिद्ध चूर्ण है प्रायः सभी वैद्य इसे काम में लाते हैं मेरे यहां प्रतिदिन पचासों रोगियों को यह फ़ायदा पहुंचाता है इसकी प्रशंसा करना ही व्यर्थ है मेरा तो यह लाखोंबार का परीक्षा किया हुआ है और भी सभी वैद्य इसे जानते हैं।

प्रसूत रोग पर ही नहीं यह चूर्ण रोगी निरोगी सबके ही लिये बड़ा हितकारी है हरएक स्त्री को इसको घर पर ही तैयार करके हर समय रखना चाहिये। क्योंकि इसके सेवन से अकस्मात् होनेवाले अनेक प्रकार के वायुरोग शर्तिया दूर होते हैं।

लवणभास्कर के गुण अनेक रोगों पर।

वायुगोला रोग में:—दही के पानी के साथ सेवन करने से अथवा गाय के मट्ठे से सेवन करने से अथवा मद्य (शराब) के साथ देने से वात कफ़ से उत्पन्न होनेवाला गोला, सीहा, उदरक्षय, बवासीर, संग्रहणी, कोढ़, क़ब्ज़, मन्दाग्नि, भगंदर, सूजन, शूल, श्वास, खांसी, आमवात, हृद्रोग ये सब रोग अवश्य दूर होते हैं अग्नि प्रदीप्त होती है तथा भोजन का परिपाक होता है।

पेट की पीड़ा में।

किसी के पेट में अचानक पीड़ा हो तो चार मासा लवणभास्कर चूर्ण गरम पानी के साथ खालेवे तुरन्त फ़ायदा मालूम होगा इसी प्रकार तीन तीन घंटे पर दो दो मासे की पुड़िया का सेवन करै पहिली ही पुड़िया में फ़ायदा होगा।

पेट में अफरा हो।

वायुकारक पदार्थ खाने में आगये हों, पेट में आलस हो, भोजन करने के बाद पेट अफर गया हो (अफरा रोग हो) तो चार मासा लवणभास्कर सौंफ के अर्क से खालेने से तुरन्त फ़ायदा पहुंचता है।

संग्रहणी रोग में।

लवणभास्कर की चार चार मासे की पुड़िया गाय के मट्ठे के साथ प्रतिदिन दिन में तीनवार सेवन करै पानी पीना जहांतक होसके बन्द करदेवे मट्ठे का ही सेवन करै तो संग्रहणी रोग अवश्य दूर हो इस प्रकार से यह परीक्षा किया हुआ है।

शराब के साथ वायुगोला रोग में एक एक पुड़िया दिन में तीनवार सेवन करावै, पहिली ही पुड़िया में वायुगोला का शूल बन्द होजाता है, तीन पुड़िया से बिलकुल जाता रहता है। जो शराब नहीं पीसकते वे गरम पानी के साथ सेवन करैं अथवा पुराने सिरके के साथ सेवन करैं।

बदहज़मी के कारण पेट में सदैव कुछ कुछ पीड़ा रहती हो तो कागज़ी नींबू के अर्क में लवणभास्कर को सातबार भिगो भिगो कर

छाया में सुखा लेवै फिर नींबू के अर्क में ही झरबेरी के बेर के बराबर गोली बनाकर रखलेवै प्रतिदिन भोजन करने के बाद दो गोली खालिया करै, दोनों समय सेवन करने से शिकायत अवश्य जाती रहैगी।

इसी प्रकार खुराक की मात्रा कम करके बालकों को भी दिया जाता है उनकी अवस्था के अनुसार मात्रा देवे प्रसूतरोग वाली को भी सेवन करने से लाभ होता है।

यदि क़ब्ज़ हो, पाख़ाना न होता हो और तकलीफ़ हो तो लवणभास्कर छै माशा गरम पानी से सेवन कराने से और फिर कई बार थोड़ा थोड़ा गरम पानी पीने से क़ब्ज़ दूर होगा या तो दस्त होजावैगा या पाचन होकर शिकायत दूर होगी और भूख लगैगी। पानी गरम करके ठंढा न होजावै गरम गरम पानी पीना चाहिये। पाचन के लिये इस चूर्ण को रोगी निरोगी सब सेवन करसकते हैं।

लवणभास्कर की पुड़िया प्रतिदिन अनार के रस में मिलाकर सेवन करै अरुचि दूर होगी इतने गुण इस चूर्ण में हैं इसमें संदेह नहीं इसलिये अत्यन्त हितकारी है।

प्रसूत रोग पर चौथा उपाय।

सौभाग्यशुंठी पाक जिसके बनाने की विधि इसी पुस्तक में २६७ वें पृष्ठ में बतलाई गई है इसके अतिरिक्त प्रसूत रोग की और भी अनेक औषधियां पीछे बतला चुकी हूं।

प्रसूत रोग नाशक कनक तैल।

धतूरे का वृक्ष फल, फूल, पत्ता और जड़ समेत लाकर कूटकर रस निकाले।

वच एक छटांक	धतूरे के फल एक छटांक
कुट्ठी एक छटांक	हल्दी एक छटांक
सोंठ एक छटांक	

यह सब औषधियां कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर धतूरे के सवासेर रस में रात को भिगोदेवे प्रातःकाल चटनी की भांति पीसकर पांच सेर कडुए तैल को इसमें मिलावै और बीस सेर पानी मिलाकर कढ़ाही में कर आंच पर चढ़ा देवे फिर धीमी धीमी आंच से पकावै

जब केवल तैल रहजावै तब उतार कर छानले और बोतलों में भर के रखलेवे इसकी मालिश समस्त शरीर में करने से प्रसूत रोग शीघ्रही दूर होता है प्रसूतरोग वाली स्त्री हृष्ट पुष्ट होजाती है। प्रसूत रोग ही नहीं इस तैल की मालिश करने से वादी के अनेक रोग दूर होते हैं यह वायुनाशक तैल वायुरोगों केलिये बड़ा ही उपयोगी है।

प्रसूत रोग में अन्य उपाय।

प्रसव के दिन अर्थात् जिस दिन बालक उत्पन्न हो उस दिन उपवास करके दूसरे दिन प्रातःकाल वायविडंग की जड़ का चूर्ण दो माशा गाय के घी के साथ प्रतिदिन सेवन करै तो वायुविकार दूर हो प्रसूतरोग नहीं होता।

अन्य विधि।

कटेली की जड़   काकड़ासिंगी   अरंड की जड़
पीपल   सोंठ

यह सब औषधियां बराबर बराबर लेकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक तोला औषधि को पावभर पानी में मिट्टी की हंडिया में धीमी धीमी आंच से पकावै जब आठवां हिस्सा पानी बाकी रहै तब उतार मलछान कर शहद डालकर पीवै तो सूतिका रोग दूर हो।

प्रसूतरोग में पथ्य।

लंघन करना, स्वेदन क्रिया से पसीने निकलना, कोठे को शोधन करना, वायुनाशक तैल की मालिश करना, चरपरे, गरम, कडुए वायुनाशक पदार्थों का सेवन करना, शीघ्र पचनेवाले अग्नि दीपन करनेवाले पदार्थों का सेवन, पुराने सांठी के चावल, कुलथी, लहसन, सहजन, बैंगन, छोटी छोटी नरम मूली की तरकारी, परवल, बिजौरा नींबू, पान, खट्टे मीठे अनार, कफ और वादी को नाश करनेवाले पदार्थों का सेवन।

प्रसूता होने के सात दिन व्यतीत होजाने पर देह को पुष्ट करनेवाले वायुनाशक पदार्थों का सेवन कराने से प्रसूतरोग नहीं होने पाता। डेढ़ महीने तक प्रसूता स्त्री को पथ्य से रखना चाहिये जिस विधि से ऊपर लिखा गया है।

प्रसूत रोग में स्वेदन क्रिया।

प्रसूत रोगवाली के शरीर से वायुनाशक औषधियों द्वारा पसीना निकालने से शरीर का वायुदोष दूर होकर प्रसूत रोग आराम होता है

चित्र नं० ३६ स्वेदन क्रिया।

ऊपर लिखी विधि से औषधियों का सेवन करावे और सौभाग्यशुंठी आदि वायुनाशक, पुष्टकारक औषधियों का सेवन करावे।

ऊपर के चित्र की भांति एक पक्की कोठरी में जहां शीतल वायु न लग सके रोगी स्त्री को एक छोटी खटोली पर बिठादेवे। खटोली इतनी चौड़ी लम्बी होनी चाहिये कि जिसपर स्त्री अच्छी तरह बैठ सकै, रोगी स्त्री को बैठालकर ऊपर से गरम वस्त्र उढ़ादेवे कि जिसमें खटोली तक ढकजावै।

इस खटोली के नीचे दशमूल की औषधियों का काढ़ा छोटे मुख के घड़े में करके रखदेवे, बर्तन का मुंह खोलदेवे, खटोली सहित स्त्री को कपड़े से ढकदेवे केवल मुख खुला रहने देवे।

रोगी स्त्री को इस प्रकार बैठना चाहिये कि जिससे योनि के भीतर भी औषधियों की भाफ़ पहुंच सकै इस प्रकार करने से पसीना निकलैगा, थोड़ा ही पसीना निकालना चाहिये; इसी प्रकार तीन दिन से एक सप्ताह तक करना चाहिये।

आवश्यक सूचना।

जो रोगी स्त्री निर्बल हो तो इस क्रिया को न करै जिस रोगी के रक्त जाता हो, दस्त आते हों, ज्वर आता हो, पेट भरा हो, पानी बरस रहा हो अथवा गर्मी हो तो इस क्रिया को नहीं करना चाहिये।

इस क्रिया को जाड़ों के दिनों में काम में लावै जिस दिन समय ठीक न हो बदली हो अधिक ठंढक हो ऐसे समय में इस क्रिया को न करै। भाफ़ देने के पश्चात् उस स्त्री को एकघंटे तक उसी बन्द कमरे में बैठा रहने दे फिर थोड़ा टहलाकर दूसरा कपड़ा ओढ़ाकर बाहर निकाले जिससे शीतल वायु शरीर में न लगने पावै।

इस विधि में यदि थोड़ी भी भूल होगई तो रोगी स्त्री को अधिक कष्ट होगा इसलिये इस क्रिया को ऊपर लिखी विधि से ही बड़ी सावधानी से करना चाहिये।

स्वेदन-क्रिया के अयोग्य रोगी।

अजीर्ण रोगी, दुर्बलता, सोमरोग वाली, उरक्षत, हृदयरोग वाली, हिस्ट्रिया रोगवाली, पागलपन, प्यास जिसे अधिक लगती हो, दस्तों के रोगवाली, मुंह से, नाक से, पाख़ाने के स्थान से या योनिमार्ग से रक्त आरहा हो ऐसी रोगी, पांडुरोग वाली, उदररोगवाली और गर्भिणी

स्त्री इनमें से कोई भी रोग जिस स्त्री को हो उसकी स्वेदन-क्रिया से चिकित्सा न करै। अर्थात् ऐसे रोगी के शरीर से पसीना न निकाले। यदि रोगी स्त्री बिना पसीना निकाले अच्छी होती न समझ पड़े तो बड़ी सावधानी से थोड़ा पसीना निकाले।

प्रसूत रोग में वर्जित नियम।

परिश्रम करना, रुधिर का निकलना, मैथुन करना, गरिष्ट बासी ठंढे बादी कफ़कारक पदार्थों का सेवन करना, बार बार भोजन करना एकबार का किया भोजन नहीं पच सका है फिर कुछ खालिया। दिशा, पेशाब, छींक रोकना, अधिक जागना अथवा अधिक सोना, बासी अन्न खाना, दिन में सोना यह सब प्रसूतरोग वाली स्त्री को छोड़देने चाहिये।

देखने में आता है कि प्रसूत रोग से ग्रसित स्त्रियां किसी प्रकार का पथ्य नहीं करतीं रोग की ही दशा में बालक भी उत्पन्न होते जाते हैं किसी किसी स्त्री को इस रोग में भी सन्तान बराबर होती जाती है बहुतों को नहीं होती। जिनके सन्तान भी होती जाती है वे शीघ्रही दुर्बल निर्बल होकर जीवनलीला समाप्त कर जाती हैं। इसलिये प्रसूत रोगवाली स्त्री को चाहिये कि जबतक रोग दूर न होजावै तबतक प्रसंग से बची रहै।

योनिकन्द रोग चिकित्सा।

योनिकन्द के उत्पन्न होने का कारण पीछे लिखा जाचुका है। पृष्ठ २०० में पीछे देखिये परीक्षा करने से जिस दोष के कारण योनिकन्द रोग उत्पन्न हुआ मालूम हो वैसी ही चिकित्सा करनी चाहिये।

वात के दोष से उत्पन्न हुआ हो तो नीचे लिखी विधि से उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

योनिकन्द रोग की चिकित्सा ।

योनिकन्द रोग में स्त्री को इस प्रकार लिटाकर गरम गरम अर्क की पिचकारी लगावें।

योनिकन्द रोग की परीक्षा निदान मिलाकर करै जैसा कि इस पुस्तक के २०० पृष्ठ में निदान लिखा गया है वात, पित्त, कफ़ जिस दोष से योनिकन्द रोग उत्पन्न हुआ हो उसी दोष के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये। यदि इस रोग की चिकित्सा प्राचीन विधि से की जावै तो रोग को अवश्य फ़ायदा होता है परन्तु हमारे देश के वैद्य इस रोग की परीक्षा भी भलीभांति नहीं कर पाते क्योंकि रोग को देख सकते नहीं, न रोगी स्त्री ही अपने रोग को समझ सकती है।

स्त्री इनमें से कोई भी रोग जिस स्त्री को हो उसकी स्वेदन-क्रिया से चिकित्सा न करे। अर्थात् ऐसे रोगी के शरीर से पसीना न निकाले। यदि रोगी स्त्री बिना पसीना निकाले अच्छी होती न समझ पड़े तो बड़ी सावधानी से थोड़ा पसीना निकाले।

प्रसूत रोग में वर्जित नियम।

परिश्रम करना, रुधिर का निकलना, मैथुन करना, गरिष्ठ बासी ठंढे बादी कफ़कारक पदार्थों का सेवन करना, वार बार भोजन करना एकबार का किया भोजन नहीं पच सका है फिर कुछ खालिया। दिशा, पेशाब, छींक रोकना, अधिक जागना अथवा अधिक सोना, बासी अन्न खाना, दिन में सोना यह सब प्रसूतरोग वाली स्त्री को छोड़देने चाहिये।

देखने में आता है कि प्रसूत रोग से ग्रसित स्त्रियां किसी प्रकार का पथ्य नहीं करतीं रोग की ही दशा में बालक भी उत्पन्न होते जाते हैं किसी किसी स्त्री को इस रोग में भी सन्तान बराबर होती जाती है बहुतों को नहीं होती। जिनके सन्तान भी होती जाती है वे शीघ्रही दुर्बल निर्बल होकर जीवनलीला समाप्त कर जाती हैं। इसलिये प्रसूत रोगवाली स्त्री को चाहिये कि जबतक रोग दूर न होजावै तबतक प्रसंग से बची रहे।

योनिकन्द रोग चिकित्सा।

योनिकन्द के उत्पन्न होने का कारण पीछे लिखा जाचुका है। पृष्ठ २०० में पीछे देखिये परीक्षा करने से जिस दोष के कारण योनिकन्द रोग उत्पन्न हुआ मालूम हो वैसी ही चिकित्सा करनी चाहिये।

वात के दोष से उत्पन्न हुआ हो तो नीचे लिखी विधि से उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

योनिकन्द रोग की चिकित्सा।

योनिकन्द रोग में स्त्री को इस प्रकार लिटाकर गरम गरम औषधि को पिचकारी लगावे।

योनिकन्द रोग की परीक्षा निदान मिलाकर करै जैसा कि इस पुस्तक के २०० पृष्ठ में निदान लिखा गया है वात, पित्त, कफ़ जिस दोष से योनिकन्द रोग उत्पन्न हुआ हो उसी दोष के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये। यदि इस रोग की चिकित्सा प्राचीन विधि से की जावै तो रोग को अवश्य फ़ायदा होता है परन्तु हमारे देश के वैद्य इस रोग की परीक्षा भी भलीभांति नहीं कर पाते क्योंकि रोग को देख सकते नहीं, न रोगी स्त्री ही अपने रोग को समझ सकती है।

डाक्टरी इलाज में इस रोग का भी आपरेशन किया जाता है आपरेशन करके योनिकन्द रोग की गांठ को निकाल देते हैं हमारी देशी चिकित्सा विधि से औषधियों की भाफ़ तथा पिचकारी देकर और खाने तथा लगाने की औषधियों से ही रोग दूर करदिया जाता है इसी प्रकार अनेक गुप्तरोग दूर किये जाते हैं।

मेरे पास इस रोग की अनेक स्त्रियां आईं उनकी ज़बानी मालूम हुआ कि वे अनेक बड़े बड़े वैद्यराजों से चिकित्सा कराचुकी थीं सब ने मासिकधर्म की ख़राबी बतलाकर चिकित्सा की, क्योंकि योनिकन्द बच्चेदानी की गर्दन के नीचे होता है वह जब बड़ा होजाता है तब उस गांठ से बच्चेदानी की गर्दन दबजाती है इस कारण मासिकधर्म का रक्त निकलने का मार्ग रुककर मासिकधर्म का रक्त खुलासा नहीं निकलता।

योनिकन्द रोग में ज्वर भी आने लगता है और जलन भी हुआ करती है इन लक्षणों से चिकित्सा करनेवाले मासिकधर्म की गर्मी से योनि में दाह होना तथा ज्वर आना समझकर मासिकधर्म की ख़राबी का ही इलाज करते हैं इसलिये कुछ भी फ़ायदा नहीं होता।

हमारे देशी वैद्य स्त्रीरोगों के समझनेवाले भी बहुत हैं सब अपढ़ ही नहीं हैं परन्तु विद्वान् वैद्यों को स्त्रियों की चिकित्सा में अनेक प्रकार की कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं इस कारण वे स्त्रियों के गुप्त रोगों के इलाज में कुछ ध्यान नहीं देते। यही कारण है कि देशी चिकित्सा से लोगों का विश्वास जाता रहा है।

जिस योनिकन्द में खुजली अधिक आती है उसे चिकित्सा करनेवाला योनि की खुजली समझकर साधारण खुजली की औषधि करता है जिससे कुछ भी फ़ायदा नहीं होता।

चिकित्सा विधि।

यदि योनिकन्द रोग वात से उत्पन्न हुआ हो तो योनिमार्ग से पसीना निकालने की क्रिया करनी चाहिये। जो विधि पीछे बतलाई गई हैं।

पित्त से उत्पन्न होनेवाले योनिकन्द रोग में जुलाब देकर पित्त को निकालकर पित्तनाशक औषधियों का सेवन करावे।

कफ़ से उत्पन्न होनेवाले योनिकन्द रोग में वमन (उलटी) कराकर कफ़ को निकाले फिर कफ़नाशक औषधियों का सेवन कराना चाहिये।

त्रिदोष से उत्पन्न हुए योनिकन्द रोग में सब दोषों को दूर करनेवाली विधि से चिकित्सा करनी चाहिये।

त्रिदोष से उत्पन्न हुए योनिकन्द रोग में।

ऊपर दिये हुए चित्र के अनुसार स्त्री को लिटाकर त्रिफला का काढ़ा बनाकर (एक छटांक त्रिफला को जौ की बराबर टुकड़े कर १६ सोलह छटांक पानी में धीमी धीमी आंच में मिट्टी की हंडिया में पकावै) जब एकपाव पानी रहजावै तब उसमें एक तोला असली शहद मिलाकर गरम गरम काढ़े से योनि में पिचकारी लगावै पिचकारी लगाते समय योनि को हाथ से दाबे रहै जिससे काढ़ा निकल न जावै जब औषधि योनि में भरजावै तब योनि का मुंह बन्द करदेवे थोड़ी देरी बाद खोलदेवे योनि का मुख बन्द करदेने से गरम गरम काढ़ा कुछ देरी तक योनि में रहना चाहिये। इस प्रकार करने से योनिकन्द दूर होगा। काढ़े की अन्दाज़ करलेवे इतना गरम न हो कि योनि में छाले पड़जावैं इतना गरम हो जिसे रोगी सहन कर सकै।

दूसरा उपाय।

गेरू, सुरमा, वायविड़ंग, कायफल, आम की गुठली, हल्दी, रसौत इन सबको बराबर बराबर लेकर बारीक चूर्ण बनावै और असली शहद में सानकर योनि में भरदेवे और कपड़े की गद्दी योनि पर रखकर लंगोट की भांति बांध देवे इस प्रकार प्रतिदिन दोनों क्रिया करते रहने से योनिकन्द रोग दूर होता है।

तीसरा उपाय।

दो तोला कडुई तोरई का रस और दो तोला दही का तोड़ (पानी मिलाकर पीने से योनिकन्द रोग नष्ट होता है। इन उपायों से योनिकन्द रोग को अवश्य फ़ायदा होता है। योनिकन्द रोग का अन्य उपाय "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में विस्तार पूर्वक लिखा जावैगा।

गर्भाशय का बाहर निकलना।

गर्भाशय का बाहर निकलना इसके कारण और लक्षण इसी पुस्तक के पृष्ठ २०१ में लिखचुकी हूं यहां इसकी विधि लिखती हूं।

गर्भाशय यदि योनिमार्ग में लटक आया हो या बाहर निकल आया हो और वह हाथ से दबाने से अपनी जगह पर भीतर न जासकै, अधिक दिन का रोग होने से उसमें मांस बढ़गया हो, नसों में सूजन आजाने से योनि के भीतर न जासकै इतना कड़ा होगया हो कि दबाने से भी भीतर न जासकै ऐसा होने से देरी में आराम होता है।

जो गर्भाशय बाहर निकल आया हो अथवा योनि के मार्ग में आगया हो और दबाने से सरलता से ही अपनी जगह पर भीतर चला जावै वह शीघ्रही आराम होजाता है।

चिकित्सा विधि।

जिस स्त्री का गर्भाशय योनिमार्ग में अथवा बाहर निकल आता हो और दबाने से भीतर चला जाता हो, गर्भाशय निकलने वाली रोगी स्त्री को बहुत परहेज़ से रहना चाहिये बहुत चलै फिरै नहीं, ऊँचा नीचा पैर न रक्खै, छतवाले मकान में छत पर न चढ़ै, आहार विहार का नियम ठीक रक्खै, बलदायक पदार्थों का सेवन करै, दिशा पेशाब साफ़ होता रहै ऐसे पदार्थों का सेवन करै। ज़ोर से न बोलै, पति के पास न जावै अर्थात् प्रसंग न करै। जहांतक होसकै आराम अधिक करै, अधिक उठने बैठने का काम न करै। जिस प्रकार बालक होने पर पथ्य से रहने का नियम है उसी प्रकार पथ्य से रहना चाहिये।

चित्र नं० ३४ की भांति स्त्री को सीधा लिटाकर तीन मासा फिटकरी और तीन मासा जस्त का फूला पावभर पानी में मिलाकर स्त्री की योनि में दिन में दोबार सुबह शाम पिचकारी लगानी चाहिये पिचकारी से धोकर नीचे लिखी औषधि काम में लावै।

गर्भाशय-भ्रंश की औषधि।

हीराकसीस, आम की गुठली, जामुन की गुठली, फिटकरी, धाय के फूल और त्रिफला सबको बराबर बराबर मंगाकर कूट पीस

चूर्ण बनावे उसमें असली शहद मिलाकर पोटली बना योनि के भीतर रक्खै फिर कपड़े की गद्दी योनि पर रखकर लंगोटा बांधलेवे।

इस प्रकार कुछ दिन करने से गर्भाशय अपनी जगह पर स्थिर होजावैगा। इससे योनि का गीलापन व चिकनाई दूर होगी प्रदरस्राव को भी फायदा होगा और योनि के अनेक रोग दूर होंगे।

अन्य उपाय।

जबतक गर्भाशय अपनी जगह पर न वैठ जावै तबतक पिचकारी लगाकर प्रतिदिन "शतावरी तैल" निकले हुए गर्भाशय में लगाकर हाथ से गर्भाशय को बड़ी सावधानी से दबाकर भीतर बैठाल देवे यह क्रिया स्त्री को सीधा लिटाकर करनी चाहिये जब गर्भाशय अपनी जगह पर बैठजावै तब गर्भाशयभ्रंश की पोटली जो ऊपर बतलाई गई है रखदेवे, जबतक गर्भाशय अपनी जगह पर बैठकर मजबूत न होजावै तबतक स्त्री को बड़ी सावधानी से पड़ी रहना चाहिये जिससे गर्भाशय पर ज़ोर पड़कर निकल न आवै।

गर्भाशय-भ्रंश में खाने की औषधि

ऊपर लिखी पिचकारी पोटली आदि को भी काम में लावै और प्रतिदिन नीचे लिखी औषधि खाने को देवे।

हाऊबेर	शतावर	ज़ीरा
धनियाँ	अजवाइन	सोंठ
हींग	तेजपात	पीपल
पीपलामूल	अजमोद	मेथी
चित्रक		

यह सब औषधियां चार चार तोला लेवे, धनियाँ १६ तोला, कसेरू, तगर, कूट, अजमोद दो दो तोला।

यह सब औषधियां कूटकर गाय के चौंसठ तोला दूध और चार सौ तोला गुड़ यह सब एक में मिलाकर धीमी धीमी आंच से पकावे जब पकते पकते गाढ़ा होजावै तब घी डालकर भूनडाले फिर जब हलुआ की भांति रहै तब उतार कर रखलेवे इसको प्रतिदिन छै छै मासा दोनों समय खाकर ऊपर से गाय का पावभर या डेढ़पाव दूध

मिश्री मिला हुआ पीवै। इसके कुछ दिन सेवन करने से स्त्रियों की निर्बलता दुर्बलता दूर होती है। योनि के बीस प्रकार के रोगों को दूर करता है गर्भाशय को पुष्ट और शुद्ध करता है। सन्तान की इच्छावाली स्त्रियों को गर्भदाता है।

खांसी, श्वास, क्षयरोग, हलीमक रोग, पांडुरोग, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को दूर करता है। निर्बल स्त्री को बल देता है, हृष्ट पुष्ट बनानेवाला, स्तनों को पुष्ट करनेवाला, गर्भाशय को पुष्टि देनेवाला तथा शरीर में फुर्ती और कान्ति को बढ़ानेवाला है।

यह सब स्त्रियों को हितकारी है, रोगी निरोगी सभी इसका सेवन कर फ़ायदा उठाती हैं। अन्य उपाय "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में देखो।

योनि की खाज का उपाय।

योनि में खाज कई कारण से उत्पन्न होती है विशेष कारण यह है कि जो स्त्रियां असावधानी से प्रतिदिन योनि को धोती नहीं हैं अथवा प्रसंग के पश्चात् योनि को नहीं धोतीं उनकी योनि में मैल जमकर छोटे छोटे कीड़े उत्पन्न होजाते हैं उन्हें भी यह रोग होजाता है।

मेरे पास प्रायः इस रोगवाली रोगी स्त्रियां भी आया करती हैं जो खाज के कारण बड़ी व्याकुल और कष्ट में देखी गई हैं खुजलाने से नखून लगने के कारण योनि में घाव तथा पाक होकर पीव तक निकलते देखा गया है, यह रोग जितना ही सरल है उतना ही कष्ट देनेवाला तथा हानिकारक है क्योंकि जिस स्त्री के यह रोग उत्पन्न होता है उसका चित्त हर समय खुजलाहट में ही रहता है वह किसी के सामने बैठती है तब भी उसका हाथ खुजली के लिये उसी स्थान पर रहता है। ऐसी रोगी स्त्री के लिये बड़ी लज्जा की बात मालूम होती है, अनेकों स्त्रियां ऐसे रोग की मेरे पास आईं जिनको बहुत दिनों से यह रोग था ऐसी स्त्री को प्रसंग की अधिक इच्छा रहती है इसलिये उसके पति को भी यह रोग होजाता है।

यदि इसका इलाज शीघ्र न किया गया तो गर्भाशय को भी हानि पहुंचती है। ऐसे रोगवाली स्त्रियों को पति से अलग रहना चाहिये अर्थात् प्रसंग से बची रहना चाहिये।

चिकित्सा विधि ।

जिस स्त्री की योनि में खाज हो उस स्त्री को चित्र नं० ३५ जो औषधियों की भाफ़ देने की विधि का दिया गया है उसी विधि से स्त्री को बिठाकर ।

त्रिफला एक तोला	जमालगोटे की जड़ ३ मासा
बायविडंग ६ मासा	बनतुलसी की पत्ती एक तोला
गिलोय एक तोला	नीम की भीतरी छाल दो तोला

इन सब औषधियों को कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर एक सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहजावे तब काढ़ेवाले बर्तन का मुंह बन्द कर स्त्री के नीचे जिस चौकी पर वह बफ़ारा लेने को बैठी है रखदेवे और बर्तन का मुंह खोलदेवे जब भाफ़ भली प्रकार लगने लगे तब तीन माशा कपूर को पीसकर एक पुड़िया में रखलेवे उस रोगी स्त्री के पास बैठकर हाथ की चुटकी (उंगलियों) से थोड़ा थोड़ा कपूर उसी बफ़ारावाले बर्तन में डालती जावे इस प्रकार करै जब भाफ़ सब निकल जावै तब स्त्री को हटा लेवे ।

६ माशा कपूर को तिल्ली के तैल में मिलाकर योनि के भीतर लेप करदेवे इसी प्रकार सुबह शाम दोनों समय सेवन करने से तीन दिन में ही रोग दूर होता है और फायदा तो उसी समय होजाता है।

यदि खुजली अधिक हो तो कपूर पीसकर पोटली बना योनि में रक्खे तो शीघ्रही फायदा होगा ।

कुछ दिन हुए एक रानी साहबा इसी रोग की मेरे पास आईं जिनको तीन वर्ष से यह रोग था बहुत इलाज किया, हजारों रुपया खर्च हुआ परन्तु रोग जड़ से नहीं गया इलाज करने पर खुजली कुछ कम होजाया करती थी, जब वे मेरे पास आईं तो उनकी यह शिकायत बहुत बढ़ी हुई थी लेडी डाक्टरों का इलाज होरहा था वे औषधियों की पिचकारी लगाया करती थीं जिनसे दो चार घंटे को खुजली कम होजाया करती थी।

अधिक खुजली के कारण उनके गर्भाशय के मुंह में भी अनेक छाले और योनि में घाव होगये थे किसी किसी घाव से पीव आने लगा था रोगी को बड़ा कष्ट था मैंने ऊपर लिखे उपाय से एक ही

दिन में उनकी सब शिकायतें दूर करदीं इतनी जल्दी रोग को फायदा होगा मुझे भी आशा न थी परन्तु परमात्मा की कृपा को कौन जानता है उपाय करते ही फायदा होने लगा उसी दिन आराम होगया। उन श्रीमती के पत्र प्राय: मेरे पास आया करते हैं तबसे आजतक कभी फिर उनको यह शिकायत नहीं हुई। न कभी होगी यदि वे मेरे बतलाये हुए नियमों पर चलेंगी।

प्यारी बहिनों! परमात्मा की कृपा से कोई बात कठिन नहीं है यदि मनुष्य सच्चे हृदय से निर्लोभ होकर धनी निर्धन सब के साथ सत्यता का व्यवहार रखकर हर काम में परमात्मा को अपना सहायक समझकर कार्य्य करै तो अवश्य पूरा होता है। मुझे इस बात का अनुभव है कोई काम परमात्मा की कृपा से कठिन नहीं है सींक की ओट पहाड़ समझिये। इसलिये सब बहिनों से प्रार्थना है कि वे स्त्री जाति के उपकार के लिये वैद्यक विषय को अवश्य जानलें।

योनि दाह नाशक उपाय।

स्त्रियों की योनि में अनेक कारणों से दाह (जलन) होनेलगती है यह रोग प्राय: स्त्रियों को हुआ ही करता है पित्तकारक पदार्थों का अधिक सेवन करने से अथवा पति के दोष से स्त्रियों के योनि में दाह उत्पन्न होती है जिसके कारण रोगी को बड़ी बेचैनी रहती है।

इसकी चिकित्सा विधि यह है।

जिस स्त्री की योनि में दाह हो उसे गरम मसाला, मिर्चा, तैल गुड़ आदि पित्तकारक पदार्थ खाने को न देवे।

एक छटांक त्रिफला को कूटकर रात को एक सेर पानी में भिगोदेवे प्रात:काल उसे मलकर पानी को कपड़े से छानकर उसी पानी की पिचकारी से योनि को दिन में तीन बार धोवे और धोकर चन्दन के तैल में कपूर बारीक पीसकर मिला लेवे उसी में रुई का फाहा भिगोकर योनि के भीतर रक्खे जै बार पिचकारी से धोवै तैबार फाहा भी बदल दिया करै इस उपाय से उसी दिन फायदा होगा।

जरूरी बात।

स्त्रियों के गुप्तरोगों के विषय में बहुत कुछ लिखना है क्योंकि सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्रियां अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित देखी जाती हैं, जितने प्रकार के रोगोंवाली स्त्रियां प्रतिदिन मेरे पास आया करती हैं उन सब रोगों का पूरा हाल लिखूं तो यह पुस्तक बहुत बढ़ जावेगी इस लिये स्त्रियों के गुप्तरोगों को विस्तार पूर्वक "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में लिखूंगी एक एक रोग पर अनेक औषधियां मेरी परीक्षा की हुई हैं सबके बनाने की विधि दूसरे भाग में बतलाऊंगी।

यह प्रथम भाग पुरुषों के रोगों के निदान और चिकित्सा से अधिक घिर गया है क्योंकि पुरुष भी स्त्रियों की भांति सैकड़ा पीछे निन्नानवे रोगी हैं इस भाग में पुरुषों के रोगों के विषय में भी लिखना ज़रूरी था इसलिये सब बहिनें समाकरें स्त्रियों के लिये "दूसरा भाग" बड़ाही उपयोगी होगा।

अब मैं गर्भवती के विषय में कुछ लिखकर कुछ अन्य वैद्यक की उपयोगी बातें लिखकर इस पुस्तक को समाप्त करूंगी।

सन्तानहीन स्त्रियां।

बन्ध्या चिकित्सा गर्भस्राव व गर्भपात चिकित्सा

अनेक प्रकार के गुप्तरोगों के कारण तथा पतियों के वीर्यदोष तथा अन्य प्रकार के गुप्तरोगों के कारण गर्भस्राव व गर्भपात से दु:खी स्त्रियों की भी संख्या कुछ कम नहीं है। प्रतिदिन बीसों गर्भपात व गर्भस्राव से दु:खी स्त्रियां मेरे पास आया करती हैं और अनेकों पत्र द्वारा औषधियां मंगाया तथा उपाय पूँछा करती हैं।

जिनकी चिकित्सा गर्भ रहने के पहिले ही होजाने पर गर्भ रहता है वे हृष्ट पुष्ट, निरोग सन्तान उत्पन्न करती हैं जो पहिले उपाय न करके गर्भ रहजाने अथवा गर्भस्राव व गर्भपात के उपद्रव आरम्भ होने पर मेरे पास आती हैं अथवा पत्र लिखकर औषधियां मँगाती हैं उनका गर्भस्राव व गर्भपात उस समय तो रुक जाता है और समय पर सन्तान उत्पन्न होती है परन्तु वह निर्बल दुर्बल और रोगी रहती है।

क्योंकि रोगी माता पिता की सन्तान अवश्य रोगी निर्बल और दुर्बल, कम आयुवाली होती है इसलिये गर्भस्राव व गर्भपात वाली रोगी स्त्रियो को चाहिये कि गर्भ रहने के पहिले ही एकबार मेरे पास आकर मुझे दिखलावें मैं उनके रज तथा गर्भाशय की परीक्षा करके यदि उनमें कोई ख़राबी हुई तो उनका इलाज करके सब शिकायतें दूर करदूंगी यदि उनके पति में कोई ख़राबी हुई तो उनके पति से रोगीफार्म भराकर उससे उनके पति के दोषों की परीक्षा करके जो कुछ ख़राबी होगी दूर करदूंगी यदि दोनों में ख़राबी हुई तो दोनों का इलाज करके ठीक करदूंगी फिर उनके हृष्ट पुष्ट और निरोग सन्तान होने लगैगी। गर्भरक्षा की कुछ औषधियां इस पुस्तक में पीछे बतला चुकी हूं परन्तु उन औषधियों से विशेष फ़ायदा न होगा क्योंकि गर्भ रहने के पहिले ही इलाज होजाने से ही रोग दूर होगा औषधियों से इतना ही लाभ होगा कि गर्भस्राव व गर्भपात रुक जावैगा यदि औषधि शीघ्रही तैयार कर सेवन करना शुरू करदी तो अवश्य फायदा होगा। यदि गर्भ गिरने के सब लक्षण उपस्थित होगये तब औषधि आरम्भ की तो कदाचित् फ़ायदा न हो इसलिये गर्भस्राव व गर्भपात वाली रोगी स्त्रियों का पहिले ही से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। चाहै जिस महीने में गर्भस्राव व गर्भपात होता हो परन्तु उन्हें प्रथम मास से ही औषधि

सेवन करना आरम्भ कर देना चाहिये। यदि गर्भवती के अनियम से गर्भस्राव व गर्भपात होता होगा तो पूरा फ़ायदा इन औषधियों से होगा यदि रज वीर्य के दोष से होगा और सदैव होता होगा तो पूरा फ़ायदा न होगा इसलिये गर्भस्राव व गर्भपात वाली रोगी स्त्रियों को

गर्भ और गर्भवती।
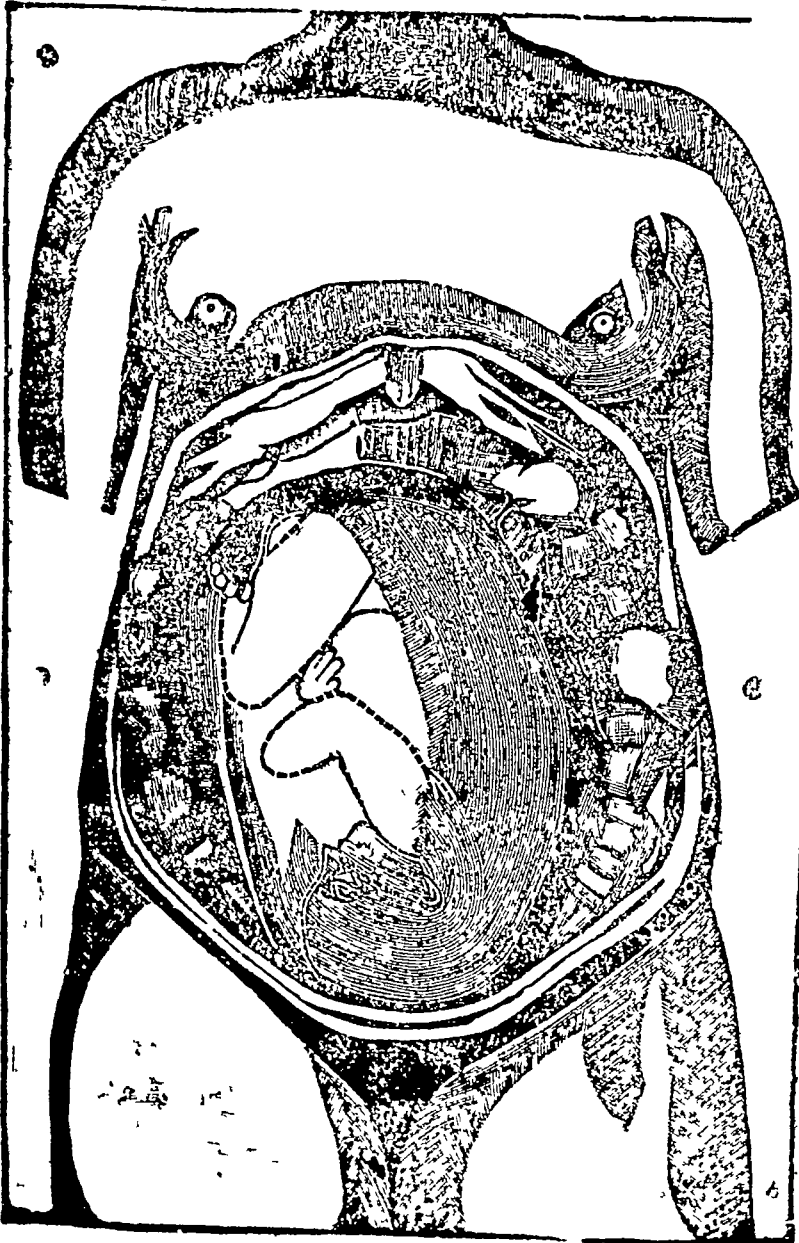
अपना तथा अपने पति का इलाज कराकर अथवा स्वयं इलाज करके ठीक कर लेना चाहिये और गर्भ रहजाने पर नियम से रहना चाहिये।

गर्भिणी के लिये शिक्षाएं।

वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि:—

अतिव्यवाय मायासं भारं प्रावरणं गुरु।
अकाल जागरस्वप्न कठिनोत्कट कासनम्॥
शोक क्रोधभयोद्वेगवेगश्रद्धाविधारणम्।
उपवासाध्व तीक्ष्णोष्ण गुरुविष्टम्भिभोजनम्॥
रक्त निवसनं श्वभ्रकूपेक्षां मद्यमामिषम्।
उत्तानशयन यच्च स्त्रियो नेच्छन्ति तत्त्यजेत॥
तथा रक्तस्रुतिं शुद्धिं वस्तिमामासतोऽष्टमात।
एभिर्गर्भः स्रवेदामः कुक्षौशुष्येन्म्रियेत वा॥

(अष्टांगहृदये शरीर स्थान)

इन ऊपर लिखे शास्त्र बचनों का अर्थ यह है कि मैथुन (प्रसंग) करने से, अधिक परिश्रम करने से, भारी बोझा उठाने से, भारी वस्त्र हर समय ओढ़े रहने से, रात में जागने से, दिन में सोने से, कठोर आसन पर व कुआसन पर बैठने से शोक, क्रोध, भय, उद्वेग, मलमूत्र आदि वेगों को रोकना बहुत खाना या निराहार रहना मार्ग चलना तीक्ष्ण गरम भारी भोजन करना लाल वस्त्र धारण करना खाई व कुए में झांकना, मद्य और मांस का सेवन करना, उतान (सीधी) सोना, बिना इच्छा के कोई काम करना, दस्तावर पदार्थ सेवन करना इन सब वस्तुओं को गर्भिणी स्त्री छोड़ देवे। स्त्री को इस प्रकार बहुत सावधान रहना चाहिये।

इन सब वर्जित कर्मों के करने से या तो गर्भस्राव होजाता है या गिर जाता है या कोख में ही गर्भ सूख जाता है अथवा मर जाता है। इस कारण सब सौभाग्यवती स्त्रियों को यह ऋषियों के उपदेशों पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है स्त्रियों का गर्भावस्था का समय बड़ा ही नाजुक होता है।

गर्भावस्था के प्राप्त होने पर प्रत्येक गर्भिणी स्त्री को खूब सावधान रहना चाहिये। उस समय जरा से कारणों से गर्भिणी को ऐसी अनेक प्रकार की मन सम्बन्धी और शरीर सम्बन्धी बीमारियाँ पैदा होजाती हैं कि जिनका भयंकर फल गर्भवती के सिवाय उसके उत्पन्न होनेवाली सन्तान को भी बहुत दिनों तक भोगना पड़ता है। क्योंकि माता के स्वास्थ्य के ही ऊपर बालक का स्वास्थ्य सब प्रकार निर्भर होता है। गर्भ की अवस्था में माता के मन की और शरीर की जैसी अवस्था होती है, ठीक उसी के अनुसार गर्भगत बालक की मानसिक और शारीरिक अवस्था होती है। माता के स्वास्थ्य के अनुसार बालक का जो स्वाभाविक स्वास्थ्य बनता है वह फिर अनेक प्रकार के यत्न करने से भी नहीं बदल सकता। अतएव गर्भवती को अपनी प्रिय सन्तान के हित के लिये अपने मानसिक और शारीरिक कार्यों की तरफ विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। साधारण अवस्था में स्वास्थ्य के ऊपर जितना ध्यान रखना उचित है, गर्भावस्था में उससे सौगुना अधिक ध्यान रखना चाहिये। गर्भिणी के चित्त में हमेशा यही ख्याल रहना चाहिये कि हमारे शरीर से एक दूसरे शरीर की उत्पत्ति होगी और हमारे मन से एक दूसरा मन उत्पन्न होगा इस लिये उसकी रक्षा के लिये हमें अपने स्वास्थ्य की सब प्रकार रक्षा करनी चाहिये ऐसा समझकर सदैव गर्भवती स्त्रियों को गर्भावस्था के नीचे लिखे उपयोगी नियम पालन करने चाहिये।

१—गर्भिणी स्त्रियों को सूर्य्योदय के पहिले प्रातःकाल उठकर अपने इष्टदेव का स्मरण, मल मूत्रादिक का त्याग, दंत धावन स्नान आदि नित्य प्रति के कार्य्य करने चाहिये।

२—शरीर को सदैव स्वच्छ रखना चाहिये। ओढ़ने पहरने और बिछाने के वस्त्र भी साफ़ सुथरे रखने चाहिये।

३—हमेशा हलका, शीघ्र पचने वाला, सादा और पौष्टिक भोजन करना चाहिये। अत्यन्त तीक्ष्ण और अत्यन्त गरम पदार्थ कभी नहीं खाने चाहिये। गरम मसाला, अचार, चटनी, सिर्का, लासुन, प्याज, तमाखू, चरस, काफी और शराब वगैरह समस्त मोदक पदार्थ एकदम छोड़ देने चाहिये। तथा अभक्ष्य पदार्थ मांस मछली वगैरह भी नहीं खाने चाहिये।

४—परिश्रम थोड़ा करना चाहिये, गर्भावस्था में अधिक परिश्रम करने से गर्भ गिरने की संभावना होसकती है। भारी बोझ को उठाना, ऊंचे नीचे स्थान में चढ़ना, उतरना, कूदना, दौड़ना, भागना जिससे शरीर को परिश्रम हो ऐसी सवारी में बैठकर जाना आना, कुए से जल खींचना, धान कूटना आदि अधिक परिश्रम के काम सब त्याग देने चाहिये।

५—सदैव शुद्ध और ताजी हवा सेवन करानी चाहिये। बन्द दूषित हवा गर्भिणी के लिये बहुत ही हानिकारक है। परन्तु इतनी शीतल हवा में भी नहीं रहना चाहिये जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो। सर्दी और गर्मी से अच्छे प्रकार बचाव रखना चाहिये।

६—सबेरे उठना और सोना गर्भिणी के लिये बहुत ही अच्छा है। दिन चढ़े तक सोते रहना और अधिक रात्रि तक जागते रहना दोनों ही बुरे हैं। प्रसंग करना सर्वथा त्याग देना चाहिये क्योंकि इससे गर्भ को विशेष हानि होती है।

७—मन को हमेशा प्रसन्न रखना चाहिये। जहांतक होसके मन में बुरी चिन्तायें या बुरी वासनायें उत्पन्न न होने देनी चाहिये। गर्भावस्था में प्रायः अनेक स्त्रियों के चित्त में चिन्ता भय और तरह २ की चंचलता उत्पन्न हो जाया करती है। सन्तान की कल्याण-कामना के लिये इन समस्त मानसिक विकारों को चित्त से दूर करना चाहिये, भगवान् पर भरोसा रख सदा निर्भय रहना चाहिये। वह करुणा-सागर सभी की रक्षा करते हैं, उनके ऊपर विश्वास रखने से मन में किसी प्रकार का भय नहीं होगा। मन में से सर्व प्रकार की आशंकाओं को दूर कर नित्यप्रति वही काम करने चाहिये कि जिससे मन सर्वदा प्रसन्न रहे, क्रोध, लोभ, शोक, आदि को भी मन में स्थान नहीं देना चाहिये और भी जितने मन को ख़राब करनेवाले विषय हैं उन सब को एकदम छोड़ देना चाहिये। निरन्तर चित्त में शांति रखनी चाहिये।

पति को भी उचित्त है कि जिस प्रकार स्त्री प्रसन्न रहे उसी प्रकार उसके साथ प्रतिदिन बर्ताव करे। गर्भ धारण करने से पहिले स्त्री से जितना प्यार करता है इस अवस्था में उससे सौगुना अधिक करना चाहिये। जिस वस्तु की इच्छा प्रकट करे वही वस्तु अथवा उसी तरह की दूसरी वस्तु अपनी सामर्थ्यानुसार लाकर देनी चाहिये।

कदापि उसका मनोरथ भंग नहीं करना चाहिये। क्योंकि मन की वृत्तियों को अधिक दबाना या रोकना भी अन्याय है। मन की वृत्तियों को अधिक दबाकर रखने से गर्भिणी का मन दुर्बल होजाता है और फिर उससे संतान भी दुर्बल मन वाली होती है।

इन गर्भावस्था के उपयोगी नियमों को विधिपूर्वक पालन करने से गर्भिणी को कोई भयंकर रोग उत्पन्न नहीं होता और गर्भावस्था के स्वाभाविक वमनादि रोग भी उतने दुःखदायक नहीं होते तथा गर्भ की अच्छे प्रकार पुष्टि होकर हृष्ट पुष्ट, बलिष्ट और उत्तम गुणोंवाली संतान उत्पन्न होती है.

स्त्रियों का प्रसवकाल।

स्त्रियों का प्रसवकाल बड़ा ही कठिन समय होता है इसमें जीवन मरण का प्रश्न सन्मुख आजाता है तनिक भी असावधानी हुई कि जीवन पर्यन्त के लिये एक न एक रोग घेर लेते हैं प्रसूत का भयानक रोग जीवन-सुख को नष्ट करदेता है लाख में हजारों स्त्रियां प्रसूत रोग के कारण काल का कलेवा बनती हैं। कोई सप्ताह खाली नहीं जाता जिसमें मेरे पास प्रसूत रोग की असाध्य रोगी स्त्रियां दस वीस न आती हों जो इलाज करने योग्य नहीं हैं उनको जवाब देना पड़ता है क्योंकि बहुतों को प्रसूत रोग से ही जीर्णज्वर क्षय जिसे तपेदिक कहते हैं होजाता है जब यह रोग अधिक बढ़ जाता है तब फिर आराम होना कठिन होजाता है।

अपनी सामर्थ्य भर मैं असाध्य रोगी की भी चिकित्सा करती ही हूं जहांतक होसकता है कठिन परिश्रम कर उसे आरोग्य करने का उद्योग करती हूं ईश्वर की कृपा से कुछ रोग असाध्य होने पर भी आराम होजाते हैं और कुछ को नहीं भी होता बहुत सी प्रसूतवाली रोगी स्त्रियां इतनी असाध्य आती हैं कि जिनका खाना पीना बिलकुल छूट गया खाने से अरुचि होगई, प्रदर रातदिन बहता रहता है, शरीर में मांस रहा ही नहीं, रक्त सूखकर चमड़ा हड्डी से लग गया है, बोलने तक की सामर्थ्य नहीं, दो आदमी उठाकर बैठालते हैं तब बैठ सकती हैं, शरीर की पीड़ा से रातदिन व्याकुल हैं फिर भला आराम होना कितना कठिन है।

मूर्खा दाइयों से हानि।

प्रसवकाल के समय मूर्खा दाइयों से भी स्त्रियों को बड़ी भारी हानि पहुंच रही है मूर्खा दाइयों की ही असावधानी व मूर्खता से सोवड़ में ही स्त्रियों को अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं। हमारे देश की दाइयों को किसी प्रकार की शिक्षा तो दी नहीं जाती, किसी नियम से तो वे कार्य करतीं नहीं, अपनी ही मर्ज़ी पर काम करना उनका नियम है।

नव-प्रसूता स्त्रियां।

नवबधुओं को भी प्रसव का कुछ भी ज्ञान नहीं होता उनके लिये भी कोई उपयोगी पुस्तक अभीतक ऐसी नहीं बनी थी कि जिसे पढ़ सुनकर नवबधुयें गर्भिणी होने पर नियम-पूर्वक चलकर निर्विघ्नता से प्रसवकाल व्यतीत करसकें, वे कुछ भी नहीं जानतीं इसी कारण उन्हें अनेक प्रकार के रोग घेर लेते हैं।

सब नवबधुओं को मेरी बनाई हुई "गर्भरक्षा विधान-गर्भविज्ञान" पुस्तक मंगाकर पढ़नी और सुननी चाहिये। जिससे उन्हें गर्भावस्था, तथा प्रसव के समय किसी प्रकार के रोग उत्पन्न न हों।

प्रसव के समय इस प्रकार का कोई उपाय नहीं करना चाहिये, कि जिससे बालक समय के पहिले ही होजावे, बहुत सी मूर्खा दाइयां प्रसव के समय गर्भवती से कांखने (ज़ोर करने) को कहती हैं जिससे बालक जल्द प्रसव होजावे और भी कई प्रकार के उद्योग शीघ्र प्रसव होने के करती हैं इस प्रकार से कभी कभी जच्चा और बच्चा दोनों को बड़ी हानि पहुंचती है।

दाई को उचित है कि प्रसव के समय बड़ी सावधानी रक्खे, प्राकृतिक नियम से प्रसव होने दे, जब बच्चे का शिर प्रसवद्वार के बाहर आवे तब बड़ी सावधानी से चित्र के अनुसार सम्हाल लेवे।

इस विषय में वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि एक पल भी पहिले जल्दी प्रसव होने का उद्योग न करै, दोनों हाथों से प्रसव का सिर इस प्रकार पकड़े रहे कि बालक के ज़ोर करने से प्रसूता के गर्भाशय की नसों में खिचाव न हो। एक पल भी पहिले होने से जच्चा और

बच्चा दोनों को हानि पहुंचती है, जच्चा को प्रसूतरोग और अनेक प्रकार के दोष गर्भाशय में उत्पन्न होजाते हैं एक पल भी पहिले खींचकर निकालने से बच्चे को भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होजाते हैं।

प्रसव-समय दाई का कर्तव्य चित्र नं० ६६
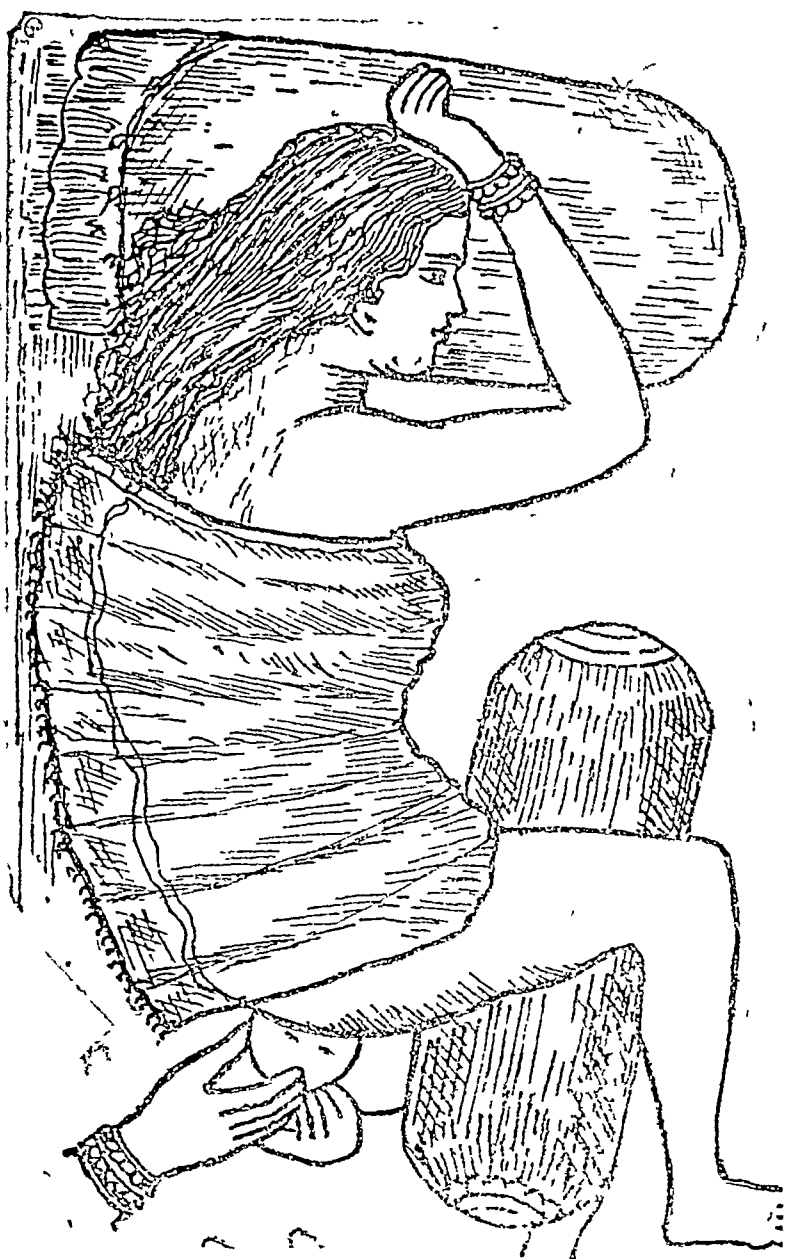
मूर्खा दाइयों की असावधानी से स्त्रियों को बड़ी भारी हानि पहुंचती है, जच्चा और बच्चा दोनों रोगी होजाते हैं क्योंकि

बहुयें जिनको पहिली वार ही प्रसव का अवसर आया है वे तो कुछ जानती नहीं इसलिये मूर्खा दाइयों से और भी अधिक हानि पहुंच रही है । प्रसव-समय चतुर दाई रखना चाहिये ।

मेरे पास सैकड़ों स्त्रियां ऐसी आया करती हैं कि जिनके प्रथमबार के प्रसव में मूर्खा दाइयों की असावधानी से गर्भाशय में कुछ ऐसी ख़राबी आगई है कि प्रथम प्रसव के बाद फिर कभी गर्भ तक नहीं रहा सदैव के लिये वे बन्ध्या होगईं और किसी किसी का पहिला बालक भी नहीं रहा वे बेचारी मूर्खा दाइयों की अज्ञानता व असावधानी से सदैव के लिये सन्तानहीन होगईं ।

मेरे पास जो आती हैं यदि उनकी अवस्था सन्तान होने योग्य हुई तो इलाज करदिया जाता है सन्तान होने लगती है, जिनकी अवस्था अधिक होगई है उनको तो आयुपर्यन्त बन्ध्या ही रहना पड़ता है । इस प्रकार मूर्खा दाइयों की असावधानी से असंख्य स्त्रियाँ बन्ध्या होगई हैं और बहुतों के एक ही बालक होकर फिर कभी गर्भ नहीं रहा ।

बहुतसी स्त्रियां गर्भावस्था के समय अनियम आहार विहार से तथा अनियम गर्भाधान क्रिया से मूढ़गर्भ के कारण आयुपर्यन्त के लिये रोगी होजाती हैं, बहुतेरी प्रसव के समय ही मरजाती हैं ।

दाइयों को आवश्यक सूचना ।

प्रकृति के नियमानुसार बच्चा पैदा होना क्या मनुष्य क्या पशु पक्षी सबके ही लिये एकसा है इस कारण दाइयों को समय के पहिले अपने किसी उपाय से बालक जल्द पैदा कराने का उद्योग नहीं करना चाहिये । प्रकृति के नियमानुसार बिना किसी उद्योग के जिनके बालक उत्पन्न होते हैं वे स्त्रियां किसी प्रकार के रोग में नहीं फंसतीं ।

प्रसव के समय पीड़ा होना यह तो प्रकृति का नियम है इस कारण प्रसव-समय की पीड़ा की कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिये और न कुछ उपाय पीड़ा शान्त करने का ही करना चाहिये । प्रसव के समय किसी प्रकार की चिन्ता या घबड़ाहट मन में नहीं लाना चाहिये । गर्भिणी की माता अथवा अन्य ऐसी घरू सम्बन्धी स्त्रियां पास नहीं रहनी चाहिये—जिनको गर्भिणी के कष्ट को देखकर चिन्ता अथवा घबड़ाहट उत्पन्न हो ।

गर्भवती नवबधुओं को आवश्यक चेतावनी।

नवबधुओं को जब पहिले पहिल गर्भ रहता है तब उन्हें उसके नियमों की कुछ भी खबर नहीं होती यहांतक कि बालक होने के समय तक उन्हें किसी नियम का ज्ञान नहीं होता। इस कारण यहां नवबधुओं के लिये गर्भावस्था और प्रसव-समय का ज्ञान कराने के लिये कुछ लक्षण प्रकाशित किये जाते हैं।

बालक उत्पन्न होने के दो एक दिन पहिले गर्भवती स्त्री को अपना स्वास्थ्य पहिले की अपेक्षा कुछ अधिक अच्छा जान पड़ता है जैसा आराम इस समय मालूम होता है वैसा आराम गर्भधारण के समय से लेकर गर्भावस्था में किसी समय भी नहीं मिलता प्रतीत होता है गर्भ का बालक नीचे को उतर आने के कारण उस समय गर्भिणी के शरीर में हलकापन और मन में प्रसन्नता होती है तथा वह पहिले की अपेक्षा अच्छे प्रकार श्वास ले सकती है।

घर के काम काज में भी उसे कुछ कष्ट मालूम नहीं होता। जो स्त्रियां घर के काम काज के परिश्रम में गर्भवती होने पर भी लगी रहती हैं उनको कुछ भी कष्ट नहीं होता।

नियम पूर्वक न चलने से किसी २ स्त्री को प्रसव-समय में प्राणान्त होने तक का कष्ट होता है और प्रायः मर भी जाती हैं किसी किसी के पेट से बालक काटकर निकाला जाता है। जो स्त्रियां गर्भावस्था में आहार विहार का नियम ठीक नहीं रखतीं उनमें से कभी २ किसी को प्रसव का समय ज्यों ज्यों निकट आता जाता है उन्हें प्रसव का समय बड़ा ही भयावना मालूम होने लगता है।

प्रसव का समय निकट आजाने से गर्भ का बालक नीचे उतर आता है उस समय गर्भ का सारा बोझा मूत्राशय के ऊपर आपड़ता है जिससे उस स्त्री को पेशाब की इच्छा बार बार होती रहती है अज्ञानतावश उसे वे बीमारी समझती हैं। यह शिकायत सबको नहीं होती किसी किसी को होती है और किसी को कुछ दिन आगे ही से ऐसी दशा होजाती है किसी को प्रसव के कुछ देर पहिले से होती है और किसी को कोई शिकायत नहीं होती है। जब गर्भ नीचे उतर आता है तब प्रसव भी शीघ्र होता है यह लक्षण बालक उत्पन्न होने के निकट आजाने का है।

जिन स्त्रियों को गर्भावस्था में उलटी होती है उनको बालक उत्पन्न होने के समय विशेष कष्ट नहीं होता यदि गर्भवती स्त्री को उलटी होती हो उसे किसी प्रकार का रोग नहीं समझना चाहिये उस की औषधि करके बन्द नहीं कराना चाहिये, उलटी बन्द कराने से गर्भ और गर्भिणी दोनों को हानि पहुंचती है। मेरे पास ऐसी गर्भवती स्त्रियां तथा ऐसी स्त्रियों के पत्र भी औषधि के लिये आया करते हैं। अनजान दूकानदार वैद्य या वैद्या अपने फ़ायदे के लिये ऐसी औषधियां बेचते हैं परन्तु गर्भ और गर्भिणी की हानि को नहीं विचारते। यदि गर्भिणी को उलटी अधिक हो तो उलटी को शान्त रखनेवाले खाने पीने के पदार्थों में हेरफेर करते रहना चाहिये। हलका आहार देना चाहिये। गरिष्ठ देरी में पचनेवाले बासी, बादी, अधिक पित्तकारक नहीं खाने चाहिये।

अनियम प्रसंग से तथा गर्भावस्था में आहार विहार का नियम ठीक न रखने से

मूढ़गर्भों की उत्पत्ति।

सब नवबधुओं के हितार्थ तथा सब गर्भवतियों के उपकारार्थ मूढ़ गर्भों के विषय में यहां कुछ लिखना उचित समझकर चित्रों सहित प्रकाशित करती हूं।
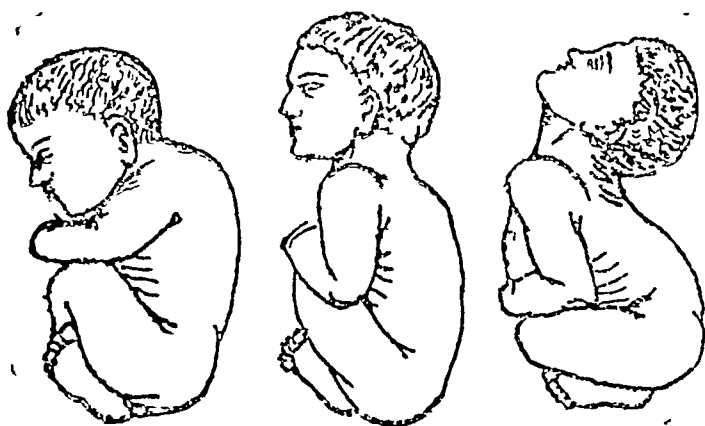
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ३७

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ३८
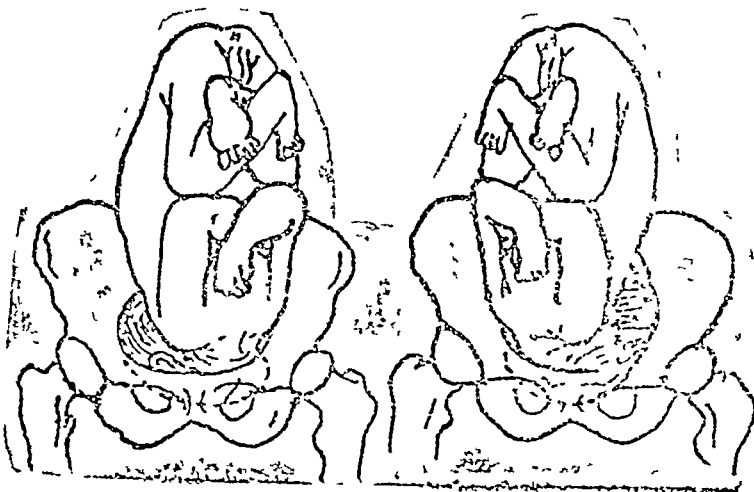
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ३९
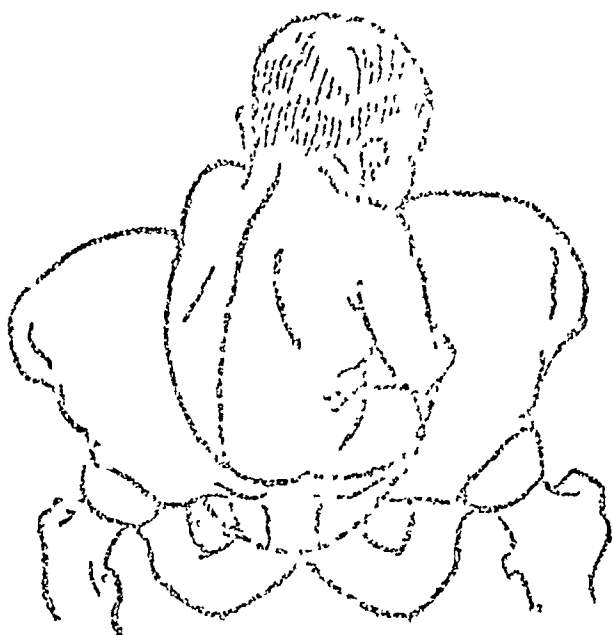
गर्भ की स्थिति चित्र नं० ४०

गर्भ की स्थिति चित्र नं० ४१
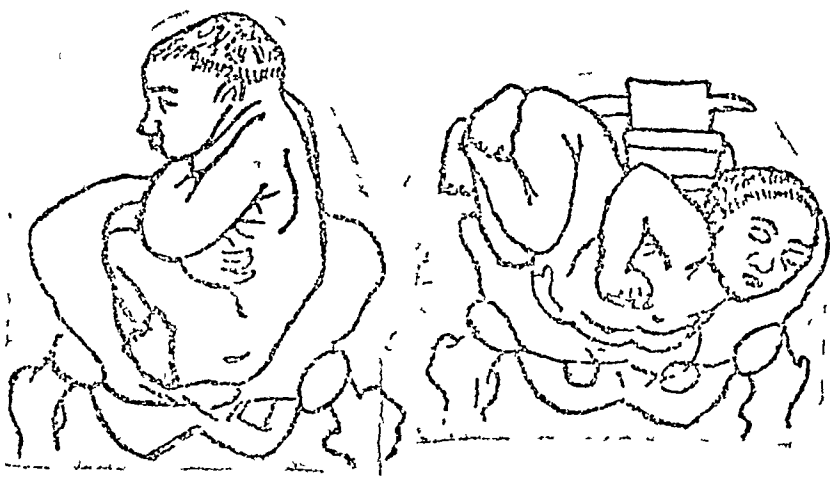
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४२
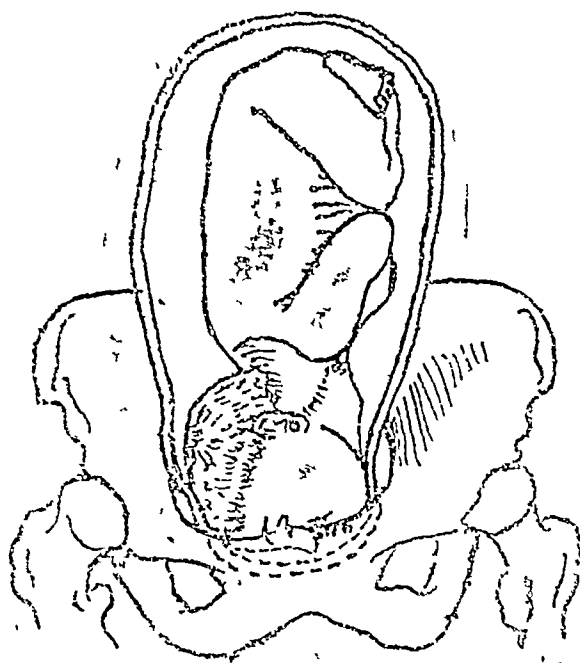
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४३
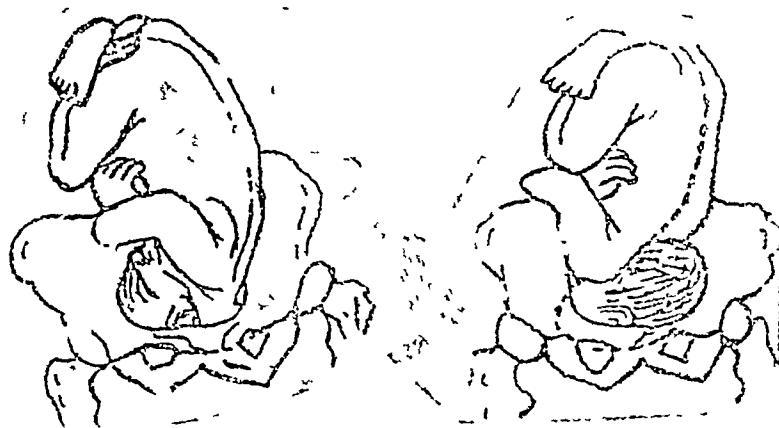
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४४
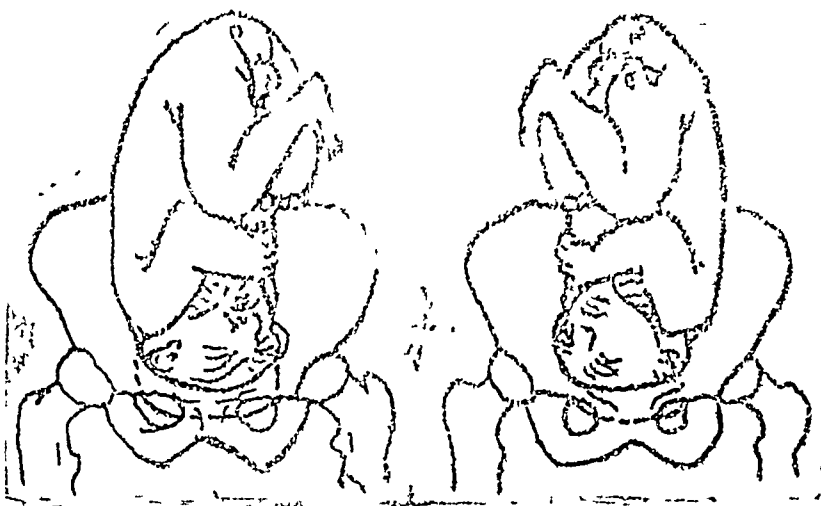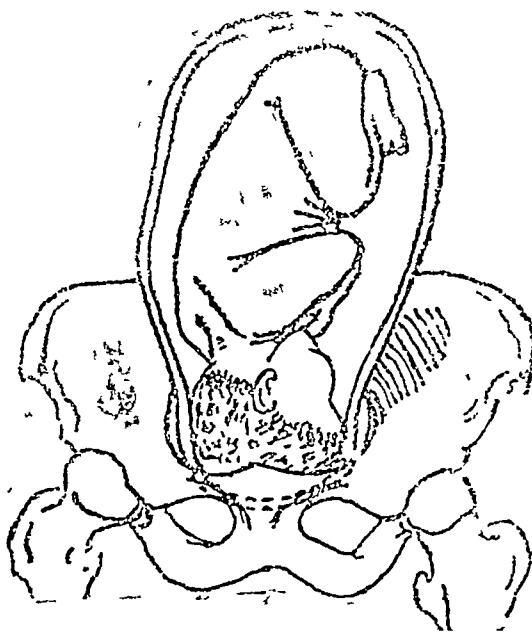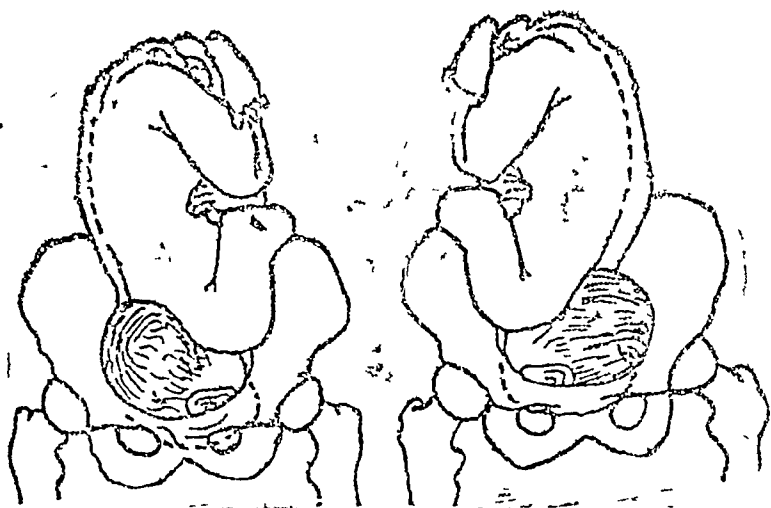
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४७

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४८
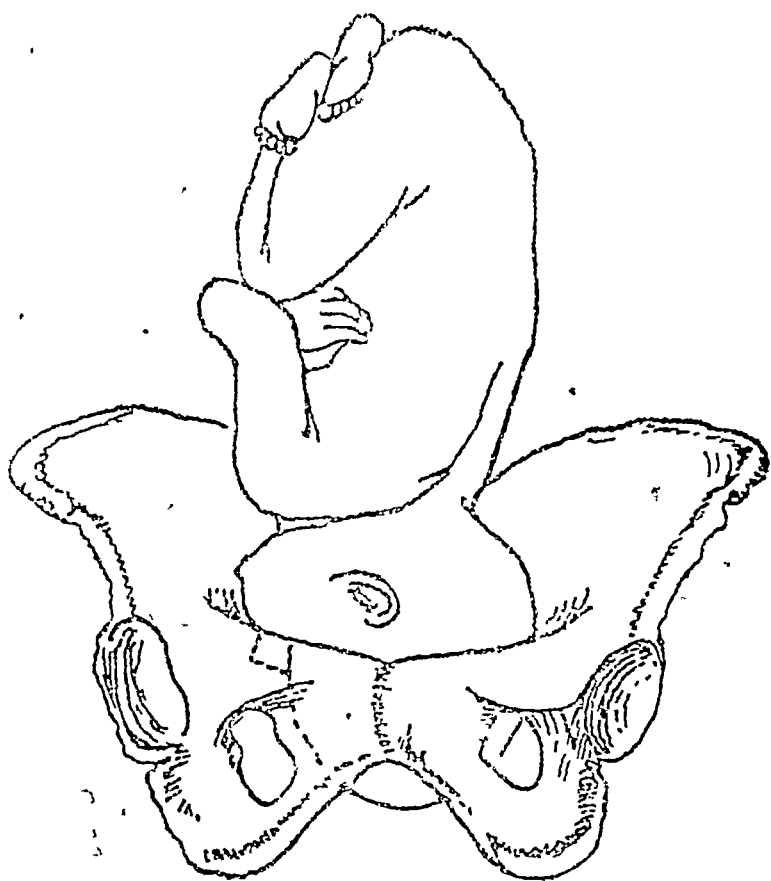
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ४९

"देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में गर्भ और मूढ़गर्भों के विषय में विस्तार-पूर्वक समझाया जावेगा; पुस्तक अधिक बढ़ जाने के कारण इस भाग में नहीं लिखा गया।

गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से नियमपूर्वक रहना चाहिये, गर्भ रहने के पहिले ही गर्भाधान क्रिया नियमपूर्वक होनी चाहिये।

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५०
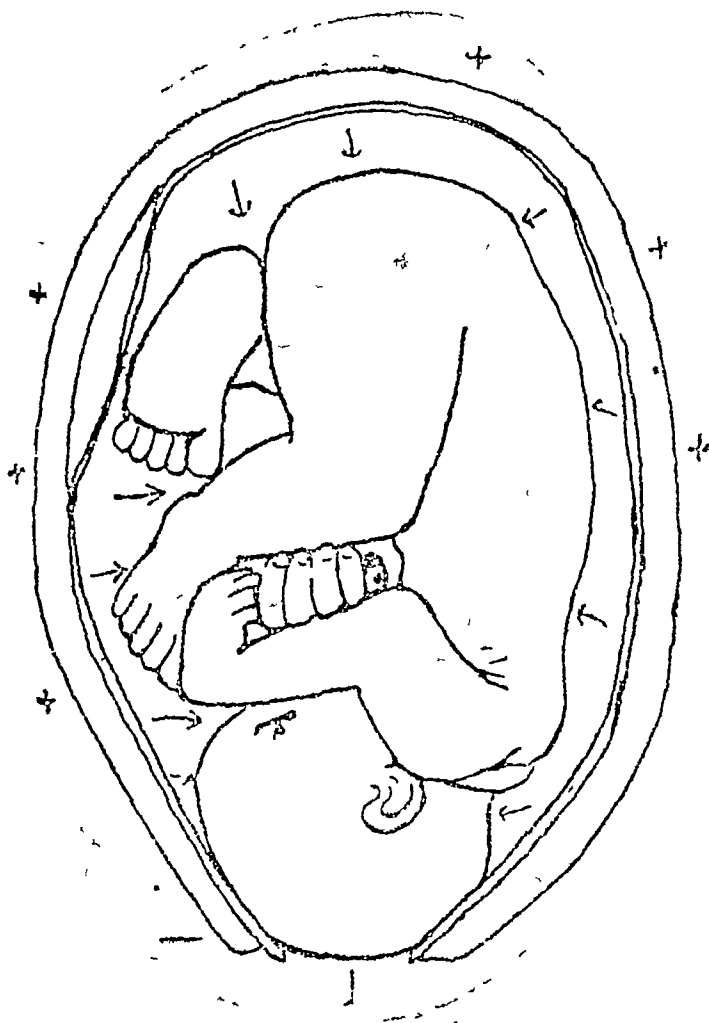
ज़रूरी बात।

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५१

चित्र नं० ५२

इस भाग में गर्भ तथा मूढ़गर्भों के चित्र दिये गये हैं इन सबके देखने से स्त्रियों को मालूम होगा कि गर्भाशय में बालक किस प्रकार रहता है और गर्भवती के अनियम से बालक किस प्रकार उलटा सीधा टेढ़ा तिरछा होजाता है जिससे गर्भवती को मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५३
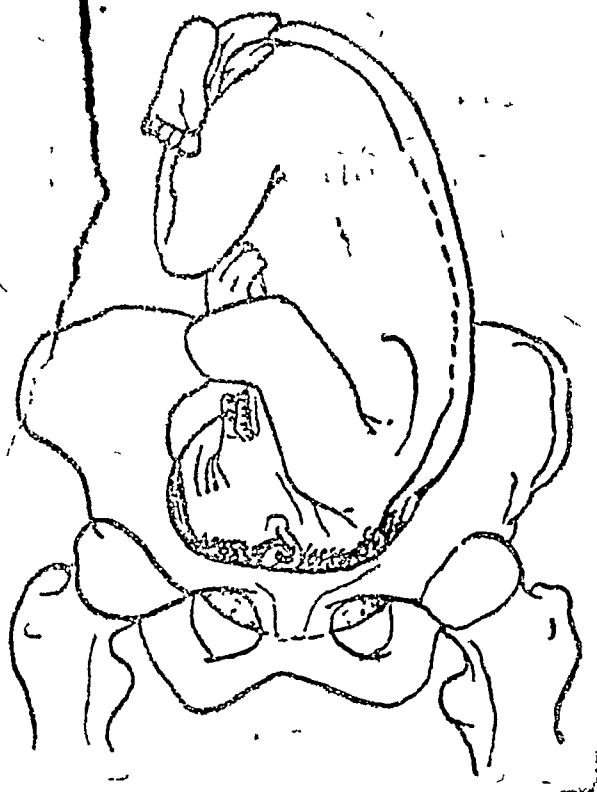
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५४
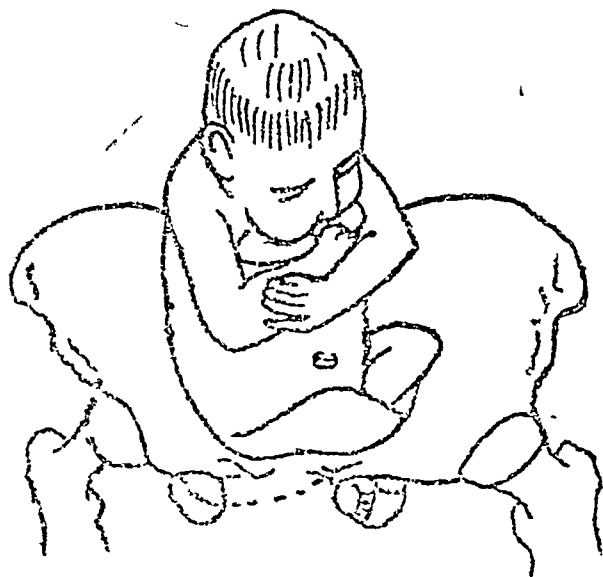
गर्भवती स्त्री के अनियम से प्रायः गर्भ की स्थिति बदल जाती है, गर्भ का हाथ पैर शिर अपने स्थान से हट जाता है उस समय गर्भवती को बड़ा कष्ट होता है यदि इस प्रकार गर्भ की स्थिति होजावै और गर्भवती स्त्री को कष्ट हो तो उसी समय चतुर दाई को बुलाकर ठीक कराना चाहिये ।

धात्र शिक्षा चित्र नं० ५५
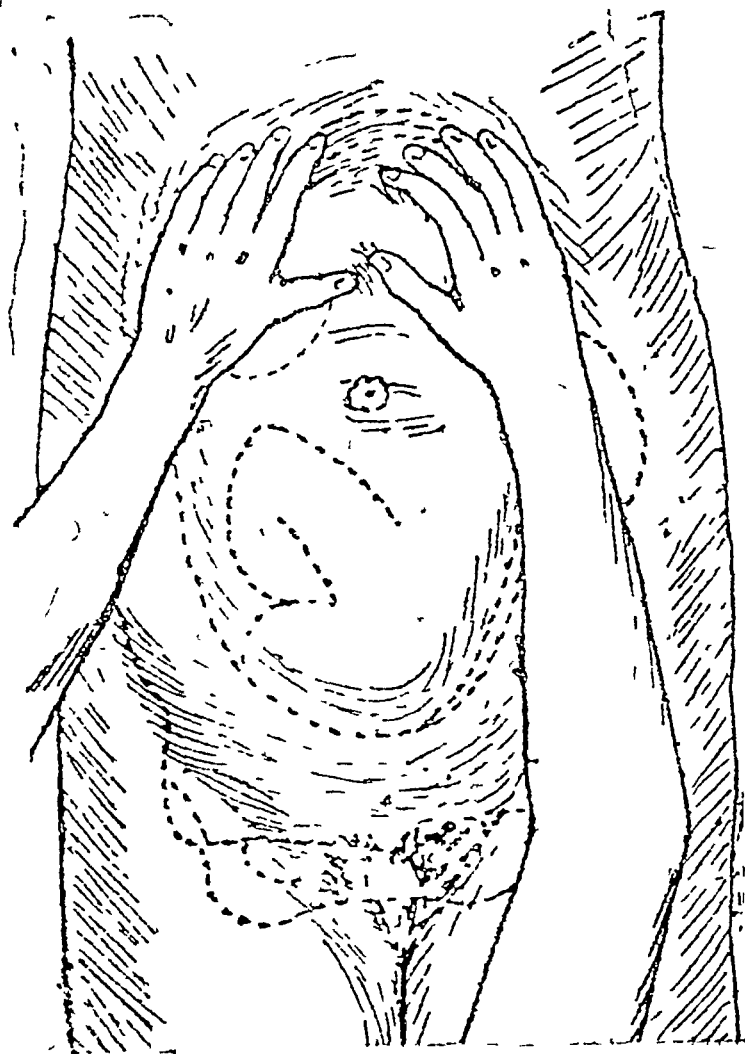
नीचे दिये हुए चित्र के अनुसार दाई को चाहिये अथवा घर की कोई चतुर स्त्री हाथों में तैल लगाकर बड़ी सावधानी से गर्भ की स्थिति समझकर गर्भ को ठीक करे बहुत धीरे धीरे दोनों हाथों से गर्भ को सीधा करदेवे।

गर्भ की स्थिति चित्र नं० ५६
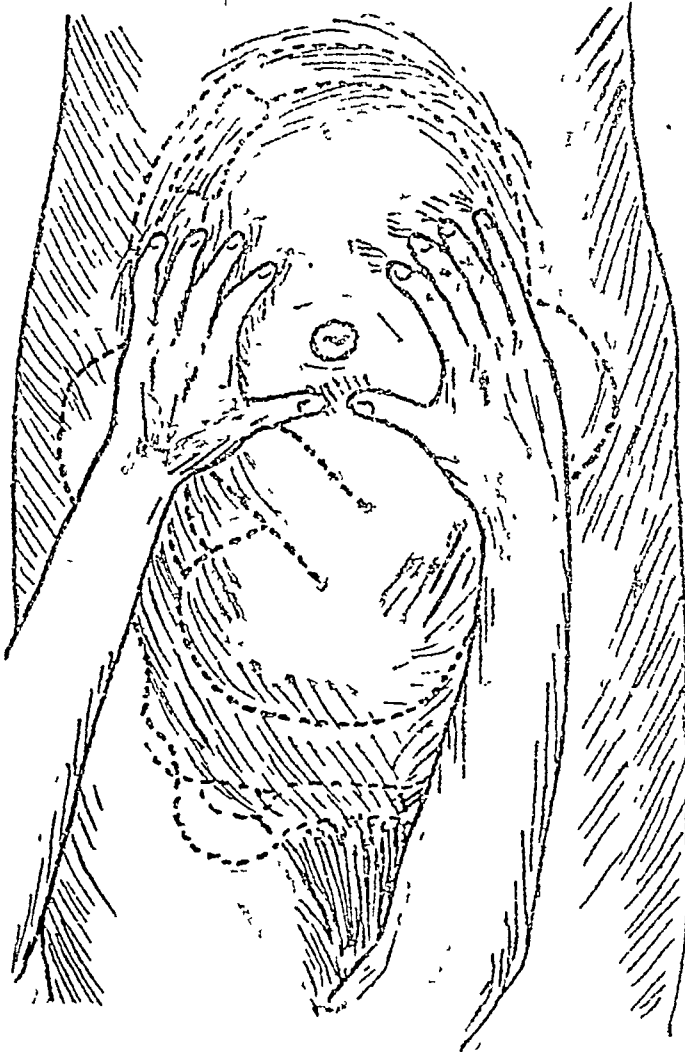
गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५
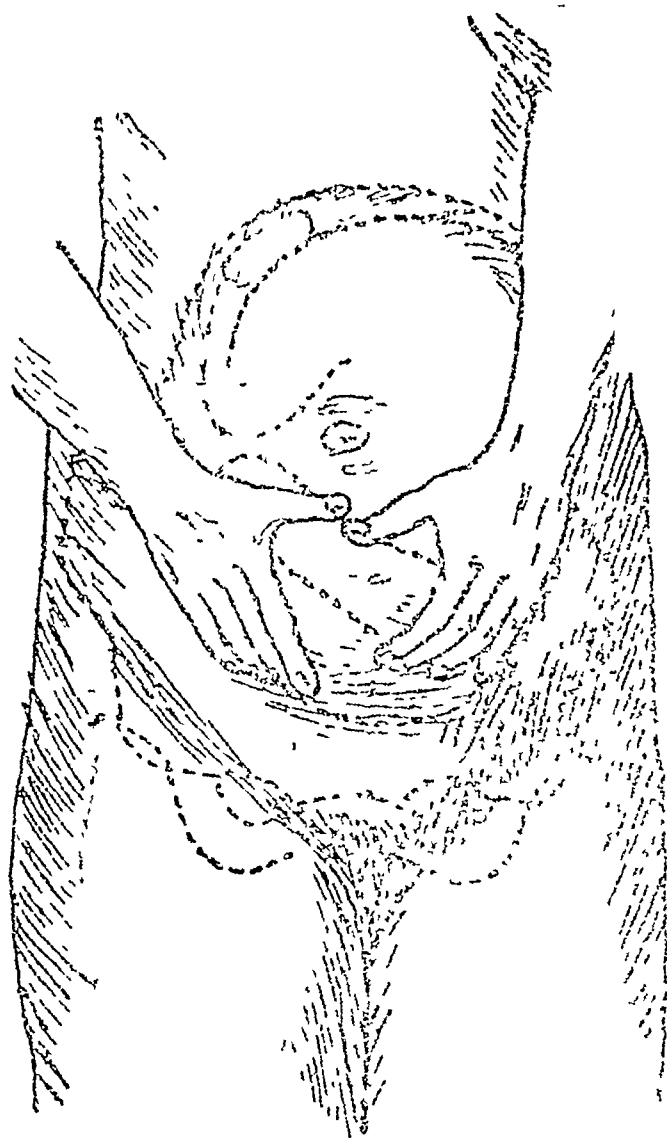
आवश्यक सूचना ।

धात्रीशिक्षा के विषय में विस्तारपूर्वक "धात्री-विद्या" नामक पुस्तक में देखिये। "धात्रीविद्या" सचित्र का मूल्य ॥) है ।

गर्भों की स्थिति चित्र नं० ५८
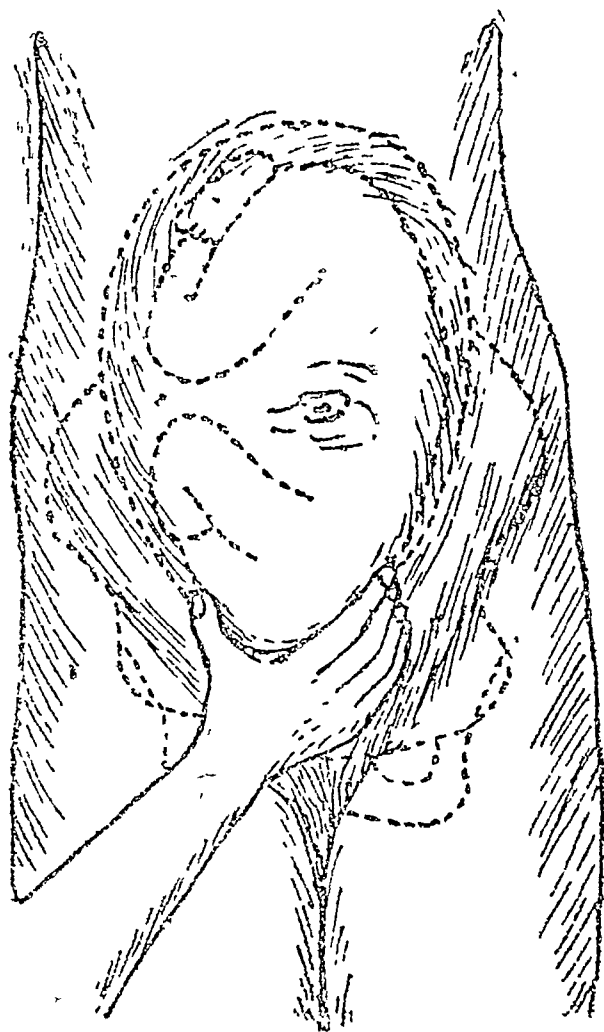
यदि गर्भवती को असावधानी से गर्भ नीचे को उतर आया हो तो उसे ऊपर के दिये हुए चित्र के अनुसार ठीक करना चाहिये इस विषय में चतुर दाई अथवा घर की ही कोई चतुर स्त्री ठीक कर सकती है जिसे इस विषय का पूरा अनुभव हो ।

मूढ़ गर्भों की स्थिति।

गर्भिणी की असावधानी तथा पति पत्नी की अज्ञानता से मूढ़गर्भों की उत्पत्ति होती है।

मूढ़ गर्भों के विषय में पीछे भी लिख चुकी हूं कि गर्भिणी की असावधानी, अनियम से वायु गर्भ को (आड़ा, तिरछा, टेढ़ा, उलटा) करदेती है जिसके कारण गर्भिणी स्त्री को बड़ा कष्ट होता है योनि तथा पेट में पीड़ा, कमर में पीड़ा इत्यादि कष्ट होता है।

कोई मूढ़ गर्भ हाथ या पैरों से तथा मस्तक से योनि में आकर अटक जाता है, कभी कभी एकही में जुड़े हुए दो बालक उत्पन्न होते हैं पति पत्नी की अज्ञानता से कभी कभी गर्भ में एकसाथ दो बालक आजाते हैं इससे भी कभी कभी प्रसव के समय स्त्री का जीवन समाप्त होजाता है यह बात नीचे के चित्रों से भलीभांति मालूम होगी।

चित्र नं० ५९
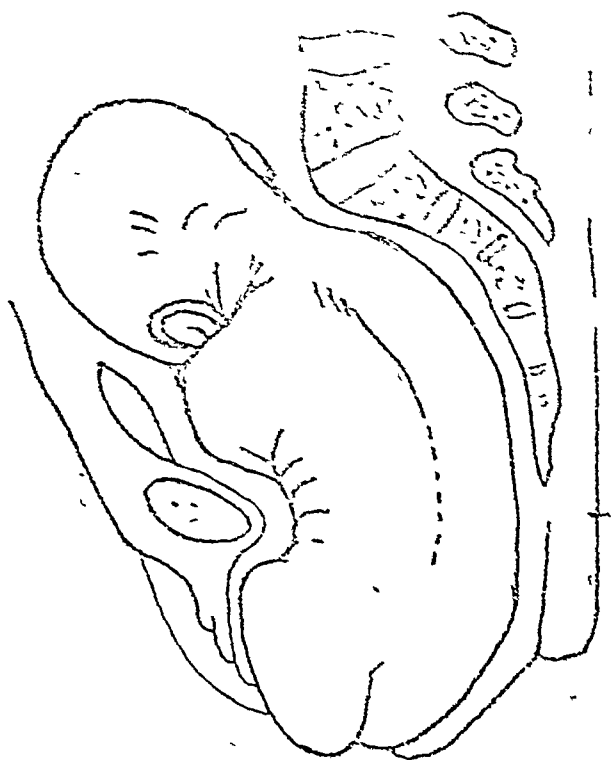
मूढ़ गर्भ चित्र नं० १०
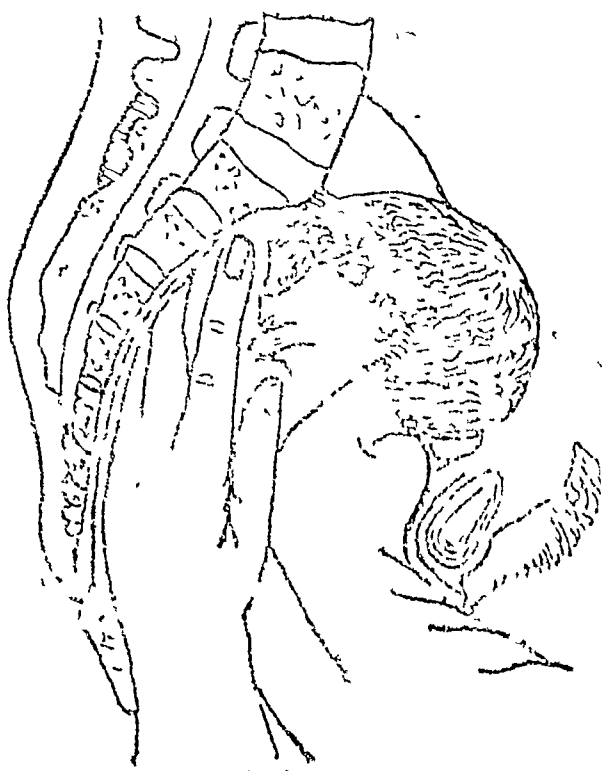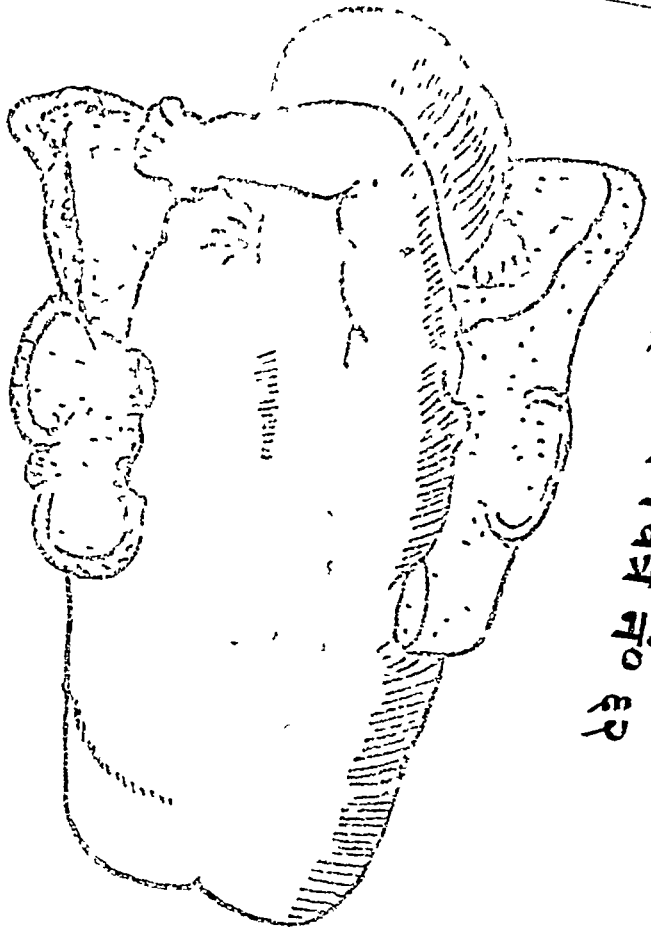
मूढ़ गर्भ चित्र नं० ११

मूढ़ गर्भ चित्र नं० ६२

मूढ़ गर्भ चित्र नं० ६३
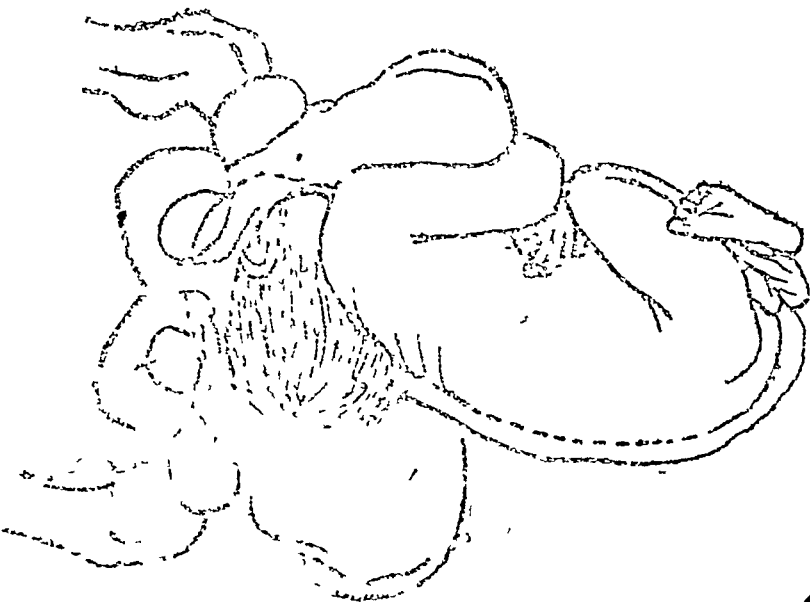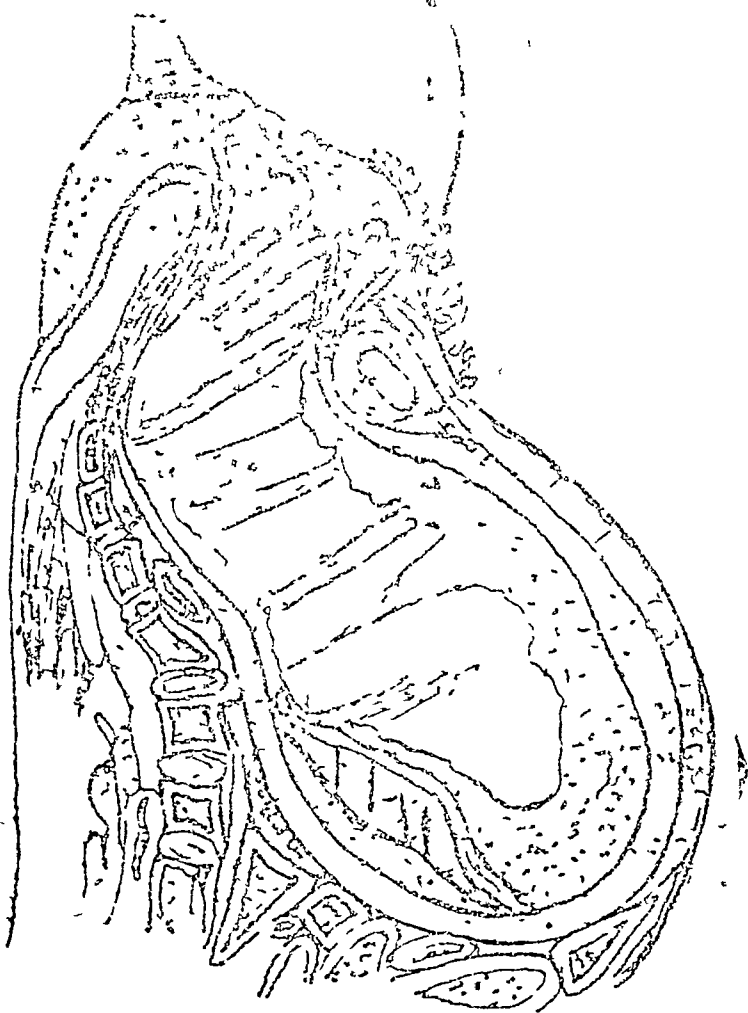
मूढ गर्भ चित्र नं० ६४

मूढ गर्भ चित्र नं० ६५

मूढ़ गर्भ चित्र नं० ६६

मूढ़ गर्भ चित्र नं० ६७

मूढ़गर्भ चित्र नं० ६८
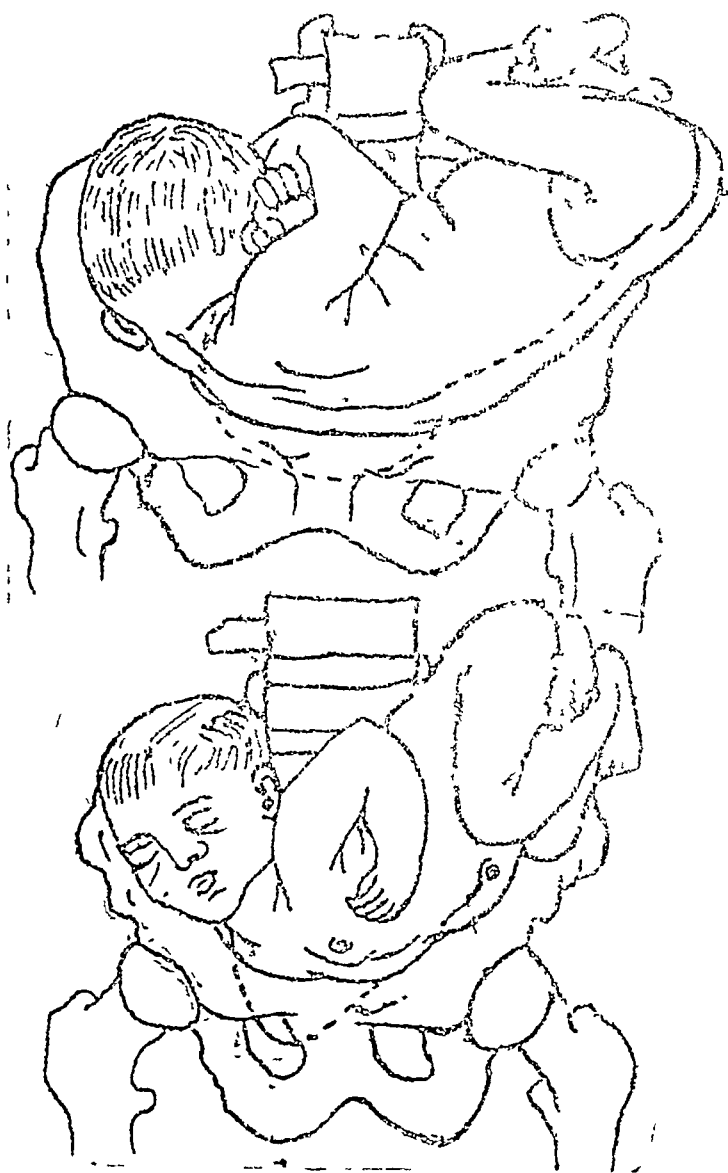
मूढ़गर्भ चित्र नं० ६९

मूढ़गर्भ चित्र नं० ७०

"देवी अनुभव प्रकाश" दूसरा भाग

इस पुस्तक के दूसरे भाग में और भी अनेक प्रकार के वैद्यक विषय अत्यन्त उपयोगी चित्रों सहित लिखे जावेंगे जिनसे स्त्रियों को वैद्यक-विद्या में विशेष ज्ञान प्राप्त होगा।

मूढगर्भ चित्र नं० ७१

मूढगर्भ चित्र नं० ७२

मूढगर्भ चित्र नं० ७३

मूढगर्भ तथा एकसाथ दो बालकों की उत्पत्ति चित्र नं० ७४-७५-७६-७७-७८
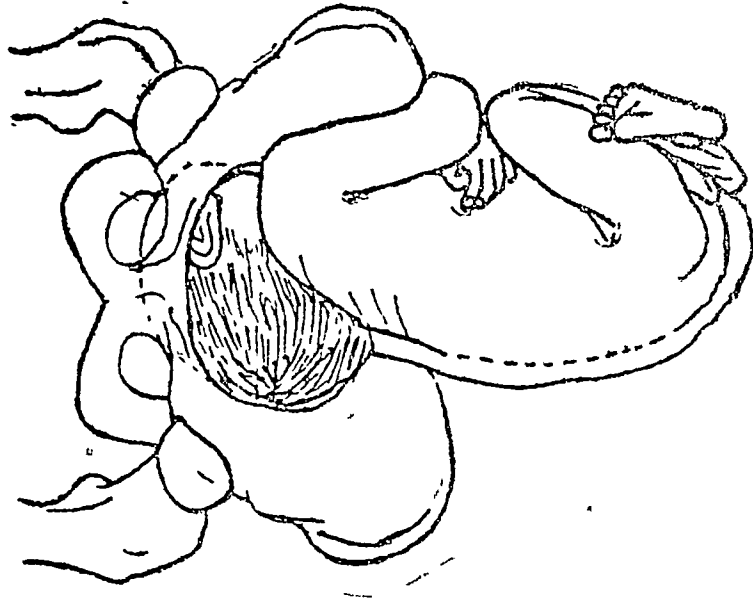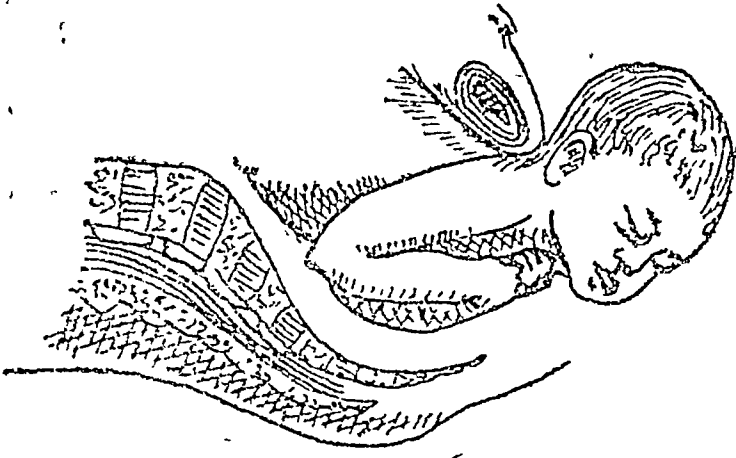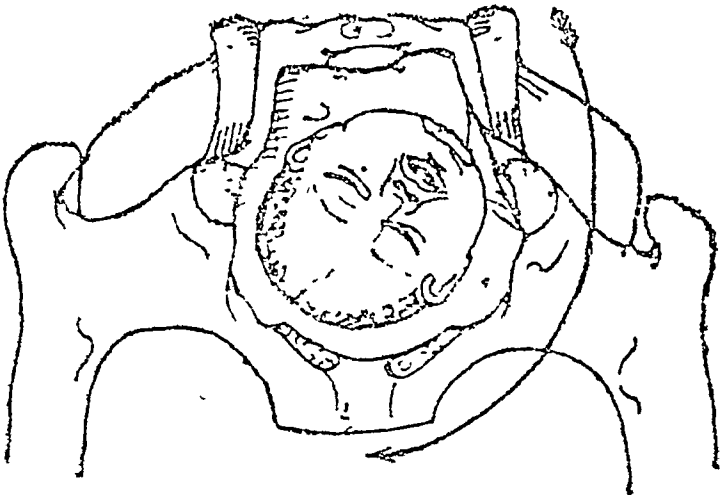
S D. PANT
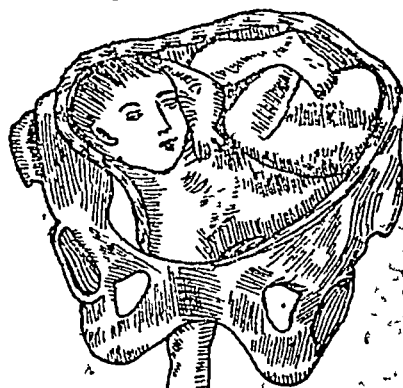
मूढ़गर्भों के नाम, लक्षण इसी पुस्तक के २५७ पृष्ठ में देखिये। यह जो ऊपर मूढ़गर्भों के चित्र दिये गये हैं इनमें कोई गर्भ मस्तक से योनिद्वार को आकर रोकदेता है, कोई पेट से आकर योनिद्वार को रोकदेता है, कोई अपने शरीर से टेढ़ा होकर योनिद्वार में आकर योनिद्वार को बन्द करदेता है, कोई कुबड़ा होकर योनिद्वार में आकर अटक जाता है, कोई एक हाथ योनिद्वार में निकालकर अपने कंधे से योनिद्वार को रोकदेता है, कोई मूढ़गर्भ दोनों हाथों को योनि-मार्ग में निकालकर योनिमार्ग को बन्द करदेता है, कोई अनेक प्रकार से तिरछा होकर योनिमार्ग को रोकदेता है, कोई मुख को टेढ़ा करके योनिद्वार में आकर अटक जाता है, कोई पसलियों के बल आकर योनि को बन्द करदेता है इस प्रकार से मूढ़गर्भ प्रसव के समय स्त्री को बड़ा कष्ट देते हैं। इस प्रकार वैद्यकशास्त्र में आठ भेद मूढ़गर्भों के वर्णन किये हैं। यदि मूढ़गर्भों के प्रसव समय में चतुर दाई हो तो स्त्री की जीवनरक्षा हासकती है यदि दाई मूर्खा हुई तो जच्चा और बच्चा दोनों के जीवन में सन्देह रहता है। इस विषय को विस्तार-पूर्वक "धातृशिक्षा जच्चा और बच्चा" नामक पुस्तक में लिखूंगी; मूढ़गर्भों से स्त्री की रक्षा मूढ़गर्भ का उपाय तथा चिकित्सा भी विस्तार-पूर्वक लिखी जावैगी।

नव-वधुओं तथा गर्भवती स्त्रियों को आवश्यक सूचना।

गर्भवती स्त्रियों के लिये आरोग्य और उत्तम सन्तान होने के नियम पीछे लिखे गये हैं यहां कुछ विशेष उपयोगी बातें लिखी जाती हैं वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि.—

आहाराचार चेष्टाभिर्यादृशीभिः समन्वितौ।
स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुत्रोपितादृशः॥

इसका अर्थ यह होता है कि—माता पिता गर्भाधान क्रिया (प्रसंग) के समय जैसे आचार आहार और चेष्टायुक्त होते हैं उसी प्रकार के गुण अवगुण की प्रकृतिवाली सन्तान उत्पन्न होती है। यह बात तो सभी स्त्री पुरुष जानते हैं कि किसी स्त्री के चार बालक हैं उनमें से कोई तो बड़ा निर्लज्ज और मूर्ख अनेक प्रकार के अवगुणों वाला और कोई विद्वान् बुद्धिवान् सुन्दर सुशील और अनेक प्रकार के गुणो से युक्त होता है। इसका ऊपर लिखा ही कारण है।

वैद्यकशास्त्र में ऋषियों की आज्ञा है कि हृष्ट पुष्ट और निरोग पति पत्नी केवल सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा से ही नियमपूर्वक गर्भाधान क्रिया करें, दो में से एक भी किसी प्रकार से रोगी हो अथवा प्रसंग की प्रबल इच्छा न हो और सन्तान उत्पन्न करने की आवश्यकता न हो तो गर्भाधान क्रिया नहीं करनी चाहिये।

परन्तु इस नियम को कोई नहीं मानता इसी कारण सन्तान ठीक नहीं होती। वैद्यकशास्त्र बतलाता है:—

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वा दासेक्यः पुरुषो भवेत्।
सशुक्रं प्राश्वलभते ध्वजोच्छ्रायम संशयम्॥

अर्थ यह है कि—गर्भाधान के समय माता पिता के अल्पवीर्य होने से जो गर्भ रहता है उससे आसेक्य नामक नपुंसक उत्पन्न होता है।

यः पूतियोनौ जायेत स सौगंधिक संज्ञितः।
सयोनिशेफसोर्गन्ध माघ्राय लभते बलम् ॥

दुर्गन्धित योनिवाली स्त्री से जो बालक उत्पन्न होता है वह पुरुष सौगंधिक नामक नपुंसक होता है।

मातुर्व्यवायप्रति मेनवक्रोस्या-
द्वीजदौर्बल्यतया पितुश्च।

गर्भाधान के समय माता के अनियम से तथा पिता के निर्बल वीर्य होने के कारण जो गर्भ रहता है उससे जो बालक उत्पन्न होता है वह पुरुष कुंभिक नपुंसक होता है इन्हीं सब कारणो से हमारे पूर्वज ऋषियों ने स्त्री पुरुष सबको नियम-पूर्वक रहकर गर्भाधान क्रिया करना बतलाया है नियम पूर्वक न होने से ही निर्बल दुर्बल रोगी और शक्तिहीन सन्तान उत्पन्न होती है। इसलिये सब स्त्री पुरुषों को आहार विहार का नियम ठीक रखकर सन्तान की ही इच्छा से गर्भाधान क्रिया करनी चाहिये व्यर्थ को अज्ञानतावश विषय-लोलुपता में पड़कर अपने और अपनी सन्तान के शरीर को रोगी निर्बल और दुर्बल न बनावें। इसके विषय में इस पुस्तक के आरम्भ में लिखचुकी हूं अधिक विषय से जो हानियां स्त्री पुरुषों को पहुंच रही हैं वे किसी से छिपी नहीं हैं।

शूलकासज्वर श्वास कार्श्य पांडूवामयक्षयाः।
अति व्यवायाज्जायंते रोगाश्चाक्षेपकादयः ॥

अर्थ यह है कि अति मैथुन करने से शूलरोग, खांसी, ज्वर, श्वास, कृशता, पांडुरोग, क्षयी और वात के आक्षेपकादि रोग होते हैं इसलिये उचित है अधिक विषय न करे। जो ऋषियों के मतानुसार नहीं चलते वे सदैव रोगी रहकर अकाल में ही काल का ग्रास बन जाते हैं।

अनेक रोग नाशक सरल प्रयोग

योनि के कफदोष से उत्पन्न हुए रोगों के

जिस स्त्री की योनि में खुजली हो अधिक चिकनापन तथा पीड़ा होती हो और पीला लिबलिबा (चिकना) स्राव बहता हो वह नीचे लिखी विधि से दूर होता है।

योनिशोधक बत्तियां।

उर्दों का चूर्ण (आटा) कपड़छान कर उसी की बराबर सेंधा नमक पीसकर मिलावे और हाथ के अंगूठे की बराबर मोटी तथा छै अंगुल लम्बी बत्ती बनाकर आक के दूध में बत्ती को भिगोकर छाया में सुखालेवे सूखजाने पर योनि में रक्खे इस प्रकार प्रतिदिन दस दस मिनट तक तीन दिन अथवा एक सप्ताह तक रक्खे। यदि दस मिनट रखने से कोई तकलीफ़ मालूम हो तो पांच ही मिनट रक्खा करे और तीन ही चार दिन में रोग दूर होजावे तो अधिक दिनतक नहीं रखना चाहिये। अधिक देरी तक भी बत्ती न रक्खे।

बत्ती निकालकर उसी समय गरम पानी की पिचकारी से योनि को प्रतिदिन धोदिया करे इस प्रकार करने से कफदोष से उत्पन्न होनेवाले योनिरोग दूर होते हैं।

दूसरा उपाय।

पीपल, कालीमिर्च, उरद का आटा, सौंफ, कूट, सेंधानमक सब बराबर बराबर मंगाकर इन सबको कूट कपड़छान कर सुहागा किसी एक औषधि की बराबर लेकर पीसकर पानी में घोल लेवे उसी पानी में कुल औषधि सानकर (मिलाकर) हाथ की उँगली की बराबर मोटी और इतनी ही लम्बी बत्ती बनाकर योनि में रखने से कफ़ से उत्पन्न होनेवाले योनिरोग दूर होते हैं।

योनिरोगों में तैल।

गूलर की छाल दो तोला
बड़ की छाल दो तोला
पीपल की छाल दो तोला
बबूर की छाल दो तोला
आम की छाल दो तोला

इन सबकी छाल मंगाकर कूटकर जौ की बराबर टुकड़े करके रात को चौगुने पानी में भिगोदेवे (सबकी छाल जितनी हो उससे चौगुने पानी में भिगोवे) प्रातःकाल चटनी की भांति पीसकर जितनी सब औषधियाँ (कुटी हुई सब छाल) हों उनसे चौगुना तिली का असली तैल डालकर और तैल से चौगुना पानी डालकर कढ़ाही में धीमी धीमी आंच में पकावै जब सब पानी जलजावै केवल तैल रह जावै तब उतारकर छानलेवे और छानकर बोतल में भरकर रखलेवे इस तैल को रुई में तर करके योनि में रक्खै तो योनि के अनेक रोग दूर होते हैं।

ज़रूरी बात।

"दैवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में स्त्रियों के गुप्तरोगों की अनेक प्रकार की परीक्षा की हुई औषधियां और उपाय लिखे जावैंगे। दूसरा भाग बड़ा ही उपयोगी होगा इसमें वैद्यक के अनेक उपयोगी विषय चित्रोंद्वारा समझाये जावैंगे। क्योंकि इस प्रथम भाग में केवल स्त्रियों के गुप्तरोगों के ही चित्र दिये जासके परन्तु दूसरे भाग में सैकड़ों प्रकार के अन्य उपयोगी चित्र भी दिये जावैंगे, रोगपरीक्षा, नाड़ी देखने की विधि तथा अनेक रोगों की पहिचान और स्त्रियों के गुप्तरोगों की परीक्षा, चिकित्सा जो इस भाग में नहीं आसकीं वह सब दूसरे भाग में रहेंगी।

बन्धया-निदान और चिकित्सा ।

बन्ध्याओं के विषय में पीछे लिखा गया है परन्तु यहां इस विषय में खुलासा लिखना उचित समझ कर लिखती हूं क्योंकि बन्ध्यायें कई प्रकार की होती हैं कुछ बन्ध्यायें ऐसी होती हैं कि बन्ध्यत्व का कारण दूर होजावे तो सन्तान होने लगती है। मेरे पास हज़ारों वन्ध्या स्त्रियां आईं जिनमें कुछ ऐसी भी थीं जिनके किसी प्रकार भी सन्तान नहीं होसकती, जिनके सन्तान होसकती थी उनका इलाज किया गया सन्तान होने लगी इस प्रकार १८ वर्षों में कई हज़ार स्त्रियों के हमारे इलाज से सन्तान उत्पन्न हुई ।

बहुत सी ऐसी बन्ध्या स्त्रियां मेरे पास आईं जिनके बच्चेदानी थी ही नहीं परन्तु उनके घरवाले दस दस पन्द्रह पन्द्रह वर्ष से बड़े बड़े लेडीडाक्टर और वैद्यों का इलाज कररहे थे किसी ने उन्हें यह बात नहीं बतलाई, हजारों रुपया इलाज में लगा परन्तु फ़ायदा कुछ भी नहीं हुआ उन स्त्रियों की ज़बानी मालूम हुआ कि सब लेडीडाक्टर और वैद्यों ने यही विश्वास दिलाया कि सन्तान अवश्य होगी परन्तु इसका किसी को पता ही न था कि जब बच्चेदानी है ही नहीं तो सन्तान होगी कैसे। इससे मालूम होता है कि जिन चिकित्सकों को मालूम था उन्होंने भी लालचवश नहीं बतलाया ।

जब वे स्त्रियां मेरे पास आईं तब मैंने देखकर उनसे साफ़ कह दिया और इलाज करने से इनकार किया तब उनके घरवालों को मालूम हुआ। इसलिये सबके जानने के लिये यहां लिखती हूं ।

बन्धया स्त्रियों के भेद ।

बन्ध्याओं में अनेक भेद हैं यों तो जिस स्त्री के सन्तान नहीं होती उसे वन्ध्या कहते हैं जिस स्त्री के एकही बालक होकर फिर न हो उसे काकबन्ध्या कहते हैं ।

जिस स्त्री के सन्तान हो परन्तु जीवित न रहे उसे मृतवत्सा बन्ध्या कहते हैं ।

जिसके गर्भ रहकर दो ही तीन मास में गर्भस्राव होजावे उसे गर्भस्रावी बन्ध्या कहते हैं, जिसको चार पांच महीने का गर्भ होकर

गिरजावै उसे गलद्गर्भा वन्ध्या कहते हैं अर्थात् गर्भ रहकर गलजावै गलकर गिरजावै।

जिस स्त्री के केवल कन्या ही कन्या उत्पन्न होती हो कभी पुत्र का गर्भ रहै ही नहीं वह भी एक प्रकार की वन्ध्या ही ऋषियों ने बतलाई है। जिस स्त्री को गर्भ रहकर बढ़े नहीं और दूसरा गर्भ भी न रहै उसे मूढ़गर्भा वन्ध्या कहते हैं। जिस स्त्री को मासिकधर्म नहीं होता वह भी वन्ध्या कही जाती है। किसी किसी ऋषि का मत है कि तीन ही वन्ध्या होती हैं १—जन्मवन्ध्या २—काकवन्ध्या ३—मृतवत्सा क्योंकि इन तीन में दो के बालक होनेपर भी वन्ध्या ही रहती हैं एक को गर्भ ही नहीं रहता इस प्रकार यही तीन वन्ध्या किसी किसी ऋषि ने बतलाई हैं।

जिस स्त्री के *गर्भाशय नहीं है उसका इलाज करना ही व्यर्थ है उसके स्वप्न में भी गर्भ की आशा नहीं होसकती।

जिस स्त्री के गर्भाशय और गर्भाशय का मुख सब ठीक है, मासिकधर्म भी होता हो परन्तु कभी गर्भ धारण न हो उसे भी जन्मवन्ध्या ही कहते हैं, उसकी चिकित्सा ऋषियों ने इस प्रकार बतलाई है।

---

* गर्भाशय का न होना भी दो प्रकार का है एक तो जिस प्रकार पुरुष हिजड़ा होता है उसी प्रकार स्त्री भी होती है उसके गर्भाशय नहीं होता और दूसरी इस प्रकार की होती है कि गर्भाशय होता है परन्तु गर्भाशय का मुंह नहीं होता इसलिये मासिकधर्म से नहीं होती।

जहांपर गर्भाशय का मुंह होता है वहांपर उसके साफ जगह होती है। यद्यपि गर्भाशय है परन्तु गर्भाशय का मुंह न होने से मासिकधर्म का रक्त बाहर नहीं आसकता इसलिये मासिकधर्म के दिनों में महीने महीने उस स्त्री को कष्ट होता है कुछ न कुछ कष्ट चार पांच दिन तक रहता है जब मासिकधर्म का ज़ोर घट जाता है तब उसका कष्ट दूर होजाता है जिनके गर्भाशय बिलकुल है ही नहीं उन्हें कोई तकलीफ़ इस प्रकार की नहीं होती। जिनके गर्भाशय नहीं है ऐसी बहुत कम स्त्रियां देखने में आती हैं और जिनके गर्भाशय है परन्तु गर्भाशय का मुंह नहीं है ऐसी प्रायः अधिक देखने में आती हैं परन्तु गर्भ इनमें से किसी के नहीं रहता।

बन्ध्या चिकित्सा ।

वैद्यकशास्त्र के अनुसार बन्ध्या स्त्रियों की चिकित्सा पृथक् पृथक् लिखती हूं जिस स्त्री को मासिकधर्म्म होता हो और कभी गर्भ न रहता हो तो उसे नीचे लिखी औषधि को सेवन करावे।

एक तोला सरफोंका की जड़ मंगाकर ठंढे पानी में पीसकर मासिकधर्म के दिनों में पीवे तो ऊपर लिखी बन्ध्या स्त्री के पुत्र उत्पन्न हो जितने दिनों तक मासिकधर्म का रक्त जारी रहे उतने दिनों तक पीवे।

दूसरा उपाय ।

पीपल केशर अदरख नागरमोथा

इन सब औषधियों को बराबर बराबर कूट पीस कपड़छान चूर्ण कर छै छै मासा की पुड़िया बनाकर रख लेवे, एक एक पुड़िया प्रतिदिन प्रातःकाल मासिकधर्म के दिनों में गाय के घी में मिलाकर पीने से बन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है। यह अनेक बार का परीक्षा किया हुआ प्रयोग है।

यदि स्त्री के रज में किसी प्रकार का दोष होगा तो वह दूर होकर अवश्य गर्भ धारण करैगी। परन्तु गर्भाशय में कोई ख़राबी होगी तो यह औषधि फ़ायदा न करैगी और उस स्त्री के पति में कुछ ख़राबी होगी तो भी इससे कुछ फ़ायदा न होगा क्योंकि इन सबके इलाज की औषधियां अलग अलग हैं।

आवश्यक सूचना ।

रोगों के निदान और चिकित्सा जानने के साथ ही साथ सब स्त्रियों को सब प्रकार की औषधियों का जानना भी बहुत ज़रूरी है बिना जाने इलाज करने में कभी कभी बड़ी कठिनाई पड़ती है, बहुत सी औषधियां अत्तारों की दूकानों पर बाज़ार में मिल सकती हैं वे सब सूखी होती हैं परन्तु जहां हरी औषधि का सेवन करना लिखा हो और वह दूकानों पर हरी नहीं मिलती तो उसे खोजकर हरी ही मंगानी पड़ती है।

इसलिये औषधियों को पहिचानना भी बहुत ज़रूरी है इस विषय की भी एक सचित्र पुस्तक मैं तैयार कर रही हूं। इसके पढ़ने सुनने से स्त्रियों को सब औषधियों के गुण अवगुण मालूम होंगे और चित्र देखकर उनकी पहिचान भी मालूम होगी।

काकवन्ध्या चिकित्सा।

असगन्ध को एक तोला मंगाकर ऋतु के दिनों में सातदिन तक भैंस के दूध में पीसकर पीवै तो काकवन्ध्या दोष दूर होकर स्त्री गर्भवती हो पुत्र उत्पन्न करै। एक महीने में कदाचित् गर्भ न रहै तो दूसरे महीने में भी इस उपाय को करै जबतक गर्भ न रहै इस उपाय को करती रहै इससे अवश्य काकवन्ध्या दोष दूर होगा यदि उस स्त्री के पति में कोई खराबी न हुई तो अवश्य गर्भ रहैगा।

मृतवत्सा बन्ध्या।

मृतवत्सा उसे कहते हैं जिसके बालक हो होकर सप्ताह, पक्ष, महीना अथवा एक दो वर्ष में मर मर जाते हों इसकी चिकित्सा के विषय में वैद्यकशास्त्र में बहुत कुछ लिखा है परन्तु उसका सरल उपाय मेरे अनुभव का यह है कि ऐसी स्त्री के गर्भाशय योनिमार्ग और रज की परीक्षा करै तथा उसके पति का हाल मालूम करै जिसमें दोष हो उसी का इलाज करदेवे सन्तान होने लगैगी। इस प्रकार से मैंने हज़ारों सन्तानहीन स्त्रियों का इलाज किया वे सब सन्तानवती होगई उनके जितने बालक इलाज करने के बाद हुए सब जीवित हैं ऐसी स्त्रियों के पत्र सन्तान होने और सन्तान की आरोग्यता के विषय में मेरे पास प्रायः आया करते हैं।

सब प्रकार की सन्तानहीन स्त्रियों का इलाज होसकता है परन्तु जिसके गर्भाशय का मुंह अथवा गर्भाशय है ही नहीं उनके किसी उपाय से भी गर्भ नहीं रहता वही जन्म-बन्ध्या कहलाती हैं।

क्योंकि १८ वर्षों में सैकड़ों स्त्रियां मेरे देखने में ऐसी आई कि जिनके बच्चेदानी का मुंह था ही नहीं नाममात्र को भी मुंह नहीं था, जिनके गर्भाशय का मुंह छोटा या बड़ा होता है उनके भी गर्भ नहीं रहता परन्तु वह इलाज से ठीक होसकती हैं।

कई स्त्रियां मेरे पास ऐसी भी आई' जिनके योनिमार्ग ही नहीं था योनिमार्ग के स्थान पर एक छोटा सा चिन्ह सा बना था परन्तु योनिमार्ग नहीं था उन स्त्रियों की चेष्टा, बोल चाल पुरुषों की समान थी उनको अनेक डाक्टरों ने भी देखा तो आपरेशन करने को कहा तब,वे मेरे पास आई', उनकी परीक्षा करने से मालूम हुआ कि किसी प्रकार भी उनके गर्भ नहीं रह सकता। इसलिये ऐसी स्त्रियों की चिकित्सा कराना व्यर्थ है। अन्य सब प्रकार की बन्ध्याओं की चिकित्सा इस पुस्तक में पीछे लिख चुकी हूं इस पुस्तक के दूसरे भाग में और भी अधिक उपाय तथा चिकित्सा विस्तार पूर्वक लिखूँगी।

योनिरोग नाशक अन्य उपाय।

पठानी लोध दो तोला	बड़ी हर्ड का बक्कल दो तोला
बहेड़े का वक्कल दो तोला	आंवला गुठली निकालकर दो तोला
पीपल दो तोला	मुनक्का दो तोला

यह सब औषधियां बारीक पीसकर पुराना गुड़ मिलाकर हाथ के अंगूठे की बराबर मोटी और ५-६ अंगुल लम्बी बत्ती बनाकर योनि में रक्खे और कपड़े की गद्दी रखकर लंगोटे की तरह बांध लेवे इस उपाय को करने से योनि की पीड़ा तथा अन्य प्रकार के योनिदोष, गर्भाशय दोष दूर होते हैं।

ऋतुधर्म कष्ट से होना।

किसी किसी स्त्री को ऋतुधर्म के समय बड़ा कष्ट होता है मुझे इस बात का १८ वर्ष का अनुभव है क्योंकि मेरे पास प्रतिदिन अनेक स्त्रियां इस प्रकार के रोगवाली आया करती हैं किसी किसी को इतना अधिक कष्ट ऋतु के समय होता है कि उस स्त्री को बेहोशी होजाती है, दांती बन्द होजाती हैं वह स्त्री मृतवत् होजाती है।

इसका कारण यह है कि अनियम आहार विहार और अधिक विषय से वायु कुपित होकर मासिकधर्म सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न करती है मासिकधर्म का रक्त सूखकर मासिकधर्म के रक्त को बहाने वाली नसों में रक्त जम जाता है इस कारण मासिकधर्म का रक्त

साफ़ निकल नहीं सकता, मासिकधर्म के दिनों में वायु के कारण बड़ा कष्ट होता है।

क्योंकि वायु रक्त को बाहर निकालना चाहती है और नसों में रक्त सूखकर जमगया है इस कारण रक्त निकलने का मार्ग साफ़ नहीं है वायु रक्त को निकालने के लिये ज़ोर करता है परन्तु रक्त निकल नहीं सकता इसलिये मासिकधर्म के समय स्त्री को कष्ट होता है। इसका उपाय व चिकित्सा यह है।

चिकित्सा विधि।

जिस स्त्री को मासिकधर्म कष्ट से होता हो तथा गांठदार होता है उसे मासिकधर्म होने के चारदिन पहिले से ही नीचे लिखी औषधि का सेवन करावै।

काले तिल एक तोला लेकर कूटडाले उसमें आधसेर पानी डालकर मिट्टी की हंड़िया में बहुत धीमी धीमी आंच से पकावै जब एक छटांक पानी बाकी रहजावै तब उसमें तीन वर्ष का पुराना गुड़ एक तोला मिलाकर कपड़े से छानकर गरम गरम पिलादेवे इसी प्रकार दोनों समय पिलाना चाहिये।

जब मासिकधर्म आरम्भ होजावै तब बन्द करदेवे अर्थात् मासिकधर्म का रक्त दिखलाई देवे उसी दिन से बन्द करदेवे यदि मासिकधर्म न हो तो जबतक न हो—पीती रहै परन्तु पांच दिन से अधिक न पीवै।

अधिक दिन पीने से इस औषधि से मासिकधर्म का रक्त अधिक आने का भय है इसलिये पांच दिन से अधिक न पीवै। यदि इसके सेवन से मासिकधर्म पहिले से कुछ अधिक तो हो परन्तु साफ़ न हो तो काले तिल की खली की पुलटिस पकाकर गरम गरम स्त्री के पेंडू पर बांधे, इन दोनों उपायों को दो तीन महीने करने से कितने ही दिनों का पुराना वायुदोष से उत्पन्न हुआ ऋतुदोष हो, मासिकधर्म कम होता हो, मासिकधर्म के समय कष्ट होता हो, हरारत होजाती हो तो सब शिकायतें दूर होंगी।

अन्य उपाय।

नीचे लिखे उपाय को भी खाने की औषधियों के सेवन के पहिले करना चाहिये।

पिचकारी विधि।

दशमूल की औषधियां एक तोला लेकर चालीस तोला पानी में पकावै जब आधा पानी रहजावै तब उतार छानकर उसी गरम गरम काढ़े से पिचकारी द्वारा योनि को धोवै। इस क्रिया को कुछ अधिक दिन तक करनी चाहिये।

योनि में पिचकारी लगानी हो तो पीतल या जस्ता की पिचकारी आती है जोकि स्त्रियों के ही लिये है अथवा रबड़ की पिचकारी काम में लावै, शीशे की नहीं लगानी चाहिये क्योंकि उसके टूटजाने का सन्देह है यदि किसी कारण से योनि के भीतर टूटगई तो नुक्सान पहुंचावैगी।

यदि पिचकारी न मिल सकै तो उसी गरम गरम काढ़े से योनि को धोवै और किसी बड़े बर्तन अथवा टब या हौद में कमर तक गरम पानी भरकर उस स्त्री को उसमें बैठाले, वह स्त्री गरम पानी में बैठकर धीरे धीरे पेंडू को मलै।

यह क्रिया बन्द कमरे में करनी चाहिये, शीतल वायु शरीर में न लगने पावै। इस क्रिया को करके गरम कपड़ा ओढ़कर बाहर निकले।

यदि रोगी स्त्री कमज़ोर हो तो ऊपर लिखा तिलों का काढ़ा इत्यादि कोई औषधि न देवे क्योंकि निर्बलता के कारण स्त्री के शरीर में रक्त नहीं होगा तो निकलैगा कैसे इस उपाय से नुक्सान पहुँचेगा, जिन स्त्रियों को किसी कारण से निर्बलता आजाती है शरीर का रक्त कम होजाता है उन्हें भी मासिकधर्म कम होने लगता है किसी किसी को अधिक निर्बलता के कारण बन्द भी होजाता है परन्तु उसके घरवाले उसका इलाज मासिकधर्म खुलने का कराते हैं इलाज करनेवाले वैद्य डाक्टर सब मासिकधर्म का ही इलाज करते हैं इस कारण औषधियों से फ़ायदा नहीं होता बल्कि नुक्सान पहुंचता है इस प्रकार की स्त्रियां प्रतिदिन मेरे पास इलाज के लिये आया करती हैं जिनकी दशा मासिकधर्म खुलने की औषधियां करते करते बहुत ख़राब होगई है क्योंकि मासिकधर्म खुलने की औषधियां प्रायः गरम होती हैं बाज़ बाज़ वैद्यलोग रसादिक औषधियां खिलाकर और भी नुक्सान पहुंचा देते हैं।

इसलिये रोगी स्त्री की भलीभांति परीक्षा करके जिस कारण मासिकधर्म बन्द होगया हो उसी कारण का इलाज करके रोग दूर करना चाहिये। कमज़ोर स्त्री को रजवर्द्धक (बलवर्द्धक) औषधि खिलाकर तथा जो रोग हो उस रोग की औषधियां करके स्त्री हृष्ट पुष्ट और निरोग बनावै तब मासिकधर्म आपही होने लगेगा।

यदि स्त्री हृष्ट पुष्ट हो किसी प्रकार का अन्य रोग न हो ऐसी दशा में यदि मासिकधर्म न होता हो या कम होता हो तब तिल का काढ़ा आदि उपाय जो पीछे लिखा गया है करना चाहिये।

ऊपर जो गरम पानी में बैठने और तिल तथा पुराने गुड़ का काढ़ा और काढ़े की पिचकारी लगाना बतलाया गया है इससे योनि के अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं बच्चेदानी के मुंह पर सूजन होने के कारण यदि मुंह बन्द होगा तो भी सूजन दूर होकर मासिकधर्म खुलासा होने लगेगा।

आवश्यक सूचना।

ऊपर लिखे उपाय और औषधियों की हज़ारों बार परीक्षा कीगई है इसी प्रकार के परीक्षा किए हुए उपाय और औषधियां स्त्रियों के अन्य गुप्त रोगों के लिये "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में लिखे जावैंगे। इसके अतिरिक्त स्त्री पुरुषों के अन्य रोगों को दूर करनेवाली औषधियां जो हज़ारों स्त्री पुरुषों पर परीक्षा की जाचुकी हैं उनके नुस्खे और बनाने की विधि भी दूसरे भाग में रहैगी "देवी अनुभव प्रकाश" का दूसरा भाग भी इतना ही बड़ा होगा उसका मूल्य भी इसी प्रकार होगा जो इस प्रथम भाग का है।

स्तन-रोग।

स्तनरोग निदान और चिकित्सा।

स्तनरोग प्राय, बच्चेवाली स्त्रियों को ही होते हैं क्योंकि बालक होने के बाद प्रसूता स्त्री के आहार विहार के अनियम से वात पित्त कफ़ ये दूषित होकर स्तनों में रोगों को उत्पन्न करते हैं, स्तनों में पीड़ा, सूजन और फोड़ा उत्पन्न करते हैं।

यदि पीड़ा या सूजन उत्पन्न होते ही उपाय करदिया जावे तो स्त्री को अधिक कष्ट भोगना नहीं पड़ता इसलिये शीघ्रही उपाय करना चाहिये। स्तनरोगों में सेंक भूलकर भी नहीं करना चाहिये। स्तनों में किसी प्रकार की शिकायत मालूम होते ही बच्चे का दूध पीना छुड़ादेवे यदि बच्चा न हो दैवयोग से होकर मरगया हो [जिनके बच्चे मरजाते हैं इस कारण दूध न निकलने से भी दूध सूखकर जमजाने से स्तनों में अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं] तो बच्चे के न रहने पर दूध प्रतिदिन निकाल दिया करें। स्तनरोग वाली स्त्री को जुलाब देकर पेट शुद्ध करदेना चाहिये। फिर नीचे लिखी औषधियों को स्तनों पर लेप करै।

इन्द्रायण की जड़ पानी में चन्दन की भांति पीसकर गरम करके लेप करने से पीड़ा और सूजन दूर होती है।

हल्दी और धतूरे के पत्ते बारीक पीसकर गरम कर लेप करने से स्तनों की पीड़ा और सूजन दूर होती है।

लोहा को आग में रखकर लाल करके पानी में सातबार बुझावे वह पानी स्त्री को पीने को देवे इससे भी स्तनों की पीड़ा दूर होती है।

गरम पानी की धार स्तनों पर कुछ ऊपर से छोड़ें तो स्तनों की पीड़ा और सूजन दूर होती है।

नीम के पत्ते, मुलहठी, नीम की छाल, हल्दी, सम्हालू, धाय के फूल सबको बराबर बराबर लेकर कूट कपड़छान चूर्ण बनाकर स्तनों के घावों पर लगाने से घाव शीघ्रही आराम होजाते हैं।

स्तनरोगों के निदान और चिकित्सा विस्तार-पूर्वक इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखी जावेंगी क्योंकि स्तनों में बच्चेवाली और बिना

बच्चेवाली सभी के प्रायः रोग उत्पन्न होजाते हैं उनकी चिकित्सा अलग अलग है अधिकतर बच्चेवाली स्त्रियों को ही स्तनरोग प्रायः होते हैं किसी प्रकार से भी हो सब प्रकार का इलाज स्त्रियों को मालूम रहना चाहिये।

सर्वोपयोगी प्रयोग।

प्रदर रोग के लिये सरल उपाय।

विधारा २० बीस तोला
समुद्रशोख २० बीस तोला
पठानी लोध २० बीस तोला
शतावरी २० बीस तोला

इन सबको मंगाकर साफ़कर कूट पीस कपड़छान कर चूर्ण बनावे और सबकी बराबर अर्थात् सब औषधियों का चूर्ण जितना हो उससे दूनी मिश्री कूट कपड़छान कर मिलावे और प्रतिदिन चार चार मासे की पुड़िया दोनों समय गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करें इसके सेवन से रक्तप्रदर और सफेद प्रदर चाहे जिस प्रकार का प्रदररोग हो दूर होता है।

अन्य उपाय-प्रदर नाशक-अवलेह

पठानी लोध ३ तोला
बड़ी इलायची के दाने १॥ तोला
दालचीनी ४॥ तोला
माजूफल १॥ तोला
सोंठ १॥ तोला
धाय के फूल १॥ तोला
पके केले का गूदा तीनपाव
गाय का घी तीनपाव
मिश्री तीनपाव
चांदी के वर्क १२० अदद

ऊपर लिखी छै औषधियों को साफ़कर कूट पीस कपड़छान करलेवे फिर मिश्री को कूटकर कपड़छान कर घी और केले का गूदा इन सबको एक में खूब मिलाकर एक कलईदार बर्तन में आंच पर चढ़ादेवे और उसमें बुल्ले उठने लगैं तब ऊपरवाली सब औषधियां और चांदी के वर्क भी डालकर खूब मिलादेवे फिर पकाकर कुछ गाढ़ा होने पर उतार लेवे शीतल होने पर बड़े मुंह की बोतलों में भरकर रखलेवे।

प्रतिदिन एक एक तोला दोनों समय खाकर ऊपर से गाय का दूध एकपाव या आधापाव जितना पी सके पीलेवे।

औषधि के गुण।

इस अवलेह के सेवन करने से स्त्रियों को चारों प्रकार का प्रदररोग नया या पुराना कैसा ही हो दूर होता है। सोमरोग (बार बार अधिक तादाद में पेशाब होना) जिसे बहुमूत्र कहते हैं पुरुषों का बहुमूत्र स्त्रियों का सोमरोग कहलाता है प्रदररोग जब अधिक बढ़जाता है और पुराना होजाता है तब सोमरोग होजाता है, सब प्रदरवाली स्त्रियों को सोमरोग नहीं होता किसी किसी को होता है इसी प्रकार सब प्रमेहवालों को बहुमूत्र नहीं होता किसी किसी को होता है वह मधुमेह कहलाता, स्त्रियो का सोमरोग कहलाता है।

इस औषधि के सेवन करने से प्रदररोग से उत्पन्न हुए सब उपद्रव दूर होते हैं इसका सेवन २१ या ४० दिन तक करना चाहिये यह औषधि खासकर बहुमूत्र वाले पुरुषों तथा सोमरोग वाली स्त्रियों के लिये अत्यन्त हितकारी है।

रक्तप्रदर के लिये।

सफेद प्रदरवाली स्त्रियों को प्राय रक्तप्रदर भी होजाता है इसका विस्तारपूर्वक वर्णन तो इस पुस्तक के दूसरे भाग में किया जावेगा, पीछे कुछ लिखा भी गया है और औषधियां भी बतलाई गई हैं परन्तु यहां और कुछ उपयोगी उपाय बतलाए जाते हैं।

वंसलोचन छै मासे	गेरू एक तोला
पाठानी लोध एक तोला	पाषाणभेद एक तोला
बड़ी इलायची के दाने एक तोला	गोखरू बड़ा एक तोला
ढाक का गोंद एक तोला	पीपल की लाख दो तोला
सूखे गूलर का चूर्ण दो तोला	

इन सब औषधियो को कूट पीस कपड़छान कर तोल डाले यह सब औषधियां मिलाकर जितनी तोल में हों उन सबकी बराबर सफेद कच्ची खांड मिलाकर छै छै मासा की पुड़िया बना एक एक पुड़िया दोनों समय शीतल पानी के साथ सेवन करे इससे अवश्य फायदा होगा २१ दिन अथवा ४० दिन में रोग जड़ से जाता रहेगा परन्तु पथ्य से रहना चाहिये इससे सफेद प्रदर का भी फायदा होता है।

बाल स्वास्थ्य-रक्षक घुट्टी।

बालकों को प्रायः माता के दूषित दूध पीने से अनेक रो[ग] होजाते हैं जिस बालक की माता आरोग्य होगी उसके बालक कदा[पि] रोगी न होंगे इसलिये माता को अपने आहार विहार पर सदैव ध्या[न] रखना चाहिये, बालको के हर प्रकार के रोगों पर पीछे बहुत कुछ लि[ख] चुकी हूं सैकड़ों उपाय बतला चुकी हूं यहां एक अत्यन्त उपयोगी उपाय जो लिखने से रहगया लिखती हूं।

भुनाहुआ सफेदज़ीरा छैमासे,	सूखा पोदीना छैमासे
गुलबनफसा छै मासे	मुलैठी छै मासे
सौंफ एक तोला	बहेड़े का वक्कल छै मासे
बड़ी हर्ड का वक्कल दो तोला	छोटी हर्ड एक तोला
अजवायन छै मासे	वायविडंग छै मासे
वायखम्भा छै मासे	छोटी इलायची का दाना छै मासे
मरोड़फली छै मासे	इन्द्रजो मीठे तीन मासे
सुहागा का फूला छै मासे	अमलतास का गूदा तीन तोला
गुलाब के फूल छै मासे	मुनक्का बीस दाना
दुधबच छै मासे	उन्नाव छै मासे
मिश्री दस तोला	सनाय छै मासे

इन सब औषधियों को मंगाकर साफ़ करके कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर छै छै मासे की पुड़िया बनाकर रखलेवे एक पुड़िया एक छटांक पानी मे धीमी धीमी आंच से जोश देकर अर्थात् उबालकर उतारलेवे शीतल होने पर मल छान शीशी में भरकर रखदेवे इसे थोड़ा थोड़ा चम्मच से बच्चे को दो तीन बार दिन में पिलावे दो तीन दस्त आजावें तब औषधि देना बन्द करदेवे। इसी प्रकार सप्ताह में अथवा पन्द्रह दिन पर एकबार अवश्य बच्चे को सेवन करादिया करे।

इस प्रकार इसको सेवन कराते रहने से बच्चा सदैव निरोग और हृष्ट पुष्ट रहेगा कभी कभी महीने अथवा पन्द्रह दिन में बच्चे की माता भी इसका सेवन करती रहै तो माता के निरोग रहने से बालक कभी रोगी न होगा। बच्चेवाली स्त्रियों को पथ्य से रहना चाहिये आहार विहार को सदैव नियम पूर्वक रक्खे।

अनेक रोग नाशक छुहारा।

आध सेर छुहारा मंगाकर एक सेर कागज़ी नींबू के रस में भिगोदेवे जब भलीभांति भीग जावें तब छुहारे की पेंदी की ओरसे गुठली निकालकर फेंकदेवे।

छोटी पीपल डेढ तोला	सेंधा नमक दस तोला
सोंठ चार तोला	जाविन्नी आधा तोला
सफेद ज़ीरा भूनकर तीन तोला	जायफल आधा तोला
पत्रज नौ मासा	बड़ी इलायची के दाना डेढ तो०
स्याह ज़ीरा भूनकर तीन तोला	काली मिर्च डेढ तोला
नींबू का रस आधा सेर	सेंधा नमक छै तोला
छुहारा बारह तोला गुठली निकालकर	

यह सब औषधियां कूट कर चलनी से छानकर आध सेर नींबू के रस में किसी काठ के बर्तन या पत्थर के बर्तन में भिगोदेवे तीन दिन-रात भीगने देवे फिर छुहारो में भरदेवे यदि साबित छुहारों से गुठली निकालने में कुछ दिक्कत हो तो छुहारे को चीरकर गुठली निकाल लेवे और मसाला भर कर डोरे से बाँध देवे जिससे मसाला बाहर न निकलने पावै इस प्रकार छुहारे तैयार करके किसी बड़े मुंह की कांच की शीशी में या मिट्टी की हंडिया में भरदेवे और बचा हुआ नींबू का अर्क ऊपर से डालदेवे और मुंह बन्द करके रखदेवे। प्रतिदिन धूप में रखदिया करे पन्द्रह दिन बाद खाने लायक़ होगा। जब अर्क सूखजावे तब नींबू का अर्क फिर डाल देवे।

प्रतिदिन १ या २ छुहारे भोजन करते समय या भोजन करने के कुछ देर पहिले सेवन करने से अरुचि, भूख का कम होजाना, बद-हज़मी, जी का मिचलाना, पेट का अफ़रा, गुड़गुड़ होना, क़ब्ज़ रहना, पेट की पीड़ा इत्यादि रोग दूर होते हैं और यह खाने में बड़ा स्वादिष्ट है इसलिये मुंह का जायका बहुत अच्छा होजाता है, रुचि बढ़ती है।

पीनस रोग पर।

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, अमलवेत, चव्य, तालीस पत्र, चित्रक, ज़ीरा, इमली की छाल इन सब औषधियों को एक एक तोला लेवे।

बाल स्वास्थ्य-रक्षक घुटी।

बालकों को प्राय: माता के दूषित दूध पीने से अनेक रोग होजाते हैं जिस बालक की माता आरोग्य होगी उसके बालक कदापि रोगी न होंगे इसलिये माता को अपने आहार विहार पर सदैव ध्यान रखना चाहिये, बालको के हर प्रकार के रोगों पर पीछे बहुत कुछ लिख चुकी हूं सैकड़ों उपाय बतला चुकी हूं यहां एक अत्यन्त उपयोगी उपाय जो लिखने से रहगया लिखती हूं।

भुनाहुआ सफेद ज़ीरा छैमासे,	सूखा पोदीना छैमासे
गुलबनफसा छै मासे	मुलैठी छै मासे
सौंफ एक तोला	बहेड़े का बक्कल छै मासे
बड़ी हर्ड का बक्कल दो तोला	छोटी हर्ड एक तोला
अजवायन छै मासे	वायविडंग छै मासे
वायखम्भा छै मासे	छोटी इलायची का दाना छै मासे
मरोड़फली छै मासे	इन्द्रजो मीठे तीन मासे
सुहागा का फूला छै मासे	अमलतास का गूदा तीन तोला
गुलाब के फूल छै मासे	मुनक्का बीस दाना
दुधबच छै मासे	उन्नाव छै मासे
मिश्री दस तोला	सनाय छै मासे

इन सब औषधियों को मंगाकर साफ़ करके कूटकर जौ की बराबर टुकड़े कर छै छै मासे की पुड़िया बनाकर रखलेवे एक पुड़िया एक छटांक पानी मे धीमी धीमी आंच में जोश देकर अर्थात् उबालकर उतारलेवे शीतल होने पर मल छान शीशी में भरकर रखदेवे इसे थोड़ा थोड़ा चम्मच से बच्चे को दो तीन बार दिन में पिलावे दो तीन दस्त आजावें तब औषधि देना बन्द करदेवे। इसी प्रकार सप्ताह में अथवा पन्द्रह दिन पर एकबार अवश्य बच्चे को सेवन करादिया करे।

इस प्रकार इसको सेवन कराते रहने से बच्चा सदैव निरोग और हृष्ट पुष्ट रहैगा कभी कभी महीने अथवा पन्द्रह दिन में बच्चे की माता भी इसका सेवन करती रहै तो माता के निरोग रहने से बालक कभी रोगी न होगा। बच्चेवाली स्त्रियों को पथ्य से रहना चाहिये आहार विहार को सदैव नियम पूर्वक रक्खे।

अनेक रोग नाशक छुहारा।

आध सेर छुहारा मंगाकर एक सेर कागज़ी नींबू के रस में भिगोदेवे जब भलीभांति भीग जावें तब छुहारे की पेंदी की ओरसे गुठली निकालकर फेंकदेवे।

छोटी पीपल डेढ तोला	सेंधा नमक दस तोला
सोंठ चार तोला	जावित्री आधा तोला
सफेद जीरा भूनकर तीन तोला	जायफल आधा तोला
पत्रज नौ मासा	बड़ी इलायची के दाना डेढ तो०
स्याह ज़ीरा भूनकर तीन तोला	काली मिर्च डेढ तोला
नींबू का रस आधा सेर	सेंधा नमक छै तोला
छुहारा बारह तोला गुठली निकालकर	

यह सब औषधियां कूट कर चलनी से छानकर आध सेर नींबू के रस में किसी काठ के बर्तन या पत्थर के बर्तन में भिगोदेवे तीन दिन-रात भीगने देवे फिर छुहारों में भरदेवे यदि साबित छुहारों से गुठली निकालने में कुछ दिक़त हो तो छुहारे को चीर कर गुठली निकाल लेवे और मसाला भर कर डोरे से बांध देवे जिससे मसाला बाहर न निकलने पावै इस प्रकार छुहारे तैयार करके किसी बड़े मुंह की कांच की शीशी में या मिट्टी की हंडिया में भरदेवे और बचा हुआ नींबू का अर्क ऊपर से डालदेवे और मुंह बन्द करके रखदेवे। प्रतिदिन धूप में रखदिया करै पन्द्रह दिन बाद खाने लायक़ होगा। जब अर्क सूखजावे तब नींबू का अर्क फिर डाल देवे।

प्रतिदिन १ या २ छुहारे भोजन करते समय या भोजन करने के कुछ देर पहिले सेवन करने से अरुचि, भूख का कम होजाना, बद-हज़मी, जी का मिचलाना, पेट का अफ़रा, गुड़गुड़ होना, क़ब्ज़ रहना, पेट की पीड़ा इत्यादि रोग दूर होते हैं और यह खाने में बड़ा स्वादिष्ट है इसलिये मुंह का जायक़ा बहुत अच्छा होजाता है, रुचि बढ़ती है।

पीनस रोग पर।

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, अमलवेत, चव्य, तालीस पत्र, चित्रक, ज़ीरा, इमली की छाल इन सब औषधियों को एक एक तोला लेवे।

दालचीनी, सफेद इलायची के दाने, पत्रज ये तीनों औषधिय बारह बारह मासे लेवे।

फिर सब औषधियां कूट पीस कर चूर्ण बनावै इसमें ती तोले गुड़ मिलाकर चने की बराबर गोली बनावै एक गोली सुबह ए शाम खावै तो पीनसरोग, श्वास, खांसी, अरुचि को नष्ट करै और ग के रोग स्वर भंग आदि रोग आराम होते हैं। पीनस रोग में नाक दुर्गन्धि आने लगती है और रोग अधिक दिन का होजाने पर नाक कीड़े गिरा करते हैं।

तैल खुजली के लिये।

एक छटांक हल्दी को पानी में पीसकर पाव भर सरसों के तैल में मिला देवै फिर तैल से चौगुना आक के पत्तों का रस डालकर तैल को पकावै जब केवल तैल ही रह जावे रस आदि सब जलजावे तब उतार कर कपडे से छानकर बोतल में भर लेवे। इसको शरीर में लगाने से थोड़े ही दिन में खुजली, फोड़ा, बिवाई, दाद, अपरस आदि सब प्रकार के चमड़े के रोग दूर होते है।

फोड़े फुंसी के लिये।

हर्ड, बहेड़ा, आंवला, नीम की छाल, चिरायता, हल्दी, दारु-हल्दी और लाल चन्दन इन सब औषधियों को बराबर बराबर ले कूट कर पानी के साथ पीसकर चटनी की समान बनाले, कुल औषधियों मिलाकर जितना चूर्ण हो उससे चौगुना तिल्ली का तैल लेवे उसी में उन औषधियो की चटनी ली जा है उसे डाले फिर तैल आदि सब मिलाकर जितना तौल में हो उससे चौगुना पानी डालकर धीमी धीमी आंच में पकावै जब केवल तैल ही रजजावै तब उतारकर छानले और बोतलों में भरले।

जिस मनुष्य के शरीर में फोड़ा फुंसी अधिक निकलते हों इस तैल को लगाने से शीघ्रही दूर होते हैं।

कान के लिये।

हींग, धनियां, सोंठ इन तीनों औषधियों को बराबर बराबर ले कूटकर पानी के साथ चटनी की समान पीस उससे चौगुना सरसों का तैल और तैल से चौगुना पानी मिलाकर धीमी धीमी आंच से पाकवै

जब केवल तैल ही रहजावे तब उतार कर छानले इसको कान में डालने से सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ।

बहिरे पन में ।

बेल के कोमल फलों को गौमूत्र में पीसकर चटनी की भांति करै उससे चौगुना तिली का तैल और तैल से चौगुना बकरी का दूध और तैल से चौगुना पानी मिलाकर चूल्हे पर चढ़ावे फिर धीमी धीमी आंच से पकावे जब सब जल जावे केवल तैल रहजावै तब उतार कर छानलेवे ।

इसको कान में प्रतिदिन डालने से थोडे दिनों में बहिरापन दूर होकर रोगी पहिले की समान सुनने लगता है ।

स्त्री रोगों के लिये पाक ।

उत्तम दक्षिणी सुपारी चालीस तोला मंगाकर बारीक पीस डाले फिर पानी में भिगोदेवे भीग जाने पर कूटकर चूर्ण बनाकर सुखावे फिर बारीक कूट कपड़ छानकर सुपारी से अठगुने ३२० तोला गाय के दूध में डालकर आंच पर चढ़ावें और धीमी धीमी आंच से पकावे जब खोवा की समान गाढ़ा होजावै तब इसमें सोलह तोला गाय का घी ढाई सेर देशी चीनी डालकर पकावे पकजाने पर नीचे लिखी हुई औषधियों को डाले ।

इलायची, गुलसकरी, बरियारा, पीपल, जायफल, जावित्री, तज, तेजपान, दालचीनी, सोंठ, खस, सुगन्धवाला, मोथा त्रिफला, बंशलोचन, शतावरी, कौंच के बीज, दाख, तालमखाना, गोखरू, छुहारा, बडी खजूर, खिरनी, धनियां, कसेरू, मुलहठी सिंघाड़ा, जीरा, कलौंजी, अजवायन, कमल का छत्ता, जटामासी, सौंफ, मेथी, बिदारीकंद, मुसली, असगंध, कपूर, नागकेशर, मिर्च चिरौंजी, सेमर के बीज, गज पीपल, कमलगट्टा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, धाय के फूल इन सब औषधियों को बराबर बराबर (चार चार तोला) लेवे इनको बारीक चूर्ण करे कपड़ छानकर उसमें मिलादेवे ।

कपूर या कस्तूरी जो इच्छा हो थोड़ी सी मिलावे फिर सबको भलीभांति मिलाकर दो दो तोले के लड्डू या कतरी बनावे और

प्रतिदिन अपने बल के अनुसार सेवन करै, खटाई मिर्च तैल का परहेज रक्खे भोजन करने के पहिले खावै।

इसके सेवन से बलकी वृद्धि होती है किसी कारण से भी निर्बलता आगई हो शीघ्र बल प्राप्त होता है स्त्री को रज और पुरुष को वीर्य सम्बन्धी कमज़ोरी शीघ्रही दूर होकर रज वीर्य पुष्ट होता है।

भूख बढ़ती है शरीर की कान्ति बढ़ती है चेहरे पर अपूर्व तेज आजाता है शरीर में चमड़े की गुलझट (सिकुड़न) जो बुढ़ापे में आजाती है प्रतिदिन सेवन करते रहने से दूर होकर वृद्ध मनुष्य भी युवा की समान मालूम होता है। चेहरे की सुन्दरता बढ़ जाती है और सब प्रकार की निर्बलता (कमज़ोरी) दूर होजाती है।

अन्य उपाय।

नागरमोथा, नागकेसर, चन्दन, सोंठ, मिर्च, पीपल, जावित्री, चिरौंजी, वेर की मींगी, तज, इलायची तालीस पत्र, सफेद जीरा कालाजीरा सिंघाड़े की मींगी, वंसलोचन जायफल लौंग धनियाँ यह सब औषधियाँ चार चार तोला लेवे और कूट पीसकर चूर्ण बनावै दक्षिणी चिकनी सुपारी एक सौ चौदह तोला लेवे सुपारियों को भी कूट पीसकर चूर्ण बनावै सबको इकट्ठा कर कपड़े से छान डाले फिर गौ का मक्खन बत्तीस तोला और मिश्री चार सौ चार तोला डालकर चार सौ चार तोला गाय के दूध में धीमी धीमी आंच से पकावै जब खोवा बनजावै तब ऊपर लिखे हुए मक्खन में भूनकर ऊपर लिखी हुई मिश्री की चासनी बनाय उसमें डालदे। एक एक तोला के लड्डू बनावे इनमें से एक लड्डू प्रतिदिन बल के अनुसार खावै तो ज्वर रोग दाह पित्त रोग नासिका (नाक) के रोग मुख के रोग नेत्र रोग रुधिर प्रवाह रोग और रोमकूपों से रुधिर निकलता हो तपेदिक निर्बलता उन्माद मंदाग्नि जी मचलना सब प्रकार के प्रमेह बवासीर इन सब रोगो को नष्ट करै।

स्त्रियों की सब प्रकार की निर्बलता दूर होकर गर्भधारण करने की शक्ति बंध्याओं में भी उत्पन्न होती है।

पुरुषों के बल और वीर्य की वृद्धि होती है मूत्राघात रोग को नाश करता है बुड्ढा मनुष्य भी इसके सेवन से तरुणता को पाता है।

गुलकन्द बनाना।

गुलाब के फूल की ताजी पखुड़ियां अलग अलग कर उनसे अठगुनी अथवा दशगुनी मिश्री लेवे, गुलाब के फूलों का चौथाई हिस्सा इलायची के दाने पीस लेवे। मिश्री सब पीसकर पहिले कोरे अमृतबान अथवा मटके में नीचे कुछ मिश्री भुरकावे, फिर उसमें गुलाब की कलियां बिछावे। इसके बाद कुछ पिसी इलायची भुरका दे फिर थोड़ी मिश्री भुरका कर गुलाब बिछावे और इलायची डाले। इसी प्रकार मिश्री और गुलाब की तह बिछावे और इलायची छोड़े। जब सब होजाय तब मटके का मुंह बाँधकर रख दे। तीन महीने में गुलकन्द खाने योग्य होजायगा। पित्तविकार, गर्मी, लूक लगना आदि में यह लाभदायक है रात को दो तोले गुलकन्द खाकर पावभर कुनकुना दूध पीले तो सवेरे एक साफ़ दस्त होजावेगा और भी बहुत से गुण हैं।

अदरख पाक।

अदरख के बारीक बारीक टुकड़े कर घी में तलकर पीस ले चार सेर अदरक के चूर्ण में सोंठ, तीन तोले, मिर्च, पीपल, चन्दन, नीलुर, लौंग, जायपत्री, चीता, चव्य प्रत्येक एक एक तोला लेवे उन्हें भी घी में तलकर पीसले। फिर पांच सेर साफ़ चीनी अथवा मिश्री की चासनी बनावे। चासनी तैयार होने पर उतार ले और सब दवा एकमें मिलाकर आधा आधा तोले की गोली बनावै। एक गोली सवेरे और एक शाम को खाकर ऊपर से दूध पीवे। इससे अम्लपित्त, वायुरोग, शीत, कफ़ आदि का नाश होगा। भूख बढ़ेगी और पाचनशक्ति बढ़ेगी।

जायपत्री पाक।

पावभर जायपत्री दो सेर दूध में डालकर खोवा करे। तजकलमी तमालपत्र, नागकेशर, इलायची मुसली, कपूर, तगर, सोंठ, पीपल, खुरासानीअजवाइन, वलबीज, मिर्च, , अकरकरा और पुष्करमूल तीन तीन मासे लेकर पीस ले। खोवे को पावभर घी में तलले और एक सेर चीनी की चासनी बनाकर खोवा और सब औषधि उसमें मिला दे। छै छै मासा प्रतिदिन खावे। इससे बल और पुष्टता प्राप्त होती है तथा खांसी और श्वांस दूर होकर भूख बढ़ती है।

असगन्ध पाक।

पावभर असगन्ध दो सेर दूध में औटाकर खोवा करे और फिर उसे आधसेर घी में तलले आधसेर चीनी की चासनी बनाकर उसी में खोवा मिला दे साथ ही असगन्ध, सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, तमालपत्र, नागकेसर बेल, स्याहज़ीरा इलायचीदाना, जायफल, लवंग मुसलीकन्द, गोखरू, सौंफ, धनियां, अजमोदा, वायविडंग, जायपत्री, पीपरामूल, चीता, चव, अकरकरा, हलदी और आंवला आधा आधा तोला पीस मिलाकर एक एक तोले की गोली बनावे। एक गोली सबेरे और एक शाम को खाकर दूध पीवे। इससे वायुरोग कफ रोग सूजन कमर का दर्द कमर का जकड़ना संग्रहणी इत्यादि रोग दूर होते हैं। जठराग्नि प्रदीप्त होती है बल बढ़ता और पुष्टि होती है। रूखी और गरम प्रकृति वालों के लिये यह अधिक लाभदायक नहीं होगा।

दूसरा सुंठीपाक।

पावभर सोंठ को कपड़छान चूर्ण और पावभर खोवा एकत्र मिलाकर डेढ़ पाव या आधसेर घी में तले जब ललाई आजाय तब उतार ले। एक सेर चीनी की चासनी बनावे और उसमें इस सोंठ मिले हुए खोवे को मिलावे इसके सिवाय उसमें सोंठ तज तमालपत्र लौंग केशर पीपल अम्लबेत जीरा, स्याह जीरा सब एक एक तोला लेकर मिलावे। नित्य शाम सबेरे आधा आधा तोला खावे। इससे गुल्म वायु अरुचि शूल और दस्तों का आना बन्द होगा।

कूष्माण्ड पाक।

सफेद कुम्हड़े का गूदा एक पाव निकालकर कद्दूकस से अथवा हाथ से बारीक करले और उसे तीन छटांक घी में तल ले। आधा पाव खोवा लेकर उसे भी एक छटांक घी में भूंज ले। आधसेर बूरा चीनी अथवा मिश्री की चासनी करे और उसमें खोवा कुम्हड़े का भूंजा गूदा तथा प्रत्येक एक एक तोले केशर लवङ्ग कस्तूरी इलायची जाफल जायपत्री दालचीनी सोंठ पीपर मिर्च पीपरामूल खस कमलगट्टा कुम्हड़े के बीज की मींगी बहेड़ा जंगीहर्रा आंवला गदापूर्णा तालीसपत्र तेजपात नागकेशर चन्दन धनियां मुलेठी नागरमोथा जटामासी चव्य

चीता और असगन्ध मिलाकर एक एक तोले की गोली बनाले इससे शरीर पुष्ट होता है दिमाग में तरावट आती है। उन्माद चक्कर आना और भीतरी गर्मी नष्ट होती है। उष्ण प्रकृति वालों को जाड़े में और अन्य लोगों को गर्मी में यह बहुत लाभदायक है।

अनेक रोगनाशक हर्ड पाक।

हर्डपाक बड़ा ही उपयोगी होता है हर्डों के गुणों को कौन नहीं जानता हर्ड में जितने ही अधिक गुण हैं उतने ही परिश्रम से तैयार होती है इसी कारण हर्डपाक बाज़ार में भी नहीं मिलता और वैद्य लोग भी बहुत कम तैयार करते हैं।

उत्तम पकी हुई बड़ी हर्ड लेकर गोमूत्र में डालकर औटावे जब अध गली होजावे तब गोमूत्र से निकालकर कांजी में औटावे कांजी में औटने के बाद एक बार गाय के दूध में औटावे गाय के दूध से निकालकर गाय के मट्ठे में औटावे इस प्रकार भलीभांति औट जाने पर हर्डो की गुठली निकाल डाले।

सोंठ मिर्च पीपल अजवायन इन्द्रजव नागरमोथा हाऊबेर अनार के बीज अमलबेत धायके फूल काला ज़ीरा सफेद ज़ीरा पीपल जटामासी मोचरस बेलगिरी सोंचरनोन सेंधानोन पाषाणभेद जवासा आमकी गुठली अतीस पाढ़ लौंग जायफल नागकेशर तज पत्रज इलायची यह औषधियां बराबर बराबर लेकर कूट पीस चूर्ण बनावै इन सब औषधियों से आधी मिश्री ले इन सब को मिलाकर हर्डो में भरदे और उन हर्डों में डोरा लपेट दे जिससे मसाला गिरने न पावे फिर एक मिट्टी के बर्तन में मट्ठे को भरकर उसमें हर्डो को डोरे से बांधकर लटका देवे फिर धीमी धीमी आंच में हर्डो को पकावे पक जाने पर उतार कर शीतल करले और डोरा खोलकर एक मिट्टी के बर्तन में भरकर ऊपर से शहद भरदेवे।

आवश्यकता पड़ने पर सेवन करने से यह हर्ड संग्रहणी सब प्रकार के दस्तों का आना सब प्रकार के प्रमेह श्वास रोगों को दूर करती है भूख को बढ़ाती है आम वात पाण्डुरोग निर्बलता को दूर करती है।

स्त्रियों के लिये ।

अत्यन्त हितकारी कुमारी पाक ।

घी कुमार का पाठा मंगाकर उसे छीलकर भीतर का गू निकाल ले इस प्रकार उत्तम चालीस तोला गूदा लेकर या इससे क ज्यादह जितना बनाना हो उतना लेवे जितना गूदा लिया हो उस चौगुना गाय का दूध ले धीमी धीमी आंच में पकावे जब सब दू जल जावै तब उतार कर छाया में सुखा डाले जब अच्छी तरह सू जावै तब उसको कूटकर चूर्ण बना डाले।

यदि चालीस तोला गूदा लिया हो तो मिर्च ६ तोला, पीप छै तोला सोंठ ६ तोला, और लौंग दो तोला, जावित्री दो तोला, जायफ दो तोला, गोखरू दो तोला, ककड़ी के बीज दो तोला, दालचीनी दो तो इलायची दो तोला, तेजपात दो तोला, चीता दो तोला, इन सब औ धियों को कूट पीस महीन चूर्ण करै मिश्री ॥ तोला गाय का घी बी तोला ले उसी में सबको भलीभांति भून डाले फिर बीस तोला ग का दूध और पन्द्रह तोला उत्तम शहद डाल कड़ाही में चढ़ा धी धीमी आंच में पकावे और कलछी से चलाती रहै जबतक घी सब औषधियों में भलीभांति न मिलजावै तबतक लौट पौट करै पक जाने पर उतार ले और बेर की बराबर गोली बांधले।

इस औषधि को प्रतिदिन एक गोली खाते रहने से पुराना बुखार तपेदिक खांसी श्वास आमवात अजीर्ण रोग और स्त्रियों के सब प्रकार के प्रदर रोग थोड़े ही दिनों में दूर होते हैं।

किसी भी दोष से गर्भाशय में गर्भधारण करने की शक्ति न रही हो सो भी आजाती है और स्त्रियों का बन्ध्यापन दूरकर पुत्रोत्पादक शक्ति उत्पन्न करता है।

पुरुषों के लिये भी अत्यन्त हितकारी है पोतों का बढ़ना दूर होता है और इन्द्रियों की सब प्रकार की निर्बलता दूर कर शरीर में एक प्रकार की अपूर्व शक्ति उत्पन्न करता है।

आवश्यक बातें ।

वैद्यक विषय बहुत बड़ा है बहुत सी ऐसी आवश्यक बातें हैं जिनके बिना जाने चिकित्सा करने से रोगी को बहुत हानि पहुंचना सम्भव है और चिकित्सा हो भी नहीं सकती उन असंख्य उपयोगी बातों में से कुछ प्रतिदिन काम में आनेवाली बातें यहां लिखती हूं ।

त्रिफला ।

हर्ड १, बहेड़ा २, आमला ४, अथवा गुठली निकाली हुई हर्ड एक भाग बहेडा गुठली निकाला हुआ दो भाग आंवल गुठली निकाला हुआ चार भाग, इस प्रकार इन तीनों ओषधियों को त्रिफला कहते हैं ।

हर्ड का सेवन ।

हर्ड दांतों से चबाकर खाने से अग्नि को बढ़ाती है । पीसकर खाने से मलको शुद्ध करती है अग्नि में सेंककर खाने से दस्तावर होती है और भूनकर खाने से त्रिदोष को दूर करती है ।

ग्रीष्म (गर्मी) ऋतु में हर्ड का सेवन हर्ड के चूर्ण में बराबर का गुड़ मिलाकर करना अत्यन्त हितकारी है ।

वर्षाऋतु में सेंधानमक के साथ हर्ड का चूर्ण सेवन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है ऋतु परिर्तन के कारण किसी प्रकार का कोई रोग नहीं होता ।

शरद ऋतु में हर्ड के चूर्ण की बराबर मिश्री मिला कर सेवन करने से बड़ा लाभ होता है ।

हेमन्त ऋतु में हर्ड के चूर्ण में बराबर की सोंठ चूर्ण कर मिलावै और पानी के साथ सेवन करै ।

शिशिर और वसन्त ऋतु मे शहद के साथ हर्डों का चूर्ण सेवन करने से अत्यन्त हितकारी है । इस प्रकार ऋतु के अनुसार अनुपान बदल कर हर्ड का सेवन बारहों मास करते रहने से शरीर आरोग्य रहता है किसी प्रकार का रोग नहीं होता ।

आवश्यक सूचना।

गर्भिणी स्त्री को निर्बल और दुर्बल को, राह से चलकर थ
को, दस्तों के रोगी को और जिसके शरीर से खून निकल चुका
अर्थात् किसी प्रकार का रक्त निकलने का रोग हो ऐसे रोगी को ह
नहीं खानी चाहिये हानिकारक है।

विरुद्ध आहार।

आहार सम्बन्धी कुछ भी ज्ञान न होने के कारण स्त्रियों
अज्ञानता से भोजनों में कभी कभी ऐसी भयंकर भूल होजाती है कि
प्राण तक चलेजाते हैं भोजनों की विरुद्ध से रोग तो घेरे ही रहते हैं।

विरुद्ध भोजन भारी और विष की समान होजाता है इसी
कारण सैकडा पीछे निन्नानवे स्त्री पुरुष रोगी पाये जाते हैं इसलिये
स्त्रियों को प्रतिदिन के भोजनों को बड़ी सावधानी और विचारकर
बनाना चाहिये।

इसके लिये मेरे यहां से पाकविद्या का अपूर्व ग्रन्थ "पाकशास्त्र"
मंगाकर पढ़ना और सुनना चाहिये तथा उसी के अनुसार अपने घर
के पुरुषों की प्रकृति के अनुसार ऋतु ऋतु के भोजन बनाकर खिलाकर
घरवालों को आरोग्य रखना चाहिये। विरुद्ध भोजन भूलकर भी
खाने में न आजावैं। विरुद्ध आहार कभी कभी तत्काल ही मनुष्य
को मार डालता है।

भोजन विचार।

कुलथी के साथ दूध विरुद्ध भोजन है मछली के साथ शराब,
दूध, अजमोद और क्षार विरुद्ध है। अमलवेत के साथ मांस खाना
विरुद्ध है। कांजी, दही, शहद विरुद्ध है दही, प्याज, बड़हर का फल,
दूध, तेल, यह सब एक दूसरे के साथ खाने से विरुद्ध हैं इनमें से
किसी को किसी के साथ न खावै। ताड़ के फल के साथ मट्ठा पीना
घी खाना केले की फली खाना, भूने जौ यह सब विरुद्ध हैं। सत्तू के
साथ दूध विरुद्ध है।

मछली का मांस, गुड़, मूंग, मूली के साथ खाने से कुष्ट (कोढ़) उत्पन्न होता है मृग और तीतर लावा आदि जंगली जीवों के मांस के साथ दुध पीने से विष की समान हानिकारक है।

इमली और गन्ने का रस शहद के साथ खाना अत्यन्त हानिकारक है सरसों के तैल में कबूतर का मांस हानिकारक है। कपूर और हलदी विरुद्ध है दूध के साथ खिचड़ी कपूर के साथ नीबू और घी के साथ शहद बराबर होने से बिष की समान प्राण नाशक है।

तीन दिन का पकाया हुआ अन्न तथा बासी भोजन बार बार गरम करके खाने से हानिकारक है मूली के साथ गरम भात अथवा अन्य कोई भी गरम पदार्थ खाने से शूल आंव का रोग और गुल्मरोग उत्पन्न होता है। इसी प्रकार गरम रोटी अथवा गरम भात के साथ शहद् खाना प्राण नाशक है इसलिये किसी गरम पदार्थ के साथ शहद् नहीं खाना चाहिये। गुड़, घी, दही इनके साथ बड़हर का फल हानिकारक है। दूध में सत्तू घोलकर खाना विरुद्ध है। जिस तैल में मछली पकाई हो उस तैल में हलदी डालकर कोई पदार्थ बनाकर खाना हानिकारक है।

प्यारी पाठिकाओं! ऊपर के लेख से आप समझ गई होंगी इसी प्रकार के एक दूसरे के विरुद्ध पदार्थों को साथ सेवन करना कभी कभी मृत्यु हो जाने का कारण होजाता है।

इसी लिये स्त्री जाति के उपकार के लिये मैंने बड़े परिश्रम से वैद्यकशास्त्र के अनुसार पाकशास्त्र तैयार किया है जिन बहिनों को इस विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त करना हो वे पाकशास्त्र मगाकर देखें।

दूध पांच महूर्त तक धरा रहे तो उसमें विकार उत्पन्न होजाता है और दस महूर्त तक रक्खा रहै तो विष के समान होजाता है। इसलिये दूध दुहकर जहां तक हो सकै शीघ्रही औटाकर रक्खै क्योंकि प्रातःकाल का औटाया हुआ दूध सायंकाल तक काम में लाने से हानिकारक नहीं परन्तु शाम को भी पीते समय गरम करके ही पीना चाहिये। गरम करके रक्खा हुआ शीतल दूध पीने से हानिकारक है।

रात्रि में दूध पीना हितकारी नहीं है यदि रात्रि में दूध पीवै तो तीन घंटे तक सोवै नहीं तो लाभदायक है वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि:—

रात्रौ क्षीरं न सेवेत यदि सेवेत न स्वपेत्।
यदि स्वपेद्धरत्यायुस्त स्यात्पथ्यं दिवा पयः॥

जो मनुष्य रात को दूध पीकर तुरंत सोता है उसकी आयु क्षीण होजाती है इसी कारण दिन में दूध पीना उत्तम है।

हेमन्त शिशिर और वर्षाऋतु में दही का सेवन करना हितकारी है। शरद् ग्रीष्म और वसन्त ऋतु में दही का सेवन करना हानिकारक है।

जरूरी बात।

इस पुस्तक में जहां सब औषधियां वरावर लेकर विधिपूर्वक काढ़ा बनाकर सेवन करना लिखा है परन्तु औषधि की मात्रा नहीं लिखी कहीं कहीं लिखी भी है जहां नहीं लिखी वहां काढ़े की औषधि की मात्रा एक तोला की समझनी चाहिये। रोगी कमजोर अधिक हो तो अथवा वालक हो तो ६ मासा तक देसकती हो वरन काढ़ा करने की औषधियों की मात्रा एक ही तोला की कम से कम होनी चाहिये।

रति विधान।

जिस प्रकार पर पुरुष से प्रसंग करना स्त्री को अधर्म और लोक निन्दा तथा परलोक दोनों में दुःख मिलता है उसी प्रकार पुरुष को भी पर स्त्री से गमन करना मना है धर्मशास्त्र और वैद्यकशास्त्र दोनों ने पर स्त्री गमन से धर्म की हानि, धन की हानि, और आयु की हानि होना बतलाया है।

शास्त्रकार कहते हैं:—

लङ्केश्वरो जनकजा हरणेन वाली—
तारापहारक तयाप्यथ कीचकाख्यः।
पाञ्चालिका ग्रहणतो निधनं जगामतच्चे—
तसापि परदाररतिं न कांक्षेत्॥

इसका अर्थ यह है कि जानकी के हरण से रावण तारा (सुग्रीव की स्त्री) के हरण से वालि और द्रौपदी के हरण से कीचक मारा गया बल्कि कुल के कुल नष्ट होगये इस कारण पुरुषों को चाहिये पर स्त्री रमण का स्वप्न में भी विचार न करे ।

अधिक विषय से आयु क्षीणता ।

पुस्तक के आरम्भ में ही अधिक विषय की ख़राबियां बतलाई गई हैं यहां लिखने की आवश्यकता नहीं अधिक विषय से अनेक रोग घेर लेते हैं मनुष्य की अवस्था कम होजाती है वृद्धा अवस्था के पहिले ही मनुष्य बुड्ढा होजाता है और शरीर को निर्बल पाकर अनेक प्रकार के भयंकर रोग घेरे रहते हैं जिससे शरीर की बड़ी दुर्गति होती है। इसलिये सब पुरुषों को नियम पूर्वक ही विषय करना चाहिये ।

ऋतु के अनुसार स्त्री गमन ।

निदाघ शरदोर्बालाहिता विषयिरगो मता ।
तरुणी शीतसमये प्रौढ़ावर्षा वसन्तयोः ॥

गरमी की ऋतु और शरद्ऋतु में बाला स्त्री से विषय करना अच्छा है। अर्थात् जिस पुरुष की स्त्री बाला हो उसे शरद्ऋतु में सन्तान की इच्छा से ही प्रसंग करना चाहिये ।

तरुणी स्त्री जिनकी है वह शशीकाल में करै और प्रौढ़ा स्त्री वाले पुरुष को वर्षा और वसंतऋतु में हितकारी है। इसके विरुद्ध जो विषय करते हैं उनकी आयुक्षीण और सन्तान रोगी निर्बल और दुर्बल होती है क्योंकि स्त्री पुरुष दोनों की आयुक्षीण होती है वृद्धावस्थ जल्द आती है ।

अत्याशितोऽधृतिः क्षुद्वान्सव्यथाङ्ग पिपासितः ।
बालो वृद्धोन्यरोगार्त्तर्वर्जयेद्रोगी च मैथुनम् ॥

अर्थ यह है कि जिस पुरुष ने अधिक भोजन किया हो धैर्य रहित (जल्दबाज) भूखा देह में पीड़ा होरही हो, प्यासा हो बालक

बुड्ढा गरमी सुज़ाक आदि रोगों से पीड़ित और अन्य प्रकार के रोगों से ग्रसित हो ऐसे पुरुष को मैथुन कदापि नहीं करना चाहिये। क्योंकि भोजन करके तुरंत (भोजन पचा न हो) मैथुन करने से अजीर्ण रोग और उदर के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं उस समय गर्भ रहने से उसी रोग वाली सन्तान होती है धैर्य रहित (जल्दबाजी) से प्रसंग करने से स्त्री पुरुष दोनों को रज और वीर्य सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं और गर्भ रहने से सन्तान भी उसी रोगवाली होती है।

भूख की दशा में मैथुन करने से मन्दाग्नि रोग और निर्बलता वीर्य की क्षीणता इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। देहमें पीड़ा होरही हो प्यास हो ऐसी अवस्था में प्रसंग करने से वात सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न होते हैं अन्य प्रकार के रोग में जैसे खांसी, बुखार, जुकाम में प्रसंग करने से क्षय (तपेदिक) रोग उत्पन्न होता है बालक (कम अवस्था में) और बुढापे में विषय करने से तथा गरमी सुजाक रोग वाला इनको प्रसंग नहीं करना चाहिये यदि पति की इच्छा भी हो तो भी स्त्री को मना करदेना चाहिये।

बाल्यावस्था और बुढ़ापे का मैथुन शरीर को तत्काल निर्बल करदेता है आयुक्षीण होती है।

क्योंकि बालक अवस्था में वीर्य कच्चा होने से प्रसंग करने से वीर्य खराब होजाता है सन्तान जब होती है रोगी निर्बल और कम आयुवाली होती है बुढापे में प्रसंग करने से मृत्यु शीघ्र होती है क्योंकि शरीर में नया रक्त तो बनता नहीं जिससे वीर्य बनै इसी लिये बुढ़ापे में निर्बलता अधिक होती है और सब इद्रियां कमजोर होती हैं ऐसी अवस्था में प्रसंग करना मानो मृत्यु को निमंत्रण देना है।

गरमी सुजाक रोग वालों को प्रसंग नहीं करना चाहिये क्योंकि वही रोग स्त्री को भी होजाते हैं और स्त्री को बहुत कष्ट होता है गर्भाशय खराब होजाता है सन्तान के भी यह रोग उत्पन्न होते हैं गर्भस्राव व गर्भपात होज़ाता है इसलिये ऐसे रोगी पुरुष की स्त्री को उचित है कि पति को समझा देवे। पति को चाहिये कि स्वयं इस बात पर विचार रक्खै।

प्रवाल भस्म की विधि।

प्रवाल मूंगा को कहते हैं औषधि के काम में मूंगा की शाखा लीजाती है। मूंगा सर्व दोष नाशक, दीपन, रुचिकारक शरीर को पुष्ट करनेवाला वीर्य को बढ़ानेवाला और वीर्य दोश नाशक है तथा क्षय, पाण्डुरोग ज्वर, श्वास, खांसी, और मेदरोग (चर्बी चढ़जाना) को दूर करनेवाला है।

मूंगा मीठा, अम्ल कफ नाशक पित्त निवारक वीर्य वर्द्धक कान्तिजनक क्षयनाशक रक्तपित्त नाशक दीपन सारक पाचक हलका ज्वर विष उन्माद प्रमेह रोग और नेत्र रोगों को दूर करता है।

प्रतिदिन सेवन करने से वीर्य स्तम्भन होता है स्त्री पुरुष बालक सबके लिये हितकारी है इसी कारण बड़े बड़े विद्वान वैद्य स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों में रज वीर्य की निर्बलता तथा रज वीर्य के विकारों में और शरीर की निर्बलता के लिये सेवन कराते हैं इसकी भस्म बनाकर काम में लाते हैं। स्त्री पुरुष बालक सबके लिये हितकारी है।

४० चालीस तोला मूंगा की शाख मगाकर साफ कर लेवे अर्थात् अत्तार की दूकान से मगाकर उसमें से जो अन्य कोई औषधि या मिट्टी आदि मिली हो निकाल डाले। घीकुमार मगाकर उसे छील कर गूदा निकाल लेवे इस प्रकार दो सेर गूदा लेकर एक कोरी मिट्टी की हंडिया मगाकर धोकर साफ करे सूख जाने पर उसमें घीकुमार का आधसेर के लगभग गूदा बिछादेवे फिर उसके ऊपर मूंगा को बिछा देवे फिर मूंगा पर घीकुमार का गूदा बिछावे फिर मूंगा बिछावे इसी प्रकार फिर ऊपर से गूदा बिछावे नीचे ऊपर और बीच में अर्थात् चारो ओर घीकुमार का गूदा रहना चाहिये फिर उस हंडिया के मुह पर मिट्टी का सकोरा (प्याला) रखकर बन्द कर देवे और मुलतानी मिट्टी भिगोकर एक मोटा मजबूत कपड़ा तमाम हंडिया में लपेटकर ऊपर से मिट्टी लगादेवे इस प्रकार कपड़ मिट्टी करके हंडिया को लोहे के तारों से चारोंओर लपेटदेवे फिर छाया में सूखने को रखदेवे।

गजपुट विधि।

जमीन में एक गड्ढा एक गज गहरा एक गज़ लम्बा एक गज चौड़ा अर्थात् चौखूटा खोद कर उसमें अरने उपले (जंगलों में या मैदानों में जो गाय भैस चरते समय गोवर करती हैं वह गोवर मैदान में ही पड़ा पड़ा सूखजाता है उसे दिहाती लोग वीन लाते हैं यही अरने उपले कहलाते हैं औपधियों के फूकने में यही उपले काम में आते हैं)

उस गड्ढे में बिछा देवे भलीभांति तह लगाकर बिछावै इस प्रकार आधा गड्ढा उपलों से भरदेवे फिर बीच में उस हंडिया को सुखाकर रखदेवे और ऊपर से फिर उपले चुनकर ऊपर तक भरदेवे और आग लगादेवे आग को पहिले ही नीचे के उपलों में रखदेवे इस प्रकार आंच लगने पर जब उपले सब जलजावै दो तीन दिन में जब आंच शीतल होजावै तब उस हड़ियों को निकाल लेवे और खोलकर मूंगा निकाल लेवे यह मूंगा सफेद होजावैगा।

इस फुके हुए मूगे को खरल में डालकर गुलाबजल में घोटे घोटते घोटते मैदा की समान होजावै तब इसकी छोटी छोटी टिकिया बनाकर छाया में सुखा लेवे जब सूखजावै तब घीकुमार का गूदा लेकर फिर उसी प्रकार दूसरी या उसी हंडिया में पहिली विधि के अनुसार घी कुमार का गूदा और मूंगा की टिकिया रखकर हंडिया का मुंह पहिली विधि की भांति बन्द करके ऊपर मिट्टी करदेवे, और लोहे के तारों से लपेट देवे फिर दूसरीबार उसी प्रकार उसी गड्ढे में आंच देकर फूंके।

शीतल होने पर निकाललेवे और उन टिकियों को फिर गुलाब जल डालकर कई दिनों तक भलीभांति घोटै घुट जाये पर काम में लावै।

मूंगा भस्म की सेवन विधि।

कोष्टगत वायु के लिये।

छोटी पीपर आधी पीसकर दो रत्ती प्रवाल भस्म मिलाकर शहद के साथ प्रातःकाल और शायंकाल को चाटै तो रोग दूर हो।

पुराने बुखार में भी इसी प्रकार सेवन करना चाहिये। अवश्य फायदा करता है।

वीर्य क्षीणता के लिये।

पक्के केले की फली के साथ प्रतिदिन दोनों समय दो दो रत्ती प्रवाल भस्म का सेवन करे।

वीर्य और शरीर की कमज़ोरी के लिये

दो रत्ती प्रवाल भस्म को गाय के दूध की मलाई में रखकर रात के सोते समय और प्रातःकाल एक एक पुड़िया सेवन करे। तो सब प्रकार की निर्बलता दूर हो।

प्रमेह रोगों में।

सब प्रकार के प्रमेह रोगों में प्रवाल भस्म दो रत्ती, गिलोय का सत दो माशा गाय का मक्खन और मिश्री से प्रतिदिन दोनों समय सेवन करे तो सब प्रकार के प्रमेह कुछ दिनों में दूर होते हैं।

पुरानी खांसी में।

शीतोपलादि चूर्ण दो माशा प्रवाल भस्म दो रत्ती दोनों को मिलाकर गायका मक्खन और शहद के साथ सेवन करते रहने से खांसी अवश्य दूर होती है। मक्खन और शहद बराबर नहीं लेना चाहिये।

पित्त के रोगों में।

गायका दूध मिश्री के साथ प्रवाल भस्म की दो दो रत्ती की पुड़िया दोनों समय सेवन करने से पित्तविकार दूर होते हैं।

सुज़ाक रोग में।

दो रत्ती प्रवालकी भस्म, एक तोला गोखरू को एक पाव पानी में पकावै जब एक छटांक पानी बाकी रहजावै तब उतार मलछान प्रवाल की पुड़िया खाकर ऊपर से मिश्री मिलाकर गोखरू के काढे को पी लेवे इसी प्रकार दोनों समय सेवन करै। नया पुराना सब प्रकार का सुज़ाक दूर होता है।

पेशाब की जलन व कड़क के लिये।

प्रवाल भस्म की २ रत्ती की पुड़िया बना एक एक पुड़िया दोनों समय चावलों के हिम के साथ सेवन करे तो मूत्र की तकलीफें दूर हों। एक छटांक पुराना चावल को पावभर पानी में रात को भिगोकर ओस में रखदेवे प्रातःकाल छानकर उसी पानी को काम में लावे चावल फेंकदेवे इसी को चावलों का हिम कहते हैं।

रक्त पित्त में।

मुंह से अथवा ववासीर से रक्त आता हो तो डेढ़ डेढ़ रत्ती प्रवाल भस्म को चावल के हिम के साथ ३-३ घंटे पर सेवन करावे तो रोग शांत हो।

हर प्रकार की कमजोरी में।

गाय का मिश्री मिला गरम दुध के साथ प्रवाल भस्म एक एक पुड़िया दोनों समय सेवन करे। निर्बलता दूर हो। नेत्ररोगों में भी इसी प्रकार सेवन करना चाहिये। इस प्रकार प्रवाल भस्म स्त्री पुरुष सबको ही ऊपर लिखे रोगों में अनुपान वदल देने से फायदा करती है इसकी मात्र रोगी के वलावल के अनुसार कम ज्यादह करदेनी चाहिये इसका विस्तार पूर्वक वर्णन इस पुस्तक के दूसरे भाग में किया जावेगा।

आरोग्य शास्त्र की उपयोगी बातें।

स्वास्थ्य रक्षा विधान।

आरोग्यशास्त्र के बिना जाने मनुष्य नीरोग नहीं रह सकते रोगी मनुष्यों के लिये औषधियों का सेवन पथ्य से रहकर करना अमृत की समान गुण करता है इसी प्रकार आरोग्य शास्त्र के नियमों पर चलते रहने से मनुष्य कभी रोगी नहीं होता और न कुपथ्य से अकाल में ही काल का ग्रास बन सकता है। आरोग्यशास्त्र के नियमों पर चलते रहने से मनुष्य आयुपर्यन्त हृष्ट पुष्ट रहता है। आरोग्यशास्त्र के उपाय अमृत की समान गुणकारी होते हैं।

इसी लिये आरोग्यशास्त्र का जानना मनुष्यमात्र को हितकारी है अतएव यहां कुछ उपाय लिखे जाते हैं आशा है सब बहिने इसे आदि से अन्त तक पढ़ सुनकर इसी के अनुसार चलकर आरोग्यता सम्बन्धी बड़ा लाभ उठावेंगी।

रोगों का कारण।

स्त्रियों को ऋतु और अपने घर के मनुष्यों की प्रकृति का कुछ भी ज्ञान नहीं है न वे खाने पीने के पदार्थों के गुण अवगुण कोही जानती है इसी कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे स्त्री पुरुष अनेक प्रकार के रोगों में ग्रसित हैं अतएव सब स्त्री पुरुषों के जानने के लिये प्रत्येक ऋतु का आहार विहार लिखती हूं इस विषय में विस्तार पूर्वक जानना हो तो मेरा बनाया हुआ आरोग्यशास्त्र पाकशास्त्र नामक बहुत बड़ा २=) रुपया दो आना मूल्य का ग्रन्थ छपकर तैयार है मगाकर देखिये और फायदा उठाइये।

ऋतुओं का वर्णन।

वर्ष में छैः ऋतु होती हैं।

हर एक ऋतु दो दो महीने की होती है इस प्रकार वर्ष के बारह महीनों की छै ऋतु होती हैं।

१-अगहन और पौष (हेमन्त ऋतु)

२-माघ और फाल्गुण (शिशिर ऋतु)

३-चैत्र और बैशाख (बसंत ऋतु)

४-ज्येष्ठ और आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु)

५-श्रावण और भाद्रपद (वर्षा ऋतु)

६-आश्विन और कार्त्तिक (शरदऋतु)

यही छै ऋतु हैं इन्हीं के अनुसार भोजनों में भी हेर फेर करते रहना चाहिये क्योंकि मनुष्य के शरीर में वात, पित्त, कफ यही तीन प्रधान हैं इन्हीं से जीवन स्थिर है इनमें से कोई भी दोष बिगड़ जाने से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं और तीनों के एक साथ बिगड़ने से शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है इस कारण इन तीनों को ठीक रखने से कोई रोग पास नहीं आता इनका नियम यह है कि:—

१—ज्येष्ठ और आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु) में बात का संचय। श्रावण और भाद्रपद (वर्षाऋतु) में बात का कोप। क्वार और कातिक में वात की शांति रहती है।

२—वर्षा ऋतु में पित्त का संचय सरद ऋतु में पित्त का कोप और हेमन्त ऋतु में शान्ति रहती है।

३—शिशिर ऋतु में कफ का संचय, वसन्त ऋतु में कफ का कोप और ग्रीष्म ऋतु में शान्ति रहती है।

इस प्रकार वात, पित्त और कफ का संचय, कोप और शान्ति आहार विहार से होती है। इसी कारण इन तीनों दोषों के प्रकोप करता आहार विहारादि की ओर ध्यान रखना चाहिये।

जिन महीनों में वात का कोप होता है अर्थात् सावन और भादों में कटु तीक्ष्ण कसैले रूखे हलके पदार्थ न खाने चाहिये तथा बासी (रात्रिका रक्खा हुआ) अन्न न खाना चाहिये। शोक भय अधिक परिश्रम और उपवास न करना चाहिये तथा दिशापेशाब छींक जमुहाई आदि वेगों को भूलकर भी न रोकना चाहिये।

जिन महीनों में पित्त का कोप होता है अर्थात् क्वार और कार्त्तिक में तिल कांजी दही कटु तीक्ष्ण अधिक नोन और खटाई न खाना चाहिये।

शरद् ऋतु में धूपमें चलना या बैठना क्रोध करना उपवास करना (भूखे रहना) प्यास को रोकना या बहुत खा लेना इत्यादि कारणों से आधी रात के समय पित्तका कोप होता है। इसलिये इन सबको त्याग देना चाहिये।

जिन महीनों में कफ़ का कोप होता है अर्थात् चैत्र और वैशाख में दही, दूध, नया अन्न, शीतलजल, खटाई अधिक, नोन अधिक, घी की वस्तुयें तिल, भारी (मैदा के पकवान) और अधिक मीठी वस्तु दिन को सोना और प्रातःकाल ही भोजन करना इन कारणों से कफ़का कोप होता है इस कारण इन महीनों में यह वस्तुयें छोड़ देनी चाहिये।

हेमन्त ऋतु का आहार विहार।

हेमन्त ऋतु में शीत के कारण ऊपरी शरीर की गरमी भीतर रहती है इस कारण जठराग्नि (पेट में गरमी पाचनशक्ति) प्रबल होती है यदि इस ऋतु में समय पर भोजन रूपी ईंधन न मिले तो रस रक्त आदि धातुओं को यह प्रबल हुई जठराग्नि पचाने लगती है जिससे मनुष्य शीघ्रही निर्बल दुर्बल और शक्तिहीन होजाता है इस ऋतु में समय पर (जिस समय भूख लगे) भोजन करना चाहिये और भोजनों में स्वादिष्ट खट्टे और नमकीन पदार्थ होने चाहिये।

इस ऋतु में जठराग्नि के प्रबल रहने से तथा रात्रि बड़ी होने से प्रातःकाल ही भूख लगती है अतएव प्रातःकाल शौच आदि कामों

से अवकाश पाकर हाथ मुंह धोकर कुछ खाकर तब अपने प्रतिदिन के काम में लगना चाहिये। क्योंकि वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि भूखा मनुष्य यदि समय पर भोजन न करके किसी काम में लग जावै तो उसकी जठराग्नि (पेटकी आग) नष्ट होजाती है जैसे विना ईंधन के आग बुझ जाती है वैसे पेट की आग (जठराग्नि) मन्द होजाती तथा बुझ जाती है।

इस ऋतु में तैल की मालिस समस्त शरीर में करके गरम जल से स्नान करना चाहिये। तैल की मालिस करके गरम जल से स्नान करना परिश्रम करना शरीर को पुष्ट करता है और धातु वायु तथा तेज की वृद्धि करता है। कान और आंखों की शक्ति को बढ़ाता है परमात्मा ने जिनको सामर्थ दी है उन्हें तैल की मालिस करके सरसों चिराजी आदि पदार्थों का उबटन लगवाकर गरम पानी से स्नान करना चाहिये।

पीठ में सूर्य की गरमी और पेट हाथ पैर आदि में अग्नि की गरमी सेवन करना चाहिये। गुड़ में मिला हुआ हड़ का चूर्ण प्रति दिन सेवन करना अदरख, लौंग, सोंठ कच्चे आम और कैथ की चटनी पीपर सौंफ, मेथी, कमलगट्टा चौलाई का शाक, धनियां, कालीमिर्च हींग, घी, दूध की खीर परवल की तरकारी मूंग अरहल की दाल पुराने चावल यह पदार्थ हेमन्त ऋतु में सेवन करने चाहिये।

चीते की छाल, सेंधा नमक, इलायची, जायफल चूक क शाक, दही, मट्ठा जिमीकंद, मुनक्का जलेबी, हलुआ आदि पदार्थों का सेवन इस ऋतु में अत्यन्त हितकारी है। मूली की तरकारी, जंभीरी, अनार, अंगूर सेव, बादाम, अखरोट, हेमन्त ऋतु में हितकारी हैं। गेहूं साठी के चावल तथा लाल चावलों का भात नदी या कुए का पानी यह सब हेमन्तऋतु में हितकारक हैं। इस कारण सब ऋतुओं में हानिकारक पदार्थों का सेवन छोड़ देना चाहिये।

हानिकारक आहार विहार।

सिंघाड़े, कसेरू, नाड़ी का साक, केला की फली, उड़द, आलू थियातोरई, भैंस का दूध, जौ, मटर, बड़े, यह सब हेमन्तऋतु में हानि-कारक हैं। दिन में सोना, पुराना अन्न, लंघन करना यह सब हानिकारक है। शीतल जल से स्नान करना, बहुत देर का रक्खा हुआ ठंढा भोजन

करना, बासी पानी पीना हवा में बैठना, एक ही समय भोजन करना, सत्तू खाना हानिकारक हैं। कसेरू, कडुए, तीक्ष्ण, और रूखे तथा हलका पदार्थों का सेवन करना जहां सूर्य का प्रकाश न पहुंचता हो ऐसे स्थान में रहना यह सब हानिकारक है। इस कारण यह सब हानिकारक आहार विहार छोड़ देना चाहिये।

२-शिशिर ऋतु के आहार विहार।

शिशिर ऋतु में ठंढ अधिक पड़ती है और कुसमय वर्षा होने से और भी शीत अधिक होता है इस कारण बात और कफ से विकार उत्पन्न होते हैं।

बात और कफ की शांति के लिये इस ऋतु में पीपल का चूर्ण तथा हर्डोका चूर्ण एकही में मिलाकर प्रतिदिन सेवन करना चाहिये।

जमीकंद की तरकारी उड़द मूंग जमीकंद आदि की बड़ी तथा मुंगौड़ी, पकौड़ी पापड़ खीले मालपुआ कचौड़ी आदि पदार्थ सेवन करने चाहिये। बर्फी पेड़ा घेवर मलाई आदि बलदायक पदार्थों का सेवन करना चाहिये।

अदरख, आम, लहसोड़ा, छुहारा आदि का अचार सेंधानमक और हींग अजवायन मोमन पड़े हुए मैदा के उत्तम पदार्थों का सेवन करना चाहिये। उड़द तथा मूंग अरहर आदि का सेवन करना चाहिये हेमन्त ऋतु के अनुसार आहार बिहार शिशिर ऋतु में भी करना चाहिये।

३-वसन्त ऋतु का आहार विहार।

शिशिर ऋतु में संचित हुआ कफ वसन्त ऋतु में सूर्य की किरणों से तापित हो पानी की समान पतला हो जठराग्नि (शरीर की अग्नि को) नष्ट कर देता है जिससे अनेक प्रकार के राग उत्पन्न होजाते हैं। इस कारण कफ को शान्ति करने के लिये सावधान रहना चाहिये।

वसन्त ऋतु में जुलाब लेकर तथा वमन कारक औषधियों का सेवन करके कफ की शांत करना चाहिये। हलके और रूखे भोजन करना परिश्रम करना प्रातःकाल का वायु सेवन, स्नान कपूर केशर चन्दन का सेवन करना चाहिये।

पुराने जौ गेहूं की रोटी मूंग की दाल परवल की तरका पुराने चावल का भात खाना चाहिये शहद का सेवन सोठ डाल क औटाया हुआ पानी अथवा खैर सार तथा चन्दन डालकर औटाय हुआ पानी पीना हितकारी हैं।

प्रातःकाल का वायु सेवन, रूखे, कसैले तीखे और कडुए रस का सेवन करना चाहिये। सफेद वस्त्र धारण करना हितकारी है केशर, चन्दन का शरीर पर लेप करना, त्रिफला, हलदी, सोंठ मि पीपल, पीपरामूल, असगन्ध, अजवाइन, जीरा, अदरख का सेव करना, मूली, परवल, लौकी का शाक, हींग, मैथी आदि का सेव हितकारक हैं।

बथुवा कचनार की कली चौलाई का शाक, मरसे का शाक करेला, घिया तौरई वसन्तऋतु में हितकारी है हर्डो का चूर्ण शहद में मिलाकर प्रतिदिन सेवन करना सरसों चना मटर साठी के चावल जौ मूंग कोदों अरहल का सेवन हितकारक है। मसूर की दाल, चूका का शाक, सहजन, बैंगन, पक्का तरबूज सहजने के फूल का शाक, हितकारी है।

वावली या कुए का पानी, गायका दूध मिश्री मिला हुआ अत्यन्त हितकारी है। परिश्रम करना, धानों का लावा सेंधा नमक पड़ा हुआ गायका मट्ठा, कढी आदि पदार्थ हितकारी है।

हानिकारक आहार बिहार।

उड़द, घिया तोरई, दही, आलु, सिंघाड़े, बड़ी, मुगौड़ी, पोई, खिचड़ी, तिल, चिवरा भैंस का दूध दिन में सोना, खट्टे पदार्थों का सेवन चिकने गरिष्ट पदार्थों का सेवन यह सब इस वसन्त ऋतु में हानि कारक हैं इसलिये भोजन बनानेवाली स्त्री को इन सबका ध्यान रखना चाहिये।

४-ग्रीष्म ऋतु का आहार बिहार।

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की तेज़ी से गरमी अधिक होती है इस कारण वायु भी गरम बहा करती है और पृथ्वी भी तप्त होजाती है अतएव भीतर बाहर सब जगह गरमी ही गरमी मालूम होती है इस

रण कफ क्षीण होजाता है और वात की वृद्धि होजाती है। इस लिये वायु को शांत रखने के लिये उपाय करना चाहिये।

इस ऋतु में मीठे चिकने हलके और शीतल पतले पदार्थों का सेवन करना, कुए के ताजे जल से स्नान करना मिश्री मिले जौ के पुराने चावलों का भात, अनार, खस, गुलाब आदि का शर्बत अंगूर अनार आदि फलों का सेवन आमला, सेव आदि का मुरब्बा, फूलों की माला, चन्दन का सेवन करना गुण दायक है।

गुड़के साथ हर्ड का चूर्ण प्रतिदिन सेवन करना चाहिये। मिश्री गाय का घी मिलै ठढे जल सहित सत्तू पीना परम हितकारी है। महीन कोमल वस्त्र का धारण करना शाली चावलों का भात तथा साठी चावलों का भात पुराने जौ की, गेहूं की, ज्वार की रोटी, मूंग, मटर, अरहल, मसूर की दाल कच्चा तरबूज, कच्ची ककड़ी, कच्चा खीरा, पेठा, करेला, बथुआ पालक परवल, चौलाई, चूका का शाक हितकारी है। मिश्री मिला हुआ गाय के दूध का बनाया मलाई सहित मीठा दही और मिश्री मिला हुआ गाय का मट्ठा इस ऋतु में अत्यन्त हितकारी है।

सिंघाड़े, कसेरू, घिया तोरई, लौकी, गन्ना इनका सेवन इस ऋतु में हितकारी है। खीर, सेमई मालपुआ दूध लपसी, दूध और मिश्री मिली हुई फेनी का सेवन हितकारी है। दिन में थोड़ा सोना, चन्दन लगाना, दूध भात मिश्री का सेवन हितकारी है।

हानिकारक आहार बिहार।

क्षार युक्त पदार्थों का सेवन, खट्टे और चरपारे तथा तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन हानिकारक है गरम मसाला अधिक नमकीन पदार्थ रूखे तथा गरम पदार्थ इस ऋतु में सेवन न करै। तिल, तैल, मिर्चा, सोंठ, अदरख, वैगन, पका तरबूज, लहसुन, सहजन, उड़द, चौरा, खिचड़ी आदि का सेवन इस ऋतु में कदापि नहीं करना चाहिये। सरसों, राई, दही का पानी उड़द के बड़े कढ़ी, पकौड़ी, उपवास करना रास्ता चलना, अधिक परिश्रम करना यह सब हानिकारक है। रात में जागना घाम में रक्खे हुए पानी से स्नान करना हानिकारक है।

वर्षाऋतु का आहार विहार।

वर्षाऋतु में वात का कोप होता है वर्षा से अनेक प्रकार के जीव उत्पन्न होते हैं पृथ्वी के भीतर की गरमी बाहर निकलती है इत्यादि कारणो से वायु दूषित होकर अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

वर्षाऋतु स्वास्थ्य के लिये अन्य सब ऋतुओं से खराब है क्योंकि इस ऋतु में अनेक प्रकार के ज्वर खांसी आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं इस कारण अन्य ऋतुओं की अपेक्षा इस ऋतु में भोजनों (आहार विहार) का अधिक ध्यान रखना चाहिये।

इस ऋतु में गेहूं, सांठी चावलों का भात उड़द कुलथी लाल चावल का सेवन करना हितकारी है, राई, सरसों, अलसी, पका पेठा, घिया तोराई, बैंगन परवल, चूका का शाक तरकारी सेवन करना चाहिये, पका तरबूज खाना हितकारी है। सेंधानिमक काली-मिर्च पड़ा हुआ गायका मट्ठा प्रतिदिन सेवन करना हितकारी है। पोई का शाक सहजन की तरकारी सहजन के फूल का शाक लौकी मूली की तरकारी यह सब गुणदायक हैं खीर खाना अत्यन्त हितकारी है। कुयें का पानी पीना हितकर है।

गुड़ मिलाकर गाय का दही, खिचड़ी, घी मिलाकर खीर खाना हितकारी है। ईख का सेवन चीनी का सेवन, लपसी, फेनी और मालपुआ लड्डू सेमई आदि का सेवन हितकारी है।

वर्षाऋतु में अनेक प्रकार के मनोहर चित्र विचित्र के उत्तम स्वच्छ घर में रहना। कुए का पानी गरम कर के (खूब खौला कर) ठंढा किया गया अत्यन्त हितकारी है। तिल के तैल की मालिश समस्त शरीर में कराकर कुए के ताजे पानी से स्नान करना बड़ाही गुणकारी है। चिकने खट्टे मीठे पदार्थों का सेवन सेंधानमक मिलाकर हर्ड का चूर्ण प्रतिदिन सेवन करना परम हितकारी है।

हलदी और केशर की समस्त शरीर में मालिश भी हितकर है अगर की धूनी प्रातःकाल और रात को सोते समय सेवन करना वर्षाऋतु में अत्यन्त गुण दायक है।

कैथा की चटनी, अनार, पोई का शाक और मिश्री इस ऋतु में हितकारी है। गरम किया हुआ मिश्री मिलाकर गाय का दूध रात को सेवन करना, रात को भोजन न करना, केवल दूध ही पीना चाहिये।

बथुए के शाक की भुजिया तथा रायता सेवन करना चाहिये कमलगट्टा, खजूर, पके हुए करौंदा की चटनी अंजीर खाना गुणदायक है कच्चे आम की चटनी धनियां पोदीना हितकारी है। नारियल बकरी का दूध केले की फली की तरकारी गेहूं मूंग पुराने चावल पूड़ी फेनी इत्यादि गुणदायक है।

हानिकारक आहार बिहार ।

दिन में सोना, नदी या तालाब का पानी पीना हानिकारक है। गोभी, ढेंढस, पकी ककड़ी, चिवरा, मोठ, फूट अत्यन्त हानिकारक है धूप में बैठना चलना अधिक परिश्रम करना ठंढा (रक्खा हुआ) भोजन करना हानिकारक है। नाड़ी का शाक, करेले, पालक, सिंघाड़े कसेरू भैंस का दूध हानिकारक है।

कुसमय भोजन करना, दौड़ कर चलना, आगके सामने बैठना कूदना अधिक परिश्रम करना, भारी बोझा उठाना, रातको जागना, डकार, छींक, मल, मूत्र, वमन, आंसू आदि और प्रसंग की इच्छा इत्यादि का वेग रोकने आदि से वायु विकार को प्राप्त होता है जिस से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

वर्षाऋतु में जिस समय आकाश मेघों से आच्छादित होता है उस समय दोष कुपित होते हैं वर्षा से पृथ्वी की गरमी निकलने के कारण पित्त दूषित होता है और अनेक जीव जन्तुओं के पैदा होने से तथा मेघों के जल से जल दूषित होने के कारण कफ दूषित होता है।

इसी प्रकार वर्षा के कारण से वायु दूषित होता है इन तीनों के दूषित होने से खांसी बुखार मन्दाग्नि इत्यादि रोग उत्पन्न हो जाते हैं इस कारण इस ऋतु में बड़ी सावधानी से रहकर अग्निदीपन करने वाले पदार्थों का सेवन करते रहना चाहिये।

शरदऋतु का आहार बिहार ।

इस ऋतु में पित्त से गाढ़ा हुआ रक्त और भी अधिक गाढ़ा होता है इस कारण इस ऋतु में पित्तकारक पदार्थों का त्याग करना चाहिये। पुराने चावल मूंग गायका घी मिश्री गेहूं आदिका सेवन करना चाहिये।

आरोग्यशास्त्र की उपयोगी बातें।

मिश्री मिला हरड़ का चूर्ण प्रतिदिन सेवन करना चाहिये। चन्दन लगाना, मिश्री मिला गायका दूध सेवन करना हितकारी है। आलू गोभी: पालक, परवल, लौकी आदि का शाक सेवन करना चाहिये।

सूर्य की किरणों से दिन भर गरम किया गया हो और चन्द्रमा की चांदनी में रात भर रक्खा गया हो ऐसे वात कफ पित्त तीनों को ठीक रखनेवाला अमृत की समान गुणकारी जलको पीना चाहिये। इस प्रकार के जल को हंसोदक जल कहते हैं।

खाँड़ के साथ हड़ों का चूर्ण या आवलों का चूर्ण प्रतिदिन रात को सोते समय सेवन करना चाहिये। धनियां सेंधानमक, मुनक्का, घी, नारियल की गिरी, चौलाई बकरी का दूध बथुआ और पोई का शाक नाड़ी का शाक केला की फली की तरकारी यह सब इस ऋतु में हितकारी हैं।

सिंघाड़ा चूका का शाक, तोरई घुइया कसेरू अनार अंगूर, पूड़ी कचौड़ी मालपुआ और अनेक प्रकार के पकवान, बादाम किसमिस मुनक्का आदि का सेवन गुणदायक है। वायु सेवन करना, जुलाब लेना नदी के बहते हुए जल में स्नान करना, गरम वस्त्र धारण करना अत्यन्त हितकारी है।

हानिकारक अहार बिहार।

शरदऋतु पित्त को बढ़ाने वाली है इस कारण पित्त कृत्त पदार्थों को सेवन न करै। पीपल मिरच, भांग, लहसुन, हींग, मट्ठा बैंगन, खिचड़ी, दही, कढ़ी सरसों का तेल इत्यादि पित्त को बढ़ाने वाले पदार्थ सेवन न करै। धूप में चलना बैठना रातको जागना हानिकारक हैं। गुड़ लाल मिर्च उरद के बनाये हुए पदार्थ और क्रोध करना यह सब छोड़ देना चाहिये। वर्षा का पानी हंसोदक बनाने की क्रिया जो पीछे लिखी गई है इसी रीति से तैयार करना और इस ऋतु में वही पानी पीना चाहिये।

आवश्यक सूचना।

ऊपर जिस प्रकार ऋतुओं का आहार बिहार वर्णन किया गया है उसी प्रकार नियम रखना चाहिये। अर्थात्—

१—हेमन्त २—शिशिर ३—वर्षा

इन तीनों ऋतुओं में मीठा खट्टा और नमकीन इन तीनों रसों का प्रतिदिन सेवन करना चाहिये अर्थात भोजनों में खट्टे मीठे नमकीन तीनों पदार्थ होने चाहिये ।

४—बसन्त ऋतु में ।

कडुए, चरपरे और कसैले रसों के पदार्थ भोजनों में प्रतिदिन होने चाहिये ।

५—ग्रीष्म ऋतु में

मीठे और पतले पदार्थों का सेवन प्रतिदिन अवश्य रखना चाहिये ।

६—शरद ऋतु में ।

चरपरे स्वादिष्ट और कसैले रस अवश्य सेवन करने चाहिये ।

ऋतु सन्धि के नियम ।

ऋतु सन्धि उसे कहते हैं कि जब एक ऋतु समाप्त हो और दूसरी आरम्भ हो । जब एक ऋतु समाप्त होकर दूसरी आरम्भ होने लगे तब पहिली ऋतु का आहार बिहार धीरे धीरे छोड़कर नई ऋतु जिसका आरम्भ हुआ हो उसके अनुसार आहार बिहार करने लगे । इस प्रकार नियम पूर्वक आहार बिहार रखने से मनुष्य भोजनों की अज्ञानता आहार बिहार के अनियम से कभी रोगी न होगा ।

जब एक ऋतु समाप्त होकर दूसरी आरम्भ होती है तब वात पित्त कफ इन तीनों दोषों का क्रमश धीरे धीरे कोप और शांति होती है । इस लिये धीरे धीरे आहार बिहार का भी पहिला नियम छोड़ने और दूसरे का आरम्भ करना चाहिये । यदि ऋतुओ का आरम्भ देरी से हो तो देरी से ही नियम बदलना चाहये जैसे प्रायः ऋतुओं में गड़बड़ी होजाती है जैसे जाड़ा देरी से आरम्भ हो तो जब से आरम्भ हो तभी से जाड़ा मानना चाहिये मान लीजिये कि गरमी की ऋतु तो आरम्भ होगई परन्तु जाड़ा पड़ताही जाता है तो ऋतु के आरम्भ होने से जाड़े में गरमी के कपड़े अथवा गरमी के भोजन आदि काम

में नहीं लाने चाहिये मान लीजिये कि जाड़े की ऋतु तो आरम्भ हो गई परन्तु वर्षा में जैसी गरमी पड़ती है वह पड़ती रही तो जाड़े के वस्त्र और भोजनों को काम में नहीं लाना चाहिये वही धीरे धीरे जिस प्रकार ऋतु का परिवर्तन हो वैसी प्रकार आहार विहार का परिवर्तन करे।

भोजन विज्ञान।

भोजन किस प्रकार पचता है।

प्रथम अवस्थ –पहिले सब खाद्य पदार्थ दांतों से पीसे जाकर पतले होते हैं और तब थूक में मिलकर छोटी गोलियों के रूप में गले से होते हुए (आमाश) में पहुंचते हैं। देखो चित्र नं १ में आमाशय

दांतों और थूक के लाभ।

(क) दांत–दांतों से खाद्य–पदार्थ के बहुत ही छोटे छोटे टुकड़े होते हैं मनुष्य को उचित है कि जहां तक हो सके खाने की चीज को दांतों से खूब पीसकर बारीक करले, क्योंकि भोजन जितना ही अधिक कुचल कर खाया जायगा उतना ही वह थूक में मिलकर गुणकारी होगा और जल्दी पचेगा।

(ख) थूक–खाद्य–पदार्थ में जितना मीठा पदार्थ होता है लार उस सब में मिलकर उसे एक प्रकार की चीनी या शक्कर बना देती है जिससे भोजन बहुत शीघ्र पचने योग्य होजाता है।

दूसरी अवस्था।

जब थूक से मिलकर बनी हुई खाद्य पदार्थ की छोटी छोटी गोलियां गले की नली द्वारा पेट में पहुंचती हैं तो वहां पेट में पहिले खाई हुई चीज का वह अंश पीसकर महीन किया जाता है जो चबाने के समय दांतों द्वारा पूरी तरह कुचले जाने से रहजाता है इस प्रकार पेट को दो तरह के काम करने पड़ते हैं:—

(क) मोटे भोजन को पीसकर महीन और पचने के योग्य बनाना, यह काम एक ऐसी क्रिया से होता है जो मथने की क्रिया के समान होती है।

(ख) पेट में पहुंची हुई सब चीजों को दोबारा खूब दबाकर महीन करना।

शारीरिक अवयव दर्शक चित्र नं० १

इस चित्र का पूरा हाल शारीरिकशास्त्र "दैवी अनुभव प्रकाश" दूसरे भाग में देखिये।
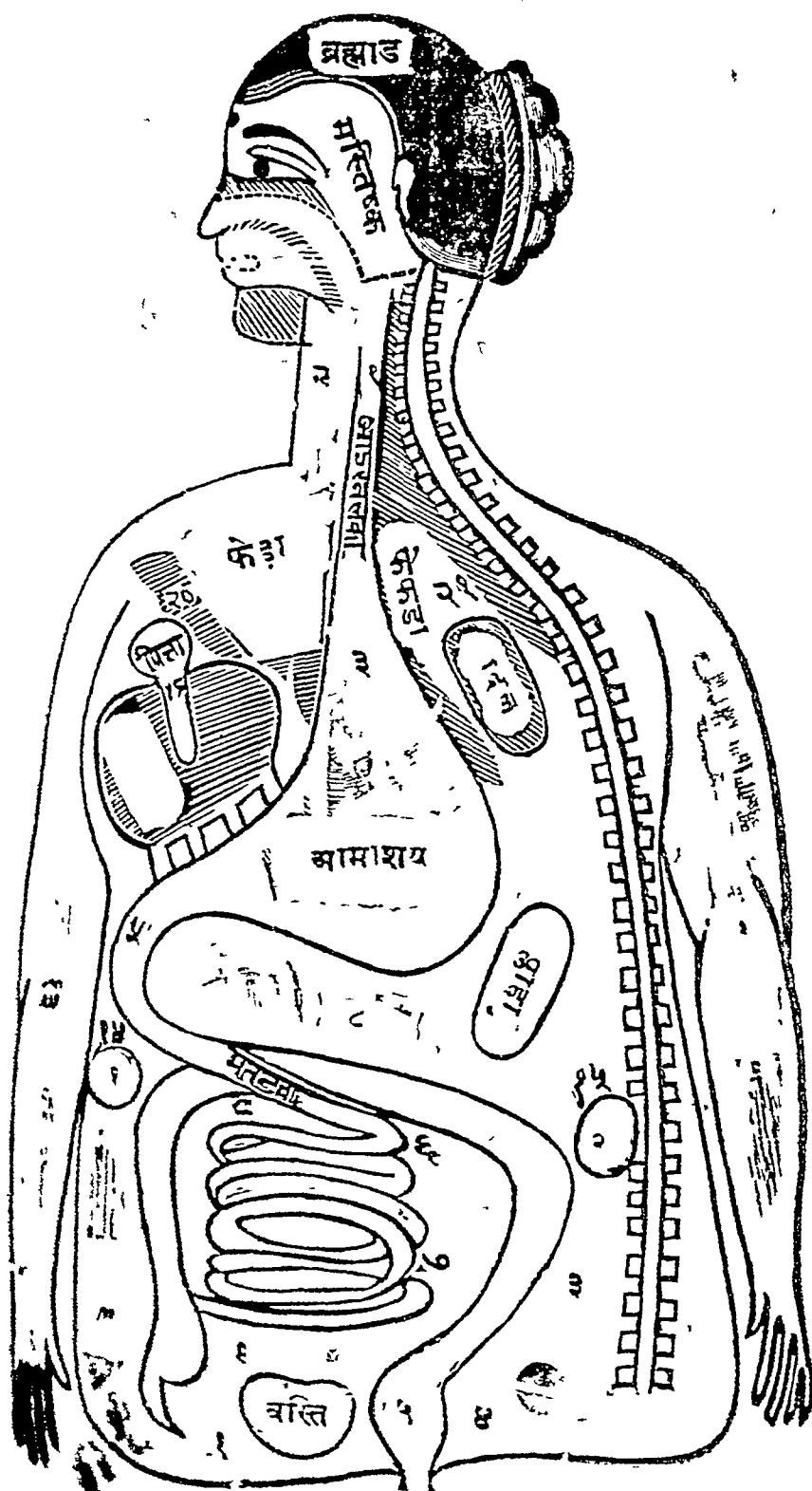
आरोग्यशास्त्र की उपयोगी बातें।

आमाशय का आकार एक मशक या थैली का सा होता है। (देखो चित्र) नं० १ इसमें एक प्रकार की धुकनी और एक प्रकार का तेजाब पैदा होता रहता है और ये दोनों चीजें हजम करती हैं।

तीसरी अवस्था।

आमाशय से चलकर भोजन छोटी आंतों में पहुंचता है (देखो चित्र नं० १) नं० ६-७ यहां जिगर से एक छोटी नली के द्वारा पित्त आता है जो सब प्रकार की चरबी के साथ मिलकर उसको दूध के रूप में बनाता और पचाता है। पित्त जितना अधिक होता है पाचन भी उतना ही अधिक होता है।

चौथी अवस्था।

आंतों में कई तरह के रस बनते हैं और थूक तथा आमाशय से जो काम बच रहता है उसे वे पूरा करती हैं आंतें बराबर सिकुड़ती और ढीली होती रहती हैं जिसके कारण खाद्य-पदार्थ ऊपर से नीचे उतरते और आगे बढ़ते रहते हैं।

नम्बर २ के ऊपर से मुह से चलकर खाई हुई वस्तु आहार नलिका द्वारा होती हुई नम्बर ३ के नीचे आमाशय (जहां भोजन इकट्ठा होकर पचता है) में आती है फिर धीरे धीरे पचकर नम्बर ५ के मार्ग से होकर छोटी आंतों में आती है नम्बर ६-७-८-६ तक छोटी आंतें हैं। देखो चित्र नं० १

भोजन पचने का समय।

भोजन को मुंह में रखने के लिये कोई निश्चित समय नहीं बतलाया जा सकता यह प्रत्येक मनुष्य की इच्छापर निर्भर है खाने वाला चाहे भोजन जल्दी जल्दी चबावे और निगल जाय और चाहे बहुत धीरे धीरे और देर में, हां इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हर एक कौर का साधारणत: कमसे कम पन्द्रह बीस बार चबाना चाहिये।

आमाशय में भोजन।

भोजन को आमाशय में आध घंटे से चार घन्टे तक लगते हैं। यदि भोजन हलका हुआ हो तो जल्दी और यदि भारी हुआ हो तो देर से पचता है। जैसे दूध को पचने में ३०-४० मिनट लगते हैं रोटी और दाल आदि भारी चीजें चार घंटे में पचती हैं।

चित्र नम्बर २ अस्थि पंजर।
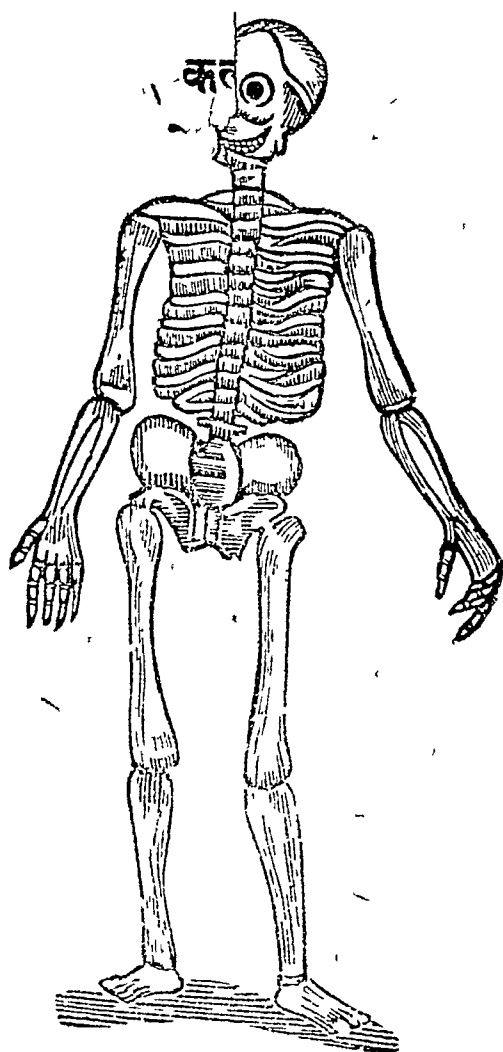
शरीर का पोषण।

शरीर का पोषण ठीक ठीक तभी होता है जब कि भोजन ठीक समय पर मिलता रहे कुसमय और अनियम भोजनों से शरीर को हानि पहुंच कर अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

भोजन का समय।

भोजन सदैव निश्चित समय पर ही करना चाहिये। दिन रात में केवल दो बार ठोस कर (खूब पेट भर कर) खालेने से स्वास्थ्य बिगड़ता है क्योंकि आमाशय पर अधिक दबाव पड़ने से तथा अन्य

अवयवों पर दबाव पड़ने से रस तथा रक्त ठीक ठीक नहीं बनता जब रस और रक्त ठीक बनता है तब वह समस्त शरीर में फैली हुई नस रूपी नलियों द्वारा समस्त शरीर में पहुंच कर शरीर का पोषण करता है। जिससे शरीर के समस्त अंग पुष्ट होते हैं हड्डियां मजबूत होती हैं जिस प्रकार समस्त शरीर में नसें फैली हुई हैं उसी प्रकार हड्डियों का ढांचा बना हुआ है देखो चित्र नं० २—३ इस विषय को सम्पूर्ण जानने के लिये पाकशास्त्र मंगाकर देखिये।

चित्र नम्बर ३ समस्त शरीर में नसों का फैलाव

औषधियां बनानेकी विधि

१-स्वरस, २-कल्क, ३-क्वाथ, ४-हिम और फांट ये पांचों काढ़े की भांति समझनी चाहिये इन पांचों की विधि यह है।

स्वरस बनाना।

जो औषधि कीड़ों की खाई हुई घुनी सड़ी न हो, आगसे जली न हो इस प्रकार की ताज़ी और उत्तम औषधि मंगाकर गीली (हरी) कूटकर कपड़े से निचोड़ कर रस निकाल ले उसे स्वरस कहते हैं।

दूसरी विधि।

चार छटांक सूखी औषधियों को कूटकर आठ छटांक पानी में मिट्टी की हांडी में भिगादेवे और एक दिन एक रात बराबर भीगने देवे फिर खूब मलकर छान ले उस रस को भी स्वरस कहते हैं।

तीसरी विधि।

सूखी औषधियों को लेकर जितनी तौल में हों (जितनी की तुम्हें ज़रूरत हो) उनसे

आठ गुना पानी ले सबको मिट्टी की हांडी में आंच पर चढ़ा देवे, फिर धीमी धीमी आंच से पकावै जब चौथाई हिस्सा पानी रहजावै अर्थात् यदि तुमने आठ छटांक पानी डाला है तो जब दो छटांक पकते पकते बाकी रह जावै तब उतार कर कपड़े से छानले इसे भी स्वरस कहते हैं।

स्वरस की मात्रा।

प्रथम गीली औषधियों के स्वरस की मात्रा दो तोले की समझो और दूसरे तथा तीसरे प्रकार के स्वरस की मात्रा चार तोले की लेनी चाहिये। इसमें भी अवस्था तथा बल के अनुसार कम करलेनी चाहिये। ऊपर लिखे स्वरस में यदि शहद, शक्कर, गुड़, जवाखार, जीरा, नोन, घी, तैल और किसी प्रकार का चूर्ण मिलाना हो तो छै माशा मिलाना चाहिये।

कल्क बनाने की विधि।

गीली औषधियों को चटनी की समान बारीक पीसना या सूखी औषधियों को पानी के साथ चटनी की समान पीस कर काम में लाना इसी को कल्क कहते हैं।

कल्क की मात्रा।

कल्क की मात्रा (खुराक) एक तोले की है।

कल्क में अन्य औषधियां।

मिलाना हो जैसे शहद, घी, तैल तो मात्रा से दूनी मिलाना चाहिये शक्कर, गुड़ मिलाना हो तो बराबर की मिलाना चाहिये।

दूध तथा पानी या और कोई पतली वस्तु मिलानी हो तो चौगुनी मिलाना चाहिये।

क्वाथ (काढ़ा) बनाने की विधि।

चार तोले औषधियों को जौकुट अर्थात जौ की बराबर टुकड़े करके उसमें १६ सोलह गुना पानी मिलाकर मिट्टी की हांडी में धीमी धीमी आंच में पकाना चाहिये। हांडी का मुंह बन्द नहीं करना चाहिये। जब औटते २ आठवां हिस्सा रहजावे तब उतार कर चीनी या कांच अथवा पत्थर के बर्तन में छान लो। फिर काम में लाओ इसे क्वाथ या काढ़ा कहते हैं।

काढ़े की मात्रा।

इसकी मात्रा (खुराक) ४ तोले की होती है

काढ़े में अन्य वस्तु मिलाना।

काढ़े में शक्कर मिलानी हो तो वात रोग में काढ़े से चौथाई हिस्सा मिलाना चाहिये पित्त के रोगों में काढ़े से आठवां हिस्सा औ कफ के रोगों में काढ़े से छठवां हिस्सा मिलान चाहिये। यदि शहद मिलाना हो तो काढ़े कं मात्रा से आधा मिलाना यदि जीरा, जवाखार सैंधा नोन, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिरच पीपल आदि डालने हों तो चार मासे डाले।

आवश्यक सूचना।

रोगी को चाहिये कि प्रसन्नता पूर्वक काढ़ को कांच या पत्थर के बर्तन में कुछ गरम गरम पीवै और औषधि पीकर बर्तन के उलटा डालदेवे।

हिम बनाने की विधि।

चार तोले औषधि कूटकर २४ चौबीस तोले पानी में मिट्टी की हांडी में भिगो देवे रात भर

भीगने पर प्रातःकाल मलकर छानलेवे फिर सेवन करै इसे हिम या ठंढा काढ़ा कहते हैं।

हिम की मात्रा।

हिम की मात्रा ८ आठ तोले की होती है।

हिम में अन्य वस्तु मिलाना

हिम में अन्य वस्तु मिलानी हो तो हिम की मात्रा की बराबर मिलावै।

फांट बनाने की विधि।

चार तोले औषधि को महीन पीसकर चूर्ण बनावै फिर मिट्टी की हांडी में एक पाव पानी चूल्हे पर चढ़ावै जब पानी खौलने लगे तब उस चूर्ण को डालकर कुछ देर बाद उतार छानले इसे फांट कहते हैं।

फांट की मात्रा ८ आठ तोले की है। फांट में अन्य वस्तु मिलानी हो तो काढ़े में लिखे अनुसार मिलाना चाहिये।

चूर्ण बनाने की विधि।

सूखी औषधियों को कूट कपड़छान कर लेना इसी को चूर्ण कहते हैं।

चूर्ण की मात्रा।

छै मासे से एक तोले तक की है।

चूर्ण में अन्य पदार्थ मिलाना।

चूर्ण में गुड़ मिलाना हो तो बराबर का मिलावै, मिश्री मिलानी हो तो दूनी, हींग मिलानी हो तो भूनी हींग अन्दाज़ से मिलालेवे, शहद या अन्य इसी प्रकार की वस्तु मिलानी हो तो दूनी मिलाना चाहिये।

दूध, गोमूत्र, पानी आदि पतली वस्तुयें मिलानी हों तो चूर्ण से चौगुनी मिलानी चाहिये।

यदि नींबू आदि किसी के रस के पुट देने हों तो इतना रस मिलाओ जिसमें चूर्ण भली भांति भीग जावै।

अवलेह बनाने की विधि।

औषधियों का काढ़ा बनाकर छानले उसे फिर अग्नि पर चढ़ा औटावै जब गाढ़ा हो जावै चाटने लायक़, तब उतार ले इसे अवलेह कहते हैं।

अवलेह की मात्रा।

अवलेह की मात्रा भी काढ़े की समान होती है।

अन्य पदार्थ मिलाना।

अवलेह में शक्कर डालनी हो तो औषधि के चूर्ण से चौगुनी और गुड़ मिलाना हो तो दुगुना और दूध, गौमूत्र, पानी आदि पतले पदार्थ मिलाने हों तो चूर्ण से चौगुने डालो।

गोली बनाने की विधि।

गुड़ या शक्कर की चासनी बनाकर या बिना चासनी के ही जहां जैसी विधि हो या दूध गोमूत्र अथवा किसी पदार्थ का रस चूर्ण में मिलाकर गोली बना लेनी चाहिये।

गोली की मात्रा।

जहां जिस प्रमाण की गोली लिखी हो उतनी ही बड़ी बनानी चाहिये। काष्ठादिक औषधियों की गोली की मात्रा ३ और छै माशे तक की होती है।

गोली में अन्य पदार्थ मिलाना।

शक्कर डालकर गोलियां बनानी हों तो चूर्ण से चौगुनी शक्कर डालना चाहिये यदि गुड़ में बनानी हों तो चूर्ण से दूना गुड़ लेना चाहिये। शहद मिलाना हो तो चूर्ण की बराबर मिलाना और दूध आदि पतली वस्तु मिलानी हो तो चूर्ण से दूनी मिलानी चाहिये।

घृत और तैल विधि।

जिन औषधियों का घृत या तैल बनाना हो तो पहिले उनका कल्क ऊपर की विधि के अनुसार बनालेना चाहिये फिर कल्क जितना हो उससे चौगुना घृत या तैल जो बनाना हो डालदेवे घृत या तैल में दूध, गोमूत्र आदि अन्य पतले पदार्थ मिलाने हों तो घृत या तैल से चौगुने और उतनाही पानी मिलाकर सब चूल्हे पर चढ़ा धीमी धीमी आंच में पकावै जब पकते पकते सब जल जावै केवल तैल या घृत जो बनाया हो रहजावै तब उतार लेवै और छानकर बन्द करके रखदेवे।

तैलमें यदि दूध गोमूत्र आदि पतले पदार्थ मिलाने न लिखे हों तो कल्क से चौगुना तैल और तैल से चौगुना पानी मिलाकर धीमी धीमी आंच में पकावै जब सब पानी जल जावे तब उतार ले इसी प्रकार घृत भी बनाया जाता है तैल या घृत जोकुछ बनाना हो पानी सब जल जाने पर केवल घृत या तैल बाकी रहै तब उतार ले घी या तैल न जलने पावे नहीं तो खराब होजावेगा ।

आवश्यक सूचना

गुडूच्यादि नरम या गीली औषधियों का कल्क करना हो तो सब औषधियों की तोल से चौगुना पानी डाले । जो कुछ गीली और कुछ बहुत सूखी औषधियां हों तो आठ गुना पानी डाले यदि बहुत सूखी औषधियां हों तो सोलह गुना पानी डालना चाहिये ।

तैल या घृत सिद्ध की परीक्षा ।

तैल में जबतक पानी रहता है तबतक झाग नहीं आते जब सब पानी जल जाता है केवल तैल रहजाता है तब झाग आने लगते हैं झाग आवें तभी तुरन्त उतार लेना चाहिये समझलो तैल सिद्ध होगया ।

घृत के पाक में जबतक पानी रहता है झाग आते हैं जब सब पानी जल जाता है तब झाग बन्द होजाते हैं घृत बनाने में जब झाग बन्द होजावें तभी उतार ले, घी जलने न पावे।

घी या तैल जलजाने से हानिकारक हो जाते हैं इस कारण इनके बनाने में बड़ी साव-धानी रखनी चाहिये।

घृत या तैल बनाना हो तो एक ही दिन में न बनावै औषधियों को कूटकर रात्रि को गीली या सूखी जैसी औषधियां हों भिगो देवे प्रातःकाल उनको चटनी की भांति कल्क कर धीमी धीमी आंच में पकावे जे दिन में पक सकै।

सुगन्धित तैल बनाना हो तो कड़ाही में न बनावे किसी तांबे या पीतल के ऐसे बर्तन में बनावे जिसका मुंह छोटा हो उसे ढककर सन्धियों में उर्द की दाल की पिट्ठी या मैदा सानकर लगादे जिससे भाप अधिक न निकलने पावे जब भाप निकलने लगे तब मैदा लगाकर बन्द करदे एकदम भाप अधिक निकलने से सुगन्धि निकल जावेगी।

तैल तैयार हुआ या नहीं इसकी अन्दाज़ करलेवे। तैल में जबतक पानी रहैगा तबतक सनसनाहट की आवाज़ होगी, पानी न रहने पर आवाज़ न होगी, जो तैल या घृत कड़ाही में बनाया जाता है उसके ढकने की जरूरत नहीं है। झाग आने से मालूम होजावेगा कि तैल ठीक होगया या नहीं।

तैल या घृत अथवा अन्य औषधियों में भी कोई सड़ी गली औषधि नहीं डालनी।

आसव तथा अरिष्ट विधि

पानी तथा अन्य पतले पदार्थों के साथ बर्तन में औषधियां डालकर उसका मुंह बन्द करदे, पृथ्वी में गाड़ दे, पन्द्रह दिन अथवा एक मास बाद निकाले इसे आसव या अरिष्ट कहते हैं। आसव और अरिष्ट बनाने की विधि और नुस्खे "देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में लिखे जावैंगे।

पुटपाक विधि।

जिस औषधि का पुटपाक करके रस निकालना हो तो पहिले * उसके ऊपर जामुन

या बड़ के पत्ते लपेट फिर चिकनी मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप कर दो फिर उसे खूब तेज़ और बहुत सी आग में दबादो जब वह अग्नि से तपकर लाल होजावे तब निकाल कर ठंढा कर मिट्टी और पत्ते अलग कर औषधि निकाल कर उसका रस निकाललो।

इस रस की खुराक एक छटांक की है। इसमें शहद आदि मिलाकर खाना लिखा हो तो एक तोला मिलाना चाहिये।

मंथ विधि।

एक पाव ठंढे पानी में औषधियों का एक छटांक चूर्ण डालकर मिट्टी की हांडी में उसे मट्ठे की भांति मथकर काम में लावे उसे मंथ कहते हैं। इसकी मात्रा दो छटांक की होती है।

क्षीर-पाक विधि

औषधियों की तौल से आठगुना दूध और चार गुना पानी डाल कर तीनों को इकट्ठा कर औटावे जब पानी जल जावे केवल दूध रहजावे तब उतार कर काम में लावे इसे क्षीर-पाक कहते हैं।

चावल का पानी

एक छटांक साफ़ किए हुए चावलों को आठ छटांक अर्थात् आठगुने पानी में डाल के अग्नि पर चढ़ाओ जब खूब खौलने लगै तब उतार कर पानी छानलो फिर काम में लाओ।

दूसरी विधि।

एक छटांक साफ़ चावलों को रात को पावभर पानी में भिगो दो प्रातःकाल मलकर छान लो और काम में लाओ।

उष्णोदक विधि।

एक सेर पानी औटावे जब पानी आधा रहजावे या चौथाई रहजावे या आठवां हिस्सा रह जावे तब उतार छानकर रखलेवे फिर ठंढा होने पर काम में लावे यह पानी पहिले से दूसरा और दूसरे से तीसरा इस प्रकार एक से एक अधिक लाभदायक होता है। रोगी के लिये जिस जगह जैसा लिखा हो वैसा बनाना चाहिये।

प्रातःकाल का औटाया शाम तक और शाम का औटाया रात भर पीने को देवे बासी न देवे।

या बड़ के पत्ते लपेट फिर चिकनी मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप कर दो फिर उसे खूब तेज़ और बहुत सी आग में दबादो जब वह अग्नि से तपकर लाल होजावे तब निकाल कर ठंढा कर मिट्टी और पत्ते अलग कर औषधि निकाल कर उसका रस निकाललो।

इस रस की खुराक एक छटांक की है। इसमें शहद आदि मिलाकर खाना लिखा हो तो एक तोला मिलाना चाहिये।

मंथ विधि।

एक पाव ठंढे पानी में औषधियों का एक छटांक चूर्ण डालकर मिट्टी की हांडी में उसे मट्ठे की भांति मथकर काम में लावे उसे मंथ कहते हैं। इसकी मात्रा दो छटांक की होती है।

क्षीर-पाक विधि

औषधियों की तौल से आठगुना दूध और चार गुना पानी डाल कर तीनों को इकट्ठा कर औटावे जब पानी जल जावे केवल दूध रहजावे तब उतार कर काम में लावे इसे क्षीर-पाक कहते हैं।

चावल का पानी

एक छटांक साफ़ किए हुए चावलों को आठ छटांक अर्थात् आठगुने पानी में डाल के अग्नि पर चढ़ाओ जब खूब खौलने लगे तब उतार कर पानी छानलो फिर काम में लाओ ।

दूसरी विधि ।

एक छटांक साफ़ चावलों को रात को पावभर पानी में भिगो दो प्रात:काल मलकर छान लो और काम में लाओ ।

उष्णोदक विधि ।

एक सेर पानी औटावे जब पानी आधा रहजावे या चौथाई रहजावे या आठवां हिस्सा रह जावे तब उतार छानकर रखलेवे फिर ठंढा होने पर काम में लावे यह पानी पहिले से दूसरा और दूसरे से तीसरा इस प्रकार एक से एक अधिक लाभदायक होता है । रोगी के लिये जिस जगह जैसा लिखा हो वैसा बनाना चाहिये ।

प्रात:काल का औटाया शाम तक और शाम का औटाया रात भर पीने को देवे बासी न देवे ।

यह पानी कफ, आमवात, चर्बी का बढ़ना, कासश्वास और सब प्रकार के ज्वरों को दूर करता है और वस्ति को शोधन करता है तथा पाचन-शक्ति को बढ़ाता है।

कांजी बनाने की विधि।

मिट्टी की कोरी हांडी में सरसों का तैल भीतर खूब लगादेवे फिर साफ पानी, राई, जीरा, सैंधव, हींग, सोंठ मिलाकर मट्ठा डाल कर हांडी का मुंह बन्द करके तीन दिन तक रक्खा रहने दो। जब वह उबल आवै तब कांजी कहावेगी।

रोगोत्पत्ति और नाम।

अब मैं यहां सब बहिनों के जानने के लिये रोगों के नाम और उत्पत्ति लिखती हूं किस कारण से कौन कौन से रोग उत्पन्न होते हैं वात, पित्त, कफ इन तीनों से ही अनेक रोगों की उत्पत्ति है जबतक मनुष्य के शरीर में यह तीनों ठीक रहते हैं तबतक ही मनुष्य निरोग और हृष्ट पुष्ट रहता है इन तीनों में से एक भी दूषित होने से अनेक रोग उत्पन्न

होते हैं किससे क्या रोग होता है इसके जानने को मनुष्य मात्र को अत्यन्त आवश्यकता है सो यह बात बिना वैद्यक ज्ञान के किसी को मालूम नहीं होसकती अतएव सबके उपकारार्थ वही विषय लिखा जाता है।

वात से उत्पन्न होनेवाले रोग।

कसैले, कडुवे, तीक्ष्ण रूखे, पदार्थ खाने से, भूखे रहने, शीतल, ठंढा बासी भोजन करने से, अधिक परिश्रम, अधिक विषय, नियम के विरुद्ध विषय, धातु क्षीणता, अधिक शोक, भय, मांस क्षीणता, कै, दस्त, आमदोष, दिशा, पेशाब रोकना, लंघन करना, बहुत देरी तक जल में खेलना कूदना, जलक्रीड़ा करना आदि कारणों से तथा वृद्धपन, चोट लगना और वर्षा ऋतु व तीसरे प्रहर व एक प्रहर रात्रि शेष रहने के समय वायु कुपित होकर शरीर की खाली नसों में प्रवेश कर एक दो तथा अनेक रोगों को उत्पन्न करता है जिनके नाम यह हैं:—

२४—वाताष्ठीला रोग	नाभि के नीचे गांठ पड़ जाना
२५—प्रत्यष्ठीला रोग	नाभि के नीचे गांठ पड़कर पीड़ा हो।
२६—तूनी रोग	गुदा और लिंग में पीड़ा होना
२७—प्रतितूनी रोग	मूत्राशय की पीड़ा
२८—विषमाग्नि रोग	अनियमित भूख का लगना
२९—आटोप रोग	पेट की नसों का तनजाना
३०—पार्श्वशूल रोग	पसली की पीड़ा
३१—पृष्ठशूल रोग	पीठ की पीड़ा
३२—बहुमूत्र रोग	बहुत पेशाब होना
३३—वस्ति वात रोग	पेशाब का रुक जाना
३४—मलदृढ़ता	मल का कड़ा होजाना, सूखजाना
३५—मलावरोध	मल का न उतरना
३६—गृध्रसी रोग	पैरों का रहजाना (चला न जाना) नीचे का आधा धड़ रहजाना
३७—कालाय खंज रोग	कांप कर चलना
३८—खंज रोग	लंगड़ापन
३९—पंगु रोग	पंगुल होजाना
४०—क्रोष्ट शीर्षक रोग	घुटनों की पीड़ा
४१—खल्ली रोग	हाथ पांव का मुड़जाना
४२—वातकंटक रोग	मुस्कुरों की पीड़ा
४३—पादहर्ष रोग	पैरों में झुनझुनी
४४—पाददाह रोग	पैरों में जलन होना
४५—आक्षेप रोग	शरीर कांपना
४६—दंडक रोग	शरीर काष्ठ (लकड़ी) की समान होजाना।
४७—वाताक्षेप रोग	शरीर का डुलना
४८—पित्ताक्षेप रोग	पित्त से शरीर डुलना
४९—दंडापतानक रोग	सूखे काष्ठ की समान पड़े रहना
५०—अभिघाताक्षेपक रोग	शरीर में चोट सी लगना
५१—अंतरायाम रोग	नेत्रों का खिचाव
५२—बाह्यायाम रोग	पीठ की नसों का खिचाव
५३—धनुर्वात रोग	शरीर कमान की समान झुक जाना।

८२—गर्भनाश रोग — गर्भ गिरजाना
८३—अभ्रम श्रम — विना परिश्रम के ही थकान
८४—गर्भाशय दोष — गर्भाशय के रोग
८५—श्रमनाश — थकावट दूर होना

इतने प्रकार के रोग वात से उत्पन्न होते हैं इसलिये इनको वातरोग जानो और इनसे सदैव सावधान रहो, इनके उत्पन्न होने का कारण मत बनो, वायु बिगड़ कर इन रोगों को पैदा करता है इसलिये सावधान रहो ।

पित्तदोष के कारण ।

कड़वी, खट्टी, गरम, दाहकारक, तीक्ष्ण, रूखी वस्तु खाने से और भूख, अधिक मैथुन, क्रोध, अधिक परिश्रम, शराब पीने की विशेषता से, प्यास और भूख रोकने से, घाम में फिरने से और अधिक नोन खाने से, दिन में विषय करने से पित्त कुपित होकर तथा अपच होने, शरद ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, मध्यान्ह काल और अर्द्ध-रात्रि के समय में भी पित्त कुपित होता है और उससे नीचे लिखे चालीस प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ।

१—पलित रोग — (ज्वानी में ही बालों का पकजाना
२—रक्तनेत्र — (आंखों का हर समय लाल रहना)

५४—कुब्जक रोग	कुबड़ापन
५५—अपतन्त्र रोग	शरीर के झुकाव सहित आंखों का फटना।
५६—अपतान रोग	केवल नेत्रों का फटना
५७—पक्षाघात रोग	लकवा मारजाना
५८—अभिलषिक रोग (१)	... ...
५९—कम्प रोग	शरीर का हर समय कांपना
६०—स्तम्भन रोग	शरीर का जकड़ जाना
६१—व्यथा रोग	शरीर का चटकना
६२—लोद रोग (१)	... ...
६३—मेद रोग	चर्बी का बढ़जाना
६४—स्फुरण रोग	अंगों का फरकना
६५—रूक्षता	शरीर में खुश्की रहना
६६—श्यामता रोग	शरीर काला पड़जाना
६७—क्षीणता रोग	शरीर का दुबला होना
६८—शीतलता रोग	शरीर का ठंढा रहना
६९—रोमाञ्च रोग	पुलकित शरीर होना
७०—अंग मर्द रोग	हड़फूटन होना
७१—अंग विभ्रम रोग	अंग भ्रांति
७२—स्नायु संकोच रोग	नसों का सिमिट जाना
७३—अंग शोष रोग	शरीर का सूखजाना
७४—भय रोग	डर लगना
७५—उन्माद रोग	पागल होजाना
७६—मोह रोग	असावधानी
७७—निद्रानाश रोग	नींद न आना
७८—स्वेदाभाव	पसीना न निकलना
७९—बल क्षीण रोग	निर्बलता (नाताकती)
८०—वीर्यनाश रोग	धातुक्षीण होना
८१—रजोदोष	स्त्री का मासिक रज बिगड़ना

(१) इन तीनों रोगों के व्यवहारी नाम का वैद्यक में पता नहीं चलता।

८२—गर्भनाश रोग	गर्भ गिरजाना
८३—अश्रम श्रम	बिना परिश्रम के ही थकान
८४—गर्भाशय दोष	गर्भाशय के रोग
८५—श्रमनाश	थकावट दूर होना

इतने प्रकार के रोग वात से उत्पन्न होते हैं इसलिये इनको वातरोग जानो और इनसे सदैव सावधान रहो, इनके उत्पन्न होने का कारण मत बनो, वायु बिगड़ कर इन रोगों को पैदा करता है इसलिये सावधान रहो ।

पित्तदोष के कारण ।

कड़वी, खट्टी, गरम, दाहकारक, तीक्ष्ण, रूखी वस्तु खाने से और भूख, अधिक मैथुन, क्रोध, अधिक परिश्रम, शराब पीने की विशेषता से, प्यास और भूख रोकने से, घाम में फिरने से और अधिक नोन खाने से, दिन में विषय करने से पित्त कुपित होकर तथा अपच होने, शरद ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, मध्यान्ह काल और अर्द्ध-रात्रि के समय में भी पित्त कुपित होता है और उससे नीचे लिखे चालीस प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ।

१—पलित रोग	(ज्वानी में ही बालों का पकजाना
२—रक्तनेत्र	(आंखों का हर समय लाल रहना)

५४—कुब्जक रोग	कुबड़ापन
५५—अपतन्त्र रोग	शरीर के झुकाव सहित आंखों का फटना।
५६—अपतान रोग	केवल नेत्रों का फटना
५७—पक्षाघात रोग	लकवा मारजाना
५८—अभिलषिक रोग (१)	... ...
५९—कम्प रोग	शरीर का हर समय कांपना
६०—स्तम्भन रोग	शरीर का जकड़ जाना
६१—व्यथा रोग	शरीर का चटकना
६२—लोद रोग (१)	... ...
६३—मेद रोग	चर्बी का बढ़जाना
६४—स्फुरण रोग	अंगों का फरकना
६५—रूक्षता	शरीर में खुश्की रहना
६६—श्यामता रोग	शरीर काला पड़जाना
६७—क्षीणता रोग	शरीर का दुबला होना
६८—शीतलता रोग	शरीर का ठंढा रहना
६९—रोमाञ्च रोग	पुलकित शरीर होना
७०—अंग मर्द रोग	हड़फूटन होना
७१—अंग विभ्रम रोग	अंग भ्रांति
७२—स्नायु संकोच रोग	नसों का सिमिट जाना
७३—अंग शोष रोग	शरीर का सूखजाना
७४—भय रोग	डर लगना
७५—उन्माद रोग	पागल होजाना
७६—मोह रोग	असावधानी
७७—निद्रानाश रोग	नींद न आना
७८—स्वेदाभाव	पसीना न निकलना
७९—बल क्षीण रोग	निर्बलता (नाताकती)
८०—वीर्यनाश रोग	धातुक्षीण होना
८१—रजोदोष	स्त्री का मासिक रज विगड़ना

(१) इन तीनों रोगों के व्यवहारी नाम का वैद्यक में पता नहीं चलता।

८२—गर्भनाश रोग	गर्भ गिरजाना
८३—अश्रम श्रम	बिना परिश्रम के ही थकान
८४—गर्भाशय दोष	गर्भाशय के रोग
८५—श्रमनाश	थकावट दूर होना

इतने प्रकार के रोग वात से उत्पन्न होते हैं इसलिये इनको वातरोग जानो और इनसे सदैव सावधान रहो, इनके उत्पन्न होने का कारण मत बनो, वायु बिगड़कर इन रोगों को पैदा करता है इसलिये सावधान रहो।

पित्तदोष के कारण।

कड़वी, खट्टी, गरम, दाहकारक, तीक्ष्ण, रूखी वस्तु खाने से और भूख, अधिक मैथुन, क्रोध, अधिक परिश्रम, शराब पीने की विशेषता से, प्यास और भूख रोकने से, घाम में फिरने से और अधिक नोन खाने से, दिन में विषय करने से पित्त कुपित होकर तथा अपच होने, शरद ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, मध्यान्ह काल और अर्द्ध-रात्रि के समय में भी पित्त कुपित होता है और उससे नीचे लिखे चालीस प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

१—पलित रोग	(जवानी में ही बालों का पक जाना
२—रक्तनेत्र	(आंखों का हर समय लाल रहना)

३—रक्तमूत्र (लाल पेशाब होना)
४—पीतनेत्र (आंखों का पीला होजाना)
५—पीतमूत्र (पेशाब का पीला होना)
६—पीत मल (पीले दस्त आना)
७—पीत नख (नखूनों का पीला होजाना)
८—पीत दंत (दांतों का पीला होजाना)
९—पीत शरीर (शरीर का पीला पड़जाना)
१०—अंधियारी आना (आंखों के सामने अन्धकार मालूम होना)
११—सर्वत्र पीलाही पीला दिखलाई देना।
१२—अल्पनिद्रा (थोड़ी नींद आना)
१३—मुखशोष (मुंह का सूखना)
१४—मुख दुर्गन्धि (मुंह से दुर्गन्धि निकलना)
१५—मुख तीक्ष्ण (मुंह तीखा रहना)
१६—उष्ण श्वास (गर्म श्वास चलना)
१७—मुख में हर समय खट्टापन रहना।
१८—डकार के साथ भाफ निकलना।
१९—हर समय चक्कर आना।
२०—इन्द्रियों की शिथिलता।
२१—क्रोधाधिक्य (हर समय क्रोध बना रहना)
२२—दाह रोग (शरीर में जलन होना)
२३—अतीसार रोग (दस्तों का आना)
२४—गर्मी से अरुचि होजाना।
२५—ठंढक अच्छी मालूम होना।
२६—सर्वग्राह (किसी वस्तु से पूर्णता न होना)
२७—सर्व वस्तुओं से विशेष स्नेह रहना।
२८—भोजन के बाद छाती में दाह होना।
२९—क्षुधावृद्धि (भूख बहुत लगना)
३०—नकसीर फूटना (नाक से खून आना)
३१—मलद्राव (पतले दस्त आना)
३२—मलोष्णता (गर्म दस्त होना)
३३—मूत्रोष्णता (गर्म पेशाब होना)
३४—मूत्रकृच्छ्र (थोड़ी थोड़ी कष्ट से पेशाब होना)

३५—वायु-क्षीणता।
३६—शरीरोष्णता (शरीर गरम रहना)
३७—पसीना अधिक आना।
३८—पसीना में दुर्गन्धि आना।
३९—हाथ पांव का फटना (बिवाई जाना)
४०—शरीर में फोड़ा फुंसी अधिक निकलना।

यह चालीस प्रकार के रोग पित्त से उत्पन्न होते हैं इसलिये पित्त न बिगड़ने का ध्यान रखना चाहिये।

आहार विहार में सावधान रहना चाहिये जिससे पित्त बिगड़ने न पावै।

कफरोगों की उत्पत्ति का कारण

भारी, मीठी, चिकनी, शीतल वस्तु तथा अधिक दही के सेवन से, मन्दाग्नि से, दिन में सोने से और अधिक बैठे रहने से कफ़ कुपित होता है अर्थात बिगड़ जाता है और प्रातःकाल भोजन करने के बाद तथा वसंतऋतु में भी कफ़ कोप को प्राप्त होकर २० बीस प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है।

कफरोगों के लक्षण और नाम।

१—मुख मीठा रहना।
२—मुख कफ से लिप्त रहना।
११—भूख न लगना।
१२—मन्दाग्नि।

३—मुख से लार गिरना।
४—अधिक निद्रा आना।
५—गले में घरघर होना।
६—कटुरस खाने की इच्छा रहना
७—उष्णता की इच्छा रहना।
८—बुद्धि मन्द होजाना।
९—स्मरणशक्ति कम होजाना।
१०—शरीर में सुस्ती बनी रहना।
१३—अधिक दस्तों का आना।
१४—श्वेत (सफेद) दस्त होना।
१५—बहुत पेशाब होना।
१६—सफेद पेशाब होना।
१७—वीर्याधिक्यता।
१८—निश्चलता (जड़त्व)
१९—शरीर में शीतलता।
२०—शरीर में भारीपन।

यह २० कफरोगों के लक्षण हैं इसलिये सब को सावधान रहना चाहिये जिससे कफ कुपित होकर रोगों को उत्पन्न न करै।

मनुष्य मात्र को आहार विहार का सदैव ध्यान रखना चाहिये। ऋतु और प्रकृति के अनुसार प्रतिदिन भोजन करना चाहिये। भोजनों की अज्ञानता से ही मनुष्य के शरीर में सब प्रकार के रोग पैदा होते हैं। इस विषय का अपूर्व ग्रन्थ "पाकशास्त्र" मेरे यहां से मंगाकर देखिये।

औषधि विचार।

औषधि कैसी लेनी चाहिये इस विषय का जानना भी बहुत ज़रूरी है इसलिये यहांपर कौन औषधि किस प्रकार लीजावै यह बतलाया जाता है।

१-वायविडंग २-कुड़े की छाल ३-अडूसा ४-कोहला ५-शतावरी ६-असगंध ७-खिरैटी ८-सौंफ ९-प्रसारणी ये नौ औषधियां जहांतक होसकै गोली ही काम में लानी चाहिये।

अन्य औषधियां सब कामों में सूखी और नई लेनी चाहिये यदि सूखी न मिलैं, गीली मिलैं तो सूखी के तौल से दूनी लेनी चाहिये। अर्थात् कोई औषधि सूखी न मिलै और तुम्हें सूखी की ही ज़रूरत है जहां सूखी एक पाव या एक तोला लिखी हो तो गीली दो पाव या दो तोला जितना लिखी हो उससे दूनी लो।

जहां गीली न लिखी हो वहां सब सूखी ही समझो, सूखी ही काम में लाओ।

जहां औषधि खाने का समय न लिखा हो वहां औषधि खाने का समय प्रातःकाल ही समझो।

जिस औषधि की पत्ती या छाल या जड़ ये कुछ भी खुलासा न लिखा हो तो वहां उसकी जड़ लेनी चाहिये।

३—मुख से लार गिरना ।	१३—अधिक दस्तों का आना ।
४—अधिक निद्रा आना ।	१४—श्वेत (सफेद) दस्त होना ।
५—गले में घरघर होना ।	१५—बहुत पेशाब होना ।
६—कटुरस खाने की इच्छा रहना	१६—सफेद पेशाब होना ।
७—उष्णता की इच्छा रहना ।	१७—वीर्याधिक्यता ।
८—बुद्धि मन्द होजाना ।	१८—निश्चलता (जड़त्व)
९—स्मरणशक्ति कम होजाना ।	१९—शरीर में शीतलता ।
१०—शरीर में सुस्ती बनी रहना ।	२०—शरीर में भारीपन ।

यह २० कफ़रोगों के लक्षण हैं इसलिये सब को सावधान रहना चाहिये जिससे कफ़ कुपित होकर रोगों को उत्पन्न न करै ।

मनुष्य मात्र को आहार विहार का सदैव ध्यान रखना चाहिये । ऋतु और प्रकृति के अनुसार प्रतिदिन भोजन करना चाहिये । भोजनों की अज्ञानता से ही मनुष्य के शरीर में सब प्रकार के रोग पैदा होते हैं । इस विषय का अपूर्व ग्रन्थ "पाकशास्त्र" मेरे यहां से मंगाकर देखिये ।

औषधि विचार ।

औषधि कैसी लेनी चाहिये इस विषय का जानना भी बहुत ज़रूरी है इसलिये यहांपर कौन औषधि किस प्रकार लीजावै यह बतलाया जाता है ।

१-वायविडंग २-कुड़ की छाल ३-अडूसा ४-कोहला ५-शतावरी ६-असगंध ७-खिरैटी ८-सौंफ ९-प्रसारणी ये नौ औषधियां जहांतक होसकै गीली ही काम में लानी चाहिये।

अन्य औषधियां सब कामों में सूखी और नई लेनी चाहिये यदि सूखी न मिलैं, गीली मिलैं तो सूखी के तौल से दूनी लेनी चाहिये। अर्थात कोई औषधि सूखी न मिले और तुम्हें सूखी की ही ज़रूरत है जहां सूखी एक पाव या एक तोला लिखी हो तो गीली दो पाव या दो तोला जितना लिखी हो उससे दूनी लो।

जहां गीली न लिखी हो वहां सब सूखी ही समझो, सूखी ही काम में लाओ।

जहां औषधि खाने का समय न लिखा हो वहां औषधि खाने का समय प्रातःकाल ही समझो।

जिस औषधि की पत्ती या छाल या जड़ ये कुछ भी खुलासा न लिखा हो तो वहां उसकी जड़ लेनी चाहिये।

जहांपर औषधियों को तोल न लिखो हो वहांपर सब औषधियां बराबर बराबर लेनी चाहिये।

जहां बर्तन का नाम न लिखा हो वहां मिट्टी का बर्तन लेना चाहिये।

यदि किसी जगह एकही औषधि दोबार लिखी हो तो उसे दूनी लेनी चाहिये।

जहां चन्दन लिखा हो और चन्दन का नाम न लिखा हो तो वहां अवलेह, आसव और घृत बनाने में सफेद चन्दन लेना चाहिये।

काढ़ा बनाने में, लेप में लाल चन्दन लेना चाहिये।

बड़े वृक्षों की जड़ की छाल लेनी चाहिये जैसे नीम, आम, जामुन आदि और कोमल छोटे वृक्षों की जैसे कटियाली, गोखरू की जड़ अथवा पंचाङ्ग (जड़, फूल, पत्ती आदि)

बड़ वृक्ष की छाल, महुआ बबूल आदि की भीतरी छाल लेनी चाहिये।

तालीस, तेजपात, पान, तुलसी, भंग आदि के पत्ते लेने चाहिये। सुपारी और त्रिफला में

फल ही लेने चाहिये। पलास, गुलाब, सेवती आदि के फूल लेने चाहिये।

केवांच, कमलगट्टा, जायफल, काली मिर्च इत्यादि के फल ही लेने चाहिये।

थूहर, बड़ और गूलर इत्यादि का दूध ही लेना चाहिये।

यदि किसी औषधि में किसी जगह खुलासा न लिखा हो तो ऊपर लिखे अनुसार ही लेना चाहिये।

यदि कहीं कोई औषधि न मिलै तो उसी के समान गुणवाली दूसरी औषधि लेलेनी चाहिये।

जैसे अतीस न मिलै तो नागरमोथा, अमलवेत न मिलै तो चूका या चूना का खार, कस्तूरी न मिलै तो जायपत्री, ऋद्धि न मिलै तो बला और बला न मिलै तो नागबला लेलेनी चाहिये।

मेदा न मिलै तो असगंध, महामेदा न मिलै तो प्रसारणी, काकोली तथा क्षीरकाकोली न मिलै तो शतावरी, जीवक न मिले तो गिलोय और ऋषभ न मिलै तो बंशलोचन लेलेना चाहिये।

जहां जायपत्री न मिलै तो लौंग, तगर न मिलै तो कूट, मौलसिरी न मिलै तो कमल की जड़, चित्रक न मिलै तो दंती की जड़, शहद न मिलै तो पुराना गुड़, केशर न मिलै तो कुसुंभा लेलेना चाहिये।

इस विषय को विस्तार से देखने की आवश्यकता हो तो वैद्यक के बड़े ग्रन्थ निघंटु आदि मंगाकर देखो। क्योंकि वैद्यक विषय बहुत बड़ा है रत्नसंग्रह में केवल प्रतिदिन के काम में आनेवाले उपयोग और आरोग्य रहने के नियम तथा अन्य कुछ उपयोगी बातें रक्खी गई हैं जिनको पढ़ने सुनने मात्र से स्त्रियां बहुत बड़ा लाभ उठा सक्ती हैं।

आवश्यक सूचना

इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि काष्ठादिक देशी (जड़ी बूटी) औषधियां एक वर्ष तक ठीक रहती हैं एक वर्ष के बाद निकम्मी होजाती हैं। जिनमें से चूर्ण दो महीने तक, घी और तैल चार ४ महीने तक और गोली, अवलेह, पाक एकवर्ष तक सेवन करने योग्य रहते हैं पश्चात् निकम्मे होजाते हैं।

आसव और सोना चांदी आदि की भस्म, (रस) रसायन औषधियां जितनी पुरानी हों उतनी ही अधिक गुणदायक होती हैं।

औषधि सेवन का समय।

सब प्रकार की औषधियां प्रातःकाल ही अर्थात् भोजन करने के पहिले ही सेवन करनी चाहिये। कल्क, क्वाथ, फांट और हिम ये तो प्रायः प्रातःकाल ही सेवन करने चाहिये।

औषधि सेवन करने के पांच समय बतलाये हैं १-प्रातःकाल २-दोपहर ३-सायंकाल भोजन करने के समय ४-ज़रूरत पड़ने पर बारम्बार ५-रात को इस प्रकार पांच समय औषधि सेवन का नियम है।

पित्तरोगों में दस्त कराने के लिये और कफ़ के रोगों में उलटी कराने के लिये तथा वातरोगों में पसीना लाने के लिये इत्यादि रोगवाले रोगी को प्रातःकाल ही बिना भोजन किये ही औषधि सेवन कराना चाहिये।

यदि गुदा सम्बन्धी अपानवायु कुपित हुआ हो तो भोजन से कुछ ही पहिले औषधि सेवन कराना चाहिये।

अरुचि रोगों में अनेक प्रकार के रुचि को बढ़ानेवाले पदार्थों (खाने पीने की वस्तुओं) के साथ ही औषधि देनी चाहिये।

यदि मन्दाग्नि रोग हुआ हो या पेट का वायु बिगड़ा हो तो अग्नि प्रदीप करने की औषधि भोजन के साथ ही खाना चाहिये।

जिसके समस्त शरीर का वायु कुपित हुआ हो तो उसे भोजन करने के बाद औषधि खानी चाहिये।

हिचकी रोग में और वायु कफ के रोगों में भोजन करने के पहिले और भोजन के बाद औषधि खानी चाहिये।

गले के रोगों में, स्वरभंग आदि रोग में सायंकाल को भोजन करने के समय घी आदि के साथ मिलाकर हरएक ग्रास में चटनी की भांति लगाकर औषधि सेवन करनी चाहिये।

जो हृदय में रहनेवाला प्राणवायु कुपित हुआ हो तो विशेष सायंकाल के समय भोजन करने के बाद औषधि खानी चाहिये।

प्यास, उलटी, हिचकी, श्वास और विष-दोष आदि रोगों में बारंबार औषधि सेवन कराना चाहिये।

कान के रोगों में, मुख के रोगों में, नाक के रोगों में, नेत्ररोगों में और बढ़े हुए बात दोषों को कम करने के लिये और क्षीणरोगों को घटाने के लिये रात के समय औषधि देनी चाहिये।

इस प्रकार विचार पूर्वक औषधि सेवन करने से औषधि विशेष लाभ करती है। इस लिये जहांपर जिस समय जो औषधि लिखी है उसी प्रकार उसी समय सेवन करनी चाहिये। देखा जाता है कि स्त्रियां लापरवाही से जब याद आगई औषधि खा ली, कभी अन्दाज से कम, कभी अधिक; अनुपान भी ठीक नहीं रखतीं, पथ्य भी ठीक नहीं करतीं, ऐसा नहीं करना चाहिये इस प्रकार औषधि का सेवन करने से लाभ कुछ नहीं बल्कि हानि ही होती है।

औषधियों के गुण।

अब मैं यहांपर सब बहिनों के जानने के लिये कुछ औषधियों के गुण वैद्यकशास्त्र के अनुसार लिखती हूं इसके पढ़ने और सुनने से सब बहिनों को इस बात का पता लगेगा कि मनुष्य के

हित के लिये परमात्मा ने कैसी कैसी जड़ी बूटियां उत्पन्न की हैं।

यह जितने घास फूस पैाधे वृक्ष आदि हैं सब हमारे उपकार के ही लिये पैदा हुए हैं इनको परमात्मा ने व्यर्थ ही बिना प्रयोजन के नहीं बनाया। इसके अतिरिक्त धन्य है उन ऋषि मुनियों को जिन्होंने अपना सारा जीवन इन औषधियों के गुणों की परीक्षा करने में ही व्यतीत करदिया और बड़े परिश्रम से खोजकर इनके गुणों को प्रकट किया जिससे संसार का कितना बड़ा उपकार होरहा है। परन्तु फिर भी हम इनके गुणों को न जानने के कारण इनसे पूर्ण लाभ नहीं उठा सकतीं; अतएव सब बहिनों के उपकारार्थ कुछ आवश्यक वस्तुओं (औषधियों) के गुण लिखे जाते हैं।

१—हर्ड इसके अनेक नाम हैं यह कई प्रकार की होती है परन्तु बड़ी और छोटी हर्ड प्रायः काम में आती हैं। औषधियों के काम में विजया हर्ड लेनी चाहिये जो नवीन चिकनी और भारी हो, जो पानी में डालने से डूब जावै। वह हर्ड अत्यन्त गुणदायक होती है।

हर्ड-रूखी, गरम, हलकी और रसीली है यह श्वास, कास, प्रमेह, बवासीर और पेट के सब रोगों को दूर करनेवाली, पेट के कीड़े, संग्रहणी रोग, क़ब्ज़ियत, विषमज्वर, गोला, पेट का अफर जाना, फोड़े, उलटी होना, हिचकी रोग, खाज, हृदय का रोग, कामलारोग, शूल और प्लीहा आदि अनेक रोगों को अवश्य दूर करदेती है।

हर्ड में खट्टा, मीठा और कसैला रस है, खट्टा और मीठा रस बादी को दूर करनेवाला है और कसैला रस पित्त को दूर करता है कडुवा तथा तीखा रस कफ को दूर करता है इस प्रकार हर्ड में पांचो रस मौजूद हैं जो रोगों को नष्ट करनेवाले हैं।

२-आंवला के भी अनेक नाम हैं यह पुष्ट-कारक है और हर्ड की समान अनेक रोगों को दूर करनेवाला है। रक्तपित्त को दूर करनेवाला आंवला खट्टे रस से बादी को दूर करता है। ठंढे रस से पित्त को हरता है और रूखा तथा कसैले रस से कफ को दूर करनेवाला है। आंवले में भी पांचो रस रहते हैं।

३-बहेड़ा-बहेड़े के भी कई नाम हैं। यह भी विशेष गुणवाला है; बहेड़ा खाने में गरम और लगाने में ठंढा है, श्वास कास को दूर करने वाला है, नेत्रों के लिये अतयन्त हितकारी है और बालों को बढ़ानेवाला तथा मज़बूत करने वाला है। बहेड़े की मींग कुछ नसैली है पानी में पीसी हुई मींग लगाने से दाह (जलन) को दूर करती है।

४-अडूसा-बादी को पैदा करनेवाला कड़वा, कफ, पित्त, रक्त, श्वास, कास, ज्वर, उलटी, वीर्यविकार, सब प्रकार के कोढ़ रोग और क्षयी को दूर करनेवाला है। स्वर के लिये उपकारी, हृदय को हितकारी, हलका, ठंढा और प्यास को रोकनेवाला है।

५-गोखरू-ठण्ढा, स्वादिष्ट, हड्डियों को दृढ़कर्ता, प्रमेह, श्वास, कास, पथरी, हृदयरोग और बादी को दूर करता है वीर्यवर्द्धक और रुधिर-प्रकोप को दूर करनेवाला है।

६-मुलहठी-खांसी को दूर करनेवाली, बल-कारक, भारी और ठंढी है, प्यास और वमन तथा पित्त को दूर करनेवाली है, नेत्रों को हितकारी,

वर्ण को उत्तम करनेवाली, चिकनी, वीर्य को बढ़ानेवाली, बालों के लिये हितकारी और स्वर को उत्तम करनेवाली है। वात, पित्त, रक्त-विकार को दूर करनेवाली, घाव, सूजन, विष, वमन, प्यास, ग्लानि तथा क्षयी को नष्ट करने वाली है।

७-गिलोय जिसको गुडुच भी कहते हैं और भी अनेक नाम हैं कड़वी, हलकी, चरपरी, पाक में स्वादिष्ट, रसायन रूप, ग्राही, कसैली, गरम, बलदायक, अग्निप्रदीपक और वात, पित्त, कफ़ तीनों दोषों को हितकारी, आम, तृषा, दाह, सब प्रकार के प्रमेह, खांसी, पांडुरोग, कामला रोग, कोढ़, वायु, रक्तविकार, ज्वर, कृमिरोग, वमन, श्वास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग तथा वातरोगों को दूर करनेवाली है।

८-बेल-मल को रोकनेवाला, कसैला, कडुवा, ग्राही, रूखा, बल को बढ़ानेवाला, हृदय को हित-कारी, पित्तकारक और वात तथा कफ़ को दूर करनेवाला, दीपन, पाचन, चिकना, ज्वर, शूल, संग्रहणी और आम को नष्ट करता है।

९-मुंडी जिसे गोरखमुंडी भी कहते हैं तीक्ष्ण, बुद्धि को बढ़ानेवाली, गर्मी रोग को दूर करनेवाली, पाक में चरपरी, मीठी, मेधा को हितकारी और गलगंड रोग, मूत्र कृच्छ्र, कृमिरोग, योनि की पीड़ा, पाण्डुरोग, श्लीपद रोग, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा और गुदा की पीड़ा को दूर करनेवाली है।

१०-चिरचिटा जिसे अपामार्ग भी कहते हैं। वातनाशक, कफ़ को बढ़ानेवाला, रूखा, दस्तावर, अग्निप्रदीपक, कड़वा, चरपरा, पाचन-कर्ता रुचि को बढ़ानेवाला, वमन, कफ़, मेद, वात, हृदयरोग, अफरा, खुजली, शूल, बवासीर तथा पेट के अनेक रोगों को दूर करनेवाला है। चिरचिटे के बीज रक्तपित्त को दूर करने वाले हैं। लाल चिरचिटा सफेद चिरचिटे से कम गुणवाला है।

११-तालमखाना ठंडा, वीर्य को बढ़ानेवाला, मीठा, खट्टा, पित्त को बढ़ानेवाला, कड़वा और आम, सूजन, पथरी, प्यास, नेत्ररोग तथा रक्त-विकार को दूर करनेवाला और बल को बढ़ाने वाला है।

१२-बड़ी कटेरी (भटकटैया) ग्राही, हृदय को हितकारी, पाचक, गरम, चरपरी, कड़वी और कफ, वात, मुख की विरसता, मल, अरुचि, कोढ़, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी, कोढ़, तथा अग्नि की मंदता को दूर करनेवाली है।

१३-छोटी कटेरी (सफेद कटेरी) कटेरी अर्थात् भटकटैया दो प्रकार की होती है एक तो बैंगनी रंग के फूलवाली दूसरी सफेद फूल की होती है, ऊपर बड़ी कटेरी बैंगनी रङ्ग के फूल वाली के गुण का वर्णन हुआ है छोटी कटेरी सफेद फूलवाली में ऊपरवाली से अधिक गुण हैं।

सफेद कटेरी दस्त को साफ लानेवाली, कड़वी, चरपरी, अग्नि को दीपन करनेवाली, हलकी, रूखी, गरम, पाचनकर्ता, पीनस रोग, पसली की पीड़ा, श्वासरोग तथा हृदय के रोगों को दूर करनेवाली है। गर्भ धारण करनेवाली बन्ध्या स्त्रियों को भी पुत्रदाता, गर्भाशय को हितकारी, लक्ष्मणा बूटी प्रायः नहीं मिलती है लक्ष्मणा पुत्रदाता है उसमें गर्भ धारण करने को अपूर्व शक्ति है परन्तु वह बड़ी कठिनाई से,

बड़ी खोज से पहाड़ों पर मिलती है, उसके न मिलने पर सफेद कटेरी को ही काम में लाते हैं इसमें भी गर्भधारण के गुण हैं यह प्रायः मिलजाती है ।

दोनों कटेरी के फल चरपरे, कड़वे तथा अग्नि को बढ़ानेवाले, हलके, कफ, वात, खुजली, खांसी, मेदा, कृमिरोग और ज्वर को दूर करने वाले हैं ।

१४-एरंड जिसे रेंड़ो भी कहते हैं एरंड दो प्रकार के होते हैं लाल और सफेद दोनों प्रकार के एरंड गरम, भारी, शूल, सूजन, कमर की पीड़ा, हड्डी का दर्द, शिर की पीड़ा, पेट की पीड़ा, ज्वर, श्वास, कफ, पेट का अफरा, खांसी और कोढ़ को दूर करनेवाले और आमवात को दूर करते हैं एरंड के पत्ते वात, कफ, कृमि और मूत्रकृच्छ्र नाशक हैं। पित्त और रक्त को कुपित्त करनेवाले हैं एरंड के ऊपर के कोमल पत्ते गुल्मरोग, हड्डी की पीड़ा, कफ, बात, कृमिरोग नाशक हैं ।

एरंड का फल अत्यन्त गरम, चरपरा, दीपन और गुल्मरोग, शूल, वात, यकृत, प्लीहा तथा

अनेक प्रकार के उदररोग नाशक और बवासीर को दूर करता है।

१५-आक (मदार) आक भी दो प्रकार का होता है लाल और सफेद दोनों प्रकार का आक दस्तावर, वात, कोढ़, खुजली, विष, घाव, प्लीहा, गुल्मरोग, कफ, बवासीर, पेट के रोगों को नष्ट करनेवाला है। सफेद आक का फूल वीर्य को बढ़ानेवाला, हलका, अग्नि को दीपन करनेवाला और पाचन है। अरुचि, कफ, बवासीर, खांसी तथा श्वासरोग नाशक है। लाल आक का फूल मीठा, कड़वा, ग्राही और कृमि, कफ, बवासीर विष, रक्त पित्त, गुल्मरोग तथा सूजन को नष्ट करता है।

आक का दूध गरम, चिकना, हलका, कोढ़ रोग, गुल्मरोग तथा उदररोग नाशक है।

१६-थूहर और सेहुंड़-दस्त को लानेवाला, तीक्ष्ण, अग्नि प्रदीपक, चरपरा, भारी और शूल, अफरा, कफ, गुल्मरोग, उदररोग, वात, पागलपन, कोढ़, खुजली, सूजन, बवासीर, पथरी, पाण्डुरोग, घाव सूजन, ज्वर, प्लीहा आदि रोगों को नष्ट करनेवाला है।

बड़ी खोज से पहाड़ों पर मिलती है, उसके न मिलने पर सफेद कटेरी को ही काम में लाते हैं इसमें भी गर्भधारण के गुण हैं यह प्रायः मिलजाती है ।

दोनों कटेरी के फल चरपरे, कड़वे तथा अग्नि को बढ़ानेवाले, हलके, कफ, वात, खुजली, खांसी, मेदा, क्रमिरोग और ज्वर को दूर करने वाले हैं ।

१४-एरंड जिसे रेंड़ी भी कहते हैं एरंड दो प्रकार के होते हैं लाल और सफेद दोनों प्रकार के एरंड गरम, भारी, शूल, सूजन, कमर की पीड़ा, हड्डी का दर्द, शिर की पीड़ा, पेट की पीड़ा, ज्वर, श्वास, कफ, पेट का अफरा, खांसी और कोढ़ को दूर करनेवाले और आमवात को दूर करते हैं एरंड के पत्ते वात, कफ, क्रमि और मूत्रकृच्छ्र नाशक हैं। पित्त और रक्त को कुपित्त करनेवाले हैं एरंड के ऊपर के कोमल पत्ते गुल्मरोग, हड्डी की पीड़ा, कफ, बात, क्रमिरोग नाशक हैं ।

एरंड का फल अत्यन्त गरम, चरपरा, दीपन और गुल्मरोग, शूल, वात, यकृत, प्लीहा तथा

अनेक प्रकार के उदररोग नाशक और बवासीर को दूर करता है।

१५-आक (मदार) आक भी दो प्रकार का होता है लाल और सफेद दोनों प्रकार का आक दस्तावर, वात, कोढ़, खुजली, विष, घाव, प्लीहा, गुलमरोग, कफ, बवासीर, पेट के रोगों को नष्ट करनेवाला है। सफेद आक का फूल वीर्य को बढ़ानेवाला, हलका, अग्नि को दीपन करनेवाला और पाचन है। अरुचि, कफ, बवासीर, खांसी तथा श्वासरोग नाशक है। लाल आक का फूल मीठा, कड़वा, ग्राही और कृमि, कफ, बवासीर विष, रक्तपित्त, गुलमरोग तथा सूजन को नष्ट करता है।

आक का दूध गरम, चिकना, हलका, कोढ़ रोग, गुल्मरोग तथा उदररोग नाशक है।

१६-थूहर और सेहुंड़-दस्त को लानेवाला, तीक्ष्ण, अग्नि प्रदीपक, चरपरा, भारी और शूल, अफरा, कफ, गुल्मरोग, उदररोग, वात, पागलपन, कोढ़, खुजली, सूजन, बवासीर, पथरी, पाण्डुरोग, घाव सूजन, ज्वर, प्लीहा आदि रोगों को नष्ट करनेवाला है।

१७—धतूरा-नशैला, वर्ण को उत्तम करने वाला, अग्नि तथा वातकारक, गरम, भारी, कसैला, जूं और लीखों को नष्ट करनेवाला ज्वर कोढ़, घाव, कफ, खुजली और कृमि को नष्ट करने वाला है।

१८-कलिहारी या कलियारी-दस्तावर है, तीक्ष्ण है, गरम, हलकी, पित्त को बढ़ानेवाली और गर्भ को गिरानेवाली है। कोढ़, सूजन, बवासीर, घाव और कफ को नष्ट करनेवाली है।

१९-कनेर दो प्रकार के होते हैं। लाल और सफेद दोनों प्रकार के कनेर खाने से विष की समान हैं।

नेत्र की पीड़ा, कोढ़, घाव, कृमि और खुजली को दूर करनेवाले है।

२०—पित्तपापड़ा-ग्राही, ठंढा, कड़वा, वात-कारक, हलका, पित्त, रक्तविकार, भ्रम, प्यास, कफ, ज्वर तथा दाह को नष्ट करनेवाला है।

२१-नीम—ठंढा, हलका, ग्राही, हृदय को अप्रिय और वात, परिश्रम, तृषा, ज्वर, अरुचि, कृमि, घाव, पित्त, कफ, वमन, कोढ़ और प्रमेह को नष्ट करनेवाला है।

नीम के पत्ते नेत्रों को हितकारी, सब प्रकार की अरुचि तथा कीड़ों को नष्ट करनेवाले हैं।

पित्त तथा विष को नष्ट करनेवाले हैं।

नीम के फल कड़वे, मलभेदक (मल को फाड़नेवाले), चिकने, हलके, गरम, कोढ़, गुल्म, बवासीर, कृमिरोग तथा प्रमेहरोगों को नष्ट करनेवाले हैं।

२२-चिरायता-सन्निपात, ज्वर, श्वास, कास, खांसी, पित्त, रुधिरविकार और दाह को दूर करनेवाला है, रूखा, ठंढा, कड़वा, हलका और घाव, सूजन, प्यास, कोढ़रोगों तथा कृमिरोगों को नष्ट करनेवाला और दस्तावर है।

२३-इन्द्र जौ-त्रिदोषनाशक, ग्राही, चरपरे, शीतल और ज्वर, दस्तों का आना, रुधिरविकार, बवासीर, वमन, विसर्प रोग और कोढ़रोगों को नष्ट करनेवाला है।

अग्नि प्रदीपक, गुदा के रोग और वातरक्त रोगों को दूर करनेवाला और कफ तथा शूल को नष्ट करनेवाला है।

२४–असगन्ध–बल को बढ़ानेवाली रसायन की भांति गुण करनेवाली, कड़वी, कसैली, गरम वीर्य को अत्यन्त बढ़ानेवाली, वायु, कफ, श्वेत कोढ़, सूजन और क्षयरोग को नष्ट करनेवाली है।

२५-शतावरी-भारी, मीठी, कड़वी, ठंढी, बुद्धि को बढ़ानेवाली, अग्नि प्रदीपक, नेत्रों को हित-कारी, वीर्य को बढ़ानेवाली, दूध को बढ़ानेवाली, बलदायक और गुल्म, अतिसार, वात, पित्त, रक्तविकार तथा सूजन को दूर करनेवाली है।

२६–मालकांगनी-दस्तावर, कफ़ तथा वायु को नष्ट करनेवाली, अत्यन्त गरम, वमनकारक, तीक्ष्ण, अग्निप्रदीपक, बुद्धि तथा स्मरणशक्ति को बढ़ानेवाली है।

२७–पुहकरमूल-वात और कफ़ से उत्पन्न हुए ज्वर को दूर करनेवाला, सूजन, अरुचि और श्वासरोग को नष्ट करनेवाला है और पसली की पीड़ा (शूल) को शीघ्रही दूर करनेवाला है।

२८-भारङ्गी-गरम, पाचन करनेवाली, हलकी, रुचिकारी, अग्नि को दीपन करनेवाली और गुल्मरोग, रक्तविकार, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस रोग, ज्वर और वात को दूर करनेवाली है।

२९—हल्दी-गरम, रूखी, त्वचा (चमड़े) के रोगों को हितकारी, प्रमेह रोगों को दूर करने वाली, पित्त, रुधिर विकार, सूजन, घाव और पांडुरोग को नष्ट करनेवाली है।

३०—मजीठ-कड़वी, मीठी, स्वर और वर्ण को उत्तम करनेवाली, गरम, भारी, कफरोग, विष, नेत्ररोग, कर्णरोग, दस्तों में खून आना, कोढ़ रोग, रुधिर विकार, घाव, विसर्प रोग, प्रमेहरोगों और योनिरोगों को दूर करनेवाली है।

३१—कुटकी—हलकी, ठंढी, मलभेदक (मल को फाड़नेवाली), अग्निप्रदीपक, कफ, पित्त, ज्वर, श्वास, प्रमेह, खांसी को नष्ट करनेवाली, हृदय को हितकारी, कोढ़, दाह, रुधिर विकार तथा कृमिरोगों को नष्ट करनेवाली है।

३२—समुद्रफेन—हलका, मलभेदक, नेत्रों को हितकारी, शीतल, विष, पित्त और कफ तथा कान के रोगों को नष्ट करनेवाला है।

३३—बंसलोचन-शरीर की धातुओं को बढ़ानेवाला, बलदायक, वीर्य को बढ़ानेवाला, प्यास, खांसी, श्वास, ज्वर, पित्त, क्षयीरोग,

रक्तविकार, कामला रोग, कोढ़, घाव, पांडुरोग तथा वायु के रोगों को नष्ट करनेवाला है।

३४—पीपल—भूख को बढ़ानेवाली, वीर्य को बढ़ानेवाली, वात तथा कफ को नष्ट करने वाली, श्वास, खांसी, उदरज्वर, कोढ़, प्रमेहरोग, गुल्मरोग, बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवात को नष्ट करनेवाली है।

पीपल यदि गीली होय तो कफ को बढ़ानेवाली, ठंढी, भारी, पित्त को शान्त करने वाली है और यदि सूखी होय तो पित्त को कुपित करनेवाली है।

शहद के साथ सेवन करने से मेदा तथा कफ को हितकारी और वीर्य को बढ़ानेवाली तथा बुद्धि और अग्नि को बढ़ानेवाली है। श्वास, खांसी और ज्वर को नष्ट करनेवाली है।

जीर्णज्वर (पुराना बुखार) तथा मंदाग्नि होय तो गुड़ के साथ सेवन करना हितकारी है।

गुड़ के साथ पीपल खाने से खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदय के रोग, पांडुरोग और कृमिरोगों को नष्ट करती है। गुड़ के साथ

पीपल का सेवन करै तो पीपल के चूर्ण से दूना गुड़ मिलाके।

आवश्यक सूचना।

यहां सब बहिनों के जानने के लिये थोड़े से पदार्थों के गुण लिख दिये हैं इससे पालिकाओं को इस बात का पता लगैगा कि हमारे खाने पीने के पदार्थों तथा अन्य जितनी जड़ी बूटी पेड़ पत्तो घास फूस आदि हैं सभी में अनेक रोगों को दूर करने के गुण मौजूद हैं परन्तु अज्ञानतावश क्या स्त्री क्या पुरुष कोई इनके गुणों को नहीं जानता इसी कारण उनसे यथार्थ लाभ नहीं उठा सकता, वैद्यलोग जो इनके गुणों को जानते हैं वे इन्हीं पदार्थों से परोपकार और अपना भी उपकार करते हैं।

यदि सब स्त्रियां केवल खाने पोने के पदार्थों के ही गुण अवगुण जानलें तो प्रतिदिन के भोजनों से ही वे मनुष्यों को निरोग रख सकती हैं और इस विषय में पूर्ण ज्ञान (वैद्यक का अभ्यास) करलेने पर रोगों को भी दूर कर सकती हैं।

वैद्यक की आवश्यक बातें।

दीपन पाचन विचार।

जो औषधि आंव को न पचावै और अग्नि को दीप्त करै वह दीपन कहाती है जैसे सौंफ़, जो औषधि आंव को पचावे और अग्नि को प्रदीप्त न करै सो पाचन कहाती है जैसे नागकेशर, जो औषधि आंव को भी पचावै और अग्नि को भी दीप्त करै सो दीपन पाचन कहाती है जैसे चित्रक।

संशमन-जो औषधि शरीर के दोषों वात, पित्त, कफ़ को न बिगाड़े और न उनका शोधन करै किन्तु उनको अपनी ठीक दशा पर रहने दे और इन तीनों दोषों में से कोई भी बिगड़ा हो उसे ठीक बराबर कर देवे उसे संशमन कहते हैं जैसे गिलोय गुडुच।

अनुलोमन—जो औषधि तीनों दोषों को पचा के परस्पर बंधेहुओं को अलग अलग करके बाहर निकालदे अथवा मल मूत्र की रुकावट को पचा के गुदाद्वारा कोठे का शुद्ध करदेवे वह अनुलोमन कहाती है, जैसे हर्रं।

स्रंसन—जो औषधि तीनों दोषों तथा मूत्र को जो नियत समय पर ही पाचन होनेवाले हैं उनको ज़बर्दस्ती से पाक न होने पर भी गुदा-द्वार से बाहर निकाल देवे सो स्रंसन कहाती है।

भेदन—जो औषधि तीनों दोषों से बंधे हुए अथवा न बंधे हुए मल मूत्र को टुकड़े टुकड़े करके गुदाद्वार से बाहर निकाल दे सो भेदन कहाती है।

रेचन—जो औषधि पेट के अन्न को पका हो या न पका हो और तीनों दोषों को पतला कर दस्तोंद्वारा बाहर निकाल दे उसे रेचन कहते हैं।

वमन—जो औषधि तीनों दोषों को बिना पके हुए ही ज़बर्दस्ती उलटी कराके मुखद्वारा निकालदे सो वमनकारक कहाती है।

शोधन—जो औषधि दोषों को तथा मल को अपने स्थान में इकट्ठे हुए को ऊपर को ओर खींचकर मुख, नाक, कानद्वारा अथवा नीचे की ओर खींचकर मल मूत्र द्वारा बाहर निकालदे सो शोधन कहाती है।

छेदन—जो औषध एक से एक मिले हुए कफ, पित्त आदि दोषों को अपने बल से अलग करदेवे सो छेदन कहाता है।

लेखन—जो औषधि रसादि ७ धातुदोष तथा वमन को पतला करदेती है सो लेखन कहाती है।

ग्राही—जो औषधि अग्नि को प्रदीप्त करै और आमादि को पाचन करे और आप अपने उष्ण वीर्य होने के गुण से पानी की समान पतले कफादि दोष तथा धातु मल को खींचे सो ग्राही कहाती है।

स्तम्भन—जो औषधि रूखापन, शीतलता, कटुता, हलकापन और पाचन इन गुणों से वात को उत्पन्न करनेवाली हो सो स्तम्भन कहाती है।

रसायन—जो औषधि शरीर के बुढ़ापे और रोगों को दूर करनेवाली हो सो रसायन कहाती है।

वाजीकरण—जो औषधि वीर्य को बढ़ाकर शरीर में बल की वृद्धि कर स्त्री से प्रीति बढ़ावे सो वाजीकरण कहाती है।

धातुवर्द्धिनी—जो औषधि वीर्य को बढ़ावै सो धातुवर्द्धिनी कहाती है।

धातुचैतन—जो औषधि धातु को चैतन्य तथा उत्पन्न करनेवाली है सो धातुचेतनी कहाती है जैसे दूध, उर्द, आंवला।

सूक्ष्म—जो औषधि शरीर में रोमकूप (छिद्रों) द्वारा प्रवेश करसके सो सूक्ष्म कहाती है जैसे तैल, सेंधा नमक, शहद और नीम।

व्यवायि—जो औषधि पेट में पहुंचते ही बिना पचे ही शरीर में व्याप्त हो मद्य विष की समान पाक को प्राप्त होय उस औषधि को व्यवायी कहते हैं जैसे भांग और अफीम।

विकाशी—जो औषधि समस्त शरीर के अंगों के जोड़ों को ढीला करदे और शरीर के धातुओं से उत्पन्न हुए तेज को शिथिल करै और धातुओं को भी शिथिल करै उस औषधि को विकाशी कहते हैं।

मदकारी—जो औषधि बुद्धि को भ्रष्ट करदे स्मरणशक्ति को घटा देवे उसे मदकारी कहते हैं।

प्रमाथी—जो औषधि अपनी शक्ति से कान आदि छिद्रोंद्वारा तथा अन्य छिद्रों से इकट्ठे हुए कफादि दोषों और व्याधियों को निकाल दे उसे प्रमाथी औषधि कहते हैं। जैसे काली मिर्च और बच आदि।

अभिष्यंदि—जो पदार्थ अपने भारीपन से शरीर के रसों को बढ़ानेवाली २१ नाड़ियों को रोककर शरीर को भारी करै उसको अभिष्यंदी कहते हैं जैसे दही।

विशेष सूचना।

यह विषय बहुत बड़ा है इसको सम्पूर्ण समझाने के लिये एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जावैगा इसलिये यहां इतना ही लिखना उचित समझा इसके लिये एक अन्य पुस्तक तैयार करके पाठिकाओं को भेंट करूंगी वैद्यक विषय बहुत बड़ा है इसके लिये कई ग्रन्थ तैयार कर रही हूं।

गुणों का आदर ।

ऋषियों की बुद्धि का अद्भुत चमत्कार ।

जितने पदार्थ खाने पीने और अन्य प्रकार से सेवन करने योग्य संसार में परमात्मा ने बनाये हैं उन सब में मनुष्यमात्र को आरोग्य तथा हृष्ट पुष्ट रखने और दीर्घजीवन के लिये बनाये हैं अर्थात् सब मनुष्य के ही हित के लिये उत्पन्न किये हैं परन्तु हम उनका गुण न जानने के कारण उनके गुणों का आदर नहीं करतीं ।

इसका कारण यह है कि हम में उतनी विद्या नहीं, उतनी समझ नहीं और पुरुषों में विद्या और समझ होने पर भी उनकी खोज का कुछ ध्यान नहीं ।

दूसरी बात यह कि ऐसी पुस्तक भी बहुत कम हैं कि जिनको पढ़ सुनकर सर्व साधारण पुरुष और कमपढ़ी स्त्रियां इस विषय में लाभ उठावें ।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों ने अपना जीवन ही इस कार्य में लगादिया था वे जगत् के उपकार के लिये ही अपना जीवन समझते थे। उन्होंने मनुष्य के दीर्घजीवन तथा आरोग्यता के लिये अनेक विषयों की खोजकर उनका प्रचार किया था; यही कारण था कि उस समय के मनुष्य अधिक आयुवाले और निरोग होते थे । क्योंकि वे मनुष्य को हृष्ट पुष्ट और दीर्घायु बनानेवाली वस्तुओं के गुणों का आदर करना जानते थे। आज मैं सब बहिनों के उपकार के लिये कुछ प्रतिदिन के सेवन करने योग्य पदार्थों के गुणों का वर्णन करती हूं ।

दूध के गुण ।

यों तो दूध के साधारण गुण सभी जानते हैं परन्तु दूध के विशेष गुण न जानने के कारण उन पदार्थों से विशेष लाभ नहीं उठा सकते। अतएव ऋषियों के बताए हुए गुणों का वर्णन यहां वैद्यकशास्त्र के अनुसार किया जाता है ।

दूध—मीठा, चिकना, वात और पित्त को दूर करनेवाला, दस्त को लानेवाला, वीर्य को शीघ्रही उत्पन्न करनेवाला, ठंढा, सब प्राणियों के लिये हितकारी, जीवनरूप, आयु को बढ़ानेवाला, अत्यन्त पुष्टिकारक, बलदायक, बुद्धि को बढ़ाने और उत्तम करनेवाला है।

अत्यन्त वाजीकरण, आयु को स्थापन करने (उम्र को ठहराने) वाला, पीते ही अर्थात् पेट में पहुंचते ही बल प्रदान करनेवाला है।

पुराना बुखार, पागलपन, मूर्च्छारोग, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्तरोग, गुल्म, बस्तिरोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतीसार, स्त्रियों के सब प्रकार के योनिरोग, गर्भस्राव इत्यादि सभी रोगों में ऋषियों ने दूध को, गुणदायक बतलाया है। परिश्रम से थके हुए को, बालक को, बुड्ढे को, निर्बल और दुर्बल को, क्षतवाला, क्षीण हुआ, भूख से व्याकुल हुआ, वीर्य की कमीवाले को, स्त्रीप्रसंग में दुर्बल तथा निर्बल हुए को इन सबको दूध शीघ्रही बल देता है अर्थात् सर्वदा अत्यन्त हितकारी है।

गाय का दूध और उसके अपूर्व गुण।

गाय का दूध रस में तथा पाक में मीठा, ठंढा, दूध को बढ़ाने वाला, चिकना, वात, पित्त तथा रक्तविकार नाशक और सदैव सेवन करनेवालों के सब प्रकार के रोगों को नष्ट करनेवाला तथा बुढ़ापे को दूर करनेवाला है।

काली गाय के दूध के गुण।

काली गाय का दूध वात को नष्ट करनेवाला और अत्यन्त गुणदायक है।

पीली गाय के दूध के गुण।

पित्त और वात को नष्ट करनेवाला है और काली गाय के दूध के दूध से कम गुणवाला है।

सफेद गाय के दूध का गुण।

सफेद गाय का दूध कफ़ करनेवाला, भारी, देरी में पचने वाला है।

लाल तथा चितकबरी गाय के दूध के गुण।

लाल तथा चितकबरी गाय का दूध वात-विनाशक है। इन सब गायों में काली गाय का दूध सब से उत्तम, गुणकारी है।

हाल की ब्यायी तथा बिना बच्चेवाली गाय का दूध भारी, देरी में पचनेवाला और वात, पित्त, कफ अर्थात् त्रिदोषकारक है।

बकेन गाय का दूध।

त्रिदोष-नाशक और बलकारक तथा तृप्तिदायक है।

भैंस के दूध के गुण, अवगुण।

भैंस का दूध गाय के दूध से अधिक मीठा, अधिक चिकना, बलदायक, वीर्य को बढ़ानेवाला, देरी में पचनेवाला, सुस्ती लानेवाला, कफ को बढ़ानेवाला और ठंढा है।

इस कारण रोगी निरोगी सबको ही गाय का दूध सेवन करना चाहिये और बलवान् तथा अधिक परिश्रम करनेवालों का जिनकी जठराग्नि बढ़ी हुई है उनको भैंस का दूध सेवन करना चाहिये।

बालक, बुड्ढे, स्त्रियों और दुर्बल, निर्बल, वीर्यक्षीणता वाले तथा कम परिश्रम करनेवालों को गाय का ही दूध हितकारी है।

बकरी के दूध के गुण।

बकरी का दूध हलका, मीठा, कसैला, ठंढा, रक्तपित्त, दस्तों का आना, क्षयरोग वाले को, खांसीवाले को, ज्वर से पीड़ित रोगियों को हितकारी है।

बकरी कडुये तथा चरपरे पदार्थों को खाती है, अनेक प्रकार की पत्तियां खाती और थोड़ा पानी पीती है चल फिर कर अधिक परिश्रम से पत्तियां तोड़कर खाती है इस कारण बकरी का दूध सब प्रकार के रोगों को नष्ट करनेवाला है जो बकरी जंगलों में चरती हैं उन्हीं के दूध में यह गुण हैं अन्य प्रकार से रहनेवालियों में नहीं।

धारोष्ण (हाल का दुहा) दूध।

हाल का दुहा दूध जिसे धारोष्ण कहते हैं उसके पीने की विधि यह है कि गिलास के ऊपर साफ़ अंगोछा ढंककर उसके ऊपर मिश्री

पीसकर रक्खे उसी में गाय को दुहे और झागों सहित उसी समय गरम गरम पीलेवे यह धारोष्ण दूध कहलाता है।

इस प्रकार का दूध हलका बलदायक अमृत की समान गुण करनेवाला, आयु को बढ़ानेवाला, बुढ़ापे को रोकदेने वाला, शीतल, भूख को बढ़ानेवाला, गये हुए बल को शीघ्रही लानेवाला और त्रिदोष (वात, पित्त, कफ़) नाशक तथा अत्यन्त गुणदायक है।

विशेष सूचना।

गाय का दूध दुहकर रखदिया गया हो तो उसे बिना गरम किये कदापि न पीवे। बकरी का दूध औटाकर ही पीना चाहिये। भैंस का दूध औटाकर अथवा दुहकर ठंढा होगया हो तब भी हितकारी है।

गरम दूध।

गरम किया हुआ दूध कफ तथा वातनाशक और गरम करके ठंढा किया हुआ दूध पित्त को नष्ट करनेवाला है।

औटाने की विधि।

दूध में उसका आधा हिस्सा अर्थात् एक सेर दूध में आधसेर पानी डालकर औटावे, जब पानी जलजावे केवल दूध रहजावे तब उसे पीना चाहिये इस प्रकार सेवन करने से अत्यन्त गुण करता है बिना पानी डाला दूध जितना ही औटाया जावेगा उतना ही भारी होता जावेगा।

दूध और मीठा।

दूध को खांड़ डालकर पीने से कफ बढ़ता है और वात नष्ट होता है।

गुड़ डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होता है और पित्त तथा कफ़ बढ़ता है।

मिश्री डालकर पीने से अत्यन्त गुण करता है, वीर्य को बढ़ाने वाला और तीनों दोषों (।बात, पित्त, कफ़) का नाशक है। चीनी डालकर पीने से भी इसी प्रकार गुण करता है परन्तु मिश्री पड़ा हुआ दूध विशेष गुणदायक है।

दूध पीने का समय ।

प्रातःकाल दूध का पीना पुष्टकारक तथा अग्निदीपन है ।

दोपहर के बाद (तीसरे पहर) दूध का पीना बल को बढ़ाने वाला, कफ़ और पित्त को नष्ट करनेवाला और अग्नि को दीपन करने वाला है ।

रात्रि के समय दूध का पीना बालकों के शरीर की वृद्धि करने वाला, क्षयनाशक, वृद्ध लोगों को अत्यन्त गुणदायक, वीर्य को बढ़ाने वाला, सब प्रकार के विकारों को शान्त करनेवाला और नेत्रों को अत्यन्त हितकारी है ।

रात्रि में केवल दूध ही पीना चाहिये भोजन नहीं करना चाहिये रात्रि में भोजन करके दूध पीने से अजीर्ण रोग होता है और निद्रा भली भाँति नहीं आती तथा दूध विशेष गुण नहीं करता ।

आवश्यक सूचना ।

जितना दूध बर्तन में पीने के लिये लेवे वह सब दूध पीलेवे उसमें से छोड़े नहीं दूध को धीरे धीरे एक एक घूंट करके पीना चाहिये एकसाथ नहीं पीना, दिन में जोकुछ भी हानिकारक वस्तु भोजनों में खाने में आगई हो उसके अवगुणों को नष्ट करने के लिये रात्रि में दूध अवश्य पीना चाहिये । यदि रात्रि में भोजन किया हो तो भोजन पचजाने पर दूध पीना चाहिये ।

जो दुर्बल और निर्बल हैं, बालक और बुड्ढों को, बच्चेवाली स्त्रियों को तथा जिनको भी दूध पीने की सामर्थ्य हो दूध पीना चाहिये, दूध अत्यन्त हितकारी और शीघ्रही बल तथा वीर्य को बढ़ानेवाला है ।

दूध का झाग ।

बकरी और गाय के दूध का झाग जो दुहते समय बन जाता है वात, पित्त, कफ़ तीनों को अत्यन्त हितकारी अर्थात् त्रिदोष-नाशक है ।

रुचि को बढ़ानेवाला, बलकारक, भूख को बढ़ानेवाला और हलका है । यह झाग दस्तों के रोग में, भूख कम होजाने में और पुराने बुखार में अत्यन्त हितकारी है ।

दूध की मलाई।

ठंढी, चिकनी, शाक्त बढ़ानेवाली, बलकारक, बुद्धिवर्द्धक, तृप्ति करनेवाली, रुचि बढ़ानेवाली, कफ़ और धातुओं को बढ़ानेवाली, पित्त, वायु, रक्तपित्त, दाह और तमाम रक्तविकारों को शान्त करनेवाली है।

दूध का औषधि के लिये उपयोग।

आधाशीशी पर गौ के दूध का खोवा अथवा बादाम डालकर बनाई हुई खीर, उसमें मिश्री डालकर खाना चाहिये।

धतूरा और कनेर का विष।

चढ़ जाय उसपर पाव भर गौ का दूध एक तोला चीनी डालकर पिलावे।

संखिया, नीलाथोथा, सिंगिया विष, मुरदासंग।

आदि विषों पर वमन होजाय इतना दूध पिलावे अथवा गौ के दूध में चीनी डालकर वह पिलावे।

मैनशिल के विष पर।

दूध में शहद मिलाकर वह तीन दिन तक बराबर पिलावे।

कोद्रों के विष पर।

गौ का ठंढा दूध पिलावे।

कांच का चूर्ण।

अन्न के साथ खाने में आजाय तो गौ का दूध पिलावे।

अशुद्ध गन्धक के विष पर।

गौ के दूध में घी डालकर पिलावे।

पुष्टि बल और वीर्यवृद्धि के लिये।

गौ के औटाये हुए दूध में घी और चीनी मिलाकर वह नित्य सेवन करना चाहिये इससे बढ़कर पथ्य, तेज बढ़ानेवाली और बलकारक दूसरी औषधि नहीं है।

जीर्णज्वर में।

गौ के दूध में गौ का घी, सोंठ, छुहारे और काला मुनक्का डालकर औटाना और ठंढा होने पर पीना।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्र में से निकलती हुई रेती पर।

गौदूध में गुड़ अथवा चीनी डाल कुछ गर्म करके अथवा कढ़ाया हुआ दूध घृत और चीनी बराबर डालकर पिलावे।

आंखों की जलन पर।

गौ के कच्चे दूध में कपड़ा भिगो उसकी तह करके उसपर फिटकरी का चूर्ण डालकर आंख पर रक्खे।

शरीरपुष्टि के लिये।

गौ का दूध घृत और शहद मिलाकर पीना चाहिये।

पित्त विकार पर।

गौ का दूध सात तोले लेकर उसमें आधे तोले से एक तोले तक सोंठ पत्थर पर घिसकर औटाना और खोवा होने पर उसमें चीनी डालकर गोली सी बना लेना और उसको नित्य रात में सोते समय खाना, ऊपर से जल नहीं पीवे। इस प्रकार कितने ही दिन तक यह औषधि सेवन करे।

शीतला।

अथवा विस्फोटक से बच्चों के शरीर में गर्मी भिन जाती है उसके लिये बच्चे को गौ के दूध में गौ का घी और मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये।

छाती और हृदय के रोग पर।

जलते हुए भिलावे के तेल की १० से १५ बूंद तक गौ के दूध में डालकर वह पिलावें।

रक्त पित्त पर।

गौ के दूध में पचगुना जल डालकर औटाना। जब केवल दूध रहजाय तब इसको पिलाना।

शरीर की हड्डी टूट गई हो।

उस दशा में सवेरे छोटी गौ का दूध, मुनक्का, छुहारा, मुलहठी आदि मीठी वस्तु डालकर औटाना और उसमें घृत और लाख पीस कर डालना और ठंढा होने पर पिलाना। अथवा गेहूं का आटा, लाख और कोह की छाल का चूर्ण, दूध और घृत में डालकर जहां की हड्डी उतर गई हो या टूट गई हो उस जगह बांधने से अस्थि जुड़ जाती है अथवा ठिकाने आजाती है।

जुकाम पर।

गौ का दूध गरम कर उसमें कालीमिर्च का चूर्ण और मिश्री डालकर पिलाना।

रक्तविकार और पित्त से उत्पन्न शिररोग पर।

रुई का मोटा फाया बनाकर उसे गौदूध में भिगोकर शिर में रक्खे और ऊपर से कपड़ा बांधकर उसे दूध से बराबर तर करता रहे। इस तरह सबेरे से शामतक करके संध्या को शिर धोकर उस पर मक्खन मसल कर लगावे। इस प्रकार २-३ दिन तक करें।

प्रवाहिका और रक्तपित्त पर।

दूध की बराबर का पानी डाल औटाकर जब केवल दूध रह जाय तब पिलावे। इससे उदरवात, शूल, प्रवाहिका, रक्तपित्त और तृषा यह विकार शान्त होते हैं। यह रक्तविकारो पर अमृत के समान गुण करता है।

पांडुरोग क्षय और संग्रहणी।

पर लोहे की कढ़ाई में औटाया हुआ दूध ७ दिन तक बराबर पिलावे और इन रोगों का परहेज़ रक्खे।

हिचकी पर।

गौ का गरम दूध पिलाना।

मूत्ररोग से उत्पन्न उदावर्त।

ोग पर कच्चे दूध में पानी मिलाकर वह लस्सी उसे पिलावे।

बहुत परिश्रम से थक जाने पर।

गौ का गरम दूध पीने से थकावट शीघ्र उतर जाती है।

सिर की पीड़ा पर।

गौ के दूध में सोंठ सिल पर घिसकर उसका गाढ़ा २ सिर पर लेप करके ऊपर से रुई चिपका देवे। इससे ७-८ घंटों में सिर का कैसा ही दर्द हो मिट जाता है।

गौ का दही।

स्वादु, बलकारक, रुचि बढ़ानेवाला, चिकना, दीपन, पुष्टकारक, मधुर, ग्राहक, ठंडा और बादी बवासीर को मेटनेवाला है। दही खटाई और स्वाद के भेद से पांच तरह का होता है। उसका गुण भी भिन्न भिन्न है। फीका, मीठा, खटमिट्ठा, खट्टा और बहुत खट्टा ये पांच भेद हैं फीका दही गाढ़ा स्वाद में दूध के समान, मूत्र विशेष लानेवाला, दस्तावर, दाहकारक और त्रिदोष उत्पन्न करनेवाला होता है।

मीठा दही।

गाढ़ा, मीठा, वीर्य वृद्धिकर, पाचन होने पर मीठा, शरीर भारी करनेवाला, मेद, वायु और कफ़ का नाशक, रक्तशोधक और पित्त-नाशक है।

खटमिट्ठा दही।

गाढ़ा, मधुर, कुछ खट्टा और खाने के पीछे तोरा लगता है और गुण मीठे दही के समान हैं।

खट्टा दही।

रक्तविकार, पित्त और कफ़ करनेवाला और अग्निदीपक है।

बहुत खट्टा दही।

अग्निदीपक, कंठ में जलन करनेवाला, शरीर पर रोयें खड़ा करनेवाला, रक्तपित्त कारक और दांत खट्टे करनेवाला है।

गरम करके जमाया हुआ दही।

शीतल, हलका, कब्ज़ करनेवाला, वायुकारक, ग्राहक, अग्नि दीपक, मधुर, रुचिकारक और पित्तकारक है, दूध गरम करके उसमें से मलाई निकाल कर जमाया हुआ दही भी ऐसाही होता है।

चीनी मिला हुआ दही।

पित्त, दाह, तृषा और रक्तदोष नाशक है।

गुड़ मिला हुआ दही।

तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वातनाशक है। दही पर का पानी बलकारक, स्वाद में कसैला, पित्तकारक, दस्तावर, गरम, रुचिकारक, खट्टा, पचने में हलका, धातुमार्गों को शुद्ध करनेवाला, तिल्ली, कफ, बवासीर, वायुरोग, कब्ज़, पांडुरोग, शूल और दमा इनको नाश करनेवाला है।

दही पर की मलाई।

दस्तावर, भारी, रक्तपित्त, कफ और शुक्र को बढ़ानेवाली, अग्नि मन्द करनेवाली और वातनाशक है और गुण दही के समान होते हैं।

अजीर्ण पर।

गौ का दही अथवा मट्ठा बराबर का जल मिला कर पीने से बहुत असाध्य अजीर्ण रोग से प्राण बच सकता है।

कांच का चूर्ण।

अन्न के साथ खाने में आजाय तो गौ का दही पिलावे।

तृषारोग पर।

पुरानी ईंट साफ़ धोकर आग में लाल गरम करके वह गौ के दही में बुझावे और तृषावाले रोगी को वह दही थोड़ा थोड़ा पिलावे।

दूसरा प्रयोग।

गौ का मीठा दही १२८ भाग, चीनी ६४ भाग, घी ५ भाग, शहद ३ भाग, काली मिर्च का चूर्ण दो भाग, सोंठ का चूर्ण दो भाग,

और इलायचीदाने का चूर्ण दो भाग यह सब मिलाकर कलई के बर्तन में रखना और उसमें से थोड़ा थोड़ा तृषावाले को पिलाना चाहिये।

तीसरा प्रयोग।

दही को कपड़े में छानकर सब जल निकाल दे फिर उसमें ऊपर लिखी चीनी आदि सब चीज़ें डालकर मिला देना। यह शिखरणी (श्रीखंड) कहलाती है। इससे तृषा, दाह और पित्त शांत होता है और खाने में अत्यन्त स्वाद है।

कनेर के विष पर।

गौ के दही में चीनी डालकर पिलावे।

सूर्यावर्त नामक मस्तकरोग पर।

जिसमें सूर्योदय से प्रारम्भ होकर क्रम से सिरदर्द बढ़ता है और सूर्य ढलने के साथ कम होने लगता है। सूर्योदय से पहिले दही भात का भोजन २ दिन तक करै।

गौका ताज़ा मक्खन।

शीतल, धातुवर्द्धक, तेजोवर्द्धक, वाजीकरण, कान्तिकारक, ग्राही, बलकारक, बालक और वृद्ध के लिये भारी, रुचि बढ़ानेवाला, स्वादु, नेत्र को हितकारक, पुष्टिकारक, वात, पित्त, कफ, बवासीर, ज्वर, रक्तविकार, अर्दितवायु, सर्वाङ्गशूल, श्रम और दमा नाश करता है।

बासी मक्खन।

बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, कफकर, मेदवर्द्धक, [illegible]-कारक, धातुवर्द्धक, खाने में बुरा लगे और शरीर [illegible] करके शरीर को भारी नहीं करता है अर्थात् [illegible] दो तीन दिन पहिले का मक्खन नमकीन, [illegible] है और वांति, बवासीर, कोढ़, सामान्य [illegible] मेटता है।

क्षयरोग मे[illegible]

और शरीर में शक्ति लाने के लि[illegible] और सोने के वर्क मिलाकर देना चाहि[illegible]

आंखें जलती हों—

तो गौ का मक्खन आंखों पर लगाना।

शरीर में से गर्मी निकलने—

के लिये गौ का मक्खन मिश्री मिलाकर खावे।

शीतला अथवा बोदरी माता—

के कारण बच्चो के शरीर में भिनी हुई गरमी निकलने के लिये मक्खन और मिश्री में ज़ीरे का चूर्ण मिलाकर छोटी सुपारी के बराबर गोली बनाकर नित्य सबेरे खाने को देवे।

कान में विशेष दाह हो—

तो गौ का मक्खन कुछ गरम करके कान में डालें।

भिलावा आदि दाहक पदार्थ—

शरीर पर उठने पर अथवा आंख में गिर पड़ने पर गौ का मक्खन लगावे थोर (जो थूहर की एक जात है) का दूध भूल से औषधि के तौर पर अधिक खालेने से शरीर में दाह होने लग जाय तो बहुत सा गौ का मक्खन खिलावे।

कनेर के विष पर।

गौ के मक्खन को कुछ गरम करके पिलावे।

रक्तातिसार।

अर्थात् खून के दस्तों पर गौदुग्ध से मक्खन निकाल कर उसमें शहद मिश्री मिलाकर देना।

बवासीर पर।

गौ का मक्खन, तिल खावे इससे दांत दृढ़ होकर शरीर पुष्ट होता है।

गौ का मट्ठा।

अग्निदीपक, त्रिदोष और बवासीर को नष्ट करनेवाला है। साधारण मट्ठा स्वादु, ग्राही, खट्टा, कसैला, हलका, दीपन, गरम, [illegible]वस्था में मधुर, तीखा, रूखा, वीर्य को, हृदय को प्रिय और

हितकर, विकासी, रुचिकर, शरीर को पतला करनेवाला, पीलिया, प्रमेह, मेदरोग, बवासीर, पाण्डु, संग्रहणी, कब्ज़, मूत्र रुकना, दस्त लगना, अरुचि, भगन्दर, उदररोग, तिल्ली, गुल्म (गोला,) शोथ, कफ़, शरीर पर के चट्टे, कोढ़, पेट के कीड़े, पसीना, घृत का अजीर्ण, वायु त्रिदोष, विषमज्वर और शूल को मेटनेवाला है। उदर में मट्ठे का पाक भी मीठा होता है इस कारण यह पित्तकोप नहीं करता। रूक्ष, गरम और स्वाद में कसैला होने से कफ़नाशक है। खट्टा और मीठा होने से वायुनाशक है।

मीठा मट्ठा।

(तक्र) कफ़कारक और वात पित्त नाशक है।

खट्टा मट्ठा।

रक्तपित्त और कृमि करनेवाला है। उसे सेंधा नमक डालकर पीने से वातनाशक होता है मट्ठे में सेंधा नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल का चूर्ण डालकर पीने से वह रूक्ष होकर कफ़ को नाश करता है। पीपल और सेंधा नमक डालकर मट्ठा वातजन्य उदररोग पर पिलावे। चीनी और कालीमिर्च डालकर पित्तजन्य उदररोग पर देना। सोंठ, मिर्च, पीपल, अजवायन, ज़ीरा और सेंधा नमक डालकर कफ़जन्य उदररोग पर देना और सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधा नमक, यवक्षार डालकर मट्ठा देने से त्रिदोषजन्य उदररोग मिटता है। घाव वाला, दुर्वल, मूर्छा, भ्रम, दाह, तृषा और रक्तपित्त वाले को मट्ठा देना योग्य नहीं। जिसमें से मक्खन नहीं निकाला हो वह मट्ठा निद्रा लाता है और शरीर को भारी करता है और पचने में भी भारी होता है। मक्खन निकाला हुआ हलका पथ्य है मट्ठा गरम और त्रिदोष नाशक है।

शरीर में जलन—

हो तो गौ के मट्ठे में वस्त्र भिगोकर रोगी को ओढ़ा देना।

गौ का मट्ठा।

नित्य पीने से संग्रहणी, अतिसार और ववासीर आराम होते हैं। मट्ठे से नाड़ियों में का रक्त शुद्ध होकर रस, बल, पुष्टि और शरीर की कांति उत्तम होती है, हर्ष प्राप्त होता है और वात, कफ़ के विकार दूर होते हैं।

कब्ज़ में।

अजवायन और काला नमक डालकर गौ का मट्ठा पीना लाभदायक है।

बवासीर पर।

चित्रक (चीता) की जड़ की छाल पीसकर मिट्टी के बर्तन भीतर लेप कर देना और सूखने पर उस बर्तन में दही जमाकर उसका मट्ठा रोगी को पिलाना।

दूसरा प्रयोग।

मट्ठे में सोंठ, मिर्च, पीपल और बिडलवण डाल कर पीना चाहिये।

संग्रहणी में।

गौ के मट्ठे में एक तोला काली मूसली पीसकर डाल देना और खाने को मट्ठे के साथ भात देना।

दूसरा प्रयोग।

मट्ठे में सोंठ और पीपल का चूर्ण डालकर पीना। संग्रहणी में मट्ठा दीपक और ग्राहक और हलका है। मूंगफली कितनी ही खाके उस पर मट्ठा पीने से उसने कोई बिगाड़ नहीं होता। इसी प्रकार मूंगफली खाने से अजीर्ण होने पर मट्ठा पीना हितकर है।

गाय का घी।

खाने और पचने के समय मीठा, ठंढा, देर से पचनेवाला, अग्निदीपक, चिकना, रसायन, रुचिकर, तेज को हितकारक, शरीर की कांति बढ़ानेवाला, वाजीकरण, मेधा, सुन्दरता, नेत्रों और बल को बढ़ानेवाला, बुढ़ापे को न आने देनेवाला, बुद्धिवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, स्वर अच्छा करनेवाला, हृदय को हित और प्रिय, मनुष्य का हितु, वृद्ध क्षतक्षीण (छाती घाव से दुबले) मनुष्यों को भारी, आग से जले का घाव, शस्त्र का घाव, वात, पित्त, कफ, श्रम, विष और त्रिदोष का नाश करता है। जिसके आमज्वर न हो उसे हितकर और आमज्वर वाले को अहितकर है अर्थात् विष का सा गुण दिखाता है।

गाय के मक्खन—

को तपाकर निकाला हुआ ताज़ा घृत तृप्तिकारक दुर्बल मनुष्य को हितकारक, भोजन में स्वाद देनेवाला, नेत्रों को लाभदायक, पाडु, कामला (कामर) में प्रशस्त है। विसूचिका, अग्निमांद्य, बालक, वृद्ध, क्षयरोगी, कफ़रोगी, मदात्य वाले, कब्ज़ और ज्वरवाले को घृत कम देना चाहिये।

पुराना घृत।

तीक्ष्ण, दस्तावर, खट्टा, हलका, कडुवा, शरीर का वर्ण अच्छा करनेवाला, छेदन और लेखन (वांति) करनेवाला, अग्निदीपक, वर्णशोधक, घाव भरनेवाला, गुल्म, मस्तकरोग, नेत्ररोग, शोथ, मिर्गी, नशा, मूर्च्छा, ज्वर, खांसी, संग्रहणी, बवासीर, पीनस, उन्माद, कीड़े, विष, दारिद्र और त्रिदोष का नाश करनेवाला है। यह नस्य (नास) और वस्तिकर्म्म (पिचकारी मारना) में प्रशस्त है। दस वर्ष तक का घृत पुराना समझा जाता है। दस वर्ष और हज़ार वर्ष तक का घृत कौंभ कहलाता है। उससे अधिक पुराना घृत महाघृत कहलाता है यह जितना पुराना उतनाही अधिक गुणकारक होता है।

शतधौत घृत।

घी को सौबार पानी से धोकर लगाने से दाह, मूर्च्छा, ज्वर मिटता है और गुण दूध के समान है। मक्खन, घृत और दही आदि गौ का उत्तम और बकरी का अधम होता है।

आधाशीशी पर।

गाय का ताज़ा घृत प्रातःकाल और सायंकाल नाक में डालकर मस्तक में चढ़ाने से सात दिन में आधाशीशी साफ़ मिट जाती है।

नाक में से खून गिरता हो—

तो गाय का ताज़ा घृत नाक में छोड़ना।

पित्त।

गर्मी से सिर दुःखता हो तो गौ का ताज़ा घृत मस्तक पर मालिश करे।

हाथ पैरों में जलन–

हो तो गौ का घृत मसलने से वह मिटजाती है।

ज्वर।

अथवा और कारण से अंग में विशेष जलन हो तो सौबार, हजार बार धोया हुआ गौ का घृत शरीर में मसलना।

धतूरे का विष–

चढ़ने पर बहुतसा गौ का घृत पिलाने से वह उतर जाता है।

मद्य का नशा–

विशेष चढ़ गया हो तो दो तोला गौघृत में दो तोला चीनी मिलाकर देना।

गर्भिणी स्त्री के रक्त गिरता हो–

तो गौ का सौबार धोया हुआ घृत शरीर पर मसले।

चतुर्थिक ज्वर, उन्माद, मिर्गी–

रोग पर गौ के घृत में गौ का दूध, दही और गोबर का रस डालकर पकाना और घृत शेष रहने पर छान कर वह पिलाना।

आग से जलकर घाव–

होगया हो तो गौ का घृत लगावे।

आंख की शिरा उठने से।

नेत्र लाल होगये हों तो गोघृत और शहद मिलाकर आंख में अंजन करे।

बच्चों की छाती में कफ–

जम गया हो तो छाती पर गौघृत को इस तरह मालिश करे कि वह सोख जावे।

शरीर में गर्मी—

भिन जाने से रक्त बिगड़ कर शरीर पर लाल २ चट्टे या फोड़े उत्पन्न होकर फिर वे काले पड़ जाते हैं और समय पाकर वही फोड़े गांठों के स्वरूप में फूट निकलते हैं उन पर गौ का शतधौत घृत बहुत गुणकारी है। उसकी क्रिया यह है। पहिले जोंकें लगाकर बिगड़ा हुआ खून निकलवा डाले फिर गौ का अथवा आधा गौ का और आधा बकरी का इस तरह मिला हुआ १० तोले घृत लेकर पीतल की परात में जल डालकर हाथ से अच्छी तरह फेंटना और वह जल फेंक देना। फिर दूसरा जल डालकर उस घृत को हाथ से खूब मथना। इस प्रकार सौबार जल डालकर धोना इस शतधौत घृत में ढाई तोले फिटकरी की खील का चूर्ण मिलाकर खरल में घोटकर मिट्टी के वर्तन में रखदेना। इसे नित्य सोते समय हाथ पैर के तलवों में और जहां २ चट्टे वा फोड़े हों उनपर अच्छी तरह मल २ कर मालिश करना। इससे शरीर की गर्मी कम होती हुई कुछ दिनों में शरीर में का दाद मिटकर रक्त शुद्ध होता है और यह विकार मिट जाता है।

तृषा पर।

गौ का घृत और दूध मिलाकर पिलाना चाहिये।

दाह पर।

गौ का सौबार या हजारबार धोया हुआ घी शरीर पर मर्दन करे।

हिचकी पर।

गौ का घी कुछ गरम करके पिलावे।

त्रिदोष-जन्य विसर्प रोग।

गौ का सौवार धोया हुआ घी बार २ लगाने से आराम होता है।

हाथ पैर के तलुए—

फटजाते हैं उसपर गाय के घी में सीप का भस्म खरल कर उसका लेप करना।

गौमूत्र।

कसैला, कडुआ, तीखा, लघु, नमकीन, तीक्ष्ण, पाचन, अग्नि दीपन, दस्त पतला करनेवाला, पित्तकारक, मेधावर्द्धक, कुछ मधुर, दस्तावर, लेखन करनेवाला, बुद्धिवर्द्धक, कफ़, वायु, कुष्ट, गुल्म, उदररोग, पांडुरोग, किलास नामक कुष्ट, शूल, बवासीर, खुजली, दमा, आमज्वर, अफरा, खांसी, क़ब्ज़, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, चर्मरोग, स्त्रियों का अतिसार और मूत्र रुकना इनको नाश करता है और सब मूत्रों से गौमूत्र में अधिक गुण हैं।

कफ़रोग पर—

केवल गोमूत्र पिलावे।

दस्त होने को—

गौमूत्र जितनी बेर कपड़े में छानकर पिलावे उतने दस्त होंगे।

उदररोग बच्चों के पेट के डिब्बे पर।

गौमूत्र में चीनी निमक बराबर पीसकर डालकर पिलाना अथवा गौमूत्र सैंधव और राई का चूर्ण मिलाकर पिलाना। (४) बच्चों की छाती में कफ़ जमने से श्वास में छाती कांपती है उसमें गौ मूत्र को १–२ बार छानकर हल्दी मिलाकर पिलाना। (५) उदररोग और बच्चों के पेट में डब्बे का रोग होता है उसमें ४ तोला गौमूत्र और नारियल का छिलका नरेली १ पैसा भर और खरेती (फल्गु) के सूखे पत्ते १ पैसा भर घिसकर पिलादे। उसके पीने से उदररोग नष्ट होकर सब विकार दस्त के रास्ते निकल जाते हैं। बच्चों को इसका अष्टमांश या चतुर्थांश दें।

पांडुरोग पर।

नित्य सवेरे रोगी के सामर्थ्य के अनुसार गौमूत्र कपड़े में छानकर रोग की न्यूनाधिकता देखकर ४२ या २१ दिन तक पिलाना। (७) गौमूत्र कुछ गरम करके उससे कान धोने से कर्णस्राव (कान बहना) मिटता है। गाय का गोवर दुर्गन्धिनाशक, दस्तावर, सुखानेवाला,

अन्नादि बीज को बढ़ानेवाला पुष्ट करनेवाला, कांतिकर और लेप से चिकनाई करनेवाला और मैल हटानेवाला है ।

मृतगर्भ निकालने को ।

गोबर का ७ तोला रस गाय के दूध में देना । (१) गुदभ्रंश (कांच निकलना) हो तो गौ का गोबर गरम करके उससे कांच को सेंकना ।

पसीना मिटाने को ।

सूखा गोबर और नमक रखने का पुराना घड़ा दोनों पीसकर शरीर पर मसलना ।

सूखी खुजली पर ।

गोबर शरीर पर मसलकर नित्य गरम जल में स्नान करना ।

गोबर की राख ।

सुखानेवाली, घाव भरनेवाली, रुचिकर, दुर्गंधनाशक, धान्य-वर्द्धक, कृमिघ्न, शोधक और शीतनिवारक है । (१) शीतला टूट कर फोड़े से होजाते हैं तब गोबर की राख कपड़छान करके घावों में भरदे ।

साधारण घाव पर ।

गोबर की राख घा में लगाना और राख में अन्न रखने से कीड़ा नहीं लगता यह सब जानते हैं ।

गाय के दूध, दही, मट्ठा, मूत्र, गोबर आदि से ही अनेक रोगों को दूर करना सरल से सरल विधि है आशा है पाठिकाएं इस विषय को सदैव ध्यान में रक्खेंगी ।

स्वास्थ्यरक्षा के कुछ साधारण नियम

स्वास्थ्यरक्षा के लिये मनुष्य मात्र को ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये और ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिये मिर्च, मसाला, अचार, चटनी, प्याज, लहसुन, चाय, काफ़ी, तमाखू, मदिरा, मांस आदि सभी प्रकार के उत्तेजक और तीक्ष्ण पदार्थों का नहीं सेवन करना चाहिये । दाल भात

खीर, रोटी सादे भोजन करना चाहिये । शृङ्गार सम्बन्धी किसी बात का चिन्तवन या उसकी चर्चा करनी उचित नहीं क्योंकि इससे विषय वासना जागृत होकर वीर्यस्थान भ्रष्ट होजाता है शृङ्गार रस के नाटक उपन्यास तमाशे वगैर: भी नहीं देखना चाहिये, आयु की रक्षा के लिये रात को जल्द सोना अर्थात् नौ बजे सो रहना और प्रात:काल चार बजे उठ बैठना अच्छा है । रात को सोने से पहिले हाथ पाँव धो कर परमेश्वर का अवश्य ध्यान करना चाहिये क्योंकि इससे चित्त में बुरे विचार उत्पन्न नहीं होते । तथा तरह तरह के बुरे स्वप्न नहीं दिखलाई देते यह निश्चय बात है ।

जहांतक होसके ऐसा भोजन खाना चाहियें कि जिससे प्रतिदिन दस्त साफ आता रहै जो पथ्य से रहते हैं वे कभी रोगी नहीं होते; सदैव हलका भोजन करते रहने से भी किसी कारण से कब्ज़ रहने की शिकायत रहती हो तो पेट के साफ करने के लिये रात्रि को सोते समय त्रिफले का चूर्ण सेवन करना चाहिये ।

अधिक भारी, गरम, उत्तेजक और अत्यन्त पौष्टिक (क़ाबिज़) पदार्थ नहीं खाने चाहिये ।

विशेषकर रात्रि के समय तो ऐसे पदार्थ कभी भूलकर भी नहीं खाने चाहिये ।

जहांतक हो सूर्य के अस्त होने से पहिले ही भोजन कर लेना चाहिये रात्रि में भोजन करना गुणदायक नहीं क्योंकि वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि भोजन करके तीन घंटे बाद सोना चाहिये । यदि रात्रि में ही भोजन करने का अवसर आजावै तो तीन घंटे बाद सोना चाहिये ।

रात्रि में सोने के दो घंटे पहिले से पानी अथवा दूध या अन्य किसी प्रकार की वस्तु नहीं पीना चाहिये इससे अनेक प्रकार से स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है ।

प्रतिदिन के सेवन में जहांतक होसके दूध, चावल, गेहूं, उड़द, बादाम, किसमिस, दाख, अनार, अंगूर, अमरूद, सेव और ताजे शाक आदि पदार्थ ऋतु और सामर्थ्य के अनुसार अवश्य खाने चाहिये क्योंकि ऐसे पदार्थों के प्रतिदिन ऋतु के अनुसार सेवन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है ।

घी और तेल में बने हुए खाने पीने के पदार्थ पचने में भारी होते हैं, इसलिये शाक भाजी (तरकारी) को बहुत घी तेल में नहीं तलना चाहिये।

अधिक तलने से पचने में देरी लगती है और लाभ की जगह हानि पहुंचाते हैं।

ताजे फलों और शाक भाजी के प्रतिदिन सेवन करने से खून साफ होता है, पाचनक्रिया ठीक रहती है, पाखाना साफ होता है।

इस कारण ऋतु ऋतु के ताजे फल व शाक प्रतिदिन अवश्य सेवन करने चाहिये रात को भलीभांति कुल्ला कर दाँतों को साफ़ करके सोना चाहिये ऐसा न करने से दांतों के अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं।

दंतरक्षा की सरल विधि।

किसी मनुष्य के दाँतों में किसी प्रकार की कुछ भी शिकायत हो तो उसको प्रातःकाल उठते ही थोड़ा सैंधानमक चबाकर दांतों में खूब रगड़कर कुल्ला करना चाहिये। फिर कड़ुये तेल को दांतों में मलकर कुल्ला करना; जिनके किसी प्रकार का रोग न हो वे यदि प्रतिदिन इसका अभ्यास रक्खैं तो जीवन-पर्यन्त दाँतों में किसी प्रकार का रोग न होने पावैगा; प्रतिदिन केवल कड़ुवा तैल दाँतों में खूब मलने का अभ्यास रखने से दांत सदैव मज़बूत और निरोग रहते हैं सब प्रकार की पीड़ा दूर होती है।

बड़ के अंकुरों का काढ़ा बनाकर कान में डालने से दांत और डाढ़ों का हिलना दूर होता है।

अथवा कालीमिर्च का काढ़ा बनाकर कान में उसकी दो तीन बूंदें टपकाने से या लौंग का काढ़ा बनाकर उसकी बूंदें कान में डालने से दाँतों और डाढ़ों की पीड़ा शीघ्रही दूर होती है।

यदि डाढ़ खोखली होगई हो और पीड़ा के कारण मनुष्य व्याकुल हो तो नौसादर या कपूर की पोटली बनाकर डाढ़ों के नीचे दबाने से तत्काल ही कठिन से कठिन पीड़ा भी दूर होती है।

अनेक रोग नाशक गोली।

पीपर, चीता, आंवला, हल्दी, सोंठ, दारुहल्दी, हड़, कूट, चीता यह सब औषधियां एक एक तोला, सैंधा नमक एक तोला, नीम पर

की गुरच और नीम के कोमल पत्ते दो दो तोला, मोथा नौ तोला इन सबको कूट छानकर बकरी के मूत्र में खरल करे फिर चने की बराबर गोली बनाकर रख छोड़े।

यह गोली नीचे लिखे हुए रोगों को अत्यन्त गुणकारी है प्रति दिन आनेवाला ज्वर, दूसरे और चौथे दिन आनेवाला ज्वर और स्त्रियों का सूतिकज्वर दिन में दो दो घंटे पश्चात् एक एक गोली पानी के साथ खाने से दूर होता है।

इस गोली को पानी में घिसकर आंखों में नित्य लगाने से आंखों के सामने से अंधियारा दूर होता है।

स्त्री के दूध में घिसकर लगाने से पलकों का चिपटना दूर होता है।

बकरी के दूध में घिसकर लगाने से आंख की फूली दूर होती है।

तिल के तैल के साथ घिसकर लगाने से रतौंधी दूर होती है।

केले के पानी में घिसकर लगाने से आंखों का ढलका दूर होता है।

इस गोली के लगाने या खानेवालों को मातदिल भोजन करना चाहिये और तेल, खटाई, मिरच, गुड़ आदि गरम, चरपरी और तीक्ष्ण वस्तुओं से परहेज़ करना चाहिये।

अग्निवर्द्धक गोली।

पांचो नमक, अजवायन, ज़ीरा, काला ज़ीरा, हर्ड, वायविडङ्ग, धनियां, सूखा पोदीना, चित्रक का छिलका एक एक तोला, अमलवेत डेढ़ तोला, भुना सुहागा छै मासे इन सब औषधियों को कूट छानकर कागज़ी नींबू के रस की तीन पुट* देकर जंगली बेर के समान गोली बनाले प्रातः और सायंकाल को एक एक गोली खाने से भूख अधिक लगती है और पेट के अनेक विकार दूर होते हैं।

---

* नींबू के रस में भिगोकर छाया में सुखावे फिर नींबू के रस में भिगोवे फिर सुखावे इस प्रकार तीनवार भिगो भिगोकर सुखावे इसी को पुट कहते हैं।

सौन्दर्य रक्षक उपाय ।

शृंगार-जीवन तैल ।

बाल बढ़ाने, काले, कोमल और पकने से बचाने के लिये तथा मज़बूती के लिये अपूर्व तैल बनाने की विधि ।

कपूरकचरी, बालछड़, छरीला, सुगन्ध कोकिला, नागरमोथा, सुगन्धिनन्तरी, महाभरी, चम्पावती, पानड़ी, छोटी इलायची, सफेद चन्दन, खस यह सब औषधियां एक एक तोला और तेजबल, नरकचूर, कपूर, बड़ी इलायची, तालीस, लौंग यह सब औषधियां चार चार मासे मंगाकर सबको कूटकर जौ की बराबर कर बड़े मुंह की बोतलों में तैल भर कर उसमें यह सब औषधियां डालदे और बोतलों का मुंह काग से बन्द करदे । दिन भर धूप में और रात भर ओस में रक्खा रहने दे इस प्रकार एक सप्ताह तक रक्खे फिर तेल को निकालकर कपड़े से छानले और साफ बोतलों में भरले ।

तिल्ली के तैल और नारियल के तैल दोनों में बनता है ।

बाल जमने के लिये तैल ।

मुहलठी और नवीन आंवले इन दोनों को बराबर बराबर ले कूटकर जितनी दोनों औषधियां तोल में हों उससे चौगुना पानी डालकर रात को भिगोदेवे फिर इससे चौगुना तिली का तैल मिलावे और तैल से चौगुना पानी और उतना ही गाय का दूध डालकर अग्नि पर चढ़ादेवे और धीमी धीमी आंच से पकावै जब केवल तैल रहजावै पानी सब जल जावै तब उतार कर ठंढा होने पर तैल को छानकर बोतलों में भरकर रखले । इस तैल की नास देने से अर्थात् नाक से प्रतिदिन तैल थोड़ा २ ऊपर को खींचै और इसी की मालिश करै तो शिर के या डाढ़ी मूछ के बाल गिर गये हों वे फिर निकल आते हैं ।

सफेद बालों के लिये तैल ।

नील के पत्ते, केतकी की जड़ का कंद, भांगरा, पियावांसा, कोह वृक्ष के फूल, विजैसार के फूल, काले तिल, तगर, कमल का

फूल जड़ सहित, लोहे का चूरा फूल प्रयंगू, अनार की छाल, गिलोय, हरड बहेड़ा आंवला और कमल की कीच यह सब औषधियां एक एक तोला लेवे और कूटकर इससे चौगुने पानी में रात को भिगोदेवे फिर इससे चौगुना तिल का तैल डाले और तैल से चौगुना त्रिफले का काढ़ा, भांगरे का रस मिलाकर धीमी धीमी आंच से पकावे जब सब जल जावे केवल तैल रहजावे तब उतारकर छानलेवे और बोतलों में भरकर रखलेवे इसके लगाने से गिरे हुए बाल फिर से जमजाते हैं और मज़बूत तथा काले निकलते हैं और खूब बढ़ते हैं।

जिसके बाल कुसमय में ही सफेद होगये हों इस तैल के लगाने से काले होजावेंगे। अधिक दिन लगाते रहने से कभी सफेद न होंगे और न कभी गिरेंगे इस तैल के सेवन से शिर की कठिन से कठिन पीड़ा भी दूर होती है।

नयनामृत सुरमा।

पांच तोले सुरमे को तीन दिन तक ठंढे पानी में भिगो रक्खे चौथे दिन निकालकर नीम के पत्तों के रस में खरल में घोटे-घोटते घोटते जब बहुत अच्छी तरह से घुटजावे तब एक तोला कपूर देशी असली, एक तोला सफेद इलायची के दाने डालकर फिर घोटे जब यह सब वस्तुएं सुरमे में मिलजावें तब साया में रक्खा रहने दे सूख जाने पर तीसरी बार फिर सौंफ के अर्क में तीन दिन बराबर घोटै फिर साया में रक्खा रहने दे सूख जाने पर फिर घोटै और घुटजाने पर शीशी में भरकर रखदे।

इस सुरमे को प्रतिदिन आँखों में लगाने से आंखों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं और दृष्टि तीव्र होती है।

नयनामृत सलाई।

त्रिफला (हड़, बहेड़ा, आंवला) का काढ़ा, भांगरे का रस, सोंठ का काढ़ा, घी, गोमूत्र, शहद और बकरी का दुध इन सब में अलग अलग सात बार शीशे को पिघलाकर बुझावे फिर उसी शीशे की सलाई बनावे। इस सलाई को नेत्रों में प्रतिदिन सोते समय फेर लिया करे तो नेत्रों के सब प्रकार के रोग दूर हों और कभी कोई रोग न होने पावे।

अन्य सरल उपाय ।

भोजन करने के पश्चात् हाथों को धोकर गीले हाथों की दोनों हथेली आपस में घिसकर नेत्रों में लगावे इस प्रकार करते रहने से नेत्रों में कभी कोई रोग नहीं होता और हुआ हो तो दूर होजाता है ।

सब प्रकार के नेत्र रोगों पर ।

रसौत को पानी में पीसकर लेप करे तो नेत्रों के सब प्रकार के रोग दूर हों ।

हर्ड, सोंठ और पत्रज ये तीनों औषधियां बराबर बराबर पानी में पीस के लेप करने से नेत्रों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ।

घीकुवार और चीते के पत्ते यह दोनों औषधियां पानी में पीस कर लेप करे तो नेत्रों के सब प्रकार के रोग दूर हों ।

अनार की पत्तियों को पीसकर लेप करने से नेत्रों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ।

बच, हलदी और सोंठ यह तीनों औषधियां पानी में पीसकर लेप करे तो सब प्रकार के रोग दूर हों ।

सोंठ और गेरू ये दो औषधियां पानी में पीस लेप करे तो सब प्रकार के रोग दूर हों ।

आंखों के ऊपर चारों ओर लेप करना चाहिये आंखो के भीतर औषधि नहीं लगनी चाहिये ।

सुगन्धित मिस्सी ।

मिस्सी भी स्त्रियों के शृंगार की एक अपूर्व वस्तु है आजकल तो नई रोशनी की स्त्रियां मिस्सी लगाना अच्छा नहीं समझतीं उन्हें विलायती दंत मंजन अच्छा लगता है परन्तु उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि विलायती दंत मंजन में और इस में कितना अन्तर है। मिस्सी देशी औषधियों से तैयार होती है इसमें जो गुण हैं उन्हें विलायती दंत मंजन नहीं पासकता अतएव मिस्सी में एक पन्थ दो काज हैं दांतों की आरोग्यता के लिये औषधि का काम देती है और दांतों के

छिद्रों सन्धियों में लगने से स्त्री सृंगार में भी दांतों की शोभा को बढ़ाती हैं। जो बहिने लगाना पसन्द करती हैं उनके सुभीते के लिये यहां मिस्सी बनाने की विधि लिखी जाती है।

हर्ड बहेड़ा और आंवला यह तीनों औषधियां बराबर बराबर ले और इन सबका तिहाई हिस्सा कसीस और चौथाई हिस्सा सफेद इलायची और इन सबका आठवां हिस्सा देशी कपूर यह सब इकत्रित कर कूट पीस कपड़ छानकर रख छोड़े प्रतिदिन स्नान करते समय दांतों में मलकर कुल्ला करडाले इसके सेवन से दांतो के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं और दाँत मज़बूत रहते हैं बुढ़ापे में भी हिलते टूटते और गिरते नहीं।

दांत का मंजन।

धनियां, मस्तंगी, सेंधानमक, सफेद कत्था, सुहागा, मैनफल के बीज, सफेद ज़ीरा, सेलखड़ी कालीमिर्च, सोंठ इन सब औषधियों को बराबर बराबर मंगावै, धनियां सुहागा सोंठ ज़ीरा इन सबको भून कर पीस डाले और ऊपर लिखी सब औषधियों को कूट सबको इक-त्रित कर छानकर रखदे इस मंजन को प्रतिदिन दांतों में मलते रहने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं मुंह से हर समय सुगन्धि आती रहती है। दांत दृढ होते हैं और बुढ़ापे में भी नहीं हिलते न टूटते हैं।

महासुगन्धित दंत मंजन।

समुद्र फेन ५ तोला, सेलखड़ी सवा तोला, चीनी सवा तोला, पिपरमेंट १ मासा, कपूर १ मासा, इतर गुलाब १ मासा, दालचीनी का तैल ८ बूंद रंग गुलाबी कच्चा १ रत्ती इन सबको इकट्ठा कर बारीक पीस डाले और शीशी में भरकर रखले प्रतिदिन प्रातःकाल दांतों में मलते रहने से दांत दृढ़ साफ़ और निरोग रहते हैं।

सरल दंत मंजन।

बादाम का छिलका जलाकर उसमें चौथाई हिस्सा फिटकरी मिलाकर दांतों में प्रतिदिन मलते रहने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं।

दांतों के हिलने में ।

दांत हिलते हों तो मौलसिरी की छालका चूर्ण बनाकर प्रतिदिन दांतों में मलै और मौलसिरी की ही दातौन करै तो हिलते हुए दांत शीघ्रही दृढ़ होजाते हैं ।

चन्द्रमुखी तैल ।

केसर, सफेद चन्दन, लोध, पतंग, लाल चन्दन, खास, मजीठ, मुहलठी तेजपात, पद्माख; कमल, कूट, गोरोचन, हल्दी, लाख, दारुलहल्दी, पीला गेरू, नागकेशर, ढाक के फूल, प्रियंगू, बड़ के अंकुर, मालती, मोम, सरसों, और महाभरी, वच, यह सब औषधियां एक एक तोला लेकर जितनी सब तोल में हों इसीसे अठगुने दूध में एक सौ अट्ठाइस तोले तिली का तैल धीमी धीमी आंच से पकावे जब केवल तैल रहजावे तब उतार कर छानले और बोतलों में भरकर रख छोड़ै ।

इस तैल को प्रतिदिन मुंह पर मलते रहने से झांई मुहासा श्याम दाग मस्सा तिल, सेहुआं आदि सब प्रकार के रोग दूर होते हैं और मुंह चन्द्र मंडल की समान सुन्दर होजाता है ।

क्योंकि इस तैल में वर्ण को उत्तम करनेवाले और त्वचा (चमड़े) को सुन्दर कोमल और चिकना करनेवाले अपूर्व गुण हैं ।

जो स्त्रियां गोरे और खूबसूरत बनने की औषधियां मंगा मंगा कर व्यर्थ को धन नष्ट करती हैं उन्हें इस तैल का सेवन कर अपूर्व लाभ उठाना चाहिये ऐसी उपयोगी औषधि इस विषय की दूसरी कोई नहीं है ।

सरल उपाय ।

लोध, धनियां और बच इनको बराबर बराबर ले गाय के दूध में महीन पीस मुंह पर लेप करते रहने से युवावस्था के मुख के मुहासे शीघ्रही नष्ट होजाते हैं और मुख की सुन्दरता बढ़ती जाती है ।

सरसों बच, लोध और सेंधा नमक इन सबको बराबर २ ले पानी में महीन पीस लेप करने से मुहासे दूर होते हैं ।

सेमल के काटों को गाय के दूध में बारीक पीस तीन दिन लेप करने से मुहासे दूर हो मुख कमल की समान सुन्दर हो जाता है।

झांई के लिये।

मजीठ को सहद में पीसकर लेप करने से झाई और चेहरे के श्याम दाग दूर होते हैं।

बड़के पीले पत्ते, मालती लाल चन्दन, कूट, और लोध इन सबको बराबर २ ले दूध में पीस लेप करने से झाई मुहासा श्याम दाग आदि दूर हो मुख सुन्दर होजाते हैं।

कान्तिवर्द्धक उबटन।

बदाम की मींग निकालकर रात को पानी में भिगोदेवे प्रातःकाल उसके ऊपर का पीला छिलका उतार सफेद मींग की बराबर चिरौंजी ले दोनों को गुलाब जल में पीस डाले और तैल की समान पतला करके बोतल में भरकर रखले इसे प्रतिदिन मुंह पर मलते रहने से मुख की कान्ति (सुन्दरता) बढ़ती है और मुहासा झाई श्याम दाग आदि कोई रोग कभी नहीं होता इसी की मालिश समस्त शरीर पर करता रहे तो शरीर सुन्दर और कोमल तथा कान्ति युक्त बना रहता है।

चन्द्र प्रकाश उबटन।

बढ़िया सरसों मंगाकर बीनकर साफ़ करडाले और रात को पानी में भिगो प्रातःकाल धोकर उसी की बराबर चिरौंजी ले गाय के ताजे दूध में पीसकर उबटन बनावै इस उबटन को प्रतिदिन शरीर पर मलते रहने से चमड़े के सब रोग नष्ट होते हैं और शरीर की सुन्दरता दिन दिन बढ़ती है।

केशवर्द्धक और कान्तिकर तैल।

पियाबांसा के फूल, कुम्हेरन की जड़, केतकी की जड़, लोहे का चूरा, भांगरा, यह सब औषधियां बराबर बराबर मंगाकर कूट डाले फिर इन सबको तौलकर जितनी हों उससे चौगुना त्रिफला मंगा कूटकर चौगुने पानी में भिगोदेवे उसी में सब औषधियां डालदें और

प्रातःकाल किसी पीतल के बड़े बर्तन में कर चूल्हे पर चढ़ादेवे और जितनी सब औषधियां तोल में रही हों उनसे चौगुना तिल्ली का तैल छोड़कर धीमी धीमी आंच से पकावे जब पकते पकते केवल तैल रहजावै तब उतार छानकर बोतलों में भरकर पृथ्वी में खोद कर गाड़दे फिर एक महीने बाद निकाल इस तैल को प्रतिदिन बालों में लगाते रहने से बाल भंवरे की समान काले, घूंघरवाले कोमल और चिकने हो इच्छानुसार बढ़ते हैं शिर में फ्यास (मैल) जुएं कभी नहीं पड़ते। शिर की पीड़ा और अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं।

पान का सेवन।

यों तो पान सभी खाते हैं परन्तु पान किस प्रकार खाना चाहिये इसे बहुत थोड़े मनुष्य जानते हैं जिससे पान अत्यन्त गुण दायक होजाता है।

जिस प्रकार के पान खाने का स्वभाव हो वही पानले चूना कत्था बराबर बराबर लगा बीड़े में चिकनी सुपारी मुलहठी बड़ी इलायची और लौंग कपूर डालकर खाना चाहिये।

पान केवल भोजन करने के पश्चात् ही दोनों समय खाना चाहिये इस प्रकार खाने से अत्यन्त गुण करता है।

कपूर के गुण।

कपूर शीतल, वीर्य को बढ़ाने वाला, नेत्रों को अत्यन्त हितकार हलका, सुगन्धित, कड़वा, कफ, पित्त, विष, दाह, तृषा, मुखव विरसता (बेजायका) तथा दुर्गन्धता को नष्ट करता है।

बड़ी इलायची के गुण।

बड़ी इलायची भूख को बढ़ानेवाली, हलकी, रूखी, गरम, कफ पित्त, रक्तविकार, खुजली, श्वास, प्यास, जी मिचलाना, विष, मूत्रा शय के सब प्रकार के रोग, शिर के सब प्रकार के रोग, वमन औ सब प्रकार की खांसी को नष्ट करती है। इसलिये पान में बड़ी इलायची खानी चाहिये।

मुलहठी के गुण।

मुलहठी, शीतल, भारी, स्वादिष्ट, नेत्रों को हितकारी, बलकारक वर्ण (शरीर के रङ्ग) को उत्तम करनेवाली, चिकनी वीर्य को बढ़ाने वाली, केशों के लिये अत्यन्त हितकारी, स्वर को उत्तम करनेवाली। पित्त, वात, रक्तविकार सूजन, खांसी, घाव, विष, वमन, प्यास, ग्लानि तथा क्षयरोग को नष्ट करनेवाली है।

लौंग के गुण।

लौंग चरपरी, कड़वी, हलकी, नेत्रों को अत्यन्त हितकारी भूख को बढ़ानेवाली, पाचक, रुचिकारी, कफ, पित्त, रक्तविकार, प्यास, वमन, अफरा, शूल, खांसी, श्वास, हिचकी और क्षयरोग को अवश्य नष्ट करती है। इसी प्रकार पान में जो जो वस्तुयें डालकर खानी लिखी हैं सब में अनेक गुण मौजूद हैं।

पानका मसाला।

जो बाजार में अधिक मूल्य में बिकता है।

बड़ी इलायची एक तोला, केशर एक तोला, चन्दन सफेद एक तोला, कस्तूरी असली आठ रत्ती, लौंग दो तोला इन सबको बारीक पीस केवड़े के अर्क में सान एक एक रत्ती की गोली बना रक्खे एक गोली पान के साथ खाना चाहिये।

खाने की तम्बाकू बढ़िया गोलियां।

खानेकी तम्बाकू बढ़िया (कलकतिया) एक सेर मंगाकर बारीक कूटडाले फिर ढाई सेर पानी में धीमी धीमी आंच में औटावै जब एक सेर पानी रहजावै तब उतारकर कपड़े से छानले, छानकर फिर धीमी धीमी आंच में पकावै, जब पकते पकते इतना गाढ़ा होजावै जिसकी गोली बंधजावै तब उतार कर उसमें सफेद इलायची के दो तोला दाने, लौंग एक तोला, जावित्री एक तोला, बढ़िया इत्र हिना छै मासे, इत्र केवड़ा छै मासे मिलाकर छोटी छोटी गोली बनाकर ऊपर से चांदी के

वर्क लगाकर छाया में सुखा लेवे फिर जब चाहे पान के साथ खाना आरम्भ करदे, यह गोलियां महासुगन्धित और तम्बाकू खानेवाली स्त्री पुरुषों के लिये अत्यन्त प्रिय होगी।

सौन्दर्य रक्षक पाक।

जो स्त्रियां किसी बीमारी से उठकर दुर्बल होगई हों बीमारी ने शरीर को चर लिया हो, सोवड़ से निकलकर निर्बलता ने पीछा न छोड़ा हो किसी कारण से भी शरीर निर्बल होगया हो, सौन्दर्यता फीकी पड़गई हो उन स्त्रियों के लिये गई हुई शक्ति लाकर सौन्दर्य की रक्षा करनेवाला यह पाक अवश्य सेवन करना चाहिये।

जिन को किसी प्रकार की दुर्बलता व निर्बलता न भी हो उन्हें भी इसका सेवन अवश्य करना चाहिये।

स्याह ज़ीरा एक तोला, सोंठ डेढ तोला, चव एक तोला, बिधारा सवा तोला, धनिया डेढ तोला, तेजपात एक तोला, अकरकरा डेढ़ तोला, सफेद ज़ीरा डेढ़ तोला, बरिआरा की जड़ दो तोला, छोटी इलायची दो तोला, चीता एक तोला, पीपरामूल एक तोला, त्रिफला दो तोला, जावित्री एक तोला, नागकेशर डेढ़ तोला, बकरी का दूध पांच सेर चीनी, ढाई सेर गायका घी, एक पाव बकरी के पांचों सेर दूध को कढ़ाई में धीमी धीमी आंच से पकावे जब दूध औटते औटते आधा रहजावे तब सोंठ को कूट पीसकर कपड़े से छानकर दूध में छोड़दे और कलछुली से चलाती जावे जब दूध का खोवा बन जावे तब उतार कर दूसरी कढ़ाई में खोवा को घी में लाल करके भून डाले फिर चीनी की चासनी बनाकर सब औषधियां कूट पीस कपड़ छानकर खोवा में मिला चासनी में डालदेवे और फिर चिरौंजी बादाम पिस्ता कतरकर डालदे और आधी आधी छटांक के अन्दाज़ लड्डू बनाकर रखले रोज प्रातःकाल एक लड्डू खाकर ऊपर से पाव भर गायका दूध मिश्री मिलाकर पीवै।

यदि आधी छटांक का लड्डू हजम न हो तो एक लड्डू दो दिन खावे यह पाक रोगी निरोगी सभी स्त्रियों के लिये अत्यन्त हितकारी है इसको सेवन करते रहने से शरीर में उत्साह चेहरे पर प्रसन्नता सौन्दर्य में अधिकता और समस्त शरीर में सुन्दरता का सञ्चार होना है और अनेक रोगों का नाश होता है जैसे दुर

रोग, पांडु रोग, खांसी, भूखका कम होजाना, प्रदररोग, सोमरोग, रक्तगुल्म, कमर की पीड़ा, मस्तिष्क की निर्बलता, हृदय की धड़कन, चक्कर का आना आंखों की कमज़ोरी आदि अनेक रोग दूर होते हैं।

इस प्रकार सौन्दर्य की रक्षा करनेवाला यह पाक ऋषियों का बताया हुआ वैद्यकशास्त्र से खोज कर रोगी निरोगी सभी स्त्रियों के उपकारार्थ लिखागया है।

आवश्यक सूचना।

"देवी अनुभव प्रकाश" के दूसरे भाग में अत्यन्त उपयोगी अनेक प्रकार के पाक बनाने की विधि (नुस्खे) लिखे जावेंगे और भी सैकड़ों प्रकार के नुस्खे लिखे जावेंगे वैद्यक की जो उपयोगी बातें इस भाग में नहीं आसकीं वे दूसरे भाग में लिखी जावेंगी।

पत्र व्यवहार का पता:—

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय,

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज—इलाहाबाद।

पुस्तकालय का पता:—

श्रीमती यशोदादेवी,

पुस्तकालय विभाग,

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज—इलाहाबाद।

तार का पता:—"देवी" इलाहाबाद।

१८ वर्षों से देशी स्त्री-चिकित्सा में भारत-विख्यात

श्रीमती यशोदादेवी

कर्नलगंज इलाहाबाद का

स्त्री-रोगों का ठेका-शर्तिया इलाज

किसी स्त्री को कोई भी गुप्तरोग हो, नया अथवा कैसाही पुराना साधारण या कठिन से कठिन रोग हो एकबार उस रोगी-स्त्री को लाकर श्रीमती यशोदादेवी को दिखलाइये या पूरा हाल लिखिये अवश्य रोग दूर करदिया जावेगा।

अबतक १८ वर्षों में लाखों रोगी-स्त्रियां आराम होचुकी हैं।

बड़ी बड़ी धनी मानी रानी महारानी, सर्व साधारण और निर्धन अनाथ सभी स्त्रियां दूर दूर नगरों से आकर स्त्री-औषधालय में श्रीमती यशोदादेवी से रोग का निश्चय करा यहां

ठहरकर इलाज कराती हैं और निरोग होकर जाती हैं तथा अन्य रोगी-स्त्रियां जो पत्रद्वारा अपने रोग का पूरा हाल लिखकर पार्सल से औषधियां मंगाती हैं वे घर बैठे ही रोगों से छुटकारा पाती हैं इस प्रकार १८ वर्षों में लाखों स्त्रियां आराम होचुकी हैं। औषधालय में आने वालियों से किसी प्रकार की नज़र (फ़ीस) भेंट नहीं लीजाती केवल औषधियों का उचित मूल्य लिया जाता है और गरीबों को औषधियां मुफ़्त दीजाती हैं।

हमारे देश में स्त्रियों के लिये एक भी देशी स्त्री-औषधालय नहीं था—

जहां स्त्रियाँ अपने गुप्तरोगों का खुलासा हाल कहकर या लिख कर अथवा वहां जाकर बतासकें; श्रीमती यशोदादेवी के स्त्री-औषधालय ने इस महान् कमी को पूरा कर यह बात प्रत्यक्ष दिखलादी कि हमारी देशी औषधियों जगली जड़ी बूटी आदि में रोगों को नष्ट करने के कैसे कैसे विचित्र गुण हैं।

यही कारण है कि इतने समय (लगभग बीस वर्ष) में ही श्रीमती यशोदादेवी के अपूर्व अनुभव और स्त्री-चिकित्सा शक्ति ने भारतवर्ष में ही नहीं अन्य बाहरी अफ़रीका फ़ीजी आदि दूरदेशों तक प्रसिद्धि पाई है।

क्योंकि श्रीमती यशोदादेवी ने बाल्यावस्था से ही अपने वैद्य-पिता से वैद्यकशास्त्र की शिक्षा

पाई और १८ वर्ष तक स्वयं लाखों स्त्रियों का इलाज करके अनुभव प्राप्त किया है।

स्त्रियों के जिन कठिन गुप्तरोगों की परीक्षा (पहिचान) वैद्य, डाक्टर, हकीम वर्षों इलाज करने पर भी ठीक न करसके "क्योंकि हमारे देश की लज्जावती स्त्रियां पर-पुरुष से लज्जावश अपने गुप्तरोगों का हाल न कहती ही हैं और न दिखलाती ही हैं प्राण भले ही चले जावें परन्तु वे इसे कदापि स्वीकार नहीं करतीं इसी कारण हमारे देश की सैकड़ा पीछे पंचानबे स्त्रियां अनेक प्रकार के गुप्तरोगों से ग्रसित पाई जाती हैं।" और वर्षों इलाज करने पर भी रोगी को फायदा कुछ भी नहीं होता। उन गुप्तरोगों की परीक्षा मुफ्त में ही स्त्री औषधालय में श्रीमती यशोदादेवी द्वारा होती है और श्रीमती की तैयार कीहुई औषधियों से दूर दूर नगरों से रोगी-स्त्रियां आकर रोगों से छुटकारा पाती हैं। इस प्रकार:—

अबतक लाखों स्त्रियां आराम होचुकी हैं।

स्त्रियों के कठिन और पुराने गुप्तरोग गर्भाशय-दोष, मासिकधर्म की खराबी, प्रदर आदि जिन गुप्तरोगों के कारण जिन स्त्रियों के सन्तान नहीं होती वे भी गुप्तरोग यदि असाध्य न हुए हों तो यहां वैद्यक तथा वैज्ञानिक रीति से थोड़ेही दिनों में दूर कर दिये जाते हैं।

इस प्रकार हजारों सन्तानहीन स्त्रियां भी सन्तानवती होगई हैं।

सब प्रकार की चिट्ठियाँ गुप्त रक्खी जाती हैं श्रीमती यशोदादेवी के सिवाय दूसरा कोई नहीं देखता इसलिये संकोच न कर रोग का पूरा हाल लिखिये अथवा रोगी-स्त्री को यहां लाकर दिखलाइये।

पत्र व्यवहार का पता:—

श्रीमती यशोदादेवी स्त्री औषधालय

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज—इलाहाबाद।

स्त्रियों को खुशखबरी

पुरुष-चिकित्सा औषधालय ।

जरूरी बात ।

मुझे आज लगभग बीस वर्ष स्त्रियों की चिकित्सा करते व्यतीत हुए इस बीच में मेरे पास लाखों ही स्त्रियां अपना इलाज कराने आई उनकी ज़बानी उनके पतियों के रोगों का समाचार सुनकर तथा उन स्त्रियों के पत्रोंद्वारा उनके पतियों के रोगों का हाल पढ़कर इस बात का पता लगा और इस बात का अनुभव हुआ कि पुरुषों की बाल्यावस्था के कुटेव, कुसंगति से तथा युवावस्था में नियम के विरुद्ध अधिक विषयलोलुपता के कारण सैकड़ा पीछे निन्नानवे पुरुष अनेक प्रकार के रोगों में फंसे हैं।

वीर्य की क्षीणता, निर्बलता, दुर्बलता, शीघ्रपात, स्वप्नदोष, नसों की कमज़ोरी, सुस्ती, नपुंसकता, गर्मी, सुजाक, प्रमेह, बहुमूत्र, पथरी, अंडवृद्धि, मन्दाग्नि, क़ब्ज़ रहना इत्यादि रोग सर्वव्यापी होगये हैं इनके अतिरिक्त और बहुत से रोग भयंकर प्राणघातक उत्पन्न होते हैं जिनके कारण उन पुरुषों का जीवन रोगों की चिंता में ही व्यतीत होता है।

बीस पचीस वर्ष की अवस्था में ही बुढ़ापे कीसी दशा होजाती है तनक्षीण मुख मलीन और चेहरे पर झुर्रियां दिखलाई देने लगती हैं स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपात और नपुंसकता से वृद्धावस्था से भी अधिक दुखदाई अवस्था आ घेरती है इसकी चिंता से पति और पत्नी दोनो का जीवन दुःख और चिंता में ही व्यतीत होता है।

वैद्य और डाक्टरों की सेवा करते करते, औषधियां खाते खाते आर्थिक दशा भी शोचनीय होजाती है परन्तु खेद है कि वे वैद्यों से अपनी बाल्यावस्था के कुटेवों हस्तक्रिया आदि जीवन को नष्ट करने वाली तथा वीर्य को क्षीण करनेवाली आदतों का हाल तथा विवाह होते ही दूसरी नाशकारी आदत स्त्री के आते ही नियम-विरुद्ध समय

कुसमय अधिक विषय में लिप्त रहने से बल और वीर्य नष्ट होजाना है यह कुछ भी हाल लज्जा और संकोच वश वैद्यों से नहीं कहते और न उनकी स्त्रियां अपने पति की गर्मी, सुजाक, प्रमेह, शीघ्रपात और नपुंसकता का हाल किसी से कहती हैं जो उनके पति का रोग दूर करसके। यही कारण है कि पुरुषों के रोग भी दूर नहीं होते हैं तब वे वैद्यों को दोष देने लगते हैं स्त्रियां बेचारी पति के इन रोगों के कारण आप भी रोगी होजाती हैं और पति के शीघ्रपात तथा नपुंसकता के कारण रातदिन कुढ़ा करती हैं और इसी कारण वे भी रोगी बनजाती हैं बहुतेरी सन्तानहीन हो रो रो कर जीवन व्यतीत करती हैं पति भी वैद्य से खुलासा हाल लज्जावश नहीं कहते इसके अतिरिक्त दूसरा विशेष कारण यह भी है कि:—

हमारे देश में अभीतक एक भी देशी स्त्री-औषधालय ऐसा नहीं था जहां स्त्रियां अपने पतियों के रोगों का खुलासा हाल तथा रोग उत्पन्न होने का असली कारण बाल्यावस्था की कुसंगति की कहानी और विवाह होनेपर युवावस्था की नियमविरुद्ध प्रसंग-कथा और गर्मी, सुज़ाक, नपुंसकता आदि रोगों के होने का खुलासा हाल संकोच छोड़कर सुना सकें अथवा चिट्ठियों द्वारा पहुंचा सकें जिससे वैद्य रोग का असली कारण समझकर उचित औषधि देकर रोग दूर कर सकें।

इसी कारण स्त्री-जाति के उपकारार्थ स्त्री-औषधालय खोला गया है अतएव मेरे पास आकर स्त्रियां अपने पति का खुलासा हाल कहती हैं उसी के अनुसार स्त्री पुरुष दोनों के रोगों का असली कारण जान कर इलाज किया जाता है जिससे पुरुषों के रोग भी शीघ्रही दूर होजाते हैं क्योंकि इस बात को भी स्त्री पुरुष सभी जानते हैं कि जिसको

समझ में रोग का असली कारण और रोग आजाता है वही वैद्य इलाज भी ठीक कर सकता है और रोग के अनुसार औषधि मिलने से रोग दूर होजाता है।

यही कारण है कि हमारी पुरुष-रोगों की औषधियां भी जादू कैसा असर करती हैं अतएव अभीतक १८ वर्ष तक हमने स्त्रियों के कहने से तथा पुरुषों की चिट्ठियां आने से पुरुषों के ऊपर लिखे पुराने से पुराने रोगों का इलाज किया इस बीच में लाखों पुरुष भी हमारी औषधियों से आराम हुए।

पुरुष-रोगों में हमारा अनुभव तथा चिकित्सा।

इतने वर्षों में औषधियों का गुण देखकर हमें इस बात का अनुभव और विश्वास हुआ है कि यदि कोई पुरुष अपने रोग का ठीक ठीक हाल अपनी स्त्री से लिखाकर हमारे पास भेजदे तो हम उसका रोग थोड़े ही दिनों में दूर करदेंगी इसी विश्वास और औषधियो की परीक्षा से हमें अब सब पुरुषो को इस बात की खुलासा सूचना देने का साहस हुआ है।

हमारे इलाज से १८ वर्षों में लाखों पुरुष अनेक प्रकार के रोगों से आराम हुए इस कारण हमारी पुरुष-रोगों की औषधियों के गुणों की प्रशंसा समस्त देश में होरही है अतएव पुरुष-रोगियों की अबहमारे पास इतनी अधिक चिट्ठियां आती हैं कि पुरुषों के इलाज के लिये हमें औषधालय का विशेष प्रबन्ध पुरुष-रोगों की औषधियां तैयार कराने का करना पड़ा है अभीतक हम स्त्रियों की औषधियों के शीघ्र तैयार कराने पर विशेष ध्यान रखती थीं क्योंकि हमारे यहां जितनी स्त्रियां औषधियां कूट पीस आदि पर नौकर हैं उन्हें स्त्रियो की औषधियां कूटने पीसने से अवकाश नहीं मिलता इस कारण पुरुषों की औषधियां समय पर तैयार नहीं कर मिलती थीं।

अब हमने औषधालय के लिये एक अलग मकान खरीद लिया है उसमें पुरुषों के ही लिये औषधियां तैयार कराई जाती हैं इसके लिये नौकरानियां भी अधिक रक्खी गई हैं अतएव अब चैत्र सम्वत् १९८२ से पुरुष-रोगों की औषधियां भी समय पर तैयार होरही हैं।

जिस किसी पुरुष को कोई रोग हो हमें अपना पूरा हाल अपनी स्त्री से लिखाकर भेजे परमात्मा की कृपा से उसका रोग दूर कर दिया जावेगा।

सब बहिनों को चाहिये कि अपनी तथा सन्तान की आरोग्यता के लिये इससे बचने का हर समय ध्यान रक्खें। प्रदर रोग अधिक बढ़ जाने से शरीर में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं इसलिये रोगी-स्त्रियों का जीवन दुःखमय ही व्यतीत होता है प्रदररोग वाली स्त्रियों का जीवन ही व्यर्थ होता है।

प्रदर रोग के लक्षण (पहिचान)

हर प्रकार के प्रदर रोग के लक्षण यह हैं योनि से हर समय सफेद हरा वा लाल पीला माड़ की समान हर समय या किसी किसी समय निकलते रहना, कमर में पीड़ा हो, शरीर में पेंठन और कुछ कुछ पीड़ा हो, शरीर दिन दिन दुबला होता जाय, बिना परिश्रम किये ही थकावट सी मालूम हो, हर समय लेटे रहने की इच्छा हो, शिर में चक्कर सा आता हो, आंखों में आलस्य और कुछ जलन सी प्रतीत हो, प्यास कुछ अधिक लगती हो, भूख भी कम होती जाय, कब्ज़ रहने लगे, कभी शिर में पीड़ा हो, उठने बैठने में आंखों के सामने अंधेरा सा मालूम हो, चक्कर आवे, कमर में पीड़ा इत्यादि लक्षण प्रदर रोग के हैं।

जिस प्रकार पुरुषों का वीर्य दूषित होकर प्रमेह होजाता है हर समय वीर्य बहता रहता है उसी प्रकार स्त्रियों के प्रदररोग होता है हर समय सफेद पानी जाता रहता है यह कई प्रकार का होता है और प्रायः रक्तप्रदर और श्वेतप्रदर अधिक हुआ करता है। चाहे जिस प्रकार का हो हमारी औषधि से शीघ्रही आराम होता है इस रोग में असावधानी न कर मालूम होते ही एक डिब्बी मँगाकर सेवन करें अवश्य रोग दूर होगा मूल्य १ डिब्बी का १।=) एक रुपया छै आना है।

योनिशोधक बत्ती।

इस बत्ती को योनि में रखने से योनि की शूल, पीड़ा, खाज आदि शीघ्र ही दूर होती है कैसी ही पुरानी शिकायत हो सैकड़ों उपाय करने पर भी फायदा न हुआ हो तो इन बत्तियों को मंगाकर काम में लाइये अवश्य फायदा होगा और कुछ दिनों तक बराबर रखते रहने से शिकायत जड़ से जाती रहैगी मूल्य ८ बत्ती का १।) है एक ही दो डिब्बी से रोग जाता रहता है।

रजदोष-नाशक

अमूल्य औषधि रज-सुधारक चूर्ण।

थोड़ेही दिनों में गुण दिखलाता है चाहे जितना पुराना रोग हो (असाध्य न हुआ हो) मासिकधर्म में कुछ भी शिकायत हो, कोई भी खराबी हो। इस औषधि के सेवन से आराम होता है और जिन स्त्रियों के सन्तान नहीं होती उनको सन्तान सुख प्राप्त होता है।

जिन स्त्रियों की कमर में पीड़ा रहती हो मासिकधर्म के समय कमर, गांठ और योनि में पीड़ा अथवा खुजली होती है जिसके मासिक (रज) का रङ्ग काला, लिबलिबा, फेनदार, पतला, गांठदार अथवा दुर्गन्धित होता है। मासिकधर्म के समय जिन स्त्रियो को अधिक प्यास लगती है अथवा जिनकी गांठ, कमर जकड़ी रहती है पेंडू में पीड़ा, ज्वर की सी हरारत रहना, मासिकधर्म का रक्त कम आना, गांठदार काला थोड़ा आना, पेट में रक्त की गांठ पड़जाना अथवा तादाद से अधिक समय तक मासिकधर्म का रक्त जारी रहना या समय के पहिले ही होजाना या अन्य किसी प्रकार की तकलीफ़ होती है उन सभी स्त्रियों के लिये रज-सुधारक अमृत की समान गुण करता है।

स्त्रियों का मासिकधर्म ठीक समय पर न होने से एकही नहीं सैकड़ों रोग उत्पन्न होते हैं और वे जीवन भर पीछा नहीं छोड़ते इस लिये स्त्रीमात्र को इस रोग की शीघ्रही औषधि करना चाहिये।

जिन स्त्रियों ने एकबार भी हमारी औषधियों का सेवन किया है वे रोगी-स्त्रियां [illegible]र उनके घरवाले पुरुष यही लिखते हैं कि हज़ारों

रुपया खर्च कर वर्षों अनेक औषधियां कर हैरान हो बैठे थे कुछ लाभ नहीं हुआ रज-सुधारक चूर्ण को मँगाकर दो ही चार दिन के सेवन से इसके अपूर्व गुणों का परिचय मिलने लगा और एक डिब्बी पूरी होने के पहिले ही सन्तोषदायक लाभ हुआ वास्तव में इस एकही औषधि के सेवन करने से स्त्रियां मासिक-धर्म सम्बन्धी सब प्रकार के रोग और कष्टों से शीघ्रही छुटकारा पाती हैं।

रज सम्बन्धी कुछ भी शिकायत हो और जिन स्त्रियों के गर्भ नहीं रहता या रहकर गिर जाता है या सन्तान रोगी रहती है, कम उम्र में ही मरजाती है अथवा स्त्रियों की कमज़ोरी के लिये, रज की क्षीणता (कमी के लिये यहांतक कि मासिक-धर्म की सब प्रकार की खराबियों) के लिये बेखटके रज-सुधारक सेवन कराइये इससे रज के विकारो से उत्पन्न होनेवाली सब शिकायतें तो अवश्य दूर होती ही हैं और गर्भ न रहने के दोष भी दूर होकर गर्भ-धारण शक्ति भी उत्पन्न होती है। इतने गुण होने पर भी एक डिब्बी का १॥) डेढ़ रुपया दाम लागतमात्र है। एकबार मंगाकर इसके अपूर्व गुणों की परीक्षा करें।

गर्भरक्षा के लिये

अपूर्व गुणकारी औषधियां।

गर्भ-विलास तैल

इस तैल के सेवन से बन्ध्या स्त्रियों का भी गर्भाशय दोष दूर होकर गर्भ रहता है और जिनका गर्भ गिर जाता है, गर्भस्राव होजाता है अथवा निर्बल दुर्बल सन्तान उत्पन्न होती है उन सबके लिये यह तैल अमृत की समान गुण करता है लाखोंबार परीक्षा कीगई है।

इसको प्रतिदिन कुछ दिनों तक सेवन करते रहने से निःसन्देह इसके अपूर्व गुणों का पता लगता है और इसके सेवन करनेवाली स्त्री अपूर्व फल पाकर हृष्ट पुष्ट और सुन्दर सन्तान प्राप्त करती है।

ऐसा गुण इस तैल का वैद्यकशास्त्र बतलाता है यदि वैद्यकशास्त्र में लिखे अनुसार इसके गुण लिखे जावें तो एक पुस्तक बन जावेगी। परीक्षा कर इसके अपूर्व गुणों से हज़ारों बहिनों ने अपूर्व फल पाया है मूल्य एक शीशी का २) दो रुपया है।

गर्भ-पोषक।

गर्भरक्षा की अपूर्व औषधि।

लीजिये सैकड़ों बार परीक्षा कर गर्भरक्षा की यह अव्यर्थ औषधि इस विषय के दुःखों से दुःखी बहिनों के उपकार के लिये तय्यार कीगई है।

हमारे पास सैकड़ों बहिनों के पत्र प्रतिदिन ऐसे आया करते हैं कि जो इस विषय में वर्षों से दुःख उठा रही हैं जिनके गर्भ रहकर पूर्ण नहीं होता अर्थात् गर्भस्राव या गर्भपात होजाता है, जिनके सन्तान होकर शीघ्रही मर जाती हैं, जिनके सन्तान होकर सदैव रोगी, निर्बल और दुर्बल रहती हैं।

जिनके गर्भ गिरने का हर समय भय बना रहता है, जिनके थोड़ी ही असावधानी से गर्भपात होजाता है उन सब के लिये "गर्भपोषक" औषधि अमृत की समान गुणकारी है।

जब यह निश्चय होजावे कि गर्भ रहा तब इस औषधि का सेवन करना आरम्भ कर देवे इसके सेवन से निःसन्देह गर्भपात और गर्भस्राव का भय जाता रहैगा और हृष्ट पुष्ट तथा निरोग, सुन्दर सन्तान उत्पन्न होगी।

जिन स्त्रियों को गर्भ रहने पर विशेष कष्ट और अनेक बाधायें होती हैं, जो गर्भवती होने पर निर्बल और अधिक दुर्बल होजाती हैं उनके लिये भी यह औषधि अत्यन्त उपयोगी है, गर्भवती को हृष्ट पुष्ट रखकर बलवान् तेजवान् और उत्तम सन्तान उत्पन्न करती है दाम एक डिब्बी का २) दो रुपया है।

गर्भिणी स्वास्थ्य-रक्षक।

गर्भिणी स्त्री के लिये अपूर्व औषधि

यह अपूर्व औषधि वैद्यकशास्त्र का मथन कर तैयार कीगई है, इसके सेवन से गर्भिणी स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहता है, गर्भावस्था में जिन स्त्रियों के गर्भ गिरजाते हैं या सन्तान निर्बल दुर्बल तथा रोगी रहती है अथवा इस प्रकार की कोई भी शिकायत हो, गर्भिणी स्त्री को किसी प्रकार की शिकायत हो तो हमारे यहां से नीचे लिखी औषधियां मँगाकर सेवन करें। सब शिकायतें दूर होंगी गर्भिणी स्त्रियों को अनेक प्रकार के रोग आ घेरते हैं अतएव गर्भिणी के रोगी होने से गर्भ भी निर्बल दुर्बल होजाता है। बालक होने के समय माता और बालक को बड़ा कष्ट होता है दोनों का प्राण संकट में होजाता है गर्भावस्था के समय की निर्बलता बाद को बड़ा दुःख देती है। बालक भी सदैव रोगी रहता है और माता को भी अनेक रोग घेरे रहते हैं।

जिस समय मालूम हो कि गर्भ रहगया हमारी अपूर्व औषधि "गर्भिणी स्वास्थ्य-रक्षक" को मँगाकर सेवन कराइये गर्भिणी और गर्भ दोनों को अमृत की समान गुण करती है। गर्भिणी स्त्री निरोग और हृष्ट पुष्ट रहेगी और बालक भी आरोग्य तथा हृष्ट पुष्ट होगा। मूल्य एक डिब्बी का २) दो रुपया है।

बालपोषक घुट्टी

बहुत छोटे बालकों के लिये अमृत की समान गुण करनेवाली औषधि।

हमारे पास छोटे बालकों के लिये उनके माता पिताओं के पचासों पत्र प्रतिदिन ऐसी औषधि के लिये आया करते हैं इसलिये अब हमने बहुत छोटे बालकों के लिये वैद्यकशास्त्र का मथनकर बड़े परिश्रम से तैयार कर इस औषधि की परीक्षा कई वर्ष तक करके और

हजारों बालकों को इस औषधि से फायदा पहुंचा कर अब बिक्री के लिये तैयार की है सब बहिनों को जिनको जरूरत हो मँगाकर हर समय घर में रखना तथा छोटे बालकों को सेवन कराना चाहिये। मूल्य एक डिब्बी का ।।=) दस आना है यह बहुत छोटे बच्चों के लिये है।

बालपोषक चूर्ण।

हजारों बार परीक्षा की हुई।

बालकों के लिये अमूल्य औषधि।

इस एकही औषधि से बालकों के अनेक रोग शीघ्रही दूर हो बालक हृष्ट पुष्ट और निरोग होजाता है।

सब प्रकार की खांसी श्वास, सब प्रकार के ज्वर शीघ्र दूर होते हैं। दस्तों का आना, जी मिचलाना, कै होना, बार बार दूध फेंकना, हरे पीले दस्त आना, फटा फटा दस्त होना, तालू का बैठ जाना, पेट का फूलना, पेट की पीड़ा, शूल, पखाने में चुन्ने होना इत्यादि सभी रोग थोड़े ही दिन सेवन कराने से दूर होते हैं। बच्चों को कोई भी रोग हो इस औषधि को सेवन कराइये शीघ्र ही रोग दूर हो आपका बालक हृष्ट पुष्ट और निरोग रहेगा।

छोटे बालकों को इस औषधि का सेवन कराते रहने से कोई रोग नहीं होता और दाँत निकलने में कुछ भी कष्ट नहीं होता दाम एक डिब्बी का १।) एक रुपया चार आना है।

पताः—श्रीमती यशोदादेवी स्त्री-औषधालय,

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज-इलाहाबाद।

फुटकर औषधियां ।

१-प्रसूतनाशक औषधियां—प्रसूत रोग की सब शिकायतें शीघ्रही दूर होती हैं पूरा हाल आने पर औषधियां रोग के अनुसार भेजी जाती हैं ।

२-योनिरोग नाशक पोटली—यह अमूल्य औषधि योनि की खुजली को दूर करती है मूल्य १।) सवा रु० डिब्बी

३-योनिशोधक बटी-योनि की पीड़ा, जलन, छाला, फुंसियां इससे दूर होती हैं मूल्य १) रु०

४-योनिरोग नाशक तैल-इस तैल से योनि के अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं मूल्य एक शीशी का २) रु०

५-बवासीर नाशक—खूनी बादी दोनों प्रकार की बवासीर दूर होती है मूल्य दोनों प्रकार की औषधि का २) दो दो रुपया

६-गर्भदाता-स्त्री के गर्भाशय दोष के कारण यदि सन्तान न होती हो तो इसके सेवन से गर्भाशय दोष दूर होगा मूल्य ५) रु०

७-शतावरी तैल-बच्चेदानी में सूजन, टेढ़ापन इत्यादि कुछ भी शिकायतें हों शरीर में कहीं भी पीड़ा हो इसके सेवन से दूर होती है स्त्री का रजक्षीणता से निर्बलता दुर्बलता आगई हो, कमज़ोरी हो तो इसके सेवन से दूर होती है मूल्य एक शीशी २) रु०

८-केशरंजन मसाला-इससे शिर धोने से बालों की सब शिकायतें दूर होती हैं दाम एक डिब्बी ।।।) बारह आने

९-सौन्दर्य-सुधा-मुंह की झाईं श्यामता इत्यादि दूर होकर चेहरे में सुन्दरता आजाती है दाम २) रु०

१०-सुगन्धित दन्तमंजन-दांतों की सब प्रकार की शिकायत दूर हो पुष्ट होते हैं १ डिब्बी ।=) छै आना.

११-नेत्रामृत सुरमा-इसके सेवन से नेत्रों के अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं दाम एक शीशी १।) रु०

१२-आरोग्यरक्षक महा-सुगन्धित तैल-इसके सेवन से शिर के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं शिर की पीड़ा, कमज़ोरी, आंखों की जलन शीघ्र दूर होती है दाम १) रु० शीशी

१३-आंवले का तैल-कुसमय बालों का पकना बन्द होता है, आंखों की ललाई, जलन, दिमाग़ की खुश्की, नाक में चेली पड़ना, खुश्की रहना, शिर का चक्कर इत्यादि सब रोग दूर होते हैं। दाम १) एक रुपया शीशी

१४-केशवर्द्धक तैल-बालों को बढ़ाता है, मजबूत और सुन्दर तथा कोमल रखता है दाम ।।।) बारह आना शीशी

१५-योनिकन्द नाशक-इस औषधि के सेवन से योनि के भीतर की गांठ जिसे योनिकन्द कहते हैं दूर होती है दाम ३) रु०

१६-गर्भविलास तैल-गर्भ की पीड़ा को दूर करता है। मूल्य २) दो रुपया शीशी

१७-गर्भिणी स्वास्थ्य रक्षक-गर्भिणी स्त्री के लिये अत्यन्त लाभदायक है मूल्य एक डिब्बी का २) रु०

१८-गर्भपोषक-गिरते हुए गर्भ को रोकनेवाली अमूल्य औषधि है मूल्य एक डिब्बी का २) रुपया

सौन्दर्य-भंडार

केशरञ्जन मसाला

स्त्रियों के लिये अमूल्य वस्तु है।

बाल कोमल, काले, मज़बूत करने और बढ़ाने के लिये अनेक औषधियों से बनाया गया सिर धोने का केशरञ्जन अपूर्व मसाला।

हमारे पास महीने में हज़ारों चिट्ठियां बड़ी बड़ी धनी मानी रानी महारानी और सर्व साधारण स्त्रियो की आया करती हैं कि जिनके सिर के बाल कुसमय में ही पकने लगे हैं (सफेद होरहे हैं) तथा निर्बलता के कारण गिर रहे हैं, टूट रहे हैं और छोटे होगये हैं जिसके कारण उनकी सुन्दरता और जवानी में तथा शृंगार में बड़ी बाधा पड़रही है क्योंकि स्त्री-शरीर की शोभा सिर के बालों से ही है। कुछ क्वांरी लड़कियां बड़े २ धनवानों की और राज़-कुमारियां मेरे पास आईं जिनके सिर के बाल सफेद होरहे हैं उनका अभी विवाह तक नहीं हुआ है। उन्हें अपने बालों को देखकर बड़ी लज्जा मालूम होती है उनके माता पिता ने भी मुझसे पत्रद्वारा तथा माताओं ने ज़बानी आकर कहा कि कुमारियों के लिये यह बड़े लज्जा की बात है। इसलिये मैंने वैद्यकशास्त्र का मथन कर यह चूर्ण "केशरंजन मसाला" बड़े परिश्रम से तैयार किया है इससे प्रतिदिन, दूसरे चौथे दिन अथवा आठवें दिन सिर धोते रहने से कुसमय में बालों के पकने का भय नहीं रहता बल्कि बुढ़ापे में भी बाल न पकेंगे और सफेद बाल काले होने लगेंगे।

बालों का पकना, झड़ना, टूटना बन्द होगा और बालों की जड़ इतनी मज़बूत होजावेंगी कि कभी उखड़ेंगे नहीं।

इससे बाल धोने से बाल बड़े ही कोमल, अत्यन्त चिकने और चमकीले होजाते हैं और बढ़ते हैं, सिर ठण्डा और तर रहता है, बाल काले, कोमल, चिकने, चमकीले होजाते हैं इससे एकदिन सिर धोने से इसकी सुगन्धि सिर से कई दिन तक दूर नहीं होती अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है एकबार मंगाकर इससे सिर धोकर देखिये फिर आपही इसकी तारीफ करेंगी। मूल्य एक डिब्बी का ॥।) जिसमें कई महीनों के सिर धोने के लिये औषधि (मसाला) है दो डिब्बी एक साथ लेने से १।) सवा रु०, छै डिब्बी एक साथ लेने से ३) तीन रुपया में भेजी जाती हैं।

लम्बे बाल

अनेक प्रकार की अत्यन्त उपयोगी जड़ी बूटी (देशी औषधियों) से तैयार किया गया श्रीमती यशोदादेवी का बनाया हुआ:—

स्त्रियों के मुंहासे, चेचक के दाग, श्यामता, झाँई आदि को दूर कर सुन्दरता बढ़ाने के लिये

लीजिये तैयार होगया वैद्यकशास्त्र से खोजकर बड़े परिश्रम से निकाला हुआ अनेक औषधियों से तैयार किया गया औषधियों का सार अमृत की समान गुण करनेवाला "सौन्दर्य-सुधा" इसको प्रतिदिन मुंह पर लगाते रहने से स्त्रियों के जवानी के मुहांसे, झाँई, चेहरे की श्यामता और साधारण चेचक के दाग दूर होते हैं, मुरझाया हुआ सा रूखा चेहरा इसके सेवन से कान्तियुक्त होजाता है चेहरे पर एक अपूर्व सौन्दर्य की छटा मालूम होने लगती है। कुछ अधिक दिन सेवन करते रहने से साधारण चेचक के दाग भी दूर होजाते हैं।

मुहांसे और झाँई तो थोड़े ही में दूर होकर मुख सुन्दर साफ़ और चमकीला होजाता है। मुख की श्यामलता (कालापन) तो दो ही बारबार लगाने से मुख साफ़ मालूम होने लगता है । अधिक प्रशंसा न कर इतना ही कहना है कि आजकल "चन्द्रप्रभा खूबसूरती बढ़ाने का पाउडर चन्द्रमुखी" आदि नामों से सैकड़ों विज्ञापन छप रहे हैं परन्तु वह है क्या कुछ भी नहीं विलायती घृणित वस्तुओं आदि से बनी हुई एक औषधि जिससे कुछ भी फायदा नहीं होता ऐसे विज्ञापनों से ठगी गई हज़ारों बहिनों के पत्र मेरे पास आते हैं उन्हीं के आग्रह से यह अमूल्य औषधि तैयार कीगई है और हज़ारों बहिनों के द्वारा इसकी परीक्षा कर अब अधिक तादाद में बिक्री के लिये तैयार कीगई है एकबार मँगाकर परीक्षा करदेखें । मूल्य एक शीशी का २) रु० है, दो शीशी एकसाथ मंगाने से ३) रु० में दीजाती हैं और ३ शीशी एकसाथ लेने से ४) रु० में भेजी जाती हैं।

वैद्यकशास्त्र में ऋषियों का बताया हुआ

आरोग्य-रक्षक

महा सुगन्धित तैल

१८ वर्ष तक परीक्षा किया गया

वैद्यकशास्त्र के अनुसार अत्यन्त उपयोगी बहुमूल्य, शरीर को सदैव निरोग रखनेवाली नाना प्रकार की औषधियों से बड़े परिश्रम और खर्च से बड़ी खोज के साथ वैद्यकशास्त्र का मथनकर तैयार किया हुआ—हज़ारों बार परीक्षा किया गया:—

श्रीमती यशोदादेवी सम्पादिका

स्त्रीधर्म-शिक्षक, स्त्री-चिकित्सक प्रयाग का बनाया हुआ आरोग्य-रक्षक

महा-सुगन्धित तैल।

इस तैल में आप अपनी इच्छानुसार गुण पावेंगे, वैद्यकशास्त्र में इसके गुणों का वर्णन जिस प्रकार है नीचे पढ़ देखिये।

इस तैल में अत्यन्त उपयोगी विचित्र गुण दिखलाने वाली इतनी अधिक औषधियां पड़ी हैं कि इसके सेवन से निःसन्देह आरोग्यता प्राप्त होती है।

बालों को चमकीला और रेशम के लच्छे जैसा मुलायम करता है इसके सेवन से बाल बढ़ते हैं और बालों की जड़ मज़बूत होती हैं।

शिर की सब प्रकार की पीड़ा को शीघ्र ही दूर कर शिर का भारीपन, खुश्की, खाज, फुयास (मैल), बालों का गिरना और पकना

दूर करता है महासुगन्धित तैल दिमागी और शारीरिक परिश्रम करनेवालों का सच्चा हितैषी है क्योंकि काम करने में उत्साह बढ़ाने वाला, बुद्धिवर्द्धक और स्मरण-शक्ति को बढ़ाकर शिर को ठण्ढा, हलका और तर रखता है।

लगाते ही चित्त में प्रसन्नता और दिमाग़ को पुष्टता तथा आंखों में रोशनी और तरावट आती है।

इस तैल की हम अधिक प्रशंसा न कर केवल इतना ही कहेंगी कि इससे बढ़िया अत्यन्त उपयोगी और सुगन्धित दूसरा कोई तैल न होगा इसकी सुगन्धि एकदिन लगाने से एक सप्ताह से भी अधिक रहती है इसके गुणों को वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि:—

शुभगो दर्शनीयश्च, गच्छेच्च प्रमदां शतम् ।
बंध्यापि लभते गर्भं षण्ढोऽपि पुरुषायते ॥
अपुत्रा पुत्रमाप्नोति, जीवेच्च शारदांशतम् ।

अर्थ यह है कि:—इस **महासुगन्धित तैल** को समस्त शरीर में मालिस करने से सत्तर वर्ष का बुड्ढा भी युवा और सुन्दर होजाता है, बन्ध्या स्त्रियों के गर्भ रहता है, शरीर की सुस्ती दूर होकर एक नया उत्साह प्राप्त होता है और आयु सौ वर्ष की होती है। यह ऋषियों का कहना है।

सारांश यह है कि इस तैल में बीसों औषधियां ऐसी उपयोगी पड़ी हैं कि जो मनुष्य को सदैव निरोग रखनेवाली हैं। इस तैल में पड़नेवाली सब औषधियों के गुण लिखे जावें तो एक पुस्तक बन जावेगी।

आरोग्य-रक्षक महासुगन्धित तैल को

एकबार मंगाकर देखिये तब आपको इसके अपूर्व गुणों का पता और वैद्यकशास्त्र की देशी औषधियों का विचित्र चमत्कार का ज्ञान होगा क्योंकि अभीतक आप ऊपरी दिखावट के नाममात्र के विलायती सुगन्धि एसेन्स पड़े हुए वही दुर्गन्धि निकाले हुए मिट्टी के तैलों का व्यवहार कर रहे हैं। एकबार हमारे इस शास्त्रोक्त विधि से बड़े परिश्रम से तैयार किये हुए तैल के अपूर्व गुणों को भी देखिये।

बालक से लेकर वृद्धों तक के लिये अत्यन्त लाभदायक है एक ही सप्ताह लगाने से शरीर में एक अपूर्व शक्ति उत्पन्न होती है एक बार सेवन कर फिर आप इसे कभी न भूलेंगे।

महासुगन्धित तैल

खासकर स्त्रियों के ही लिये तैयार किया है जिन्हें प्रतिदिन तैल लगाने की सामर्थ्य परमात्मा ने दी है इस बहुमूल्य तैल का मूल्य जितना अधिक रक्खा जावै थोड़ा है परन्तु हमने बड़े परिश्रम और बहुमूल्य समय लगाकर बड़ी खोज से बनाया है इसका कुछ विचार न कर केवल नाममात्र का मूल्य रक्खा है बड़ी शीशी का १॥) रुपया, छोटी शीशी का १) रुपया है, एकसाथ ३ बड़ी शीशी लेने से ४) रुपया है और छोटी ३ शीशी २) रुपया में भेजी जाती हैं।

एकबार मंगाकर परीक्षा कर देखें। फिर इसके बनाने की विधि हमसे पूंछलें।

सुगन्धित दंतमंजन।

दांतों के सब प्रकार के रोगों के लिये विचित्र गुणकारी मंजन है। इसको प्रतिदिन स्नान करते समय दांतों में मलते रहने से दांतों के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं दांतों और डाढ़ों को मज़बूत रखकर बुढ़ापे तक बनाये रखता है, दांत साफ रखकर हर प्रकार की पीड़ा को दूर करता है। इसके सेवन से दांतों में किसी प्रकार का रोग होने का भय नहीं रहता। मूल्य एक डिब्बी का ।=) है। जिसमें कई मास के सेवन के लिये है।

श्रीमती यशोदादेवी का

स्त्री-औषधालय प्रयाग

स्त्रीरोगों का घर बैठे शर्तिया इलाज

स्त्रीरोग-प्रश्नावली फार्म नं० १

जिन बहिनों व माताओं को किसी प्रकार का रोग हो और वे लज्जावश अपने घरवालों से भी कहने में संकोच करती हों जैसा कि प्राय: देखा जाता है तो हमारे इन प्रश्नों का उत्तर ठीक ठीक अपने हाथ से लिखकर या किसी पढ़ी लिखी अन्य बहिन अथवा अपने पति से लिखाकर हमारे पास भेजदें। उनके रोग घर बैठे ही दूर कर दिये जावेंगे।

आशा है हमारी बहिनें व मातायें अपनी अज्ञानता अथवा अपने पति की अज्ञानता तथा आहार विहार के अनियमों के कारण अथवा अन्य किसी भी कारण से किसी रोग में फंसी होंगी उनका इससे बड़ा उपकार होगा। हमारे इन प्रश्नों के उत्तर देने में किसी प्रकार का संकोच व लज्जा मत करो खुलासा हाल लिखो रोगों को छिपाकर रखना जीवन से हाथ धो बैठना है।

इधर देखिये।

इस प्रकार की चिट्ठियां गुप्त रक्खी जाती हैं मेरे सिवाय दूसरा कोई चिट्ठी नहीं देख सकता इसलिये संकोच न करके अपने रोग का पूरा हाल लिखो। यदि तुम्हारे पति से तुम्हें रोग मिला है—पति को कौन रोग हुआ था या है उसको खुलासा लिखो कोई भी बात रोग सम्बन्धी चाहे वह कितनी ही संकोच की हो लिखदो पूरा हाल मालूम होने से ही रोग को दूर करने में हमारा उद्योग काम देगा। ऐसी चिट्ठियां बन्द लिफ़ाफ़ा या रजिस्टरी से भेजो।

रोगी बहिनों से प्रश्न

(१) आपकी अवस्था क्या है ?

(२) आपके शरीर का रंग कैसा है ?

(३) आपकी जाति क्या है ?

(४) शरीर एकहरा है या दोहरा, मोटा या दुबला ?

(५) आपका विवाह किस अवस्था में हुआ था ?

(६) विवाह के समय पति की अवस्था क्या थी ?

(७) पति की तन्दुरुस्ती कैसी है शरीर कैसा है ?

(८) आपका गौना विवाह होने के साथ ही हुआ था या कितने दिन बाद ?

(९) आपको कितनी अवस्था में मासिकधर्म हुआ।

(१०) इस समय आपके मासिकधर्म की क्या दशा है ठीक समय पर होता है या घट बढ़ कर होता है। कमी बढ़ती के दिन बताओ ?

(११) ठीक लिखिये मासिकधर्म के खून की रंगत कैसी है धोने से खून के दाग कपड़े पर बने रहते हैं या साफ होजाते हैं ?

(१२) जब मासिकधर्म आरम्भ होता है तब दो एक दिन पहिले या उसी दिन से पेट पेंडू या कमर में पीड़ा तो नहीं होती यदि होती है तो कितने दिन तक ?

(१३) मासिकधर्म होने के दिनों में शरीर में ज्वर की हरारत, सुस्ती और किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं होती।

(१४) मासिकधर्म का खून कुछ काला काला गांठदार तो नहीं आता ?

(१५) मासिक के दिनों में शरीर में या गांठों में पीड़ा (हड़फूटन) तो नहीं मालूम होती और बेचैनी तो नहीं रहती ?

(१६) कै दिन तक ऋतु का रक्त जारी रहता है अन्दाज़ से कितना खून जाता होगा जिस समय आपको मासिकधर्म की कुछ भी शिकायत न थी उन दिनों से इन दिनों अन्दाज़ से खून कम जाता है या अधिक जाता है ?

(१७) जब मासिकधर्म बन्द होजाता है उसके बाद योनि से सफेद पानी सा लासेदार या गांठ सी तो कुछ नहीं निकलती। यदि निकलती हैं तो दिन में कै बार और कितने दिनों तक रहता है ?

(१८) यह रोग आपको कबसे हुआ और इसके दूर करने का आपने क्या उपाय किया? कौन कौन सी औषधियां खाईं और उनसे क्या फायदा हुआ? ठीक लिखिये बीमारी कितने दिन की है?

(१९) आपके कितने बालक हुए? बीमारी के पहिले और बीमारी की दशा में कै हुए? यदि कोई बालक नहीं है तो यह बतलाइये कि कभी गर्भ धारण हुआ अथवा बालक होकर मरगये या अब कै हैं?

(२०) सन्तान होने के बाद कितने दिनों तक मासिकधर्म होना बन्द रहा और फिर कितने दिन बाद गर्भ-धारण हुआ?

(२१) प्रसंग होने के बाद गर्भाशय, कमर या पेंडू अथवा नाभि में पीड़ा तो नहीं होती या सम्भोग के समय कुछ तकलीफ तो नहीं होती? प्रसंग के बाद सुस्ती, कमज़ोरी, भूख न लगना या खाने से अरुचि तो नहीं होती?

(२२) कभी कभी पेंडू में पीड़ा तो नहीं होती, पेशाब में जलन तो नहीं मालूम होती, नाभि के नीचे कोई वस्तु भरी हुई या अटकी हुई सी तो नहीं मालूम होती, पेशाब कैसा होता है?

(२३) योनि में अन्य किसी प्रकार की शिकायत तो नहीं है अर्थात् खाज, जलन, पीड़ा, शूल आदि तो नहीं होती?

(२४) शिर में पीड़ा, चक्कर का आना, दिल में धड़कन, आंखों में जलन तो नहीं मालूम होती?

(२५) भूख तो ठीक लगती है, पेट में पीड़ा या गुड़गुड़ होना, कब्ज़ रहना या कभी २ दस्त आने लगना, दस्तों में छोटे छोटे कीड़े या आंव गिरने की शिकायत तो नहीं है?

(२६) मासिकधर्म के रक्त जाने के सिवाय कभी कभी योनि से सफेद माड़ की समान या कुछ लाली लिये मांस के धोवन की समान अथवा अन्य किसी प्रकार का कुछ निकलता तो नहीं रहता?

(२७) कभी आपके पति को सुज़ाक, गर्मी, प्रमेह आदि किसी प्रकार का रोग तो नहीं हुआ था अथवा इस समय तो कोई रोग नहीं है। पति से पूँछकर ठीक ठीक लिखो?

(२८) पैरों की पिंडलियों में पीड़ा फाटन या कुछ देर बैठे रहने पर कमर में पीड़ा तो नहीं होने लगती या चलने फिरने पर पीड़ा हो?

(२९) पेट की तो कुछ शिकायत नहीं है, भूख तो खुलासा लगती है या नहीं, पाखाना साफ होता है या नहीं, थोड़ा खालेने से या पानी ही पीलेने से पेट में बोझा सा आलस्य तो नहीं मालूम होता अथवा पेट बिना खाये ही फूला रहै सब ठीक ठीक लिखो?

(३०) भोजन करने के बाद बारह बजे के उपरान्त शरीर में सुस्ती ज्वर की सी हरारत या अन्य किसी प्रकार की शिकायत तो नहीं होजाती? किसी समय खांसी तो नहीं आती?

(३१) हाथ पैरों के तलुवों में जलन और किसी समय पसीना तो नहीं आता, कलेजे में धड़कन और किसी समय घबड़ाहट सी तो नहीं मालूम होती?

(३२) कभी कभी जाड़ा देकर या साधारण बुखार तो नहीं आता या पहिले कभी आकर छूट गया हो तब से मुँह का ज़ायका ख़राब या कुछ हरारत सी तो नहीं रहती?

(३३) छाती या पसलियों में पीड़ा तो नहीं होती। कभी खांसी में कफ के साथ मिला हुआ खून तो नहीं आता?

(३४) शरीर दुबला, पीला या अधिक कमज़ोर तो नहीं है?

(३५) नाखूनों की रंगत कैसी है लाल पीली या सफेद जैसी हो ठीक लिखो?

(३६) हाथ पैर अथवा शरीर के किसी अङ्ग में सूजन तो नहीं है यदि है तो कबसे?

(३७) प्यास अधिक तो नहीं लगती? हर समय गला सूखा सा तो नहीं रहता, पेशाब की रंगत कैसी है?

(३८) पेशाब अधिक तो नहीं होता और ज्यादह तादाद में तो नहीं होता?

(३९) शरीर में ऐसी सुस्ती तो नहीं है कि हर समय लेटी ही रहने की इच्छा हो?

(४०) खाने पीने की सब वस्तुओं में रुचि रहती है या नहीं भूख खुलकर लगती है या नहीं?

(४१) शरीर में झुनझुनी तो नहीं चढ़जाया करती यदि अधिक देरी तक हाथ या पैर रक्खा रहै तो सुन्न होजाय ऐसा तो नहीं होता ?

(४२) शरीर का रंग पहिले से कुछ काला तो नहीं है ?

(४३) हाथ पैर में चोट या ठोकर लगजाने से एकदम झनझनाहट तो नहीं होती ?

(४४) पेट को अंगुलियों से दबाकर देखो बायें या दाहिने या कोख में कुछ कड़ा सा तो नहीं मालूम होता, दबाने से पीड़ा तो नहीं होती।

(४५) कभी कभी पेट में गोला सा उठता हुआ तो नहीं मालूम होता ?

(४६) नाभी के नीचे कुछ कड़ा उठा सा तो नहीं मालूम होता नाभी ऊपर उठी सी तो नहीं है।

(४७) यदि तुम्हारे पति को कुछ गुप्तरोग कभी हुआ हो तो उसका खुलासा हाल लिखो ?

(४८) यदि आपके पति को किसी समय रोग हुआ हो तो रोग का नाम और यह कि किस प्रकार की औषधि से आराम हुआ, लिखो ?

(४९) आपकी योनि में कभी फुन्सियां या छाले तो नहीं पड़े थे जो हुआ हो लिखो ?

(५०) इसके सिवाय और जो कुछ भी शिकायत हो सब ठीक ठीक खुलासा लिखो कोई बात छिपाओ नहीं। चिट्ठी बन्द लिफ़ाफे में या रजिस्टरी से भेजो।

स्त्री पुरुष कोई भी जो अपने रोग का हाल लिख नम्बर डालकर सब अलग अलग साफ़ साफ़ लिखें नम्बर एक के प्रश्न के उत्तर में १ नम्बर डालकर उत्तर लिखें इसी प्रकार अपनी सब बातों में नम्बर डालदें जिससे मुझे फिर से पूँछना न पड़ैगा।

मेरी सब बातों का नम्बरवार उत्तर आना चाहिये। अपना पता साफ़ साफ़ नागरी (हिन्दी) में लिखें।

आवश्यक सूचना।

जो बहिनें मेरे पास नहीं आसकतीं वे ऊपर लिखे सब प्रश्नों का उत्तर लिख भेजें उनको घर बैठे ही फ़ायदा होगा। जो स्त्रियां मेरे पास नहीं आसकतीं उन्हीं के लिये मैंने वैद्यकशास्त्र का मथनकर यह प्रश्न स्त्रियों के सब प्रकार के रोगों की परीक्षा के लिये बनाये हैं।

पत्र व्यवहार का पता:-

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज-इलाहाबाद

तार भेजने का पता:-

"देवी" इलाहाबाद।

औषधालय में आने का पता:-

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय

मुहल्ला कर्नलगंज भारद्वाज आश्रम के पास

कर्नलगंज-इलाहाबाद

पुरुष-रोगों का ठेका

श्रीमती यशोदादेवी के स्त्री-औषधालय का पुरुष रोगों की परीक्षा करने का फ़ार्म

पुरुष–रोग प्रश्नावली फ़ार्म नं० २

आवश्यक सूचना।

जिस पुरुष को वीर्य-सम्बन्धी कोई भी रोग हो अथवा सन्तान न होती हो या जिनकी स्त्रियों का गर्भ गिर जाता हो, कम आयु में ही बालक मर जाते हों या गर्मी, सुज़ाक, प्रमेह, सुस्ती, नसों की कमज़ोरी, स्वप्नदोष, शीघ्रपात इत्यादि कुछ भी शिकायत हो। वे हमारे इन प्रश्नों का उत्तर लिखभेजें।

जिन स्त्रियो के पति कुछ भी रोग अथवा जिन स्त्रियों के पति के वीर्यदोष के कारण सन्तान न होती हो अथवा गर्भ रहकर गिर जाता हो या निर्बल दुर्बल सन्तान होकर कम आयु में ही मर जाती हो अथवा रोगी रहती हो इस प्रकार की कोई भी शिकायत हो अथवा वीर्य की कुछ भी ख़राबी हो, वीर्य पतला पड़ गया हो, पेशाब के आगे या पीछे धातु गिरता हो, शीघ्रपात, शिथिलता (नसों की कमज़ोरी), किसी प्रकार की भी सुस्ती हो वे नीचे लिखे हुए प्रश्नों का ठीक २ उत्तर लिखकर भेजें उनके रोग दूर करने का सरल और उत्तम उपाय तथा औषधि बतलाई तथा भेजी जावेगी। हमारे पास रोगी बहिनों के जो संसार-सुख तथा सन्तान-सुख से दुःखी हैं हज़ारों पत्र में आया करते हैं जिनके पति अनेक रोगों में फंसे हैं जिनसे

पत्नी दोनों का जीवन व्यर्थ है पति के दोष से, पति के कुटेव से उन बेचारी निरपराध अबलाओं को जन्म भर सन्तान-सुख से वञ्चित रह कर रो रो कर जीवन व्यतीत करना पड़ता है बिना पूरा हाल जाने हम उन बहिनों को कुछ भी सम्मति नहीं देसकतीं न कुछ उपाय ही बता सकती हैं इस कारण उत्तर अपने पति से पूँछकर लिख भेजने से हम रोग दूर करने का सरल उपाय और औषधि बतलावेंगी। अथवा भेजदेंगी जिससे रोग अवश्य जाता रहैगा।

पुरुषों से प्रश्न।

(१) आपकी जाति क्या है ?

(२) अपनी अवस्था लिखिये ?

(३) आपका शरीर दुबला है या मोटा ?

(४) शरीर का रंग गोरा, काला या कैसा है ?

(५) यह जो बीमारी आपको है कबसे है ?

(६) इससे पहिले क्या बीमारी हुई थी ?

(७) आपके कभी गर्मी, सुज़ाक तो नहीं हुआ यदि हुआ तो कैसे और कितने दिन हुए, कितने दिन बीमारी रही ?

(८) पाखाना कै बार और कैसा होता है ?

(९) पेशाब की रंगत लिखिये, कितने दिन बीमारी रही ?

(१०) भोजन करने के पश्चात् दोपहर बाद शरीर में सुस्ती और हरारत तो नहीं मालूम होती ?

(११) आंखों में जलन सी और शिर भारी, शरीर में आलस तो नहीं मालूम होता कि लेटे रहने की इच्छा हो ?

(१२) हाथ पैर के तलवों में गर्मी की लहर सी तो नहीं मालूम होती ?

(१३) थोड़े ही परिश्रम से थकजाना और श्वास का फूलना आदि तकलीफ तो नहीं होती ?

(१४) भोजन ठीक ठीक पच जाता है, भूख खूब लगती है, भोजन करलेने के बाद शरीर में आलस्य तो नहीं मालूम होता ?

(१५) आपको खांसी तो नहीं आती, क्या जुखाम जल्दी जल्दी हुआ करता है। खांसी सूखी है या कफ़ गिरता है ?

(१६) आपकी धातु पतली तो नहीं है पेशाब करने के पहिले या पीछे धातु तो नहीं गिरता। स्वप्नदोष अर्थात् स्वप्न में धातु का गिरना या पाखाना फिरते समय धातु गिरना जो हो लिखें?

(१७) संभोग के समय शीघ्रपात, स्त्री का स्पर्श करते ही या स्मरण करते ही या गन्दी पुस्तकें पढ़ने से धातु बहने तो नहीं लगती जो जो बात हो सब साफ़ साफ़ लिखें?

(१८) पाखाना फिरने के लिये कुछ ज़ोर करने अर्थात् कांखने की तो ज़रूरत नहीं पड़ती यदि कांखते हैं तो पेशाब के मुक़ाम में कुछ सुरसुरी सी मालूम होकर कुछ चेपदार चिकनी वस्तु तो नहीं निकलती?

(१९) पहिले से अब दुबले तो नहीं हैं शरीर रूखा तो नहीं है?

(२०) बलदायक पदार्थ खाते हैं या कुछ खावें तो शरीर में खाना बल पहुंचाता है या नहीं?

(२१) आपको पेशाब करने समय जलन तो नहीं मालूम होती कभी पेशाब के साथ पीब तो नहीं आया, इन्द्री-उत्तेजना के समय पीड़ा तो नहीं होती?

(२२) पेशाब थोड़ा २ रुक रुक और तकलीफ़ से तो नहीं होता कभी पेशाब बन्द तो नहीं होगया था जो हो सब लिखें?

(२३) पेशाब के साथ कभी रक्त तो नहीं आया, कभी कोई दूसरी वस्तु सफेद लासेदार तो नहीं आती?

(२४) क्या आपकी इन्द्री में टेढ़ापन बायें या दाहिने ओर झुकी सी तो नहीं है, कमज़ोर तो नहीं होगई है?

(२५) नीचे जड़ में कुछ पतली और ऊपर का हिस्सा मोटा तो नहीं है।

(२६) सहवास करने की शक्ति कम तो नहीं होगई या बिलकुल जाती रही हो, दिल में इच्छा चाहे जितनी प्रबल हो परन्तु इन्द्री में सुस्ती ही बनी रहे?

(२७) वीर्य के शीघ्रपात की शिकायत आपको कबसे है क्या पहिले से अब इन्द्री कुछ छोटी भी होगई है?

(२८) पहिले कभी आप किसी प्रकार के कुटेव में तो नहीं पड़े यदि पड़े तो उसका पूरा पूरा हाल लिखें ?

(२९) पहिले जोकुछ भी आपने इस विषय में मूर्खता की है उसे अब छोड़ा है या नहीं ठीक ठीक बतलाइये यह आदत आपकी कितने दिन रही—किस अवस्था तक ?

(३०) जब आपको स्वप्नदोष होता है तो स्वप्न में आप क्या देखते हैं या बिना कुछ देखे ही वीर्य बहने लगता है। कितने दिन बाद स्वप्नदोष होता है ?

(३१) आपकी स्मरणशक्ति (याद्दाश्त) कैसी है, चलने से पैर तो नहीं थर्राते, कभी कभी आंखों के सामने अन्धकार सा तो नहीं मालूम होता, शरीर का रंग कुछ पीला तो नहीं पड़ गया है, हाथ पैरों में झुनझुनाहट तो नहीं चढ़ती, अधिक देरी तक हाथ पैर रक्खे रहें तो सुन्न तो नहीं पड़जाते ?

(३२) इन्द्री के अग्रभाग में कभी छाले, फुन्सी, किसी प्रकार के घाव तो नहीं हुए थे ?

(३३) आपको कभी प्रसंग की इच्छा होती है या नहीं यदि नहीं होती तो क्या बड़े उद्योग से इच्छा होती है इच्छा होने पर क्या शीघ्र ही इन्द्री में सुस्ती आजाती है ?

(३४) आपका विवाह और गौना किस अवस्था में हुआ, उस समय आपकी स्त्री की अवस्था क्या थी आपने प्रसंग का क्या नियम रक्खा था सब ठीक ठीक साफ़ साफ़ हाल लिखें ?

(३५) धूप में चलने या आंच के सामने बैठने से शरीर में चींटियों के चलने या काटने की सी तकलीफ़ तो नहीं मालूम होती ?

(३६) आपको पेशाब अधिक तो नहीं होता दिन रात में कै बार होता है ?

(३७) क्या कभी कभी आपके शिर में पीड़ा भी हुआ करती है शिर घूमना, चक्कर का आना और शिरदर्द से आंखों में ललाई तो नहीं आजाती ?

(३८) इन ऊपर लिखी बातों के अतिरिक्त और भी जोकुछ आपको शिकायत हो वह सब खुलासा पूरा हाल सहित लिख भेजिये ?

(३९) आपने इस बीमारी के लिये अभीतक किसका इलाज किया देशी, अंग्रेज़ी या यूनानी उन औषधियों से क्या फ़ायदा या नुक्सान हुआ?

(४०) अब इलाज छोड़े कितने दिन हुए यह बीमारी आपको कबसे है इसका पूरा पूरा हाल और कारण लिखिये तब आपके रोग दूर करने का पूरा उपाय और औषधि बतलाई तथा भेजी जावैगी जिससे आप अवश्य इस रोग से छुटकारा पावैंगे?

अपना पूरा पता साफ़ साफ़ लिखिये जिस बहिन का पति बीमार हो उस बहिन को खुद ही चिट्ठी लिखना या लिखवाना चाहिये कोई बात छिपावैं नहीं। सब प्रकार की चिट्ठियां गुप्त रक्खी जाती हैं मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं देखता।

पत्र इस पते से भेजिये —

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय,

पोष्ट बक्स नं० ४ कर्नलगंज-इलाहाबाद।

तार भेजने का पता:—

"देवी" इलाहाबाद।

औषधालय में आने का पता:—

यशोदादेवी का स्त्री-औषधालय

मुहल्ला कर्नलगंज चौराहे के पास

भारद्वाज आश्रम की तरफ़

कर्नलगंज-इलाहाबाद।

नहीं देती थी परन्तु अब औषधालय का काम इतना अधिक ब
गया है कि स्त्रियों से अधिक चिट्ठियां पुरुष-रोगियों की आती
क्योंकि हमारे स्त्री-औषधालय की आज १८ वर्ष से पुरुषों की औषधिय
का देश भर में प्रचार होरहा है जिन जिन स्त्रियों ने हमारी औषधिय
मँगाकर अपने पुरुषों को सेवन करा फायदा उठाया है उन्हीं के कह
से अन्य स्त्रियों ने भी मँगाकर परीक्षा की इसी प्रकार लाखों रोगी
पुरुषों ने हमारी औषधियों का सेवन कर अनेक रोगों से छुटकार
पाया इस प्रकार देश भर में हमारी पुरुष-रोगों की औषधियों की मां
होरही है पुरुषों के गुप्तरोगों-वीर्यविकार, प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपात
गर्मी, सुजाक और सुस्ती (शिथिलता) के कारण जो पुरुष अपन
जीवन रोगों से दुःखमय बिता रहे थे अर्थात् एक न एक रोग उन्हे
घेरे ही रहते थे उन्होंने हमारी औषधियों का सेवन कर सब रोगों से
छुटकारा पाया है पुरुष-रोगों की कुछ औधियां यह हैं:—

सब प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष

और वीर्य की निर्बलता के लिये।

वीर्यसुधारक अपूर्व औषधि

एक ही सप्ताह सेवन करने से अपूर्व गुण दिखलाती है चाहे जितना पुराना प्रमेह हो कुछ अधिक दिन सेवन करते रहने से रोग जड़ से जाता रहता है वीर्य-सुधारक से वास्तव में वीर्य का सुधार हो पुरुष हृष्ट पुष्ट होजाता है।

धातुक्षीण, पुराना वीर्यदोष अथवा प्रमेह और स्वप्नदोष के कारण जिनका तनक्षीण और मुखमलीन होरहा है आंखें कमजोर होगई हैं जवानी में ही बुढ़ापे का रङ्ग चढ़ गया है सब प्रकार से निर्बलता और सुस्ती के दास बन गये हैं, जिनकी स्त्रियां पति

दशा देखकर रो रो कर जीवन व्यतीत कर रही हैं उन्हें हमारी इस औषधि का अवश्य सेवन करना चाहिये। इसके सेवन से थोड़े ही दिनों में सब शिकायतें दूर हो शरीर में बल और चेहरे पर कान्ति आजाती है।

इसके सेवन से अबतक लाखों पुरुषों का पुराना प्रमेह जड़ से जाता रहा है यह वैद्यकशास्त्र के अनुसार अपूर्व गुणवाली देशी जड़ी बूटियों से तैयार किया गया है इतने गुण होने पर भी मूल्य एक डिब्बे का २) दो रुपया है।

वीर्य-संजीवनी (वीर्यवर्द्धक)

इसके सेवन से वीर्यक्षीणता के कारण शरीर से गई हुई शक्ति फिर से आजाती है यह औषधि सभी नसों में विलक्षणता लाकर शक्तिहीन पुरुष को भी हृष्ट पुष्ट बना देती है वीर्यक्षीणता, निर्बलता दुर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होजाना, पेशाब के आगे या पीछे धातु का गिरना, चूने के समान पेशाब के साथ आकर जमजाना, शीघ्रपात, वीर्य में से गर्भधारण शक्ति का नष्ट होजाना, सुस्ती, सब प्रकार की कमज़ोरी, स्मरणशक्ति का कम होजाना इससे शीघ्रही दूर होजाता है।

जो लोग कुसंगति में पड़कर बाल्यावस्था में हस्तक्रिया आदि और भी नियम-विरुद्ध अनेक कुकर्मों से निर्बलता (सुस्ती) आजाने के कारण सब प्रकार से शक्तिहीन बन बैठे हैं जिनकी जवान स्त्रियां सन्तानहीन और सांसारिक सुख भोगहीन हो रातदिन रो रो कर मौत के दिन गिन रही हैं। इसके थोड़े ही दिन सेवन करने से वीर्य सम्बन्धी कमज़ोरी, सब प्रकार की सुस्ती आदि की शिकायतें अवश्य दूर होती हैं किसी बड़ी बीमारी के कारण जिनका बल नष्ट होचुका है और वे सब प्रकार से निर्बल होगये हैं इसके सेवन से हृष्ट पुष्ट और बलवान् तेजवान् बनेंगे।

जो वीर्य की निर्बलता दुर्बलता और इन्द्री की शिथिलता के कारण अपनी प्यारी पत्नी के सामने पुरुषत्व प्रकाश न कर सकने के कारण लज्जा और शोक से मृतकतुल्य होरहे हैं और अपने को मृत्यु-वत् समझ बैठे हैं वे इस औषधि में अमृत की समान गुण पावेंगे और वीर्य बढ़कर गर्भ धारण शक्तिवाला वीर्य प्राप्त करेंगे जिन पुरुषों को

कोई भी रोग न हो वे भी इसका सेवन करें इसके सेवन से निःसन्देह शरीर में एक अपूर्व शक्ति उत्पन्न हाती है और मनुष्य हृष्ट पुष्ट तथा निरोग रहता है दाम एक डिब्बी का २॥) रु०, दो डिब्बी का ४) रु० है इसको ४० दिन सेवन करने से फायदा होता है यदि रोग पुराना न हुआ तो एकही डिब्बी से दूर होजाता है पुराने रोगियों को कुछ अधिक दिन सेवन करना चाहिये ४० दिन औषधि का सेवन कर हमें लिखें यदि फ़ायदा न हो तो दूसरी औषधियां मुफ़्त दीजावेंगी।

वृद्धता नाशक महौषधि।

वृद्ध स्त्री पुरुषों के लिये।

च्यवन-प्राशावलेह।

पुरुषों के लिये आयुर्वेद की यह सर्वोत्तम अमूल्य औषधि है।

इसकी अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है वैद्यकशास्त्र बतलाता है कि इसके सेवन से बुड्ढा पुरुष भी फिर से जवानी के आनन्द को प्राप्त करता है इसमें कोई सन्देह करने की बात नहीं है क्योंकि इसी औषधि के प्रताप से च्यवन ऋषि जो कई हज़ार वर्ष के वृद्ध थे जिनके शरीर में केवल हड्डियों का पिंजर ही बाकी रहगया था उन्हीं के लिये इस औषधि को अश्वनीकुमारों ने जंगल की जड़ी बूटी फूल पत्ती और फलों से बनाया था जिसके सेवन करने से कई हज़ार वर्ष के बुड्ढे च्यवन ऋषि थाड़े ही समय में फिर से युवावस्था को प्राप्त हुए।

यह वही अपूर्व औषधि है इसको सेवन करने से वास्तव में बुड्ढा पुरुष भी जवानी का आनन्द प्राप्त करता है मनुष्य की सामर्थ्य नहीं जो इसकी प्रशंसा करसके देखिये इसके लिये वैद्यक शास्त्र बतलाता है:—

वैद्यक का प्रसिद्ध प्राचीन ग्रन्थ भैषज्यरत्नावली पृष्ठ ३७४ देखिये श्लोक ४५, ४६, ४७, ४८ (च्यवनप्राशावलेह)

जिसका अर्थ यह है कि खांसी, श्वासरोग, क्षयरोग (तपेदिक), छाती के रोग, हृदय के रोग, वातरक्त, पिपासा, मूत्रदोष (पेशाब) के रोग, वीर्यदोष इन सब रोगों को नष्ट करदेता है। इसके प्रताप से बूढ़े हुए च्यवन ऋषि फिर से जवान होगये थे।

इसके सेवन से बुद्धि स्मृति (याददास्त), कान्ति, आरोग्य, आयु का अधिक होना, इन्द्रियों में अधिक बल आता है और स्त्री में अधिक सुख प्राप्त करता है, अग्नि की वृद्धि करता है, बल की प्राप्ति होती है, शरीर में एक अपूर्व शक्ति उत्पन्न करदेता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह औषधि यदि वैद्यकशास्त्र के अनुसार विधिपूर्वक तैयार कीजावे तो ऐसाही गुण रखती है परन्तु यह बड़े परिश्रम से तैयार कीजाती है. इसमें पड़नेवाली औषधियां बड़ी खोज से बड़े बड़े पहाड़ों, जङ्गलों में कठिनाई से मिलती हैं कुछ नहीं भी मिलतीं परन्तु जो नहीं मिलतीं उनकी जगह उतना ही गुण रखनेवाली दूसरी डाली जाती हैं वे भी कठिनाई से मिलती हैं किन्तु मिल जाती हैं।

इसके बनाने में बड़ा परिश्रम और कठिनाई होती है इस कारण लोग उस विधि से नहीं बनाते और न उन कठिनाइयों से मिलनेवाली औषधियों को ही डालते हैं किन्तु सरल विधि से सरलता से मिलने-वाली कुछ औषधियां डालकर बिक्री के लिये तैयार कर लेते हैं।

उनसे जितना फ़ायदा होना चाहिये नहीं होता तब रोगीलोग औषधि को दोष देते हैं।

हमने इस च्यवनप्राशावलेह को बड़ी खोजकर बड़े परिश्रम से अपने हाथों तैयार किया है और हज़ारों बार परीक्षा कर तब इसकी सूचना देने का साहस किया है। इस विषय में सैकड़ों प्रशंसापत्र आचुके हैं जो अलग पुस्तक रूप में प्रकाशित होकर सब ग्राहकों की सेवा में भेजे जावेंगे।

एकबार इसका सेवन कर परीक्षा कर देखिये। फिर हमसे इसके बनाने की विधि पूंछकर आपही बनाकर कुछ अधिक दिन सेवन कीजिये और इस अपूर्व औषधि को अपने मित्रों में प्रचार कीजिये यदि आपको बनाने में कठिनाई मालूम हो तो मेरे यहां से मंगाकर कुछ अधिक दिन सेवन कीजिये मूल्य १ डिब्बे का २॥) रु० और तीन डिब्बे एकसाथ मंगाने से ६) रु० में भेजे जाते हैं।

स्वास्थ्य-रक्षक चूर्ण।

इसके सेवन से सदैव स्वास्थ्य ठीक रहता है, प्रमेह रोग, शरीर की सूजन, विषमज्वर, कफ, पित्त, अरुचि, क़ब्ज़ रहना, भूख का कम होजाना, आंखों की कमज़ोरी, चक्कर आना, पेशाब में जलन होना और रक्तविकार थोड़े ही दिनों में दूर होकर बल और वीर्य की वृद्धि होती है मूल्य एक डिब्बी का ॥=) है।

उपदंश रोग नाशक औषधि।

गर्मीरोग की अपूर्व औषधि–इस रोग से ग्रसित पति पत्नियों के हमारे पास सैकड़ों पत्र आते हैं यह रोग बड़ा भयंकर है स्त्री पुरुष जिसके होजाता है आयुपर्यन्त दुःख देता है और यदि इसकी औषधि ठीक ठीक न की तो मनुष्य अन्धा, काना, बहिरा, नाक का बैठ जाना और कोढ़ आदि-भयंकर रोग उत्पन्न होकर मनुष्य बड़ी दुर्दशा से मृत्यु को पाता है, सन्तान नहीं होती यदि हुई भी तो यही दशा सन्तान की भी होती है इसलिये स्त्री पुरुष दोनों को चाहिये कि इस रोग को जड़ से खोदेने का उपाय करें। हमारी इस औषधि से नया पुराना सब प्रकार का गर्मीरोग जड़ से जाता रहता है दाम एक डिब्बी का २) दो रु० है।

सुज़ाक-नाशक औषधि।

हमारे पास इस रोग से ग्रसित स्त्री पुरुषों के पचासों पत्र प्रतिदिन आया करते हैं नया पुराना कठिन से कठिन सुज़ाक को भी यह औषधि दूर कर देती है सुज़ाक ऐसा भयंकर रोग है जिसकी जड़ कठिनाई से जाती है परन्तु इस औषधि का लगातार पथ्य से रहकर ४० दिन सेवन करते रहने से रोग जड़ से जाता रहता है एक डिब्बी मँगाकर परीक्षा कर देखें दाम एक डिब्बे का २) रु० है, ४० दिन सेवन करने से रोग दूर न हो तो दूसरी औषधि मुफ़्त भेजी जाती है।

किसी पुरुष के नया या पुराना कोई भी गुप्तरोग हो वे अपनी स्त्री से पूरा हाल लिखा

कर हमारे पास भेजैं हम शर्त्तिया उनके रोग को दूर करदेने की औषधि भेजदेंगी रोग को अवश्य फ़ायदा होगा। यदि फ़ायदा न मालूम हो तो जबतक फ़ायदा न होगा दूसरी औषधियां मुफ़ भेजी जावैंगी। जो औषधि फ़ायदा करैगी उसका दाम लिया जावैगा जिनका रोग बहुत पुराना है वे औषधि को ४० दिन सेवन कर फिर हमें लिखैं।

पत्र व्यवहार का पता:—

श्रीमती यशोदादेवी स्त्रीऔषधालय

पो० ब्क्स नं० ४ कर्नलगंज—इलाहाबाद।

तार भेजने का पता:—

"देवी" इलाहाबाद।

औषधालय में आने का पता:—

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय

मुहल्ला कर्नलगंज भारद्वाज आश्रम के पास

कर्नलगंज-इलाहाबाद।

लीजिये तैयार होगया।

काम कल्याण तैल

पुरुषों की निर्बलता और शरीर की नसों की कमज़ोरी के लिये।

पन्द्रह वर्ष इस तैल के गुणों का अनुभव कर अनेक पुरुष-रोगियों पर परीक्षा किया गया यह तैल अब बिक्री के लिये अधिक तादाद में तैयार किया गया है यह बड़े परिश्रम से अनेक प्रकार की अत्यन्त उपयोगी देशी औषधियों, जंगली जड़ी बूटियों से तैयार किया जाता है जो बड़ी कठिनाई और बड़ी खोज से मिलती हैं इस कारण यह तैल बहुत महंगा पड़ता है इसलिये राजा महाराजाओं और धनवानों के ही लिये तैयार किया गया है।

इस तैल के अपूर्व गुणों का वर्णन करते हुये वैद्यकशास्त्र में ऋषियों का कहना है कि:—

इस तैल को समस्त शरीर में नियम-पूर्वक कुछ अधिक दिन तक बराबर मालिश करने से सत्तर वर्ष का बुड्ढा पुरुष भी फिर से जवानी के आनन्द को प्राप्त करता है उसकी सूखी हुई नसें फिर से हरी होजाती हैं शरीर में एक अपूर्व शक्ति उत्पन्न होती है बुड्ढा भी युवापन को अनुभव करने लगता है शरीर में बल और तेज झलकने लगता है वैद्यकशास्त्र में लिखा है कि:—

शुभगो दर्शनीयश्च गच्छेच्च प्रमदा शतम्।
वन्ध्यापि लभते गर्भं षण्ढोऽपि पुरुषायते॥
अपुत्रा पुत्रमाप्नोति, जीवेच्च शारदां शतम्।

सारांश इसका यही है कि इस तैल का सेवन करनेवाला वीर्यक्षीण कमज़ोर जिसके शरीर में बाल्यावस्था के कुटेव के कारण वीर्य का अधिक सत्यानाश मारने के कारण पुरुष शक्तिहीन होगया

हो, किसी काम का न रहा हो, निर्वल और दुर्वल होगया हो, वीर्य शरीर में न रह गया हो उन्हें इसके सेवन से अवश्य फ़ायदा होगा सब शिकायतें जाती रहेंगी, शिर की पीड़ा, चक्कर आना, दिल की धड़कन, आंखों की कमज़ोरी, स्मरणशक्ति का कम होजाना, कमर की पीड़ा, शीघ्रपात, स्वप्नदोष, नसों की कमज़ोरी (नपुंसकता) इत्यादि सब शिकायतें शीघ्रही जाती रहती हैं एक सप्ताह सेवन करने से ही इस तेल के अपूर्व गुणों का पता लग जाता है अर्थात् बहुत कुछ फ़ायदा मालूम होने लगता है शरीर में फुर्ती, चित्त में उत्साह तथा चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगती है. इसके विषय में हज़ारों प्रशंसा-पत्र मौजूद हैं बड़े बड़े श्रीमानों ने इसकी परीक्षा कर 'गुणों में अद्वितीय बतलाया है मूल्य तैल नं० १ बड़ी शीशी का ५) पांच रुपया, नं० २ बड़ी शीशी का ३) रु०, छोटी शीशी का १॥) रु० है, नं० १ में छोटी शीशी नहीं भेजी जाती ।

पढ़िये ज़रूरी बात ।

हमारे यहां पुरुषों के केवल उन रोगों का इलाज उनकी स्त्रियों के सारा हाल लिखने या कहने से होता है जिन रोगों से स्त्रियों का खास सम्बन्ध है जैसे गर्मी, सुजाक, प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपात, निर्वलता दुर्वलता, नसों की कमज़ोरी (शिथिलता) आदि तथा पुरुष की ख़राबी से सन्तान न होना इन सब रोगों की हज़ारोंवार परीक्षा कीहुई औषधियां हमारे यहां हर समय तैयार रहती हैं यदि एकबार औषधियां मंगाने से फ़ायदा न मालूम हो तो जबतक रोगी को फ़ायदा न पहुँचे तबतक औषधियां मुफ़्त भेजी जाती हैं चाहे जिस मूल्य की औषधियां हमें मुफ़्त देनी पड़ें हम इनकार न करेंगी परन्तु जिस औषधि से फ़ायदा होगा दूसरी बार उसका मूल्य लिया जावेगा इस प्रकार पुरुष-रोगों का भी ठेका समझिये ।

औषधालय में आने का पताः—

श्रीमती यशोदादेवी स्त्री-औषधालय,

कर्नलगंज चौराहे के पास भारद्वाज आश्रम

की तरफ़ पूर्ववाली सड़कपर—इलाहाबाद ।

शक्ति कल्पद्रुम

नपुंसकता-नाशक तैल ।

लगभग १२ वर्ष तक इस अमूल्य औषधि को हज़ारों स्त्रियों ने मँगाकर अपने शक्तिहीन पतियों को सेवन करा परीक्षा की और इसकी प्रशंसा में हमारे पास हज़ारों स्त्रियों के पत्र आये जिनको छापना उचित नहीं समझा, स्त्रियों की ऐसी चिट्ठियाँ पता रजिस्टर में लिख कर औषधि भेजकर तुरन्त जलादी जाती हैं।

हमारे पास प्रतिदिन सैकड़ा पीछे सत्तर स्त्रियाँ तथा स्त्रियों की चिट्ठियां ऐसी आया करती हैं कि जिनके पति बाल्यावस्था के कुटेव, कुसंगति के कारण हस्तक्रिया आदि अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों में पड़ कर अपनी शक्ति को सत्यानाश मार बैठे हैं।

इनमें कुछ ऐसे भी हैं कि बाल्यावस्था के कुटेव को छोड़कर जवानी के अधिक विषयलोलुपता के कारण शक्तिहीन होगये हैं वे गर्भाधान क्रिया उचित रीति से करने योग्य नहीं रहे इसी कारण उनकी निरपराध स्त्रियां अनेक प्रकार के रोगों में ग्रसित होरही हैं और गर्भाधान न होने से संसार-सुख तथा सन्तान-सुख दोनों से वंचित हो रो रो कर जीवन व्यतीत कररही हैं।

उनके पति वीर्यक्षीणता और नसों की निर्बलता के कारण तनक्षीण मुखमलीन बुड्ढों के समान होगये हैं। ऐसे पुरुष-रोगियों के लिये खाने की औषधियां तो हमारे यहां अनेक प्रकार की हैं परन्तु बिक्री के लिये अभीतक कोई औषधि लगानेवाली तैयार न होसकी थी।

पुरुषों में कई दोष ऐसे होते हैं कि जो बिना लगानेवाली औषधि के गर्भाधान के योग्य नहीं होसकते जैसे जिन पुरुषों के बाल्यावस्था के कुटेव से नसों की ख़राबी से निर्बल पड़जाना और नसों की कमज़ोरी से शीघ्रही शक्तिहीन होजाना।

जब गर्भाधान क्रिया के समय पुरुष का वीर्य ठीक सीध में आकर बच्चेदानी के मुँह में जाता है तब गर्भ रहता है यदि पुरुष के हस्तक्रिया दोष के कारण नसों में ख़राबी आकर टेढ़ापन होगया हो

तो वीर्य दाहिने या बायें गिरता है सीधा नहीं जाता इस कारण गर्भ नहीं रहता।

यदि नसों की कमज़ोरी से छोटापन आगया हो तो बच्चेदानी के मुँह तक वीर्य पहुंचता ही नहीं इस कारण गर्भ नहीं रहता। यदि नसों की कमज़ोरी से गर्भाधान के समय शीघ्रही सुस्ती आगई तो प्रसंग गर्भाधान के योग्य नहीं होता अर्थात् स्त्री की बच्चेदानी में चैतन्यता आने के पहिले ही पुरुष का वीर्य पात होगया बच्चेदानी का मुँह पुरुष का वीर्य ग्रहण करने के लिये सीधा न होपाया अर्थात् स्त्री में उत्तेजना न हुई जिससे बच्चेदानी की गर्दन उत्तेजित होकर सीधी हो और पुरुष का वीर्य बच्चेदानी के मुँह के सामने आनेतक बच्चेदानी की गर्दन सीधी न रहे तबतक गर्भ नहीं रह सकता।

ऊपर लिखे पुरुष के दोषों से गर्भ नहीं रहता और इसी प्रकार यदि स्त्री की बच्चेदानी में कुछ टेढ़ापन हुआ तो पुरुष में चाहे कोई भी दोष न हो तो भी गर्भ नहीं रहता। क्योंकि पुरुष का वीर्य बच्चेदानी के मुंह के सामने आया परन्तु बच्चेदानी का मुंह टेढ़ा होने से पुरुष का वीर्य बच्चेदानी के मुंह में नहीं पड़ सकता।

स्त्री की बच्चेदानी के मुंहपर यदि सूजन हुई तो भी पुरुष का वीर्य बच्चेदानी में नहीं जाता क्योंकि सूजन के कारण बच्चेदानी का मुंह ठीक ठीक खुल नहीं सकता इसी कारण गर्भ नहीं रहता।

बच्चेदानी के मुंहपर यदि छाले, घाव अथवा गुमड़ी, फुंसियां हुईं तो भी बच्चेदानी का मुंह पुरुष के वीर्य ग्रहण करने के लिये ठीक ठीक खुलता नहीं इसलिये गर्भ नहीं रहता।

यदि स्त्री की बच्चेदानी की गर्दन में गांठ अथवा अन्य कोई ख़राबी हुई तो भी गर्भ नहीं रहता क्योंकि गर्भाधान क्रिया के समय बच्चेदानी की गर्दन रोग के कारण ठीक उत्तेजित (खड़ी) सीधी नहीं होती इसलिये पुरुष का वीर्य बच्चेदानी के मुह तक पहुँचता ही नहीं।

ध्यान से पढ़िये और समझिये।

स्त्रियों की बच्चेदानी में तो चाहे जिस प्रकार की ख़राबी हो औषधियां खाने और तैल आदि बच्चेदानी में लगाने के लिये देकर सेवन कराके स्त्रियों के तो सब दोष दूर करदिये जाते हैं सन्तान होने लगती है परन्तु जिस पुरुष की नसों में ख़राबी हुई उसके सन्तान

नहीं होती अभीतक पुरुषों के वीर्यदोष के लिये तथा वीर्यदोष के कारण नसों की ख़राबी के लिये खाने की ही औषधियों से पुरुषों की भी सब शिकायतें दूर करदी जाती थीं परन्तु पुरुषों की कुछ शिकायतें जो केवल नसों की ख़राबी से होती हैं वे खानेवाली औषधियों से दूर होने में बड़ी कठिनाई होती थी जिसके कारण स्त्रियों की बीसों चिट्ठियां उलहने की आया करती थीं।

अब हमने पुरुषों के लिये कुछ औषधियां तैल, लेप आदि ऐसे तैयार किये हैं कि जिनसे नसों की कमज़ोरी शिथिलता (नपुंसकता) नसों की कमज़ोरी के कारण उत्पन्न हुए अन्य सब प्रकार के दोष जो ऊपर लिखे गये हैं गर्भ न रहने के जितने दोष हैं सब दूर होजाते हैं।

स्त्रियों को संदेश।

अब सब स्त्रियों को मेरा यह संदेशा है कि जिनके सन्तान न होती हो या जिनके पति में ऊपर लिखे कोई दोष हों वे स्त्रियां मेरे पास आवें मैं उनको देखकर उनका इलाज करदूंगी अवश्य सन्तान होने लगेगी बच्चेदानी देखकर बतला दूंगी कि उनके दोष से या उनके पति के दोष से किनके दोष से सन्तान नहीं होती जिसमें जो ख़राबी होगी वह औषधियों के खाने तथा लगाने से दूर होजावेगी और सन्तान होने लगेगी।

आवश्यक सूचना।

जिन स्त्रियों के पति कुटेव हस्तक्रिया आदि अथवा अन्य किसी प्रकार से भी शक्तिहीनता, शिथिलता, शीघ्रपात, नपुंसकता आदि से ग्रसित हों वे अपने पति का पूरा हाल लिखें और औषधियां मँगाकर सेवन करावें सब शिकायतें अवश्य दूर होंगी।

खाने और लगानेवाली दोनों प्रकार की औषधियां भेजी जावेंगी।

शक्ति कल्पद्रुम।

नपुंसकता-नाशक औषधियां।

नपुंसकता-नाशक तैल ५) रु० नपुंसकता-नाशक लेप ३) रु०

ऊपर लिखी औषधियों के गुण औषधियों के साथ विधान-पत्रों में पढ़ने से मालूम होंगे।

यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग के

स्त्री-औषधालय की

औषधियों के प्रशंसापत्र

श्रीमती यशोदादेवी की लगभग २० बीस वर्ष में लाखों रोगी-स्त्रियों पर परीक्षा की हुई औषधियों के गुण।

१४ वर्ष का पुराना स्त्रीरोग एकही डिबिया चूर्ण से दूर होगया।

श्रीयुत मैकूलाल जी भुसावल से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

प्रदररोग तथा रजविकार का रज-सुधारक चूर्ण जो रज-सम्बन्धी स्त्री-रोगों की अपूर्व औषधि है इसकी प्रशंसा सुनकर एक डिबिया मंगाकर अपने सम्बन्धी की एक स्त्री को सेवन कराया जो १४ चौदह वर्ष से प्रदर तथा मासिकधर्म सम्बन्धी कठिन रोगों से दुःखी थी अनेक डाक्टर व वैद्यों की औषधियां कीं परन्तु सब ने रोग असाध्य बतलाया कुछ भी फ़ायदा न हुआ परन्तु आपकी औषधि की एकही डिबिया ने जादू कैसा असर किया अपना अपूर्व गुण दिखलाया अतएव बहुत फ़ायदा हुआ।

अब कृपाकर तीन डिबिया चूर्ण की और भेज दीजिये-वास्तव में आपकी औषधियों की जैसी तारीफ़ सुनी थी वैसाही गुण पाया।

श्रीयुत पं० रामचन्द्र दुबे भोलेपुर (फतेहगढ़) से

श्रीमती यशोदादेवी जी !

आपके यहां से मैंने एक डिबिया औषधि मंगाई उसके सेवन से बहुत कुछ फ़ायदा हुआ है, वास्तव में स्त्री-रोगों की यह एक अपूर्व औषधि है शीघ्र ही गुण दिखलानेवाली स्त्रियों को प्रदर सम्बन्धी सब प्रकार के रोगों के फंदों से छुटकारा कर निरोग बनानेवाले सभी गुण इसमें मौजूद हैं कृपाकर देखते पत्र के शीघ्र ही एक डिबिया वी० पी० द्वारा और भेज दीजिये बड़ी कृपा होगी।

श्रीमान् ठाकुर गजराज सिंहजी ज़िमींदार मौज़ा नेरी सालापूर) से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

महोदया आपकी रजविकार की औषधि आई उसके सेवन से मेरी स्त्री को बहुत फ़ायदा हुआ मेरी स्त्री इस कठिन रोग से लगभग बीस वर्ष से दुःखी थी आपकी रजदोष की औषधि में वास्तव में अपूर्व गुण भरे हुए हैं कृपाकर इस रोग को जड़ से खोदने के लिये एक डिब्बी शीघ्रही और भेजिये। "ठाकुर गजराजसिंह"

श्रीमती धर्मपत्नी श्रीयुत बुलाकी लाल जी ज़िमींदार मौज़ा शेरपुर पोष्ट फुलवारी (पटना)

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

आपकी भेजी हुई औषधि आई मैंने इसका सेवन कर बहुत बड़ा फ़ायदा उठाया आपकी औषधि वास्तव में अमूल्य और अपूर्व गुणवाली हैं आपने ऐसी औषधियों की खोजकर स्त्रीजाति का बड़ा उपकार किया है।

आपकी औषधि ने जादू कैसा असर किया है मैं सहर्ष लिखती हूं कि अब मैं कई मास से गर्भवती हूं। आपकी औषधि वास्तव में स्त्रियों के लिये अमृत कैसा गुण करती है कृपा करके एक डिब्बी गर्भपोषक की शीघ्रही भेज दीजिये। "शिवकेश्वरी"

श्रीमती उम्मेदकुमारी

के० आ० श्रीमान् ठाकुर ब्रजेन्द्रसिंहजी रईस

घोरपुरा टुंडला आगरा से

प्यारी बहिन यशोदादेवी कर्नलगञ्ज–इलाहाबाद !

आज मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि आपने स्त्रीजाति का बड़ाही उपकार किया है।

आपकी भेजी हुई औषधि आई सेवन-विधि के अनुसार सेवन कराई गई मेरी माता को बहुत पुराना रोग था सैकड़ों डाक्टर, वैद्य, हकीमों की वर्षों औषधि करने पर भी कुछ फ़ायदा मालूम नहीं हुआ आपकी औषधि की एकही डिब्बी के सेवन से माता जी निरोग होगई कृपाकर एक डिब्बी औषधि और भेज दीजिये।

"उम्मेद कुमारी"

श्रीमान् सरजुगप्रसाद जी रईस व ज़िमींदार

मु० घरहरवा रुनीसैदपुर (मुज़फ़्फ़रपुर)

श्रीमती यशोदादेवी !

आपकी स्त्री-रोगों की अपूर्व औषधि रज-सुधारक चूर्ण रज-सम्बन्धी रोगों केलिये वास्तव में जादू कैसा असर रखती है रजविकार केलिये इससे बढ़कर यथार्थ में कोई औषधि शीघ्रही अपना गुण दिखलाकर रोगों को नष्ट करनेवाली दूसरी नहीं है:—

मेरी स्त्री (श्रीमती योगमाया) कई वर्षों से मासिकधर्म्म सम्बन्धी अनेक प्रकार के कठिन रोगों से दु:खित थी जिसे अपना जीवन भार मालूम होरहा था और मैं भी कई डाक्टर व वैद्यों की दवा कर हैरान होगया था तथा स्त्री रोगों की औषधियों के लम्बे चौड़े विज्ञापनों की औषधियां मंगाकर सेवन कराचुका था कहांतक लिखूं मैंने अपनी स्त्री के इस रोग से छुटकारा पाने केलिये इसकी औषधि करने में धन ख़र्च करने में भी किसी प्रकार की कमी नहीं की परन्तु किसी तरह से आराम न हुआ। अतएव निराश होगया था।

भाग्यवश आपके स्त्रीधर्म-शिक्षक में रज-सुधारक चूर्ण का विज्ञापन देखकर मेरी स्त्री ने अपनी ही इच्छा से मुझसे बिना पूँछे ही (क्योंकि बहुत कुछ ठगाकर मेरा विश्वास विज्ञापनों की औषधियों से तो जाता ही रहा है) आपके यहां से एक डिब्बी रजसुधारक चूर्ण मंगाकर सेवन किया इसको थोड़े ही दिन सेवन करने से मेरी स्त्री के सब रोग जो रजविकार से उत्पन्न हुए थे बिलकुल दूर होगये अब मेरी स्त्री अच्छी तरह से निरोग है शरीर की निर्बलता दूर होकर हृष्ट पुष्ट मालूम होती है शरीर की कान्ति भी पहिले की समान फिर से आगई है अर्थात् आपकी औषधि में यह अपूर्व प्रबल गुण है कि रोग को नष्टकर शरीर में एक अपूर्व बल उत्पन्न करती है।

पुत्र उत्पन्न हुआ।

श्रीमती धर्मपत्नी बाबू बलदेव प्रसाद जी स्थान जमुई (विहार) से लिखती हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

आपकी भेजी हुई गर्भपोषक औषधि को मैंने कई मास तक सेवन किया औषधि ने वास्तव में अमृत की समान गुण दिखलाया औषधि के अपूर्व गुणों से पूरे दिनों का गर्भ होकर पुत्र उत्पन्न हुआ और बहुत हृष्ट पुष्ट तथा सुन्दर है इस उपकार का बदला मैं आपको क्या देकर पूरा करूं इस समय पुत्र की अवस्था छै महीने की है कुछ दिनों से मेरे स्तनों से दूध नहीं उतरता जिससे बालक को बड़ी तकलीफ़ है कृपाकर इसके लिये ऐसी औषधि भेजिये कि दूध उतरने लगे। मैं आपकी कहांतक प्रशंसा करूं आपने स्त्रीजाति का बड़ाही उपकार किया है परमात्मा आपका यश भारत में घर २ फैलावै।

श्रीमती सौभाग्यवती रानी साहबा रेहुवा स्टेट (बहराइच) से

लिखती हैं आपकी भेजी हुई औषधियां आईं उनका मैंने सेवन कर बड़ा फ़ायदा उठाया मैं रोगों से बड़ी दुःखी थी आपकी औषधियों

से मेरे सभी रोग दूर होगये इसके लिये आपको धन्यवाद है कृपाकर श्रीमान् राजासाहब केलिये जो औषधियां आपने नियत की हैं शीघ्रही वी० पी० द्वारा भेजदें।

श्रीमान् राजा रुद्रप्रताप नारायण सिंहजी रेहुवा स्टेट पो० वरनापूर (बहरायच) से

लिखते हैं:-श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ! आपकी भेजी हुई औषधियों का सेवन करना शुरू करदिया है। मेरा स्वास्थ्य पहिले से अब बहुत अच्छा है। मेरे विचार में एक चौथाई से अधिक शिकायत अब नहीं है। आशा है आपकी औषधियों से यह भी शिकायत शीघ्रही जाती रहैगी और बीमारी समूल नष्ट होजावेगी।

मैं औषधियों के सेवन में कुछ भी असावधानी नहीं करता हूं आपकी लिखी विधि से पथ्य से औषधियां सेवन कररहा हूं यदि मैं आपकी औषधियों का सेवन न करता तो इतनी जल्दी रोग में कमी कदापि न होती। "आपका—रुद्रप्रताप नारायण सिंह"

श्रीमती रानी साहबा गोपालपूर स्टेट से लिखती हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ! आपकी अचल और अमूल्य औषधियों के गुणों की प्रशंसा सुनकर मैंने मँगाकर सेवन कीं मेरे कई वर्ष के पुराने रोग जो अनेक डाक्टर व वैद्यों के वर्षों इलाज कराने पर भी कुछ फ़ायदा नहीं हुआ आपकी औषधियों ने मेरे सब रोगों को समूल नष्ट करदिया मैं इसके लिये आपको धन्यवाद देती हूं और जन्म भर आप की शुक्रगुज़ार रहूंगी रजिस्टरी द्वारा औषधालय की उन्नति के लिये २००) दो सौ रुपया भेजती हूं।

श्रीमती नन्हींबाई धर्मपत्नी सूबेदार मेजर शिवनन्दन सिंहजी ज़िमींदार मोम्बासा किला-ईस्ट अफ़रीका से

लिखती हैं:-श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग महोदया! आपकी भेजी हुई रजविकार और प्रदररोग की औषधियां मिलीं उनका सेवन मैंने बीस

दिन किया इतने थोड़े समय में ही इतने दिनों का पुराना रोग दूर होगया। आपकी औषधियां वास्तव में अपूर्व गुणवाली हैं आपने इन औषधियों की खोजकर स्त्रीजाति का बड़ा ही उपकार किया है मेरा इतना पुराना रोग एकही डिब्बी से जाता रहा आज आपकी सेवा में मनीआर्डर भेजती हूं कृपाकर इस रोग को जड़ से खोदेने केलिये एक डिब्बी और भेजदें।

श्रीमान् महन्त रामकिशन दास जी कर्वी चित्रकूट (ज़िला बांदा) से

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग! आपके पास इलाज कराने मेरे यहां से जो स्त्रियां अनेक कठिन रोगों से दुःखित और दुर्बल तथा व्याकुल गई थीं उन सबको आपके यहां जाकर आपकी तजवीज़ की हुई अमूल्य औषधियों का सेवन करते ही तुरन्त फ़ायदा पहुंचा और रोग की सब पीड़ायें उसी क्षण दूर होगईं मानो आपने कोई जादू की पुड़िया देदी वास्तव में आपकी जैसी प्रशंसा देश भर में फैली हुई है आपकी औषधियों में भी वैसाही गुण मौजूद है। मैं इन रोगी स्त्रियों का इलाज बड़े बड़े डाक्टर और वैद्यों से कराकर हैरान और निराश होगया। आपकी जादू भरी औषधियोंने बड़ा अद्भुत चमत्कार दिखलाया आपने इन अमूल्य औषधियों की खोजकर स्त्रीजाति का जो उपकार किया है इसके लिये आपको अनेक बार धन्यवाद है।

श्रीमान् कुंवर होशियार सिंह साहब सब रजिस्ट्रार सागर सी० पी० से

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग!

आपकी भेजी हुई प्रदररोग की औषधि मिली जिसके एक सप्ताह सेवन करने से ही रोगी स्त्री को बहुत कुछ फ़ायदा हुआ है आपने स्त्री-औषधालय खोलकर स्त्री-जाति का बड़ा उपकार किया है।

होशियार सिंह

श्रीमती सुरेन्द्रकुंवर साहेबा

स्थान सेमलिया रतलाम (कुंवरानी जी साहेबा जोधपुरी जी शिवगढ़ स्टेट रायबरेली) से लिखती हैं।

आपकी औषधियों से मेरे सभी रोग दूर होगये जिनके कारण मैं ज़िन्दगी से निराश होगई थी आपकी औषधियों में वास्तव में अपूर्व गुण भरे हुए हैं इसके लिये मैं कोटिशः धन्यवाद देती हूं।

सुरेन्द्रकुंवर स्थान सेमलिया (रतलाम)

श्रीमती सौ० रानी साहबा

पाड़ौन वाया बारां (कोटा स्टेट)

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

आपकी औषधियां मँगाकर मैंने सेवन कीं इतने थोड़े समय में ही सब तकलीफें दूर होगईं आपकी औषधियों में तो जादू कैसा असर मालूम होता है अपने रोगों से मैं बड़ी दुःखी डाक्टरों और वैद्यों का बहुत कुछ इलाज किया, बहुत रुपया खर्च किया परन्तु कुछ भी फ़ायदा न हुआ आपकी औषधियों ने आते ही और खाते ही मुझे नया जीवन प्रदान किया है।

रानी साहबा पाड़ौन।

पुत्र उत्पन्न हुआ।

सेठ मकुन्ददास मुंदड़ा बेंकर हैदराबाद से

आज मैं सहर्ष धन्यवाद सहित लिखता हूं कि आपकी "रज-सुधारक" औषधि मँगाकर स्त्री को सेवन कराई गई जोकि २८ वर्ष की अवस्था होजाने पर भी १२ बारह वर्ष से मासिकधर्म सम्बन्धी रोगों से दुःखी थी बहुत कुछ अपनी सामर्थ भर इलाज किया परन्तु रोगिनी को कुछ भी फ़ायदा न हुआ निराश हो बैठने के बाद आपकी अपूर्व अमृत की समान गुणकारी औषधियों का सेवन करने से सब रोग दूर हो पुत्र उत्पन्न हुआ।

आपने स्त्री-जाति का बड़ा ही उपकार किया है इसके लिये आपको धन्यवाद है मैं आपकी देशी चमत्कारी स्त्री-चिकित्सा शक्ति देखकर सब सज्जनों से अनुरोध करता हूं कि यदि किसी स्त्री को मासिकधर्म सम्बन्धी अथवा अन्य कोई भी गुप्त रोग हो तो श्रीमती यशोदादेवी के स्त्री-औषधालय की औषधियां मंगाकर सेवन करावें अवश्य फायदा होगा। मुकुन्ददास मुंदड़ा।

श्रीमती कैलासदेवी, गादी श्रीरामपुर वाया गिरीडीह (हज़ारीबाग)

से लिखती हैं:—श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग, महोदया ! मैंने आपकी औषधियों को मंगाकर सेवन विधि के अनुसार सेवन किया थोड़े ही समय में औषधियों के अपार गुणों को देखा इन औषधियों का गुण मैं लिखकर नहीं बता सकती मैंने आपकी औषधियों में अपूर्व गुण देखे; ईश्वर से प्रार्थना है कि आपकी औषधियों से सभी रोगी बहिनों को आरोग्यता प्रदान करता रहे।

आपकी औषधि का सेवन कर मैंने अपूर्व फल पाया मैं पांच महीने से गर्भवती हूं आपकी कैलाशदेवी

ख्यालीरामजी विद्यार्थी हिन्दू यूनीवर्सिटी होस्टल रूम नं० डी० १५ बनारस

हिन्दू यूनीवर्सिटी से लिखते हैं:—श्रीमती पूज्यवर यशोदादेवी प्रयाग ! आपकी भेजी हुई औषधि मिली सेवनविधि के अनुसार सेवन कीगई मैं वीर्य-सम्बन्धी रोगों से बड़ा ही दुःखी था रातदिन चित्त चिंतित रहा करता था रोग दिन दिन अपना भयानक प्रभाव दिखा रहा था।

आपकी औषधि के पन्द्रह दिन सेवन करने ही से मेरी सब शिकायतें दूर होगईं और आपकी अमूल्य और अपूर्व गुणवाली औषधि के प्रभाव से मैं परीक्षा (इम्तहान) में शामिल होकर पास भी होगया इसके लिये आपको धन्यवाद है। कृपाकर रोग को जड़ से खोदेने के लिये एक डिब्बी औषधि और भेज दीजिये।

ख्यालीराम

पुत्र उत्पन्न हुआ।

श्रीयुत श्रीराम शर्मा पोष्टमास्टर
अहमदपुर ज़िला नीमाड़

की धर्म्म-पत्नी श्रीमती प्यारीबाई अध्यापिका कन्या-पाठशाला अहमदपुर (नीमाड़) से लिखती हैं:—श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

मैंने आपकी औषधियां मँगाकर सेवन कीं आपकी औषधि की प्रशंसा सूर्य को दीपक दिखाने की समान है मैं ही क्या तमाम देश आपकी औषधियों के विचित्र गुणों की प्रशंसा कर रहा है। इसलिये मैं अधिक कुछ न लिखकर केवल इतना ही लिखूंगी कि आपकी औषधियों के थोड़े ही दिन सेवन करने से मेरे सभी रोग दूर होकर गर्भ रहा।

गर्भ को पुष्ट होने और बालक सुन्दर हृष्ट पुष्ट उत्पन्न होने की आशा से आपकी अमूल्य औषधि गर्भपोषक मँगाकर सेवन की उसके गुणों की प्रशंसा भी हो नहीं सकती उसने भी अपना अपूर्व गुण दिखलाया अतएव समय पर बालक उत्पन्न हुआ और हृष्ट पुष्ट तथा सुन्दर है।

आपकी अमूल्य औषधियों ने मुझे पुत्ररत्न के दर्शन कराये अतएव आपने जो कठिन परिश्रम कर ऐसी अपूर्व औषधियों की खोज की है इसके लिये आपको जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है। जो कार्य लाखों रुपया खर्च करने पर भी नहीं होसकता वह आपकी कुछ आने की औषधियां कर दिखाती हैं परमात्मा की आप पर कृपा है उसीने आपको यह स्त्री-उपकार का यश प्रदान किया है ईश्वर से प्रार्थना है कि इसी प्रकार आपके हाथों भारत की स्त्रियों का उपकार कराता रहे। अब एक डिब्बी बालपोषक की वी० पी० द्वारा भेजदें।

श्रीयुत पंडित सत्यनारायण प्रसाद
हेड पंडित बड़हरवा पो० मलाही, चम्पारन

से लिखते हैं:—श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ! महोदया मैंने अपनी स्त्री के लिये आपके यहां से औषधियां मंगाकर सेवन कराई

आपकी औषधियों के विचित्र गुण देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई आपने वैद्यक विद्या में बड़ाही अनुभव प्राप्त किया है अतएव आपके हाथ से हमारे देश की स्त्रियों का जो उपकार होरहा है इसके लिये मैं आपको अनेक बार धन्यवाद देता हूं।

आपकी औषधियों को थोड़े ही दिन सेवन कराने से मेरी स्त्री के समस्त रोगों में बहुत फ़ायदा हुआ अतएव रोगों को जड़ से खोदने के लिये वही औषधियां फिर से अथवा जो आप उचित समझें वी० पी० द्वारा शीघ्रही भेजदें। सत्यनारायण प्रसाद

श्रीयुत बाबू बलदेव प्रसादजी
के० आ० बाबू अक्षयवट प्रसाद जी
वकील मुंसिफकोर्ट (जमुई) मुंगेर

यशोदादेवी प्रयाग, महोदया! मैंने आपकी औषधियां मँगाकर अपनी स्त्री को सेवन कराईं जिनसे मेरी स्त्री को बहुत बड़ा फ़ायदा हुआ वास्तव में आपकी औषधियां जादू कैसा असर करती हैं मैं आपके अनुभव और आपकी चिकित्सा-शक्ति देखकर कह सकता हूं कि आप से भारत की स्त्रियों का भारी उपकार होरहा है। मेरी स्त्री को आपकी औषधियों ने ऐसा अपूर्व गुण दिखलाया है जिसकी स्वप्न में भी आशा नहीं थी क्योंकि अनेक रोगों के कारण सन्तान होने की आशा ही जाती रही थी आपकी औषधियां ईश्वर के आशीर्वाद के समान गुण करती हैं आपकी औषधियों के फल से पुत्र का जन्म हुआ है। पुत्र उत्पन्न हुए छै महीने होचुके हैं आजकल उसे खांसी बहुत है और बहुत रोया करता है कोई औषधि उसके लिये शीघ्रही भेज दीजिये।

श्रीयुत रामचरितलाल फिटिनशाप
हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस से

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग! आपकी भेजी हुई रज-विकार की औषधि रजसुधारक चूर्ण मैंने अपनी स्त्री को सेवन कराया इसके सेवन से थोड़े ही समय में आश्चर्य-जनक फ़ायदा हुआ

जिसकी प्रशंसा मैं कहांतक करूं आपकी औषधि ने अमृत की समान गुण दिखलाया स्त्री का रोग दूर होकर गर्भ धारण हुआ अब इस समय चार महीने का गर्भ है आपको इसके लिये धन्यवाद है आपने स्त्री-औषधालय खोलकर स्त्रियों का बड़ा उपकार किया है।

रामचरितलाल बनारस

श्रीमती आशादेवी के० आ० बाबू रामस्वरूप जी मुक़ाम गढ़ी पो० जानसठ (मुज़फ़्फ़र नगर)

से लिखती हैं:—श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगञ्ज-इलाहाबाद महोदया! आपकी औषधियां मंगाकर सेवन कीगईं वास्तव में आप की औषधियां अत्यन्त गुणकारी हैं आपका रजसुधारक चूर्ण अमृत की समान गुण रखता है मैं आपका औषधियों की प्रशंसा कहांतक लिखूं। मुझे रजसम्बन्धी अनेक रोगों ने बहुत दिनों से घेर रक्खा था और मैं सन्तान न होने से बड़ी दुःखी थी रो रो कर जीवन के दिन बिता रही थी। आपकी औषधियों का सेवन कर सब रोगों से छुटकारा पागई और आपकी औषधियों ने मुझे सन्तान-सुख दिखाया अतएव मेरे कन्या उत्पन्न हुई है इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देती हूं और परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि आपको दीर्घायु कर आपके यश को समस्त देश में फैलावै जिससे हमारे देश की दुःखी रोगी-बहिनों का दुःख दूर हो कृपाकर मेरी सहेली के लिये एक डिब्बी रज-सुधारक भेज दीजिये।

आवश्यक सूचना।

हमारे पास बीसों हज़ार प्रशंसापत्र रोगी-स्त्रियों के आये परन्तु जिन्होंने अपना नाम छापने से इनकार लिखा है उनकी चिट्ठियां गुप्त रक्खी गई हैं जो स्त्री या पुरुष संकोच के कारण चिट्ठी छापने को मना लिख देते हैं उनकी चिट्ठी (प्रशंसापत्र) नहीं छापे जाते।

प्रशंसापत्रों की पुस्तकमाला

सूचीपत्र छपते छपते और बहुत से प्रशंसापत्र वालों के स्वीकारी पत्र आगये हैं और भी हम सब से आज्ञा मांग रहे हैं अत-एव लगभग दस हजार प्रशंसापत्रों की एक पुस्तक कई भागों में प्रकाशित होगी मंगाकर देखिये मुफ्त मिलैगी।

पुस्तक मिलने का पता:—

श्रीमती यशोदादेवी

पोष्ट बक्स नं० १ कर्नलगंज इलाहाबाद।

तार भेजने का पता:—

"देवी" इलाहाबाद।

औषधालय में आने का पता:—

यशोदादेवी स्त्री-औषधालय

मुहल्ला कर्नलगंज भारद्वाज आश्रम के पास

कर्नलगंज—इलाहाबाद

की समान गुणकारी औषधियों के सेवन से गर्भ रहा और पुत्र उत्पन्न हुआ ।

आज मैं फिर बड़े हर्ष के साथ लिखता हूं और आपको धन्यवाद देता हूं, इस वर्ष फिर पुत्र उत्पन्न हुआ है परन्तु स्त्री के स्तनों में दूध नहीं उतरता सो कृपाकर इसकी औषधि जल्द भेज दीजिये ।

पहिले जो लड़का हुआ था ६ दिन से वह बहुत रोता है इसका भी कुछ उपाय लिख भेजें मैं आपकी औषधियों की कहांतक प्रशंसा करूं आपकी चिकित्सा शक्ति तमाम हिन्दुस्तान में ज़ाहिर होरही है परमात्मा ने आपके हाथों में बड़ा भारी यश प्रदान किया है ।

द्वारिका प्रसाद कोपागंज २६-५-२४

श्रीयुत गुलाबराम बारसलीगंज जिला गया से लिखते हैं ।

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग ।

महोदया ! मेरी स्त्री को मासिकधर्म की खराबी बहुत दिनों से थी जिसके कारण उसे कभी गर्भ नहीं रहा आपको मैंने अपनी स्त्री का पूरा हाल लिखकर भेजा आपने रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजीं उनके सेवन से मेरी स्त्री की सब शिकायतें शीघ्रही दूर होकर वह गर्भवती हुई और अब ठीक समय पर पुत्र प्राप्त हुआ है ।

मैं आपकी औषधियों के गुणों की और आपकी चिकित्सा-शक्ति की कहांतक प्रशंसा करूं आपकी औषधियों में अमृत की समान अद्भुत शक्ति है । आपने स्त्री-चिकित्सा में बड़ा भारी यश प्राप्त किया है स्त्रीजाति का और मनुष्य मात्र का आपसे बड़ा भारी उपकार होरहा है यही कारण है कि आपके यश की प्रशंसा समस्त देश में होरही है ।

पुत्र उत्पन्न हुए २० दिन हुए लड़के को दूध नहीं पचता है उलट देता है बहुत रोता है आंखें बन्द रखता है और आंखें सूज जाती हैं इसके लिये उचित औषधि शीघ्रही भेज दीजिये ।

बारसलीगंज ३-५-२४

श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद

पाड़ौन स्टेट (कोटा) से

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग।

महोदया नमस्ते! मैं आपको कोटिशः धन्यवाद देता हूं और आपकी स्त्रीचिकित्सा शक्ति की प्रशंसा करता हूं कि आपकी औषधियों के सेवन कराने से मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य जो कि बहुत दिनों से बिगड़ा हुआ था और कई डाकूरों की चिकित्सा कराने पर भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ था आपकी औषधियों के सेवन से पूर्णतः आराम होगया सब रोग दूर होकर अब वह गर्भवती है इसके पहिले कभी गर्भ नहीं रहा था यह सब आपकी औषधियों के गुणों का फल है मैं आपकी चिकित्सा-शक्ति की प्रशंसा कहांतक करूं आपने स्त्रीज़ाति का बड़ा उपकार किया है। कुछ दिनों से मेरी स्त्री को दस्त आने लगे हैं जिसमें आंव भी गिरती है, कमज़ोरी बहुत है इसके लिये कोई उचित औषधि शीघ्र भेजदें।

आपकी औषधियों की प्रशंसा करने के लिये लेखनी में सामर्थ्य नहीं, कृपया औषधि शीघ्र भेजें।

भगवती प्रसाद पाड़ौन ता० २२—६—२४

श्रीयुत श्रीनाथ झा

खड्गपूर (मुंगेर)

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज-इलाहाबाद।

महोदया! आज मुझे यह लिखते हुए बड़ी खुशी होती है कि मैंने जो औषधियां अपनी रोगी स्त्री के लिये मंगाई थीं आपने रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजी थीं उन औषधियों ने रामबाण का काम किया है वास्तव में देश भर में आपकी जैसी प्रशंसा होरही है आपकी चिकित्सा-शक्ति भी वैसी ही है आपकी औषधियों के गुणों से तथा आपकी कृपा से अब मेरी स्त्री चार मास से गर्भवती है इत्यादि।

श्रीनाथ झा-खड्गपुर ६-७-२४

श्रीयुत शम्भूदत्त जी
केयरआफ नन्दूराम जगूरामजी
दीनानाथ गोला बनारस सिटी से लिखते हैं

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया! आपको मालूम हो कि हमारी औरत बहुत दिनों से बीमार रहती थी प्रदररोग और मासिकधर्म की ख़राबी से बहुत दुःखी रहती थी आपके यहां से इन रोगों की औषधियां मंगाकर सेवन कराई गईं औषधियों को ४० दिन नियम पूर्वक सेवन करने से गर्भ रहगया और ठीक समय पर लड़का पैदा हुआ। आज १ महीना १५ दिन का लड़का हुआ जेठ बदी ८ दिन सोमवार १ बज के २५ मिनट पर रात को लड़के का जन्म हुआ।

अब आपसे प्रार्थना यह है कि लड़के की आंखें हमेशा पीली रहती हैं इसके लिये कोई औषधि शीघ्रही भेजदीजिये। आपकी औषधियों में विचित्र गुण भरे हुए हैं आपने इन औषधियों की खोज कर बड़ा उपकार किया है। बनारस १०-७-२४

श्रीयुत रामलाल स्वर्णकार
दड़िहाल मुरादाबाद से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया! नमस्ते। मैंने अपनी स्त्री के लिये आपसे जो औषधियां मंगाई थीं उनके सेवन करने से बड़ा फ़ायदा हुआ आपकी कृपा और आपकी अमृत की समान गुणकारी औषधियों के फल से आज ता० ८-७-२४ को लड़का पैदा हुआ है इससे पहिले ११ गर्भ गिरचुके थे यह पहिला ही अवसर है कि आपकी औषधियों से ठीक समय पर लड़का पैदा हुआ वह हृष्ट पुष्ट है परन्तु माता के स्तनों में दूध नहीं उतरता इसलिये कोई औषधि दूध उतरने की भेज दीजिये। और लड़के के लिये कोई घुट्टी भेज दीजिये।

परमात्मा। आपके यश को तमाम संसार में फैलावे और औषधालय की दिन दिन तरक्की करे। स्थान-दड़िहाल ६-७-२४

अखौरी जगदीश लाल
मुहल्ला बेलवा ठोकर
डालटैनगंज (पलामू) से लिखते हैं

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया! आपके यहां से मैंने अपनी स्त्री के लिये औषधि मंगा-कर सेवन कराई जिसका रोगी नम्बर आपके यहां ५२८६ है।

आपकी औषधियों और आपकी चिकित्सा-शक्ति की प्रशंसा करना व्यर्थ है। बड़े हर्ष के साथ लिखता हूं कि इस समय मेरी स्त्री को चार मास का गर्भ है। अब रोगी-स्त्री को इस अवस्था में यदि किसी प्रकार की औषाध की ज़रूरत समझें तो शीघ्रही भेजदें चार महीने तक मैं आपको न लिखसका इसके लिये क्षमा करें।

डालटैन गंज १४-७-२४

श्रीयुत रामसखी तिवारी
मुक़ाम डूमरी (दरभंगा) से लिखते हैं

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया! आज मैं बड़े आनन्द के साथ लिखती हूं कि आपके यहां से मैंने अपनी स्त्री के लिये औषधियां मंगाई थीं उनके सेवन से मेरी स्त्री की सब शिकायतें दूर होगई और अब वह चैत्रमास से गर्भवती हैं। इस समय उसके पेट में कुछ पीड़ा हुआ करती है इसके लिये यदि उचित समझें तो कोई औषधि भेजने की कृपा करें।

मुक़ाम डूमरी १६-७-२४

पं० श्रीराम शर्मा मास्टर
पाठशाला अहमदपुर नीमाड़ सी० पी० से

लिखते हैं:—श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज-इलाहाबाद।

महोदया! अपनी स्त्री के लिये मैंने जो औषधियां आपसे मंगाकर सेवन कराई उनसे मेरी स्त्री की सब शिकायतें दूर होकर वा

गर्भवती होगई, आपकी औषधियों की प्रशंसा मैं कहांतक करूं आपकी औषधियों में बड़े ही अद्भुत गुण भरे हुए हैं आपकी चिकित्सा-शक्ति भी बड़ी ही विचित्र है आपकी चिकित्सा की जैसी प्रशंसा देशभर में होरही है वास्तव में आप में वेही गुण मौजूद हैं।

आपको यह सुनकर हर्ष होगा कि मेरी स्त्री के ठीक समय पर आपकी औषधियों के फल से पुत्र उत्पन्न हुआ है और इस समय वह ३॥ मास का होगया, लड़का हृष्ट पुष्ट और सुन्दर है। यदि उचित समझें तो एक डिब्बी बालपोषक शीघ्रही भेज दीजिये।

श्रीराम शर्म्मा मास्टर २५-६-२४

श्रीमती कैलास देवी

केअर आफ़ सर्वानन्द लाल जी

गादी श्रीरामपुर (हज़ारी बाग़) से

लिखते हैं:—श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

पूजनीया श्रीमती जी! आपकी औषधियों का सेवन कर मैंने बहुत बड़ा फ़ायदा उठाया आपकी औषधियों में अपार गुण भरे हुए हैं आपकी औषधियों और आपकी चिकित्सा-शक्ति की प्रशंसा कहां तक करूं आपकी औषधियों के फल से मैंने पुत्र-रत्न प्राप्त किया।

इस वर्ष अब मैं फिर गर्भवती हूं अब बालक होने का समय निकट है इसी महीने में दूसरी सन्तान उत्पन्न होनेवाली है इसके लिये आपको जितना धन्यवाद दूं थोड़ा है परमात्मा से प्रार्थना है कि आपकी दिन दिन उन्नति करें आठ दस दिन से मुझे कुछ शिकायत है इसके लिये नीचे लिखे हुए हाल को पढ़कर कुछ उपाय लिखिये।

श्रीयुत आनन्दघन चौबे

महौलीपौर मथुरा से लिखते हैं ११-८-२४

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगञ्ज—इलाहाबाद।

महोदया! गतवर्ष मैंने आपकी सेवा में अपनी स्त्री से रोग का हाल लिखाकर औषधियां मंगाई थीं आपने रोग का निश्चय कर जो

औषधियां भेजी थीं उनके सेवन से मेरी स्त्री की सब शिकायतें जाती रहीं आपकी औषधियों से अपूर्व फ़ायदा पहुंचा और पुत्र उत्पन्न हुआ।

मैं आपकी औषधियों की कहांतक तारीफ़ करूं आपकी प्रशंसा देशभर में होरही है जैसी आपकी प्रशंसा सुना करता था वैसा ही पाया परमात्मा से प्रार्थना है कि दिन दिन आपकी उन्नति करे।

तीन महीने गुज़रे एक पड़ोस की स्त्री के लिये भी आपसे औषधियां मंगाकर दी थीं उनके सेवन से उसे भी बहुत फ़ायदा हुआ और उसकी सब शिकायतें दूर होगईं अब वह गर्भवती है।

आज मैं एक और स्त्री का हाल अपनी स्त्री की मार्फ़त आपकी सेवा में इसी चिट्ठी के साथ भेजता हूं कृपा करके रोग का निश्चय कर औषधियां भेज दीजिये।

श्रीयुत पं० राधेकृष्ण मिश्र
सेकसन राइटर डी० सी० आफ़िस
बालाघाट सी० पी० से लिखते हैं २०-१०-२४

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग !

आपको मैंने अपनी स्त्री की बीमारी का हाल लिखा था आपने रोग समझकर जो औषधियां भेजी थीं उनका सेवन करने से मेरी स्त्री को बहुत फ़ायदा हुआ उसकी सब शिकायतें जाती रहीं और गर्भ रहा इस समय ६ महीने का गर्भ है १५-२० दिन से उसे रात को ९-१० बजे रात से बुख़ार आजाता है इसके लिये कुछ औषधि जो मुनासिब समझें भेजदें। राधेकृष्ण मिश्र।

श्रीयुत सूरतरामजी
अध्यापक पाठशाला महरूम (दुर्ग)
पो० आफ़िस पिनकापार (राज नांदगांव)

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया ! आपसे मैंने कईबार अपने मित्रों की रोगी-स्त्रियों के लिये औषधियां मंगाकर दीं उन्होंने औषधियों का सेवन कर बहुत

फ़ायदा उठाया सबकी सब शिकायतें जाती रहीं और आपकी औषधियों के फल से ही पुत्र उत्पन्न हुआ। ईश्वर की कृपा से पुत्र हृष्ट पुष्ट है। इसके लिये आपको जितना धन्यवाद दियाजाय थोड़ा है।

मैं अपने रोग का हाल नीचे लिखता हूं निश्चय कर जो उचित समझें औषधियां भेज दीजिये बड़ी कृपा होगी। २५-७-२५

श्रीयुत मथुरा प्रसाद जी अमीन
क़स्बा कोसी कलां (मथुरा से)

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद!

महोदया! मैं आपकी बड़ी कृतज्ञ हूं आपकी औषधियों ने अपना अपूर्व गुण दिखलाया आपकी औषधियों के गुणों की मैं कहांतक प्रशंसा करूं। इस समय गर्भ को नवां महीना है मुझे कुछ नीचे लिखी शिकायतें चार पांच दिन से होगई हैं यदि उचित समझें तो कोई उपाय लिखभेजें। २२—८—२५

श्रीयुत जनार्दन प्रसाद सिंहजी
मुक़ाम दिनारी गिद्धौर (मुंगेर) से लिखते हैं

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

मैंने एकबार अपनी स्त्री के लिये आपसे रोग का हाल लिखकर औषधि मंगाई थी आपने रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजीं मेरी स्त्री आधी डिब्बी भी औषधि सेवन नहीं करने पाई कि सब शिकायतें दूर होकर गर्भवती होगई और अब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ है वह खूब हृष्ट पुष्ट है आपकी औषधियों ने जादू कैसा असर दिखलाया, मैं आपकी अमृत के समान गुणवाली औषधियों की कहांतक प्रशंसा करूं आपने स्त्रीजाति का बड़ाही उपकार किया है ईश्वर सदैव आपके यश को बढ़ाता रहै। कृपाकर दो डिब्बी बालपोषक औषधि की शीघ्र भेज दीजिये।

जनार्दन प्रसाद सिंह दिनारी १-११-२४

श्रीयुत चन्द्रनारायण सिंहजी मुकाम मधुबनी पुर्निया से लिखते हैं ।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ।

महोदया ! आपकी औषधियां मंगाकर मैंने अपनी स्त्री को सेवन कराई मेरी स्त्री मासिकधर्म की खराबी से बहुत दुःखी थी आपकी औषधियों ने बड़ाही फ़ायदा पहुंचाया उसे मासिकधर्म ठीक होने लगा सब शिकायतें दूर होकर गर्भ रहा और अब पुत्र उत्पन्न हुआ है बहुत अच्छी तरह से है ।

मैं आपकी अमृत की समान गुणवाली औषधियों की कहांतक प्रशंसा करूं आपसे देश की स्त्रियों का बड़ा उपकार होरहा है ।

अब आपसे प्रार्थना यह है कि बच्चे की माता को अनपच सा होगया एकदिन के पश्चात् एक दिन पेट फूल आया करता है पेट में गुड़गुड़ाहट होती रहती है और दस्त आने लगते हैं कृपाकर रोग का निश्चय कर शीघ्रही औषधियां भेजिये ।

चन्द्रनारायण सिंह मधुबनी १२-११-२४

श्रीयुत माता प्रसाद जी उपदेशक विधवा—विवाह सहायक सभा लाहौर से लिखते हैं ।

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग !

श्रीमती जी नमस्ते ! शुभ सेवा में निवेदन है कि मैंने अपनी स्त्री के रोग का हाल लिखकर आपसे औषधियां मँगाई थीं आपने रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजीं उनसे रोग की सब शिकायतें दूर होकर स्त्री गर्भवती होगई इसलिये अब कृपा करके गर्भरक्षक (गर्भपोषक) औषधि शीघ्रही भेजदें ।

माता प्रसाद उपदेशक लाहौर १७-२-२४

इसी प्रकार के हजारों प्रशंसापत्र सन्तानहीन स्त्रियों के हमारी औषधियों के सेवन से सन्तान होने के आये हैं बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखें ।

पुरुषों की औषधियों के प्रशंसापत्र।

कुछ प्रतिष्ठित पुरुषों की
पुरुष-रोगों की औषधियों पर राय

श्रीयुत पं० व्रजनाथ साहब
कोठी नायब साहब राजा बहादुर
रियासत मैनपुरी से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग!

आपकी भेजी हुई दवा से मेरी तबियत बिलकुल साफ़ होगई अब मुझे कोई शिकायत नहीं है इसके लिये मैं आपको अनेक बार धन्यवाद देता हूं आपने ऐसी औषधियां खोज निकाली हैं जिनसे पुरुषों का भी बड़ा भारी उपकार होरहा है।

अब आपसे प्रार्थना यह है कि मेरे एक मित्र को भी कुछ रोग है इसके लिये भी अपनी अमृतरूपी औषधियां भेजकर उपकार कीजिये।

मैनपुरी २३-८-२४

श्रीयुत बाबू मुकुन्द प्रसाद साहब मलिक
पेशकार मजिस्ट्रेट आफ़िस
पुर्नियां से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग!

आपकी भेजी हुई औषधियां आई उनका सेवन कर मैंने बहुत थोड़े समय में ही बड़ा फ़ायदा उठाया मेरी सब शिकायतें जाती रहीं अब रोग को जड़ से खोदेने के लिये एक डिब्बी और भेज दीजिये।

पुर्नियां २-६-२४

श्रीयुत गुसाईं रामगिरि जी मौज़ा—टढ़वा, डाक-उतरौला, ज़िला-गोंडा से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

आपका भेजा हुआ औषधियों का वी० पी० नं० ४५० पाया आपकी लिखी सेवन विधि के अनुसार औषधियों का सेवन किया जाता है बड़े हर्ष की बात है कि इतने थोड़े समय में ही आपकी अमृत की समान गुणकारी औषधियों ने अपना अपूर्व गुण दिखलाया इतने कठिन पुराने रोग में आपकी औषधि इतनी जल्दी गुण दिखलाने लगी कि मैं कहांतक प्रशंसा करूं आपको इसके लिये धन्यवाद है दवा खतम होनेपर फिर लिखूंगा। टढ़वा १-४-२४

श्रीयुत बांके बिहारी लाल सकसेना रैंज आफ़िसर फारेष्टरेंज जामनेर पोष्ट—गढ़ा (ग्वालियर स्टेट) से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज प्रयाग !

आपकी भेजी हुई औषधियां आईं जिनको सेवन कर थोड़े ही समय में मेरी बहुत सी शिकायतें दूर होगईं, इतनी जल्दी आपकी औषधि ने फ़ायदा दिखलाया इसकी प्रशंसा में कहांतक करूं आपकी औषधियों में वास्तव में अपूर्व गुण भरे हुए हैं जिससे मुझे अपूर्व लाभ हुआ। जो रोग अधिकता से अपना प्रभाव जमाये था उसमें औषधि खाना शुरू करते ही कमी मालूम होने लगी जिसका मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं। आपने ऐसी औषधियों की खोजकर देश का बड़ा ही उपकार किया है। जामनेर १६-४-२४

श्रीयुत पं० रामबक्स शर्मा

रि० अ० स्टेशन मास्टर आबूरोड ४—६—२४

श्रीमती यशोदादेवी कर्नेलगंज इलाहाबाद !

आपकी औषधियां जो मैंने अपने मित्र के लिये मंगाई थीं आपकी औषधियों से बड़ा फ़ायदा हुआ। अब मेरे लिये भी कुछ औषधियों की ज़रूरत है तजवीज़ करके भेजदें हाल नीचे लिखता हूं इत्यादि।

श्रीयुत एम० एल० शर्मा

स्टोर चेकर कतरासगढ़

ज़िला-मानभूमि से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

प्रार्थना यह है कि आपकी औषधियां मंगाकर सेवन कीगई इतने थोड़े समय में ही आपकी औषधियो ने अपना अपूर्व गुण दिखलाया इसके लिये आपको अनेक बार धन्यवाद है। कृपाकर वे ही औषधियां फिर से वी० पी० द्वारा भेज दीजिये। मानभूमि १२-३-२४

श्रीयुत बाबू भवानी प्रसाद जी

क्लर्क पी० डबलू० डी० खंडवा से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

आपकी भेजी हुई औषधियां आई उनका सेवन करना आरम्भ करदिया इतने थोड़े समय में ही आपकी औषधियो ने बड़ा भारी फ़ायदा पहुंचाया। मेरी सब तकलीफें दूर होगई इसके लिये आपको अनेक बार धन्यवाद है आपने स्त्री-औषधालय खोलकर पुरुषों का भी बड़ा उपकार किया है। आपकी प्रशंसा सुनकर और औषधियों के गुण देखकर मेरे मित्रों को भी आपसे इलाज कराने की इच्छा हुई है नीचे लिखे अनुसार औषधियां भेज दीजिये। इत्यादि

खंडवा १६-३-२४

श्रीमान् राव प्रतापसिंह साहब आनरेरी मजिस्ट्रेट आमगांव ज़िला नरसिंहपुर से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग।

आपका भेजा हुआ च्यवनप्राश बड़ा ही उपयोगी है मुझे आपकी औषधियों ने बड़ा ही गुण दिखलाया आपकी जैसी प्रशंसा सुनी थी आपकी औषधियों में वैसे गुण भी पाये। इसके लिये आपको अनेक बार धन्यवाद है।

कृपा करके चार डिब्बा च्यवन-प्राशावलेह शीघ्रही वी० पी० द्वारा भेज दीजिये आपका बनाया हुआ च्यवनप्राश वास्तव में वैसा ही गुणकारी है जैसा वैद्यकशास्त्र में ऋषियों ने बतलाया है आप विधिपूर्वक तैयार भी करती हैं और परमात्मा ने आपके हाथ में यश प्रदान किया है। आमगांव २५-१२-२४

श्रीयुत जमादार नारायणसिंह जी ३-१८ रा० ग० रै० लैन्सडौन से लिखते हैं

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

महोदया! आपकी भेजी हुई औषधियां मिलीं उनका सेवन आरम्भ करदिया।

आपके शतावरी तैल में बड़ाही अपूर्व गुण पाया इसके सेवन से उतनाही अधिक फ़ायदा हुआ है जितना आपने अपने सूचीपत्र में वर्णन किये हैं। मैं आपकी औषधियों के गुणों की कहांतक प्रशंसा करूं आपने ऐसी औषधियो की खोज कर स्त्रीजाति का ही नहीं वल्कि मनुष्यमात्र का बड़ा भारी उपकार किया है।

कृपा करके बारह शीशी शतावरी तैल। ३-महासुगन्धित तैल शीघ्रही वी० पी० द्वारा भेज दीजिये। ता० ११-२-२५

श्रीयुत रामचन्द्र प्रसाद जी
ठिकाना-बाबू गोपीनाथ वर्म्मा
कास्ट डिपार्टमेन्ट जमशेदपुर टाटानगर से

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ।

आपने मेरे रोग का निश्चय कर जो औषधियां नियत कर भेजी थीं उनके सेवन से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ मेरी सब शिकायतें दूर होगई कृपाकर नीचे लिखी औषधियां वी० पी० द्वारा और भेज दीजिये । जमशेदपुर ३०-११-२४

श्रीयुत पं० सुमेरीलाल शर्म्मा
स्थान-भगवंतपुर, पोष्ट-राजपुर (देहरादून) ।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग !

महोदया ! मैंने अपने रोग का हाल लिखकर आपसे औषधियां मंगाई थीं मेरा नम्बर ४२८६ है आपने मेरे रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजी थीं उनके सेवन से मुझे बहुत बड़ा फ़ायदा पहुंचा मैं आपकी औषधियो की कहांतक प्रशंसा करूं, खेद है मेरे कुछ कुपथ्य से रोग अभी जड़ से नहीं गया है कृपा करके वे ही औषधियां फिर से वी० पी० द्वारा शीघ्रही भेजिये । देहरादून ५-१२ २३

श्रीयुत बाबू हरिसरन सिंह जी
मुक़ाम-कपसेटी पो० सकलपुर
जि०—बनारस से लिखते हैं ।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग ।

आपकी भेजी हुई औषधियों का सेवन करने से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ मैं कहांतक प्रशंसा करूं आपसे देश का बड़ा उपकार होरहा है । कृपा करके रोग को जड़ से खोदेने केलिये नीचे लिखी औषधियां शीघ्रही भेजदें । हरिसरन सिंह

श्रीयुत बा० हरीनन्द जी
अ० गार्ड बी० एन० डबलू० रेलवे
गोरखपुर से लिखते हैं।

श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग।

महोदया! आपने मेरे रोग का निश्चय कर जो औषधियां भेजीं उनका सेवन करने से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ जिन-रोगों के कारण मुझे बड़ी तकलीफें थीं वे सब शीघ्रही दूर होगई आपकी औषधियों में मैंने जादू कैसा असर पाया इसके लिये मैं आपको कहांतक धन्यावाद दूं आपने पुरुष-रोगों की अपूर्व औषधियों की खोजकर बड़ा उपकार किया है। ११-१-२४

श्रीयुत उदयभान सिंह जी
पोस्टल क्लर्क नेपाल लीगेशन नेपाल ७-१-२४

लिखते हैं:—श्रीमती यशोदादेवी प्रयाग।

आपकी भेजी हुई औषधियों का सेवन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि औषधियों का सेवन करते ही फ़ायदा मालूम होने लगा। मेरी बीमारी बहुत पुरानी है इस कारण कदाचित् धीरे धीरे दूर होगी परन्तु आपकी औषधियों ने अपना अपूर्व गुण दिखलाना आरम्भ करदिया है। मैंने बहुत इलाज किये परन्तु किसी से मुझे कुछ भी फ़ायदा नहीं हुआ आपकी औषधि ने बहुत जल्द फ़ायदा दिखलाया। कृपाकर और औषधि शीघ्रही भेजदें

श्रीयुत पं० कृष्णानन्द जी
श्रीगनेश लाइब्रेरी उपरहटी रीवां स्टेट

श्रीमती यशोदादेवी कर्नलगंज इलाहाबाद।

आपकी भेजी हुई औषधियां आईं जिनका सेवन करने से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ आपकी औषधियां शीघ्रही गुण दिखलाती हैं आपकी औषधियों ने मुझे आश्चर्य-जनक गुण दिखलाया। औषधि के सेवन से पहिले ही दिन फ़ायदा मालूम हुआ इत्यादि। इसके लिये आपको धन्यवाद है।

श्रीमती यशोदादेवी

कर्नलगंज प्रयाग का

स्त्रीशिक्षा-पुस्तकालय

श्रीमती यशोदादेवी कृत स्त्रीशिक्षा की १०८ पुस्तकें छपकर तैयार हो पचासों हजार प्रतियां हाथोंहाथ बिक गईं और बिकरही हैं।

यदि आप अपने घर की स्त्रियों, पुत्रियों और पुत्र-वधुओं को आदर्श-गृहिणी, सच्ची-माता, सुशीला-बहू, चतुर-कन्या बनाना चाहते हैं, उन्हें सर्वगुण सम्पन्न बनाने की इच्छा है और आप उनके सच्चे हितैषी हैं तो श्रीमती यशोदादेवी कृत स्त्री-शिक्षा की कुल पुस्तकें या जितनी ज़रूरत हो उतनी पुस्तकें मँगाकर पढ़ाइये और सुनाइये, स्त्री-उपयोगी कोई विषय ऐसा नहीं जिस विषय की पुस्तकें इन पुस्तकों में मौजूद न हों। पुस्तकों की भाषा सरल और मनोहारिणी, अक्षर बड़े और साफ़ हैं गूढ़ से गूढ़ विषय भी ऐसी सरल भाषा में समझाया गया है कि मूर्ख स्त्रियां भी सरलता से ही समझ लेती हैं और कुछ थोड़े ही ख़र्च से हज़ारों रुपया का फ़ायदा उठाती हैं।

स्त्रियों और बालिकाओं के सुधार के लिये जिन अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की आवश्यकता थी वे ही पुस्तकें श्रीमती यशोदादेवी द्वारा तैयार हुई हैं।

स्त्रियों की प्यारी पुस्तक

गृहिणी कर्तव्य-शास्त्र।

अर्थात्

पाकशास्त्र

पाकविद्या का अपूर्व ग्रन्थ

आजतक ऐसा उपयोगी इतना बड़ा पाकविद्या सम्बन्धी कोई ग्रन्थ नहीं छपा।

यह बहुत बड़ा ग्रन्थ पांचभागों में छपकर तैयार है। अभी तक इसके दो ही भाग प्रकाशित हुए थे यह दो भाग कईबार छपकर बीसों हज़ार बात की बात में बिक गये।

इसके दो ही भागों को पढ़ सुनकर स्त्रियां पाकविद्या में सर्वगुण सम्पन्न होकर इसमें बताई विधि के अनुसार अत्यन्त उपयोगी और स्वादिष्ट भोजन बनाने लगीं। ऋतु और प्रकृति के अनुसार नाना प्रकार के भोजनों से उनके घरवाले हृष्ट पुष्ट और निरोग रहने लगे क्योंकि स्त्री पुरुषों को रोग आहार विहार के अनियमों से ही उत्पन्न होते हैं यदि स्त्रियां पाकशास्त्र के अनुसार चलें और अपने घरवालों की प्रकृति विचार कर खाने पीने के सब पदार्थ बनाने लगें तो आरोग्यता सम्बन्धी बड़ा भारी लाभ हो।

पाकशास्त्र के उन दोनों भागों से स्त्री-जाति का बड़ा भारी उपकार हुआ उन भागों को पढ़ने और सुननेवाले तथा उसमें लिखे हुए खाने पीने के अनेक पदार्थ बनाने की विधियां देखकर उसी के अनुसार ऋतु और प्रकृति विचार कर भोजन करने से निरोग रहनेवाले यही लिखते हैं कि आजतक ऐसा उपयोगी ग्रन्थ देखने और सुनने में भी नहीं आया, अतएव इसके आगे के भाग भी तैयार होना चाहिये जिनसे मनुष्य मात्र का बड़ा उपकार होगा अतएव इस प्रकार के हज़ारों पत्र बड़े बड़े विद्वानों और राजा महाराजाओं के आये उनके आग्रह से अब हमने:—

तीन भाग और बढ़ाकर पांच भागों में पाकशास्त्र तैयार किया है।

बड़े साइज़ के कई सौ पृष्ठों में पूरा हुआ है मूल्य पहिले दो भागो का २॥) ढाई रुपया था अब पांचों भागों का ३=) है जो केवल कोरे काग़ज़ का ही मूल्य समझिये। इसप्रकार ३=) बहुत कम मूल्य रक्खा है हम चाहती हैं कि एकबार इस दुर्लभ ग्रन्थ को सभी स्त्री पुरुष पढ़कर फ़ायदा उठावें इसी अभिप्राय से इतने बड़े ग्रन्थ का मूल्य ३=) तीन रुपया दो आना रक्खा है।

इन पांचों भागो में खाने पीने के सब प्रकार के अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन बनाने की विधियां अचार, मुरब्बा, चटनी इत्यादि बनाने की कुल ६१३ विधियां हैं। जो आजतक किसी स्त्री ने सुनी भी न होगी इस पुस्तक को पढ़ सुनकर स्त्रियां और लड़कियां पाकविद्या में सर्वगुण सम्पन्न बनजाती है। एक ही वस्तु को कई प्रकार से ऐसी स्वादिष्ट बना देना कि खानेवाले आश्चर्य करने लगेंगे और बड़े प्रसन्न होंगे।

यह अमूल्य ग्रन्थ पाकविद्या का बहुत बड़ा पोथा वैद्यकशास्त्र के अनुसार वर्षों परिश्रम करके ऐसा उपयोगी बनाया गया है कि इसको देखनेवाले यही कहते और लिखते हैं कि इस अमूल्य ग्रन्थ का मूल्य जितना अधिक रक्खा जावे थोड़ा है क्योंकि ३=) खर्च करने से स्त्रियां और लड़कियां पाकविद्या सम्बन्धी ऐसे गुण सीख जाती हैं जो हज़ारों रुपया खर्च करने पर भी नहीं सीख सकतीं।

एकबार इस पुस्तक को मंगाकर आदि से अन्ततक पढ़कर देखिये और इसमें बताई हुई विधि से एकबार सब पदार्थ क्रमशः बनवाकर खाइये यदि पसन्द न हो तो पुस्तक लौटा दीजिये। यदि ३=) तीन रुपया दो आना में ही हज़ारों रुपये का फ़ायदा न जंचे तो अपने दाम वापिस लीजिये।

पुस्तक बहुत बड़ी होने के कारण थोड़ी ही छापी गई है इसलिये शीघ्रही मँगा लीजिये।

२-पति प्रेम-पत्रिका ।

लीजिये जिस पुस्तक के लिये हमारे पास स्त्रियों के पचासों पत्र प्रतिदिन आया करते हैं वही स्त्रियों की प्यारी पुस्तक छपकर तैयार है इस पुस्तक में स्त्री की ओर से पति के लिये बड़ी ही मनोहारिणी चिट्ठियां लिखने की सरल रीति और पति की ओर से पत्नी के लिये बड़ी ही उपयोगी शिक्षायुक्त चिट्ठियां लिखने की विधि मौजूद है पुस्तक को पढ़कर रखने की इच्छा नहीं होती, कईबार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती ।

स्त्रियों और पुरुषों दोनों के लिये बड़ी ही उपयोगी और मनोहारिणी पुस्तक है एकबार मंगाकर देखिये मूल्य ॥) आठ आना है ।

३-गर्भरक्षा विधान

पुस्तक क्या स्त्रियों के लिये एक अमूल्य जीवन सुधार और सन्तान-सुख का मसाला है गर्भाधान विधि तथा गर्भरक्षा-विधि न जानने के कारण हमारी हज़ारों बहिनें प्रतिदिन काल का कलेवा बनती होंगी और बन रही हैं। इस पुस्तक को पढ़ने और सुनने से मूर्ख से मूर्ख स्त्रियां भी इस विषय को भलीभांति समझ कर गर्भाशय तथा गर्भ न रहने, सन्तान न होने तथा गर्भस्राव होने-गर्भ गिर जाने और रोगी निर्बल दुर्बल तथा कमआयु वाली सन्तान के दुःख से बचेंगी और इन अनेक दुःखों से बचकर स्त्री-जीवन का सच्चा सुख प्राप्त करेंगी ।

इस पुस्तक को पढ़ सुनकर पति पत्नी सदैव निरोग रहकर इस पुस्तक की कई हज़ार प्रतियां छपकर कईबार बिकचुकी हैं इसबार इस पुस्तक को अत्यन्त उपयोगी सर्वाङ्ग-सुन्दर और सरल सचित्र कर दिये हैं जिसमें सोने में सुगन्ध की कहावत चरितार्थ होगई है जो स्त्री इसे एकबार देख लेती है वह हरवक्त पास रखती है पसन्द न हो तो दाम वापिस कर लीजिये मूल्य ।॥) बारह आना

स्त्री वैद्य-विद्या ।

४-दम्पति आरोग्यता और सन्तान-सुख ।

स्त्रियों के लिये वैद्यक की अत्यन्त उपयोगी विचित्र पुस्तक है ।

इस एक ही पुस्तक के पढ़ने और सुनने मात्र से मूर्ख से मूर्ख स्त्री भी वैद्यक विद्या में सर्वगुण सम्पन्न होसकती है स्त्री-उपयोगी वैद्यक का कोई विषय ऐसा नहीं जो इसमें न लिखा गया हो इसमें स्त्रियों के सभी गुप्तरोगों का वर्णन है इसे पढ़ सुनकर वे सभी गुप्तरोगों से छूट जाती हैं, रोग उत्पन्न होने के अनेक कारण, रोग होने के लक्षण और उनकी सरल पहिचान सरलता से समझाये गये हैं कि पुस्तक को पढने और सुननेवाली स्त्री सब प्रकार के रोगों से स्वयं बची रहती हैं ।

इस पुस्तक को पढ़ सुनकर पति और पत्नी सदैव निरोग रह कर तथा दीर्घजीवी (अधिक उम्रवाले) होकर मनमानी और निरोग हृष्ट पुष्ट तथा सुन्दर, दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं पुस्तक की एक एक प्रति हरएक घरों में रहनी चाहिये स्त्रियों के लिये ऐसी उपयोगी सस्ती और सरल पुस्तक हिन्दी ही नहीं किसी भाषा में भी नहीं थी ।

पुस्तक को पास रखने से स्त्रियां अपनी और अपने पति तथा सन्तान की सभी पीड़ाओं को दूर कर सकती हैं और अनेक प्रकार की बीमारियों से बचाती रहैंगी । सन्तान न होने के कारणों को जानकर पति पत्नी दोनों उनसे बचे रहैंगे । पुस्तक का मूल्य १।) सवा रुपया है शीघ्र ही मगा लीजिये थोड़ी ही बची हैं ।

५-पातिव्रत धर्ममाला

इसमें स्त्रियों के लिये धर्मशास्त्र की आज्ञा ऋषियों के उपदेशों का वर्णन है इसको पढ़ सुनकर स्त्रियां और बालिकायें पति की मर्यादा और पातिव्रत धर्म्म को भलीभांति समझ लेती हैं हरएक स्त्री को पुस्तक पढ़ना और सुनना आवश्यक है मूल्य ।–) पांच आना ।

६-नारी नीति शिक्षा

इस पुस्तक का गुण भी इसके नाम से ही समझ लीजिये हमारे ऋषि मुनि स्त्रियों के लिये किस प्रकार नीति ज्ञान करा गये हैं

जिसका जानना कितना जरूरी है और उसे जानकर स्त्रीजाति का बड़ा भारी उपकार होगा सो पुस्तक पढ़कर ही समझ सकती हैं मूल्य।-) पांच आना है।

७-आदर्श हिन्दू विधवा।

विधवाओं के लिये अभीतक एक भी स्वतंत्र पुस्तक नहीं बनी जिसे पढ़कर वे पति-दुःख से दुखी अबलायें अपनी जीवन-यात्रा सन्तोष और धैर्य से व्यतीत करें उन्हीं के लिये यह अपूर्व पुस्तक तैयार कीगई है मूल्य।) चार आना।

८-सती-भूषण

स्त्रियों का भूषण (सच्चे गहने) क्या है इस बात को अभी तक हमारी बहुत कम बहिनें जानती होंगी इस पुस्तक के पढ़ने और सुनने से उन्हें इस बात का ज्ञान प्राप्त होगा कि हमारे सच्चे गहने जो गुण हैं उन्हें हम भूली हुई हैं इस पुस्तक को पढ़ सुनकर वे भी अनेक गुण प्राप्त करेंगी दाम।) चार आना।

९-पतिव्रता।

इस पुस्तक की प्रशंसा करना व्यर्थ है कौन हिन्दू स्त्री पुरुष ऐसा होगा जो आदर्श कुल रमणी पतिव्रता दमयन्ती का नाम न जानता हो स्त्रीजाति के गौरव का जीता जागता नमूना है इसका प्रचार जितना अधिक हो उतना थोड़ा है हरएक हिन्दू स्त्री के पास यह पुस्तक अवश्य रहनी चाहिये हमने इस पुस्तक की भाषा ऐसी सरल और मनोहर बनाई है कि पुस्तक हाथ में लेकर आरम्भ करके छोड़ने की इच्छा नहीं होती मूल्य ॥)-आठ आना है टाइप बड़ा और सुन्दर है। कन्याओं और स्त्रियें-पढ़ी और कम पढ़ी सबके लिये सरल है।

१०—शास्त्र-शिक्षा।

इस पुस्तक में स्त्रियों के लिये अपने हिन्दू धर्मशास्त्र का मथन कर अत्यन्त उपयोगी शिक्षायें उद्धृत कीगई हैं हरएक हिन्दू स्त्री को एक एक प्रति हर समय रखकर पढ़नी और अन्य बहिनों को सुनानी चाहिये दाम ॥) आठ आना।

११-घर का वैद्य।

इस पुस्तक में क्या है सो तो आप समझ ही गए होंगे परन्तु इतना बतला देना आवश्यक है कि यह प्रतिदिन के काम आनेवाली स्त्रियों के लिये वैद्यक की बड़ी ही उपयोगी और सरल पुस्तक है चार आने में ही सैकड़ों रुपये का फ़ायदा उठाइये मूल्य ।) चार आना

१२-धात्री विद्या।

इस पुस्तक में क्या है सो नाम से ही प्रकट होता है परन्तु फिर भी इतना बता देना आवश्यक है कि इस पुस्तक को पढ़ सुनकर मूर्ख से मूर्ख स्त्रियां भी दाई (बच्चा पैदा होने) के समस्त नियम, उसकी पालन विधि भलीभांति जान जाती हैं जिससे बच्चा जच्चा दोनों निरोग रहते हैं दाम ।=) छै आना है

१३-सन्तान-पालन।

इस पुस्तक से स्त्रियां सन्तान-पालन के नियमों को जानकर इस कार्य में चतुर-माता बन जाती हैं दाम ।) चार आना

१४-शिशुरक्षा विधान।

बालरोग चिकित्सा।

इस पुस्तक में बालकों के सब प्रकार के रोग होने के कारण, रोगों की पहिचान और उनको दूर करने के सरल उपाय तथा सरल औषधियां लिखी गई हैं जिसे पढ़ सुनकर स्त्रियां बालकों की चिकित्सा में निपुण होजाती हैं। दाम ॥।) बारह आना

१५-स्त्रीचिकित्सा शास्त्र।

इस पुस्तक में स्त्रियों के लिये सब प्रकार के गुप्तरोग उत्पन्न होने के कारण, रोगों की पहिचान, लक्षण और रोग दूर होने के सरल उपाय तथा औषधियां लिखी गई हैं जिससे स्त्रियां वैद्यक में निपुण होजाती हैं। दाम ॥।) बारह आना।

१६-सुखी-कुटुम्ब ।

बालिकाओं और स्त्रियों के लिये पुस्तक बड़ी ही उपयोगी और हर समय काम आनेवाली है दाम ।।।) बारह आना

१७-स्त्री संगीत-सागर ।

पुस्तक आरम्भ करके छोड़ने की इच्छा नहीं होती इसमें स्त्रियों के हर समय गाने योग्य भजन, गज़ल, ठुमरी, दादरा, लावनी, कजली, होली आदि सभी प्रकार के गाने मौजूद हैं ।

यदि आजकल के फूहड़, गन्दे, निन्दित गीतों से स्त्रियों को बचाना चाहते हैं तो इस पुस्तक को मँगाकर उनके हाथ में दीजिये और इसके अत्यन्त उपयोगी शिक्षायुक्त गानों को सुनकर आप भी प्रसन्न हूजिये दाम ।।) आठ आना ।

१८-सच्ची सहेली ।

इस पुस्तक में क्या है सो नाम से ही समझ लीजिये आजकल की सहेलियों में बैठकर स्त्रियों को पराई चुगली, ईर्षा द्वेष आदि अनेक प्रकार के अवगुण प्राप्त होते हैं परन्तु इस सच्ची-सहेली को पास रखने से स्त्रियां अनेक प्रकार की शिक्षायें पाकर सर्वगुण सम्पन्न बन जाती हैं । हरएक स्त्री को एक एक प्रति अवश्य पास रखनी चाहिये दाम ।) चार आना है ।

१९-सन्तान-सुधार ।

माता पिता सन्तान का सुधार किस प्रकार कर आदर्श-सन्तान बना सकते हैं यह बात इस पुस्तक से मालूम होगी दाम ।।।) बारह आना

२०-कन्या भजन-भंडार ।

कन्याओं के गानेयोग्य अत्यन्त उपयोगी भजनों द्वारा उनके कर्त्तव्य की शिक्षा दी हुई है हरएक कन्या को यह पुस्तक पढ़नी और सुननी चाहिये दाम ।) चार आना ।

२१-ज़बानी हिसाब (कण्ठाग्र गणित)

कन्याओं के लिये हिसाब की अपूर्व पुस्तक है दाम ।) चार आना

२२-सुघर रंगरेज़।

हर प्रकार के सुन्दर देशी रङ्ग बनाना, कपड़े रङ्गने की विधि लिखी गई है दाम ।) चार आना।

२३-स्त्री भजन-वाटिका।

स्त्रियों के लिये भजनो की अत्यन्त उपयोगी अपूर्व पुस्तक है। ऐसी उपयोगी पुस्तक आजतक कहीं नहीं छपी दाम ।) चार आना

२४-घर की दर्जिन सचित्र

इसमें सब प्रकार के कपड़े नापना काटना छांटना और सींने की सरल विधि ऐसे सीधे ढंग से समझाई गई है कि थोड़ा पढ़ी लिखी स्त्री और बालिकायें पढ़ने और सुनने मात्र से सब प्रकार के कपड़े ज़नाने, मर्दाने तथा बच्चों के सींना, काटना, नापना सीख जाती हैं दाम ॥) आठ आना है।

२५-सच्चा पतिप्रेम।

स्त्रियों के लिये यह एक अपूर्व पुस्तक है हाथ में लेकर फिर रखने को इच्छा नहीं होती इसके सुन्दर उपयोगी विषय और मनोहर तथा सरल भाषा के कारण बार बार पढ़ने पर भी पढ़ने और सुनने वाले की इच्छा नहीं भरती दाम ।) चार आना।

२६-पत्नी की मनोहर चिट्ठियां।

पति को चिट्ठी लिखने की अपूर्व पुस्तक है दाम ।) चार आना

२७-पत्नी पत्र-दर्पण।

कुटुम्ब के लिये सब प्रकार की चिट्ठी लिखने की सरल विधि स्त्रियों के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है दाम ।) चार आना

२८-तिथि पर्वव्रत कथायें

इस पुस्तक में यही विषय है जो नाम से प्रकट होता है इसे पढ़ने सुननेवाली स्त्रियां तिथि पर्वव्रत और व्रतकथाओं के महत्व को समझकर अपने धर्म में दृढ़ रह सकती हैं दाम ।) चार आना

२९—पति की मर्यादा

इस पुस्तक से स्त्रियों को पति की मर्यादा का ज्ञान प्राप्त होता है और पतिसेवा के महत्व को समझकर अपने इस नारीजीवन और परलोक का सुधार कर सकती हैं। दाम ।-) पांच आना।

३०—सदाचारिणी।

यह पुस्तक स्त्रियों के लिये उन्हें अपने आचरणों और धार्मिक ज्ञान तथा गृहिणी-कर्त्तव्य की ओर लेजाकर उन्हें सर्वगुण सम्पन्न धार्मिका रमणीरत्न बना देती है। दाम ॥) आठ आना

३१—सती सर्वस्व।

सती स्त्री का सर्वस्व क्या है जीवन का सुख क्या है यही विषय इस पुस्तक में मौजूद है इस पुस्तक को पढ़ सुनकर स्त्रियां सतीधर्म को समझ कर अपूर्व गुण प्राप्त करती हैं दाम ॥) आठ आना।

३२—नारी नीति कुण्डल।

स्त्रियों के लिये नीति की यह अमूल्य पुस्तक है इसकी शिक्षायें ऋषियों के उपदेशरूपी बहुमूल्य कुण्डल अवश्य धारण कर स्त्रियां जीवन का सच्चा सुख प्राप्त करेंगी। दाम ॥) आठ आना।

३३—स्त्री-चिकित्सा रत्न।

यह स्त्रियों के गुप्तरोगों की एक छोटी सी पुस्तक है इसके पढ़ने सुनने मात्र से स्त्रियां अपने गुप्तरोगों को आपही समझकर उन्हें दूर कर सकती हैं। दाम ।) चार आना

३४—सुचरित्र संगठन।

स्त्रियों को सदाचारी, सुशील और धार्मिक बनानेवाली अपूर्व पुस्तक है। दाम ।-) पांच आना

३५—नारी संगीत शिक्षा।

यह भी स्त्री-उपयोगी भजनों की अमूल्य पुस्तक है इसके मनोहर शिक्षायुक्त भजन सुनने और पढ़ने के लिये किस स्त्री की इच्छा न होगी। दाम ।) चार आना

३६-वीरपत्नी-बहादुर स्त्री।

यदि स्त्रियों को वीर विदुषी आदि गुणों से सर्वगुण सम्पन्न बनाना है तो मंगादेखें। दाम।) चार आना

३७-आदर्श-पत्नी।

यदि आप अपनी प्यारी स्त्री को प्राचीन स्त्रियों की भांति वीर, विदुषी, साहसिन और आदर्श-पत्नी बनाना चाहते हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पास रखनी चाहिये। दाम।) चार आना

३८-आदर्श-कुमारियां।

इस पुस्तक में भारतवर्ष की प्राचीन वीर विदुषी और सर्व-गुण सम्पन्न बालिकाओं के जीवन-चारित्र हैं जिसे पढ़ सुनकर कन्यायें आदर्श-स्त्री बन जाती हैं। दाम।-) पांच आना

३९-आदर्श-कुटुम्ब।

स्त्रियां अपने कुटुम्ब (घरवालों) को किस प्रकार सुखी रख सकती हैं इस पुस्तक को पढ़ने और सुननेवाली स्त्री का कुटुम्ब आदर्श-कुटुम्ब बन जाता है। दाम ॥) आठ आना

४०-पाठशाला की कन्यायें।

कन्याओं के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है दाम।-) पांच आना

४१-अचार की कोठरी।

सब प्रकार के अचार, मुरब्बा, चटनी आदि बनाने की अपूर्व पुस्तक है इस विषय में स्त्रियां सर्वगुण सम्पन्न बन जाती हैं। दाम ॥) आठ आना

४२-शिक्षा-कुसुम।

स्त्रियों के लिये अपूर्व पुस्तक है मंगाकर पढ़ाइये और सुनाइये। दाम।) चार आना

४३-पत्नी पत्रादर्श ।

स्त्री की ओर से पति को पत्र लिखने की अत्यन्त उपयोगी और मनोहारिणी पुस्तक है। दाम ।) चार आना

४४-अमृत की बूंद ।

स्त्री पुरुष सब के लिये भजनों की अपूर्व पुस्तक हरएक स्त्री पुरुष को एक एक प्रति अवश्य मंगाकर पास रखनी चाहिये। दाम ।) चार आना

४५-लड़कियों के खेल ।

पुस्तक में क्या है सो नाम से ही प्रकट है हर कन्या को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी तथा सुननी चाहिये। दाम ।–) पांच आना

४६-बनिता पत्र दर्पण ।

कन्याओं और स्त्रियों के लिये पत्र व्यवहार की अपूर्व पुस्तक है इसके द्वारा स्त्रियां अपने कुटुम्ब की स्त्रियों को पत्र लिखना सीख जाती हैं इसमें अनेक प्रकार की चिट्ठियां ऐसी सरल और मनोहर भाषा में लिखी गई हैं कि स्त्रियां इसे देख सुनकर बड़ी प्रसन्न होती हैं। दाम ।–) पांच आना

४७-श्रृङ्गारदान ।

इसमें स्त्रियों के श्रृङ्गार सम्बन्धी अनेक वस्तुयें बनाने की सरल विधियां लिखी गई हैं यह पुस्तक स्त्रियों के बड़े काम की है जो सौभाग्यवती स्त्री इस पुस्तक को देखती है हर समय अपने पास रखती है और चार आने में ही सैकड़ों रुपये का फ़ायदा उठाती है। दाम ।) चार आना

४८-महिला हस्त-भूषण ।

स्त्रियों के सच्चे गहने क्या हैं स्त्रियां किस प्रकार के गहनों से सर्वगुण सम्पन्न आदर्श-नारी बन सकती हैं वे ही अमूल्य उपदेश इस पुस्तक में मौजूद हैं। हरएक स्त्री का अवश्य यह पुस्तक पढ़नी, सुननी चाहिये। दाम ।) चार आना

गई है जबतक स्त्री-चिकित्सक के सब ग्राहकों को सेवा में पुस्तक न पहुंच जावै तबतक दूसरे ग्राहकों को न भेजी जावैगी।

अब हमारे पास १०० एक सौ पुस्तक और बची हैं इसलिये स्त्री-चिकित्सक के ग्राहकों को शीघ्रही मंगालेनी चाहिये। बिकजाने पर पछ-ताना पड़ेगा फिर किसी मूल्य में भी न मिलैगी।

पुस्तक में क्या है और कितनी अधिक उपयोगी है इसके विषय में पुस्तक देखने पर ही जान सकैंगे। हिन्दी ही नहीं देश की किसी भाषा में भी ऐसी उपयोगी पुस्तक नहीं है।

प्राणवल्लभ।

को पढ़ सुनकर पुरुष अपने अनेक प्रकार के रोगों के उत्पन्न होने के कारणों को समझकर सब प्रकार के रोगों से बचेंगे और अपने हाथों ही घर पर औषधियां तैयार कर सेवन करके फ़ायदा उठाते हैं इस पुस्तक में श्रीमती यशोदादेवी की लाखों रोगी-पुरुषों पर परीक्षा कीहुई अनेक रोगों की औषधियां बनाने के नुस्खे मौजूद हैं पुरुष-रोगों की अनेक प्रकार की औषधियां बनाने की वैद्यकशास्त्र के अनुसार सरल विधियां लिखी गई हैं जो पढ़ी अनपढ़ सब स्त्रियां समझकर अपने हाथों ही घर पर औषधियां तैयार कर अपने घर के पुरुषों को सेवन करा अनेक प्रकार के रोगों से बचावगी वैद्यक की ऐसी उपयोगी पुस्तक आजतक हिन्दी ही नहीं किसी भाषा में भी नहीं छपी; मूल्य जिल्द सहित का ३।) सवा तीन रुपया है इस पुस्तक का मूल्य नहीं घटाया गया यह पूरे दाम में मिलैगी क्योंकि पुस्तक केवल १०० एकसौ और बची है।

अपने रोगों को आपही दूर कर हज़ारों रुपये का फ़ायदा उठावेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशित होने से एक बहुत बड़ी कमी पूरी होगई क्योंकि ऐसी उपयोगी पुस्तक आजतक कहीं नहीं छपी इससे स्त्रियों का जो उपकार होगा वह पुस्तक देखने से ही मालूम होगा।

अनेक प्रकार के चित्रों सहित यह बहुत बड़ी नई पुस्तक तैयार कीगई है इसलिये अब जो ग्राहक गर्भरक्षा-विधान मँगावेंगे उन्हें यही पुस्तक भेजी जावेगी। वह गर्भरक्षा-विधान बहुत छोटी पुस्तक है उसमें बहुत थोड़ा विषय था। यह पुस्तक अब अत्यन्त उपयोगी बनाई गई है और लगभग ४०० पृष्ठ की सचित्र पुस्तक है इसलिये मूल्य ३।) तीन रुपया चार आना रक्खा गया है गर्भरक्षा-विधान गर्भविज्ञान को अवश्य मंगाइये।